स्वतंत्र जांच जरूरी

लोकतंत्र में सत्ता पक्ष और विपक्ष के बीच टकराव व आरोप-प्रत्यारोप का सिलसिला नया नहीं है। खासकर चुनावी वेला में तो यह स्थिति चरम पर होती है। लेकिन इस टकराव का प्रभाव लोकतांत्रिक प्रक्रिया के स्वाभाविक प्रभाव को बाधित करने वाला नहीं होनी चाहिए। युद्ध की तरह से राजनीति के भी अपने नियम होते हैं और मुकाबले के लिये बराबर का अवसर भी उपलब्ध कराया जाना चाहिए। साथ ही यह जरूरी है कि सत्तापक्ष और विपक्ष के बीच गतिरोध को दूर करने के लिये संवाद की प्रक्रिया भी निरंतर चलती रहनी चाहिए, ताकि अनावश्यक गतिरोध को टाला जा सके। बीते गुरुवार को देश के मुख्य विपक्षी दल कांग्रेस पार्टी की ओर से आयोजित प्रेस वार्ता में आरोप लगाए गए कि खाते फ्रीज करके पार्टी को आर्थिक रूप से पंगु बनाने की कोशिश सत्ता पक्ष की ओर से की जा रही है। यूं तो कांग्रेस पिछले पांच वर्षों में लगातार सत्ता पक्ष की रीतियों-नीतियों पर हमलावर रही है, लेकिन फिलहाल कांग्रेस द्वारा लगाए आरोपों की गंभीरता पर भी विचार किया जाना चाहिए। वैसे भी किसी भी लोकतांत्रिक व्यवस्था में चुनावी प्रक्रिया को सुचारू और विश्वसनीय बनाने के लिये विपक्षी दलों को मुकाबले का बराबर अवसर तो मिलना ही चाहिए। निश्चित रूप से इससे चुनाव प्रक्रिया की पारदर्शिता व प्रामाणिकता को संबल मिलता है। कांग्रेस का आरोप है कि मुख्य विपक्षी पार्टी को आयकर विभाग की कार्रवाई से वित्तीय संकट की ओर धकेला जा रहा है। हालांकि, कांग्रेस पार्टी की मुद्दे को लेकर गंभीरता इस बात से भी उजागर होती है कि हाल-फिलहाल यह पहला अवसर है कि पार्टी के तीन शीर्ष नेता कांग्रेस के वर्तमान अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे, पूर्व अध्यक्ष सोनिया गांधी व राहुल गांधी एक साथ प्रेस कॉन्फ्रेंस में नजर आए। विशेष तौर पर ऐसी स्थिति में जब देश में चुनाव कार्यक्रम की घोषणा के बाद चुनावी प्रक्रिया आरंभ हो चुकी है कांग्रेस के आक्षेप को गंभीरता से लिया जाना चाहिए। निश्चित रूप से किसी भी लोकतंत्र की खूबसूरती इस बात में है कि सत्ता पक्ष विपक्षी राजनीतिक दलों को बराबर का मौका उपलब्ध कराये, जिससे चुनावी मुकाबला न्यायसंगत बना रह सके। यदि मुख्य विपक्षी दल यह आरोप लगाए कि ऐन चुनाव के वक्त पार्टी के खाते फ्रीज करके उसके चुनाव लड़ने और प्रचार करने में बाधा उत्पन्न हुई तो यह स्वस्थ लोकतांत्रिक प्रक्रिया के लिये अच्छा नहीं है। निश्चित रूप से कांग्रेस के आरोपों की स्वतंत्र जांच की जानी चाहिए। पार्टी का कहना है कि खाते फ्रीज होने से पार्टी के समक्ष उत्पन्न आर्थिक तंगी से पार्टी न विज्ञापन दे सकती है और न ही अपने नेताओं के लिये हवाई टिकट बुक करा पा रही है। उसका यह भी कहना है कि उसे रैली आयोजित करवाने में परेशानी हो रही है। हालांकि, कांग्रेस के आरोपों से इतर सरकार व आयकर विभाग के अधिकारियों की अपनी दलीलें हैं। उल्लेखनीय है कि गत 13 मार्च को दिल्ली हाईकोर्ट ने आईटीएटी के उस आदेश को बरकरार रखा था, जिसमें सौ करोड़ से अधिक के बकाया कर की वसूली के लिये कांग्रेस पार्टी को आयकर विभाग से जारी नोटिस पर रोक लगाने से इनकार कर दिया गया था। हालांकि, हाईकोर्ट ने पार्टी को तब नये स्थगन आवेदन के साथ आईटीएटी का रुख करने की स्वतंत्रता दी थी। ऐसे में इस मुद्दे पर अंतिम राय बनाने से पहले सभी पक्षों के तर्कों पर विचार भी जरूरी है। सत्तारूढ़ दल के प्रवक्ता ने इन आरोपों को पार्टी की हताशा का परिणाम बताया है। यह भी कि कांग्रेस के आरोपों से भारतीय लोकतंत्र की छवि पर प्रतिकूल असर पड़ेगा। लेकिन इसके बावजूद यह तथ्य निर्विवाद है कि किसी भी लोकतंत्र में स्वतंत्र चुनावी प्रक्रिया को प्रभावित करने वाले कारकों को अनुचित ही कहा जाएगा। इससे चुनावों की पारदर्शिता व विश्वसनीयता पर आंच आ सकती है। विपक्षी दलों के इन आरोपों को भी बल नहीं मिलना चाहिए कि सरकार विपक्ष को दबाने के लिये सरकारी एजेंसियों व विभागों का इस्तेमाल कर रही है। निश्चित रूप से ऐसे आरोपों से दुनिया के सबसे बड़े लोकतंत्र को लेकर अच्छा संदेश नहीं जाएगा।

खुशहाल समाजों की रैंकिंग से भारत भ्रमित न हो

आरती कुमारी

पाकिस्तान पिछली बार 108वें स्थान पर था, इस बार 122वें पर आ गया है, पर तब भी भारत से चार पायदान ऊपर है। जिस देश में खूब महंगाई है, जहां की जनता त्राहिमाम-त्राहिमाम कर रही है, जहां धार्मिक उन्माद व्यापक है, जो आतंकवाद को प्रोत्साहन देता है, वह देश भी अगर हमसे खुशहाल है, तो ऐसी खुशहाली मापने के तरीकों पर विचार होना चाहिए। ऐसा प्रतीत होता है कि खुशहाली को तय करने के पैमानों में अवश्य ही कोई पूर्वाग्रह या आग्रह है। क्योंकि ऋण की गुहार लगाता एवं त्राहिमाम करता पाकिस्तान को 122वें स्थान की रैंकिंग देना विडंबनापूर्ण एवं विसंगतिमय हैं, जो इस सूचकांक के महत्व को घटा देती हैं। जो दुनिया के खुश देशों के आकलन में त्रुटि की पूरी संभावनाएं होने को दशार्ता है। अनेक सवाल खड़े करती है यह खुशहाल देशों की रैंकिंग। यह विडंबना ही है कि धार्मिक पाबंदियों वाला कुवैत दुनिया का 13वां सबसे खुशहाल देश है। ऐसी अतार्किक सूची देखकर अफसोस एवं आश्चर्य भी होता है और चिंता भी होती है। क्या खुशहाली को धार्मिक और सामाजिक स्वतंत्रता के आधार पर ज्यादा नहीं देखा जाना चाहिए? खुशहाली को केवल आर्थिक समृद्धि और संसाधनों की अधिकता में घटाकर देखना सही नहीं है। खुशहाली की रैंकिंग को देखकर भारत को कतई भ्रमित नहीं होना चाहिए। एक और विडंबना देखिए, निर्मम युद्ध लड़ रहा इजरायल पांचवां सबसे खुशहाल देश है! पीड़ित फलस्तीन 103वें स्थान पर है, तो रूस 72वें स्थान पर और यूक्रेन 105वें स्थान पर।

143 देशों के विश्व खुशहाली रैंकिंग में भारत 126वें स्थान पर रहा है जिसमें फिनलैंड ने लगातार छठीं बार सर्वोच्च स्थान पाया है। यह बात भी गौर करने की है कि भारत में दस अंकों का सुधार हुआ है, फिर भी भारत के लिये आश्चर्यकारी एवं विचारणीय है। फिनलैंड को दुनिया का सबसे खुशहाल देश करार दिया गया है, पर गौर कीजिए, वहां आबादी सिर्फ 56 लाख है। मतलब, इस देश की चुनौतियां बहुत कम हैं। धार्मिक वातावरण ऐसा है कि विद्वेष की ज्यादा गुंजाइश नहीं है। छोटा राष्ट्र होने की वजह से सरकारों के सामने समस्याएं कम है। अतः फिनलैंड की स्थिति अच्छी है, पर उसकी तुलना भारत जैसे 140 करोड़ आबादी वाले देश से कैसे हो सकती है? यह बहस का विषय है। संयुक्त राष्ट्र द्वारा प्रायोजित इस वार्षिक रिपोर्ट में नॉर्डिक देशों ने 10 सबसे खुशहाल देशों में अपना स्थान बनाए रखा है। फिनलैंड के बाद डेनमार्क, आइसलैंड, स्वीडन ने शीर्ष स्थान हासिल किए हैं। इन सभी देशों में समाज समस्यामुक्त एवं काफी सुलझा हुआ है और विविधता वहां ज्यादा समस्याएं पैदा नहीं करती है। देखने की बात है कि खुशहाली की रिपोर्ट विगत एक दशक से भी ज्यादा समय से जारी हो रही है और पहली बार अमेरिका और जर्मनी जैसे विकसित देशों को शीर्ष 20 देशों में स्थान नहीं मिला है। पाकिस्तान पिछली बार 108वें स्थान पर था, इस बार 122वें पर आ गया है, पर तब भी भारत से चार पायदान ऊपर है। जिस देश में खूब महंगाई है, जहां की जनता त्राहिमाम-त्राहिमाम कर रही है, जहां धार्मिक उन्माद व्यापक है, जो आतंकवाद को प्रोत्साहन देता है, वह देश भी अगर हमसे खुशहाल है, तो ऐसी खुशहाली मापने के तरीकों पर विचार होना चाहिए। ऐसा प्रतीत होता है कि खुशहाली को तय करने के पैमानों में अवश्य ही कोई पूर्वाग्रह या आग्रह है। क्योंकि ऋण की गुहार लगाता एवं त्राहिमाम करता पाकिस्तान को 122वें स्थान की रैंकिंग देना विडंबनापूर्ण एवं विसंगतिमय हैं, जो इस सूचकांक के महत्व को घटा देती हैं। जो दुनिया के खुश देशों के आकलन में त्रुटि की पूरी संभावनाएं होने को दशार्ता है। अनेक सवाल खड़े करती है यह खुशहाल देशों की रैंकिंग। यह विडंबना ही है कि धार्मिक पाबंदियों वाला कुवैत दुनिया का 13वां सबसे खुशहाल देश है। ऐसी अतार्किक सूची देखकर अफसोस एवं आश्चर्य भी होता है और चिंता भी होती है। क्या खुशहाली को धार्मिक और सामाजिक स्वतंत्रता के आधार पर ज्यादा नहीं देखा जाना चाहिए? खुशहाली को केवल आर्थिक समृद्धि और संसाधनों की अधिकता में घटाकर देखना सही नहीं है। खुशहाली की रैंकिंग को देखकर भारत को कतई भ्रमित नहीं होना चाहिए। एक और विडंबना देखिए, निर्मम युद्ध लड़ रहा इजरायल पांचवां सबसे खुशहाल देश है! पीड़ित फलस्तीन 103वें स्थान पर है, तो रूस 72वें स्थान पर और यूक्रेन 105वें स्थान पर। ये देश युद्ध के बावजूद भारत से ज्यादा खुशहाल हैं। पता नहीं, इस रैंकिंग पर कितना भरोसा किया जाए? जहां तक भारत का सवाल है, खुशहाली के सभी पैमानों पर हमें अपने प्रयास बढ़ाने की जरूरत है। एक बड़ा सवाल यह भी है कि हम प्रसन्न समाजों की सूची में क्यों नहीं अव्वल आ पा रहे हैं? यह सवाल सत्ता के शीर्ष नेतृत्व को आत्ममंथन करने का अवसर दे रहा है, वहीं नीति-निमार्ताओं को भी सोचना होगा कि कहां समाज निर्माण में त्रुटि हो रही है कि हम लगातार खुशहाल देशों की सूची में सम्मानजनक स्थान नहीं बना पा रहे हैं। भारत सरकार इस रिपोर्ट को कितनी गंभीरता से लेती है, यह देखने वाली बात है। भारत में खुशहाली को बढ़ावा देने में यहां की जनसंख्या सबसे बड़ी बाधा है। भारत के अल्पसंख्यक समुदायों की कट्टरता एवं संकीर्णता भी खुशहाल समाज निर्माण की बड़ी बाधा है। भारत जैसे विशाल और असमान विकास वाले देश के लिए 126वां स्थान कितना मायने रखता है? भारत में कई तरह का भारत है, एक अमीर व खुशहाल

भारत है, तो उसमें एक गरीब भारत भी है। गरीब भारत भी विकास कर रहा है, लेकिन आबादी इतनी ज्यादा है कि अभी देश को समग्रता में खुशहाल देशों में अव्वल स्थान बनाने में वक्त लगेगा। सबसे खुशहाल देश फिनलैंड की आबादी महज 56 लाख है, उसके लिए विकास आसान है। भारत के मुम्बई, दिल्ली, कोलकता शहर में इसमें कहीं ज्यादा लोग रहते हैं। वैसे भी खुशी महसूस करना व्यक्ति के खुद की सोच पर निर्भर करता है। इसलिये प्रश्न है कि हमारी खुशी का पैमाना क्या हो? अधिकतर लोग छोटी-छोटी जरूरतें पूरी होने को ही खुशी मान लेते हैं। इससे उन्हें उस पल तो संतुष्टि मिल जाती है, उनका मन खिल जाता है। लेकिन यह खुशी ज्यादा देर नहीं टिकती, स्थायी नहीं होती। इच्छा पूरी होने के साथ ही उनकी खुशी भी कमजोर होने लगती है। खुशी एवं प्रसन्नता हम सबकी जरूरत है, लेकिन प्रश्न है कि क्या हमारी यह जरूरत पूरी हो पा रही है, ताजा आकलन से तो यही सिद्ध हो रहा है कि हम खुशी एवं प्रसन्नता के मामले में लगातार पिछड़ रहे हैं। विडम्बनापूर्ण स्थिति तो यह है कि हमारा भारतीय समाज एवं यहां के लोग अपने ज्यादातर पड़ोसी समाजों से कम खुश है। खुशहाली की रिसर्च में खुशहाली को राष्ट्रीय स्तर पर उपलब्ध भौतिक सुविधाओं से मापा जाता है। लेकिन खुशियां का दायरा इतना छोटा तो नहीं होता। विकास की सार्थकता इस बात में है कि देश का आम नागरिक खुद को संतुष्ट और आशावान महसूस करे। स्वयं आर्थिक दृष्टि से सुदृढ़ बने, कम-से-कम कानूनी एवं प्रशासनिक औपचारिकताओं का सामना करना पड़े, तभी वह खुशहाल हो सकेगा। डिजिलीकरण, आर्थिक नवाचार जैसी घटनाओं ने आम आदमी को अधिक परेशानी एवं समस्याएं दी है। समस्याओं के घनघोर अंधेरों के बीच उनका चेहरा बुझा-बुझा है। न कुछ उनमें जोश है न होश। अपने ही विचारों में खोए-खोए, निष्क्रिय और खाली-खाली से, निराश और नकारात्मक तथा ऊर्जा विहीन। हाँ सचमुच ऐसे लोग पूरी नींद लेने के बावजूद सुबह उठने पर खुद को थका महसूस करते हैं, कार्य के प्रति उनमें उत्साह नहीं होता। ऊर्जा का स्तर उनमें गिरावट पर होता है। क्यों होता है ऐसा? कभी महसूस किया आपने? यह स्थितियां एक असंतुलित एवं अराजक समाज व्यवस्था की निष्पत्ति है। ऐसे माहौल में व्यक्ति एवं समाज खुशहाल नहीं हो सकता। खुशहाली सूचकांक के लिए अर्थशास्त्रियों एवं विभिन्न क्षेत्रों के विशेषज्ञों की एक टीम व्यापक स्तर पर शोध करती है, यह टीम समाज में सुशासन, प्रति व्यक्ति आय, स्वास्थ्य, जीवित रहने की उम्र, भरोसा, सामाजिक सहयोग, परोपकार, दान भावना, स्वतंत्रता और उदारता आदि को आधार बनाती है। रिपोर्ट का मकसद विभिन्न देशों के शासकों को आईना दिखाना है कि उनकी नीतियां लोगों की जिंदगी खुशहाल बनाने में कोई भूमिका निभा रही हैं या नहीं? हमारा शीर्ष नेतृत्व आजादी के बाद से ही निरन्तर आदर्शवाद और अच्छाई का झूठ रचते हुए सच्चे आदर्शवाद के प्रकट होने की असंभव कामना करता रहा है, इसी से जीवन की समस्याएं सघन होती गयी है, नकारात्मकता के इस व्यूह को तोड़ते हुए प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने खुशी एवं प्रसन्न जीवन के लक्ष्य को आकार दिया है, उन्होंने गहन अंधेरों से देश की जनता को बाहर निकालते हुए विगत एक दशक में अपने कामकाज एवं नीतियों से एक आशावाद उकेरा है। भारत में युवा सबसे अधिक खुश हैं, जबकि निम्न मध्यमवर्गीय लोग सबसे कम खुश हैं। भारत में अधिक उम्र उच्च जीवन संतुष्टि से जुड़ी है और यह उन दावों के विपरीत है कि उम्र और जीवन संतुष्टि के बीच सकारात्मक संबंध केवल उच्च आय वाले देशों में मौजूद है। भारतीयों के बीच संतोष के भाव, प्रति व्यक्ति सकल घरेलू उत्पाद, सामाजिक सहयोग, जीवन प्रत्याशा, स्वतंत्रता, उदारता के भाव में विस्तार जारी रहना चाहिए। भारत का वर्तमान खुशहाली वाला समाज बनने को तत्पर है, भले ही दुनिया की कुछ खुशहाली रैंकिंग तय करने वाली एजेंसियां इससे असहमत हो।

2023 विधान सभा चुनावों में मात खाने के बाद दोबारा लोकसभा चुनावों में 72 साल पुराने दुश्मनों को साथ ला दिया !

अशोक भाटिया

आगामी लोकसभा त्रिपुरा चुनावों में 2023 विधान सभा चुनावों में मात खाने के बाद दोबारा लोकसभा चुनावों में 72 साल पुराने दुश्मनों को साथ ला दिया है ! बताया जाता है कि त्रिपुरा में इस बार लोकसभा चुनावों में दोनों ही सीटों पर कांटे की टक्कर देखने को मिल सकती है क्योंकि सूबे के 72 साल के चुनावी इतिहास में लेफ्ट और कांग्रेस साथ मिलकर चुनाव लड़ रहे हैं।2024 का चुनाव ये दल मिलकर लड़ने जा रहे है पर यदि इनका पुराना इतिहास देखें तो 2023 का चुनाव साथ लड़ने पर त्रिपुरा में दोनों दलों को कोई खास सफलता नहीं मिली थी। यदि हम त्रिपुरा का पुराना चुनावी इतिहास खंगाले तो 60 सदस्यों वाली त्रिपुरा विधानसभा में किसी भी पार्टी को सरकार बनाने के लिए कम से कम 31 सीटों की जरूरत होती है। पिछले 2023 के रिजल्ट को देखें तो भारतीय जनता पार्टी 32 सीटें जीत कर सबसे ज्यादा सीटें जीतने वाली पार्टी के रूप में उभरी थी। हालांकि, भाजपा का इस बार का प्रदर्शन साल 2018 के प्रदर्शन के मुकाबले का नहीं रहा जब पार्टी ने 36 सीटें जीती थीं। 2018 विधानसभा चुनाव की तरह अबकी बार भी भाजपा ने इंडिजेनस पीपल्स फ्रंट ऑफ त्रिपुरा (आईपीएफटी) के साथ गठबंधन कर चुनाव लड़ा था। जहां 2018 में आईपीएफटी ने 8 सीटें जीती थीं, वहीं इस बार ये पार्टी मात्र एक सीट ही जीत सकी है। इस एक सीट को मिला कर भाजपा गठबंधन की कुल 33 सीटें हो गई हैं जो सरकार बनाने के लिए काफी थी। सीटें घटने के साथ भाजपा के वोट-शेयर में भी कमी आई। पिछले चुनाव में भाजपा का वोट-शेयर करीब 44 फीसद रहा था। इस बार वो घट कर 39 फीसदी रह गया था। त्रिपुरा की राजनीति पर नजर रखने वालों का कहना है कि भाजपा की जीत के पीछे एक बड़ी वजह पिछले पांच साल में तेजी से विकास कार्यों का होना था। अगरतला में के

एक वरिष्ठ पत्रकार जयंता भट्टाचार्य के अनुसार त्रिपुरा में नए रेल लिंक बने, नई सड़कें और राष्ट्रीय राजमार्ग बने। प्रधानमंत्री आवास योजना के तहत बहुत से लोगों को घर मिले। सामाजिक पेंशनों को बढ़ाया गया। शौचालय बनाए गए। बहुत सी कल्याणकारी योजनाएं चलाई गईं। इस सब का भाजपा की जीत में एक बड़ा योगदान रहा था। अगरतला एक वरिष्ट पत्रकार देबराज देब भी मानते हैं कि केंद्र सरकार की विकास से जुड़ी प्रमुख योजनाओं का भाजपा की जीत में एक बड़ा हाथ रहा है। साथ ही वे कहते हैं कि कई बड़े इंफ्रास्ट्रक्चर और कनेक्टिविटी प्रोजेक्ट्स आने की वजह से भी भाजपा को फायदा हुआ। बड़े इंफ्रास्ट्रक्चर प्रोजेक्ट्स में देबराज देब फेनी नदी पर बने भारत-बांग्ला मैत्री ब्रिज और दक्षिण त्रिपुरा के बांग्लादेश से लगते छोर पर सबरूम में बनाए जा रहे इंटीग्रेटेड चेक पोस्ट का ज़िक्र करते हैं। साथ ही वे अगरतला और बांग्लादेश के अखौरा के बीच शुरू होने जा रहे रेल लिंक प्रोजेक्ट को भी गिनाते हैं। देबराज देब कहते हैं कि इन सब इंफ्रास्ट्रक्चर प्रोजेक्ट्स की वजह से त्रिपुरा को एक बिजनेस हब बनाने की कोशिश की जा रही है। भाजपा के राज में अब तो ये भी कहा जा रहा है कि आने वाले समय में त्रिपुरा गुवाहाटी के बाद दक्षिण पूर्व एशिया का प्रवेश द्वार बन सकता है। वे यह भी कहते हैं कि 2014 में केंद्र में भाजपा की सरकार आने के बाद से ही त्रिपुरा में कनेक्टिविटी के क्षेत्र में काफी बदलाव आए हैं, चाहे वो ब्रॉडगेज रेल कनेक्टिविटी की बात हो या त्रिपुरा में नवीनतम सुविधाओं से लैस त्रिपुरा के नए एयरपोर्ट टर्मिनल की। देब बताते हैं कि घर, पानी, कनेक्टिविटी, व्यापार, रोजगार जैसे मुद्दों पर काफी काम हुआ है भाजपा के शासन में। भाजपा का भी मानना है कि इन मुद्दों पर काम करने का फल उसे मिला है। 2023 के चुनावों में भाजपा का सीधा मुकाबला लेफ़्ट और कांग्रेस के गठबंधन से था। पिछले चुनावों में कांग्रेस एक भी सीट नहीं जीत पाई थी। इस बार पार्टी को तीन सीटों पर जीत मिली थी। लेकिन सीपीएम की सीटों की संख्या पिछले चुनावों में जीती 16 सीटों से घट कर इस बार 11 सीटों पर आ गई थी। जानकारों का कहना है कि त्रिपुरा की राजनीति के इतिहास में जाएं तो ये साफ है कि लेफ़्ट और कांग्रेस के बीच एक लंबे अरसे तक तनाव और हिंसा का माहौल रहा है। दोनों ही पार्टियां अतीत में एक दूसरे पर हिंसा, राजनीतिक अपराध और हत्या के आरोप लगाती रही हैं। देबराज देब कहते हैं, "उन हिंसक घटनाओं की यादें जनता के जहन में अब भी ज़िंदा हैं और इन दो प्रतिद्वंद्वियों के ठीक चुनाव से पहले एक साथ आ जाने के बाद जो दोनों पार्टियों को एक-दूसरे के वोट ट्रांसफर होने की उम्मीद थी, वो शायद नहीं हुआ। "जानकारों की मानें तो कांग्रेस को शायद लेफ़्ट के साथ गठबंधन करने का थोड़ा फायदा हुआ, लेकिन लेफ़्ट को इस गठबंधन से कोई खास लाभ नहीं मिला। देबराज देब कहते हैं कि लेफ़्ट और कांग्रेस की केमिस्ट्री के न चलने की वजह से भाजपा का जीतना और आसान हो गया था। पुरानी मार को भूल कर अब एत्रिपुरा में बताया जाता है कि 72 साल के चुनावी इतिहास में पहली बार लेफ्ट पार्टियां और कांग्रेस भाजपा से मुकाबला करने के लिए कोई लोकसभा चुनाव मिलकर लड़ रहे हैं। हालांकि दोनों पारंपरिक प्रतिद्वंद्वियों ने पिछले साल के विधानसभा चुनाव में संयुक्त रूप से सत्तारूढ़ पार्टी को चुनौती दी थी। हाई प्रोफाइल त्रिपुरा पश्चिम लोकसभा सीट पर मुख्य मुकाबला भाजपा उम्मीदवार तथा त्रिपुरा के पूर्व मुख्यमंत्री बिप्लब कुमार देब और राज्य कांग्रेस अध्यक्ष आशीष कुमार साहा के बीच होगा, जो इंडिया गठबंधन के साझा उम्मीदवार हैं। दरअसल, कांग्रेस अध्यक्ष साहा और मौजूदा कांग्रेस विधायक सुदीप रॉय बर्मन ने मार्च 2018 में भाजपा के टिकट पर राज्य विधानसभा के लिए चुने जाने के बाद फरवरी 2022 में पार्टी छोड़ दी। सीपीएम के नेतृत्व वाले लेफ्ट फ्रंट को 25 साल बाद अपमानजनक हार देकर भाजपा पहली बार त्रिपुरा में सत्ता में आई। पिछले साल के विधानसभा चुनावों में, साहा और बर्मन ने भाजपा के खिलाफ कांग्रेस के उम्मीदवार के रूप में चुनाव लड़ा था, लेकिन साहा हार गये, जबकि बर्मन ने अपनी सीट बरकरार रखी। देब, जिन्होंने 14 मई 2022 को भाजपा के केंद्रीय नेताओं के निर्देश पर मुख्यमंत्री पद से इस्तीफा दे दिया था, ने मई 2019 में लंबे आंतरिक कलह के बाद बर्मन को अपने मंत्रिपरिषद से हटा दिया था। बता दें कि वाम मोर्चा 1952 से हर चुनाव कांग्रेस के खिलाफ लड़ रहा है। कांग्रेस आखिरी बार 1988 में वाम दलों को हराकर त्रिपुरा में सत्ता में आई थी। पिछले साल के विधानसभा चुनावों में, लेप्ट फ्रंट ने, जिसने कांग्रेस के साथ सीट-बंटवारे की व्यवस्था में विधानसभा चुनाव लड़ा था। त्रिपुरा की 2 लोकसभा सीटों, त्रिपुरा पश्चिम और त्रिपुरा पूर्व में से चुनावी फोकस हमेशा त्रिपुरा पश्चिम लोकसभा सीट पर है, जिसे 1952 से सीपीएम ने 11 बार जीता था। कांग्रेस ने इस सीट पर 4 बार 1957, 1967, 1989 और 1991 के लोकसभा चुनावों में जीत हासिल की। इंडिजिनस पीपुल्स फ्रंट ऑफ त्रिपुरा के साथ गठबंधन में 2018 में भाजपा के सत्ता में आने के बाद इखढ उम्मीदवार और केंद्रीय मंत्री प्रतिमा भौमिक ने 2019 में पहली बार त्रिपुरा पश्चिम लोकसभा सीट जीती। इस बार भाजपा ने भौमिक को हटाकर देब को मैदान में उतारा, जो वर्तमान में राज्यसभा सदस्य हैं। गौरतलब है कि त्रिपुरा की चुनावी राजनीति में आदिवासी और अनुसूचित जाति समुदाय के मतदाता महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। कुल 60 विधानसभा सीटों में से 30-30 सीटें त्रिपुरा पश्चिम और त्रिपुरा पूर्व लोकसभा सीटों में आती हैं। इनमें से 20 सीटें आदिवासियों के लिए और 10 सीटें अनुसूचित जाति समुदाय के लिए आरक्षित हैं। त्रिपुरा पश्चिम लोकसभा सीट में आने वाले 30 विधानसभा क्षेत्रों में से 7 आदिवासियों के लिए और 5 अनुसूचित जाति के लिए आरक्षित हैं। सियासी एक्सपर्ट शेखर दत्ता ने कहा कि सीपीएम सहित लेफ्ट पार्टियां के आदिवासियों और एस सी समुदाय के बीच बड़े पैमाने पर वोटर बेस में गिरावट के कारण 2018 के बाद से लगातार चुनावों में उनकी हार हुई है। दत्ता ने बताया, ह्यसंगठनात्मक गिरावट के अलावा, नेतृत्व संकट और सत्ता विरोधी कारक अभी भी जारी हैं क्योंकि लेफ्ट फ्रंट 1978 से 1988 और फिर 1993-2018 तक त्रिपुरा में सत्ता में था। नए चेहरों के साथ, उन्हें भाजपा की चुनौती का सामना करने के लिए आदिवासियों और गैर-आदिवासियों दोनों के बीच संगठन का पुनर्निर्माण करना होगा। पुराने 10 साल के चुनावी इतिहास को देखते हुए नहीं लगता कि इंडिया गठबंधन कुछ सफलता प्राप्त कर पाएगी।

https://t.me/AllNewsPaperPaid

संपादकीय

बाबा रामदेव को कोर्ट का झटका

भ्रामक विज्ञापन देकर लोगों को अपनी आयुर्वेदिक दवाओं को लेकर भ्रमित करने के मामले में पतंजलि द्वारा सुप्रीम कोर्ट में हलफनामा दायर कर बिना शर्त माफी मांगना बाबा रामदेव के लिए बहुत बड़ा झटका है। इससे यह भी पता चलता है कि बाबा ने अपने योग गुरू होने तथा सत्तारूढ़ भाजपा से अपनी नजदीकियों का अनुचित फायदा अपना धंधा बढ़ाने के लिए किस हद तक जाकर किया। सुप्रीम कोर्ट ने अपनी सख्ती से पतंजलि कंपनी के भागीदार आचार्य बालकृष्ण की उस हेकड़ी को भी निकाल दिया है, जिसमें उन्होंने इंडियन मेडिकल एसोसिएशन द्वारा पतंजलि की दवाओं की प्रमाणिकता और प्रभावशीलता पर सवाल उठाने पर कहा था कि इन आरोपों का कानूनी तरीके से 'करारा' जवाब दिया जाएगा। गौरतलब है कि बीती 10 जुलाई 2022 को पतंजलि ने अंग्रेजी अखबार में एक विज्ञापन दिया था 'मिसकंसेप्शन्स स्प्रेड बाय एलोपैथी' यानी एलोपैथी द्वारा फैलाई गई गलतफहमियां। इसमें कहा गया था कि 'बीपी, शुगर, थायरॉइड और अस्थमा जैसी बीमारियों की दवाई के लिए लोग एलोपैथी पर निर्भर रहते हैं, लेकिन दुर्भाग्य से ऐसी दवाइयों से कोई फायदा होता नहीं दिखता। उल्टा स्वास्थ्य पर विपरीत प्रभाव पड़ता है। हमारा इलाज योग और आयुर्वेद पर निर्भर है और हमारी दवाइयों की कार्यक्षमता आधुनिक वैज्ञानिक तकनीक द्वारा साबित की गई है।' इस विज्ञापन पर गहरी आपत्ति जताते हुए इंडियन मेडिकल एसोसिएशन यानी (आईएमए) ने सुप्रीम कोर्ट में पतंजलि के खिलाफ भ्रामक विज्ञापन को लेकर याचिका दायर की। आईएमए का तर्क था कि हर कंपनी को अपने प्रॉडक्ट्स का प्रचार करने का हक है, लेकिन पतंजलि के दावे 'ड्रग्स एंड अदर मैजिक रेमेडीज एक्ट 1954' और 'कंज्यूमर प्रोटेक्शन एक्ट 2019' का सीधा उल्लंघन करते हैं। आईएमए ने एलोपैथी और आधुनिक चिकित्सा प्रणाली (मॉडर्न सिस्टम ऑफ मेडिसिन) के बारे में फैलाई जा रहीं गलत सूचनाओं पर चिंता जताई। याचिका में कहा गया कि पतंजलि के भ्रामक विज्ञापन एलोपैथी की निंदा करते हैं और कई बीमारियों के इलाज के बारे में झूठे दावे करते हैं। आईएमए ने यह आरोप भी लगाए कि पतंजलि ने कोविड की वैक्सीन के बारे में अफवाह फैलाई, जिससे लोगों में वैक्सीन लगवाने को लेकर डर पैदा हो गया। आईएमए इसको लेकर सुप्रीम कोर्ट गई। उसने बाबा रामदेव द्वारा एलोपैथी और एलोपैथी पद्धति के डॉक्टरों के कथित अपमान वाली टिप्पणी के लिए रामदेव को छह पन्ने का मानहानि नोटिस भेजकर 15 दिन के अंदर उनसे माफी मांगने को कहा। और ऐसा नहीं करने पर एसोसिएशन ने योग गुरु से हर्जाने के तौर पर 1 हजार करोड़ रुपये मांगा था। कोर्ट में याचिका दाखिल होने के बाद सर्वोच्च न्यायालय की न्यायमूर्ति हिमा कोहली और न्यायमूर्ति अहसानुद्दीन अमानुल्लाह की पीठ ने कंपनी और बालकृष्ण को नोटिस जारी किए। लेकिन दोनों ने कोर्ट के नोटिसों का जवाब नहीं दिया। इससे नाराज अदालत ने दोनों को चेतावनी दी कि उनके खिलाफ अदालत की अवमानना की कार्रवाई की क्यों न की जाए? कोर्ट ने दोनों यानी बाबा रामदेव और आचार्य बालकृष्ण को 2 अप्रैल को अदालत में व्यक्तिगत रूप से पेश होने का निर्देश दिया था। ऐसे में दोनों के पास माफी मांगने के अलावा कोई चारा नहीं बचा था। जहां तक बाबा रामदेव की माफी मांगने की बात है तो वो पहले भी दो बार ऐसा कर चुके हैं। बाबा खुद को आयुर्वेदाचार्य भी बताते हैं। आयुर्वेदिक दवाएं बेचकर पतंजलि कंपनी ने करोड़ों रू. की कमाई की है। लेकिन इन दवाओं की प्रमाणिकता का कोई ठोस आधार नहीं मिलता। हालांकि उनकी दवाइयां बहुत बड़े पैमाने पर बिकती हैं। बाबा को अपनी दवाओं का प्रचार करने का हक है, लेकिन प्रयोग सिद्ध और वैज्ञानिक पद्धति से इलाज करने वाली ऐलोपैथी की निंदा का कोई अधिकार नहीं है।

लोस चुनाव का मुद्दा बना शक्ति के विनाशक और उपासक

मोदी देवी दुर्गा के उपासक हैं। अतएव इस शब्द को गंभीरता से लेते हुए उन्होंने तेलंगाना के जगतियाल में एक सभा में महिलाओं को संबोधित करते हुए कहा कि 'आगामी लोकसभा चुनाव में लड़ाई शक्ति के विनाशकों और शक्ति के उपासकों के बीच है। मेरे लिए हर मां-बेटी शक्ति स्वरूपा है। मैं आपकी (महिलाओं) शक्ति के रूप में पूजा करता हूं। भारत मां का पुजारी हूं। मैं अपनी शक्ति रूपा सभी बहन-बेटियों का पुजारी हूं। जिन लोगों ने अपने घोषणा-पत्र में शक्ति को समाप्त करने के लिए कहा है, मैं इस चुनौती को स्वीकार करता हूं, मैं शक्ति स्वरूपा माता व बहनों के लिए जान की बाजी लगा दूंगा। अपना जीवन खपा दूंगा। 'उन्होंने आगे कहा कि 'पूरा देश शक्ति की आराधना करता है और उनकी सरकार ने तो चंद्रयान की सफलता को भी शिव-शक्ति स्थल नाम दिया है और ये लोग विनाश का बिगुल फूंक रहे है।

प्रमोद भार्गव

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी विपक्ष के नेता द्वारा दिए बयान को पकड़कर मुद्दा बनाने में सिद्धहस्त हैं। वैसे तो राजग के पक्ष में राम लहर पूरे देश में छाई हुई है। कांग्रेस और अन्य विपक्षी दलों द्वारा राम मंदिर में रामलला की मूर्ति की प्राण प्रतिष्ठा का आमंत्रण ठुकराना पहले से ही एक मुद्दा बना हुआ है। अब राहुल गांधी ने एक बार फिर गलत बयानी करके मोदी को एक बड़ा मुद्दा शक्ति की देवी दुर्गा बनाम भारत की आधी आबादी के रूप में स्त्री-शक्ति के विरोध स्वरूप बैठे-ठाले दे दिया है। दरअसल राहुल ने मोदी पर प्रहार करने के नजरिए से भारत जोड़ों न्याय यात्रा के समापन के अवसर पर मुंबई में बोल दिया कि 'हिंदू धर्म में एक 'शक्ति' शब्द होता है और हम शक्ति से लड़ रहे हैं।' यह सही है कि राहुल अपनी पूरी ताकत और आक्रामकता के साथ मोदी से लड़ रहे हैं। विपक्ष के प्रमुख नेता होने के नाते उनकी मोदी से राजनीतिक लड़ाई उचित है। लेकिन हिंदू धर्म की देवी दुर्गा के प्रतीक शब्द शक्ति अब न केवल उन्हें, बल्कि कांग्रेस और समूचे विपक्ष पर भारी पड़ने जा रहा है। वैसे भी इसी चुनाव समर के दौरान अप्रैल माह में चैत्र नवरात्र आरंभ होकर 9 दिन बाद समाप्त होंगे।

मोदी देवी दुर्गा के उपासक हैं। अतएव इस शब्द को गंभीरता से लेते हुए उन्होंने तेलंगाना के जगतियाल में एक सभा में महिलाओं को संबोधित करते हुए कहा कि 'आगामी लोकसभा चुनाव में लड़ाई शक्ति के विनाशकों और शक्ति के उपासकों के बीच है। मेरे लिए हर मां-बेटी शक्ति स्वरूपा है। मैं आपकी (महिलाओं) शक्ति के रूप में पूजा करता हूं। भारत मां का पुजारी हूं। मैं अपनी शक्ति रूपा सभी बहन-बेटियों का पुजारी हूं। जिन लोगों ने अपने घोषणा-पत्र में शक्ति को समाप्त करने के लिए कहा है, मैं इस चुनौती को स्वीकार करता हूं, मैं शक्ति स्वरूपा माता व बहनों के लिए जान की बाजी लगा दूंगा। अपना जीवन खपा दूंगा। 'उन्होंने आगे कहा कि 'पूरा देश शक्ति की आराधना करता है और उनकी सरकार ने तो चंद्रयान की सफलता को भी शिव-शक्ति स्थल नाम दिया है और ये लोग विनाश का बिगुल फूंक रहे है।' प्रधानमंत्री ने यहां विपक्षी गठबंधन इंडिया के घटक दल शिवसेना (उद्धव बालासाहेब ठाकरे) पर बिना नाम लिए निशाना साधते हुए कहा कि मुंबई के शिवाजी

पार्क में शक्ति के विनाश का ऐलान हुआ है, ऐसे में बालासाहेब ठाकरे की आत्मा को कितना दुख पहुंचा होगा? यह वह भूमि है जहां का बच्चा-बच्चा जन्म से जय भवानी, जय शिवाजी का जयकारा लगाता है।

यह पहली बार नहीं है, जब सोनिया और राहुल गांधी समेत अन्य कांग्रेसी नेताओं के बयान अर्थ का अनर्थ कर देने की पृष्ठभूमि रच रहे हैं। सोनिया ने 2007 में गुजरात विधानसभा चुनाव के दौरान नरेंद्र मोदी को 'मौत का सौदागर' कहा था। इस दौरान मोदी गुजरात के मुख्यमंत्री थे। मोदी ने इसका जवाब कड़े लहजे में देते हुए कहा था कि 'मौत के सौदागर वो हैं, जो संसद पर हमला करने वालों को फांसी की सजा से बचा रहे हैं।' सोनिया के इस बयान से कांग्रेस को भारी नुकसान उठाना पड़ा और भाजपा सरकार बनाने में सफल रही। इस चुनाव में भाजपा को 182 सीटों वाली गुजरात विधानसभा में 117 सीटें मिली थीं। कांग्रेस केवल 59 सीटें जीत पाई थीं। 2014 के आम चुनाव में कांग्रेस नेता मणिशंकर अय्यर ने कह दिया था कि 'मोदी कांग्रेस दफ्तर के बाहर चाय बेचें।' मोदी ने इस बयान का हवाला देते हुए मुद्दा बनाया कि यह भारतीय संविधान और लोकतंत्र की खासियत है कि एक चाय बेचने वाला मुख्यमंत्री बन सकता है और प्रधानमंत्री का चुनाव लड़ सकता है। इसी चुनाव में राहुल गांधी ने मोदी पर जहर की खेती करने का आरोप लगाया था। इस बयान को मोदी और भाजपा ने ऐसा कारगर हथियार बनाया कि कांग्रेस को जबरदस्त मुंह की खानी पड़ गई थी। भाजपा पूर्ण बहुमत के साथ 278 सीटों पर जीत मिली और वह पहली बार केंद्रीय सत्ता में आई। कांग्रेस महज 44 सीटों पर सिमट गई थी। परिणामरूवरूप उसने संसद में विपक्ष का नेता बनने का संवैधानिक अधिकार भी खो दिया था।

2017 में मणिशंकर अय्यर ने मोदी को 'नीच इंसान' कहने की बड़ी भूल कर दी थी। मोदी ने एक जनसभा में इसका उत्तर देते हुए कहा कि 'आपने हमें नीच कहा, निचली जाति का कहा, ये नतीजे दिखाएंगे कि गुजरात के बेटे को ऐसा कहना कितना भारी पड़ेगा। इस बयान के बाद कांग्रेस को भारी नुकसान उठाना पड़ा था। कांग्रेस यहां सत्ता परिवर्तन के करीब पहुंच गई थी, लेकिन अटक गई। राहुल ने 2019 की एक चुनावी रैली में मोदी को राफेल लड़ाकू विमान सौदे को घोटाले का जुम्मेबार ठहराते हुए चैकीदार चोर कह दिया था। इसी तरह 2022 में गुजरात चुनाव के दौरान कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे ने विवादित बयान देते हुए मोदी को अनेक चेहरों वाला रावण कह दिया था। इस बयान का दुष्परिणाम भी कांग्रेस को हार के रूप में झेलना पड़ा था। पाकिस्तान आश्रित आतंकवादियों पर की गई सर्जिकल स्ट्राइक के बाद राहुल ने इस स्ट्राइक के प्रमाण तो मांगे ही, खून की दलाली करने का बयान भी दे डाला। जो कांग्रेस पर भारी पड़ा था। बावजूद राहुल समेत कांग्रेसी नेता है कि कई बार मुंह की खाने के बाद भी अनर्गल बयान देने से बाज नहीं आ रहे हैं।

अब शक्तिरूपा दुर्गा के विनाश का बयान देकर राहुल ने फिर बड़ी भूल की हैं। मोदी ने अपने बयान में इस शक्ति का रूपांतरण भारत की महिला शक्ति में कर दिया है। लोकसभा चुनाव में वे इसे भुनाएंगे। मध्यप्रदेश, राजस्थान और छत्तीसगढ़ में भाजपा की चुनाव में जीत का कारण यही महिला शक्ति थी। दैवीय शक्तियां वे हैं, जो मनुष्य के अनुकूल हैं, अर्थात् फलदायी हैं और आसुरी शक्तियां वे हैं, जो मनुष्य के प्रतिकूल हैं, अर्थात् उसे हानि पहुंचाने में समर्थ हैं। मार्कंडेय पुराण में प्रकाश और ऊर्जा के बारे में कहा गया है कि 'देवों ने एक प्रकाश पुंज देखा, जो एक विशाल पर्वत के समान प्रदीप्त था। उसकी लपटों से समूचा आकाश भर गया था। फिर यह प्रकाश पुंज एक पिंड में बदलता चला गया, जो एक शरीर के रूप में अस्तित्व में आया। फिर वह कालांतर में एक स्त्री के शरीर के रूप में आश्चर्यजनक ढंग से परिवर्तित हो गया। इससे प्रस्फुटित हो रही किरणों ने तीनों लोकों को आलोकित कर दिया। प्रकाश और ऊर्जा का यही समन्वित रूप आदि शक्ति या आदि मां कहलाई। छान्दोग्य उपनिषद में कहा गया है कि 'अव्यक्त से उत्पन्न तीन तत्वों अग्नि, जल और पृथ्वी के तीन रंग सारी वस्तुओं में अंतर्निहित हैं। अतः यही सृष्टि और जीवन के मूल तत्व हैं। अतएव प्रकृति की यही ऊर्जा जीवन के जन्म और उसकी गति का मुख्य आधार है।' लीला भाव में यही दुर्गा चार पैरों के राजा सिंह की पीठ से टिककर खड़ी हैं। सिंह भी क्रूर शक्ति का प्रतीक है, लेकिन उसे वश में कर लिया गया है। देवी अराजक महिश के शरीर को रौंद रही हैं। उनका एक पैर असुर के सिर पर है। महिश शक्तिशाली तो है, लेकिन उसका आचरण क्रूर है, इसलिए वह ब्रह्मांड के आध्यात्मिक आधार के अनुकूल नहीं है। यही कारण है कि दुर्गा-शक्ति महिश को पददलित कर उसके अहंकार को चूर कर देती हैं। महिश के प्राण हरने के बाद कात्यायनी महिषासुर-मर्दिनी कहलाती हैं। इसीलिए इन्हें ब्रह्मांड की जननी कहा गया, जो पृथ्वी का प्रतीक है। ब्रह्मांड के अस्तित्व का यही बीज है। प्रकृति के इन्हीं रूपों का मानवीकरण करते हुए ऋग्वेद में कहा है कि 'ज्ञान के सभी विषय और क्रियाकलाप अंततः देवी के रूप हैं।' सृष्टि सृजन के आरंभ से लेकर अब तक नारियां मां का रूप हैं। नारी के मातृत्व की डिंब में स्थित इस ऊर्जा को प्रजापति ब्रह्मा ने स्वयं विभाजित करके मानव के अस्तित्व को सृजित किया था। वह नारी ही है, जो अपनी ऊर्जा से मनुष्य को मनुष्यतत्व प्रदान करती है। साफ है, भगवती दुर्गा मूल प्रकृति का वह रूप हैं, जिसमें समस्त शक्तियां समाहित हैं। अतएव शक्ति के विनाश से जुड़ा यह बयान कांग्रेस को पहले से भी ज्यादा महंगा पड़ सकता है।

अध्यात्म

यह सच है कि वह सच है ?

राजा जनक एक बार गरमी के दिनों में दोपहर भोजन के बाद विश्राम कर रहे थे। सेवक पँखे से उन्हें हवा कर रहे थे और दरवाजे पर सुरक्षा में प्रहरी तैनात। जनक ने एक स्वप्न देखा- वह शत्रु राजा से युद्ध करते हुए अपना राज्य और समस्त सम्पत्ति हार गए। पीछा करती शत्रु सेना से अपनी जान बचाने के लिए जंगल की ओर भाग निकले। काफी दूर तक भागते रहे, शाम हो गई। भूख-प्यास से व्याकुल उन्होंने देखा एक जगह कोई दानदाता भिखारियों को उबले हुए चावल बाँट रहा है। जनक भी उस पंक्ति में लग गए। जब उनकी बारी आई तो चावल बाँटने वाले ने कहा पात्र तो लाओ जिसमें भोजन डाल सकें। कटोरे के अभाव में वे बिना चावल लिए पंक्ति से निकल आए। थके-हारे हताश जनक उस चूल्हे के पास बैठ गये जहाँ भोजन बन रहा था। एक नौकर बर्तन साफ कर रहा था, उसने दया करके बर्तन से खुरच कर कुछ बचे-खुचे पानी मिले हुए चावल खाने को दिए। इतने में वहाँ दो सांड़ लड़ते हुए आए और उनकी भिड़ंत में उनका पात्र गिरकर टूट गया। जनक अपने दुर्भाग्य से इतने दुखी हुए कि दहाड़ मारकर रो पड़े। इतने में स्वप्न समाप्त हो गया जनक की आँख खुल गई। लेकिन इस स्वप्न ने उनके मन को बहुत गहरे तक हिला दिया। उन्होंने मंत्रियों को बुलाया और अपना स्वप्न बताने के बाद यह प्रश्न पूछा- यह सच है कि वह सच है ? मेरी स्वप्न की वह दशा या आज की स्थिति कि मैं राजा हूँ ? सबने अपने-अपने तरीके से जनक को संतुष्ट करना चाहा। लेकिन राजा का हृदय बेचैन रहा। उन्होंने सोचा हो सकता है मैं हताश और भूखा बैठा हूँ और स्वप्न में राजा बना हुआ हूँ। कौन कह सकता है कि वास्तविक रूप क्या है ? ऐसी ही दशा में राजा के दरबार में ऋषि अष्टावक्र का आगमन हुआ। अष्टावक्र ने अद्भुत वचन कहे- ''राजन! आप किसी एक दशा को सत्य मानने की कोशिश कर रहे हैं ? क्या आपने यह सोचा कि कहीं दोनों ही स्थितियाँ स्वप्न हों।'' जनक और अष्टावक्र के बीच हुए इस संवाद को अद्वैत दर्शन का सर्वश्रेष्ठ ज्ञान माना जाता है। उनका संवाद 'अष्टावक्र महागीता' में संकलित है। आदि शंकराचार्य ने अपने गुरु गौड़पाद से प्राप्त परंपरागत ज्ञान को पुनः प्रस्थापित किया। इस सदी में रामकृष्ण परमहंस और रमण महर्षि इसके जीवंत उदाहरण हैं।

अष्टावक्र के वचन : बंधन तब होता है जब मन में पदार्थ के प्रति कामना है, किसी वस्तु के अभाव में शोक करता है। किसी के प्रति अस्वीकार का भाव और किसी के प्रति अनुरक्त है, किसी भाव को लेकर प्रसन्न होता है या किसी भाव के लिए दुखी होता है। मुक्ति तब होती है जब मन में कोई आकांक्षा नहीं है, न किसी के खोने का दुःख है, न किसी पदार्थ के बारे में शोक करता है, न ही किसी का निषेध करता है, या किसी वस्तु का आग्रह है, और किसी चीज के बारे में प्रसन्न नहीं होता है।

साबरमती आश्रम के बहाने गाँधी विरासत का संरक्षण

आज जब उसी साबरमती आश्रम के सिकुड़ते हुए देखते हैं तो मन में दुःख होते हैं. अंतस में आक्रोश भी आते हैं कि हमारे भारतीय समाज ने उस महान भूमि को सिकोड़ कर रख दिया और अब वह आश्रम केवल पांच एकड़ में सिमट गया. इसलिए साबरमती आश्रम और कोचरब आश्रम की विरासत को बचाने के प्रयास हो रहे हैं। आज साबरमती आश्रम का जो विस्तार संभव हो रहा है, उसमें यहाँ रहने वाले परिवारों की बहुत बड़ी भूमिका रही है. इनके सहयोग के कारण ही आश्रम की 55 एकड़ जमीन वापस मिल पाई है.

प्रो. कन्हैया त्रिपाठी

महात्मा गाँधी ने गुजरात में साबरमती आश्रम की स्थापना की थी. साउथ अफ्रीका से लौटने के बाद गांधी जी ने अपना पहला आश्रम कोचरब आश्रम में ही बनाया था. कोचरब आश्रम से साबरमती आश्रम की गाँधी की यात्रा भी अद्भुत है. गांधी जी यहाँ चरखा, लोहार की कार्पेंटरी का काम यह सब काम कोचरब आश्रम की अपनी विशेषता थी. दो साल तक कोचरब आश्रम में रहने के बाद फिर गांधी जी साबरमती आश्रम में में रहने लगे. वह दौर कुछ विशेष था जहाँ गाँधी आश्रम व्यवस्था में अपने संकल्प के अनुसार नवीन जीवन पद्धति के निर्माण के लिए भारत में प्रयोग कर रहे थे. वह एक ऐसी सभ्यता की खोज में थे जो वैयकल्पिक सभ्यता की सर्जक हो. गाँधी जी सन 1948 में इस जहाँ से चले गए लेकिन उनके आश्रम अभी विद्यमान हैं. प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी ने साबरमती आश्रम में कहा कि सत्य और अहिंसा के आदर्श हों, राष्ट्र आराधना का संकल्प हों, गरीब और वंचित की सेवा में नारायण सेवा देखने का भाव हो, साबरमती आश्रम, बापू के इन मूल्यों को आज भी सजीव किए हुए है. आश्रम अपने स्वभाव नहीं छोड़ते. वे जब-जब कोई देखने आता है, उसे लुभाते हैं. उसमें एक नई चेतना के साथ जीने का आह्वान करते हैं कुछ अपनी आश्रम संस्कृति में. साबरमती आश्रम, आश्रम संस्कृति का ऐतिहासिक धरोहर है. आश्रम पहले 120 एकड़ में फैला था लेकिन अब 5 एकड़ में ही है. प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी इसकी ऐतिहासिक यात्रा को सुरक्षित करना चाहते हैं. उन्होंने यह आह्वान भी किया कि जिस आश्रम ने इतिहास का सृजन किया हो, जिस आश्रम की देश की आजादी में इतनी बड़ी भूमिका रही हो, जिसे देखने के लिए, जानने के लिए, अनुभव करने के लिए दुनिया भर से लोग यहां आते हों, उस साबरमती आश्रम को सहेज कर रखना हम सभी 140 करोड़ भारतीयों का दायित्व है.

वस्तुतः हमारे देश में गाँधी ने सेवाग्राम में अपने अंतिम समय को बिताया लेकिन कोचरब के बाद साबरमती एक ऐसा पड़ाव है गाँधी के लिए जो ऐतिहासिक भी है और भारत की पुनर्रचना के लिए महत्वपूर्ण भी है. गाँधी ने साबरमती आश्रम से ही अनेक आंदोलनों की शुरुआत की और देश में औपनिवेशिक सत्ता को हिलाकर रख दिया. एक आश्रम से ब्रिटेन की अंग्रेजी हुकूमत को चूलें हिला देने का गुर किसी से सीखना हो तो उसके सबसे बड़े उदहारण के रूप में हमारे राष्ट्रपिता महात्मा गांधी हैं. वे यहाँ से प्रतिरोध की संस्कृति बुनते हैं. वे यहाँ से प्रतिरोध की शंखनाद करते हैं और जीवन जीते हैं बिलकुल सरल, विनम्र और अहिंसक. यद्यपि गाँधी का टॉलस्टॉय आश्रम अहिंसक आन्दोलन और सत्याग्रह की बुनियाद डाल चुका था लेकिन गाँधी ने साबरमती और सेवाग्राम के माध्यम से जो देश व्यापी जन-सहमती, जन-स्वीकृति, जन-जन की लहर खड़ी किए उसने हमारे देश की आज़ादी में अशीम सहयोग प्रदान किया. आज जब उसी साबरमती आश्रम के सिकुड़ते हुए देखते हैं तो मन में दुःख होते हैं. अंतस में आक्रोश भी आते हैं कि हमारे भारतीय समाज ने उस महान भूमि को सिकोड़ कर रख दिया और अब वह आश्रम केवल पांच एकड़ में सिमट गया. इसलिए साबरमती आश्रम और कोचरब आश्रम की विरासत को बचाने के प्रयास हो रहे हैं। आज साबरमती आश्रम का जो विस्तार संभव हो रहा है, उसमें यहाँ रहने वाले परिवारों की बहुत बड़ी भूमिका रही है. इनके सहयोग के कारण ही आश्रम की 55 एकड़ जमीन वापस मिल पाई है. अब हमारा प्रयास है कि आश्रम की सभी पुरानी इमारतों को उनकी मूल स्थिति में संरक्षित किया जाए. आने वाले समय में ये पुनर्निर्माण देश और विदेश के लोगों में एक नया आकर्षण पैदा करेगा. प्रायः पुरानी चीजों से निजात लेकर नए निर्माण में कंक्रीट, बालू और दूसरे आकर्षण को प्रधानमंत्री ने एक तरह से नकार कर उस आश्रम की साभ्यतिक सौन्दर्य को बनाए रखने पर बल दिया, यह निशचय ही अभिनंदनीय है. वह इस बात से चिंतित भी हैं कि आजादी के बाद जो सरकारें रहीं, उनमें देश की ऐसी विरासत को बचाने की ना सोच थी और ना ही राजनीतिक इच्छाशक्ति थी. एक तो विदेशी दृष्टि से भारत को देखने की आदत थी और दूसरी, तुष्टिकरण की मजबूरी थी जिसकी वजह से भारत की विरासत, हमारी महान धरोहर ऐसे ही तबाह होती गई. अतिक्रमण, अस्वच्छता, अव्यवस्था, इन सभी ने हमारी विरासतों को घेर लिया था. वह भारत की जनता को समय समय पर आश्वस्त करते हुए उन पुरानी रीति-नीति को भी नकारते हैं जो हमारे देश को शर्मिंदा की हैं.

चाहे जो भी हो अब शर्मिंदा होने की आवश्यकता नहीं है देश को क्योंकि भारत के प्रधान मंत्री कहते हैं पूरे आत्मविश्वास के साथ कि हमने काशी, अयोध्या को संजोया है. हमने स्वतंत्रता संग्राम से जुड़ी विरासत के लिए, राष्ट्रीय प्रेरणा से जुड़े अपने स्थानों के लिए भी विकास का अभियान चलाया है. हमने, दिल्ली में आपने देखा होगा एक राजपथ हुआ करता था. हमने राजपथ को कर्तव्यपथ के रूप में विकसित करने का काम किया. हमने कर्तव्यपथ पर नेताजी सुभाषचंद्र बोस की प्रतिमा स्थापित की. हमने अंडमान निकोबार द्वीप समूह में स्वतंत्रता संग्राम और नेताजी से जुड़े स्थानों का विकास किया, उन्हें सही पहचान भी दी. हमने बाबासाहेब आंबेडकर से जुड़े स्थानों का भी पंच तीर्थ के रूप में विकास किया. यहाँ एकता नगर में सरदार वल्लभ भाई पटेल की स्टेचू ऑफ यूनिटी आज पूरी दुनिया के लिए आकर्षण का केंद्र बन गई है. आज लाखों लोग सरदार पटेल जी को नमन करने वहां जाते हैं. आप दांडी देखेंगे, वो कितना बदल गया है, हजारों लोग दांडी जाते हैं आज. अब साबरमती आश्रम का विकास और विस्तार इस दिशा में एक और बड़ा कदम है. यह आत्मविश्वास और उसके मूर्तरूप पाने की कहानी इस चीज से आश्वस्त करती है कि प्रधान मंत्री ने जो किया उसे ही कहा और जो कह रहे हैं वह होगा भी. भविष्य में इस आश्रम में आने वाले लोग, यहां आकर ये समझ पाएंगे कि साबरमती के संत ने कैसे चरखे की ताकत से देश के जन-मन को आंदोलित कर दिया था. देश के जन-मन को चेतनवंत बना दिया था. और जो आज़ादी के अनेक प्रवाह चल रहे थे, उस प्रवाह को गति देने का काम कर दिया था. सदियों की गुलामी के कारण जो देश हताशा का शिकार हो रहा था, उसमें बापू ने जन आंदोलन खड़ा करके एक नई आशा भरी थी, नया विश्वास भरा था.बापू का ग्राम स्वराज, आत्मनिर्भर भारत, स्वेदशी की भावना, प्राकृतिक खेती, खादी, ग्रामीण अर्थव्यवस्था, से विकसित भारत के संकल्प की नई रोशनी में भीगे प्रधान मंत्री ने बहुत ही सुंदर शब्दों में कहा कि मुझे विश्वास है, बापू के आदर्श, उनसे जुड़े ये प्रेरणातीर्थ राष्ट्र निर्माण की हमारी यात्रा में और अधिक मार्गदर्शन करते रहेंगे, हमें नई ताकत देते रहेंगे, इसे समझने की आवश्यकता है. यह उस ताकत को समझने की कोशिश है जिससे लोग मुक्त होकर अब नए कलेवर में अपनी जिंदगी को ढालने की कोशिश में लोग लगे हुए हैं. ऐसे समय में साबरमती आश्रम के बहाने गाँधी की विरासत को सहेजने के हिमायती प्रधान मंत्री ने बड़ा संदेश दिया है जो निश्चय ही भारत के लिए एक नई गाथा बनेगी. आवश्यकता इस बात की है कि समय की इस पुकार को हर स्तर पर सुना व आचरण में लाया जाए.

आज का कार्टून

राशिफल

मेष
परिवार के साथ समय अवश्य बितायें। स्वास्थ्य का ध्यान रखें। किसी काम को करने में जल्दबाज़ी न करें। स्वास्थ्य का ध्यान रखें।

वृषभ
आज आपको व्यापार में लाभ हो सकता है। जीवनसाथी के साथ आपके सम्बन्ध मधुर होंगे। आपका आत्मविश्वास पहले से मजबूत होगा।

मिथुन
जॉब में आपको प्रमोशन मिलने के योग बन रहे हैं। प्रशासन से जुड़े लोगों को उच्च पद प्राप्त हो सकता है। फाइनेन्स को लेकर स्थिति मजबूत होगी।

कर्क
अपनी कार्यशैली में सार्थक बदलाव ला सकते हैं। ऑफिस में आपको सीनियर्स का सहयोग प्राप्त होगा। शिक्षा में आ रही परेशानी दूर होगी।

सिंह
आज का दिन आपको काफी परेशान कर सकता है। अपने काम पर आपको काफी ध्यान देने की आवश्यकता है। लम्बी दूरी की यात्रा आज न करें।

कन्या
आय के नये स्रोत बन सकते हैं। सम्पत्ति प्राप्त होने के योग बन रहे हैं। शरीर को आराम देने की आवश्यकता है। लोग आपकी बातों से काफी प्रभावित रहेंगे।

तुला
कार्यक्षेत्र की परेशानियाँ दूर होंगी। आपको पिता के साथ अच्छे सम्बन्ध रखने चाहिये। अपने काम की गुणवत्ता पर सुधार करना पड़ेगा।

वृश्चिक
ऐसे लोगों से दूर रहें जो आपको गलत सलाह देते हैं। धार्मिक यात्राओं की प्लानिंग कर सकते हैं। नौकरी बदलना चाह रहे हैं तो यह दिन बहुत ही अच्छा है।

धनु
नयी सम्पत्ति में बड़ा निवेश करने से आपको बचना चाहिये। कार्यक्षेत्र में आपके काम के बिगड़ने कि सम्भावना है। आपके विचारों में नकारात्मकता जगह ले सकती है।

मकर
आज कार्यों को तय समय पर पूरा कर लेंगे। जीवनसाथी काफी आकर्षित रहेगा। अविवाहित जातकों का विवाह तय हो सकता है। व्यापार में बड़ा लाभ होने से आपके आत्मविश्वास में वृद्धि होगी।

कुंभ
पुराना कर्ज चुकाने के लिये दिन अनुकूल है। रक्त विकार उत्पन्न हो सकते हैं। धैर्यवान होकर अपना काम करें फिलहाल ज्यादा अपेक्षा रखना उचित नहीं है।

मीन
कार्यक्षेत्र में आपके रचनात्मक विचारों और सुझाव की प्रशन्सा होगी। शाम के समय परिजनों की किसी बात पर आपको गुस्सा आ सकता है।

https://t.me/AllNewsPaperPaid

दैनिक इबादत
सम्पादकीय

सामाजिक समरसता का पर्व होली

होली शायद दुनिया का एकमात्र ऐसा त्यौहार है,जो सामुदायिक बहुलता की समरसता से जुड़ा है। इस पर्व में मेल-मिलाप का जो आत्मीय भाव अंतर्मन से उमड़ता है, वह सांप्रदायिक अतिवाद और जातीय जड़ता को भी ध्वस्त करता है। फलस्वरूप किसी भी जाति का व्यक्ति उच्च जाति के व्यक्ति के चेहरे पर पर गुलाल मल सकता है और आर्थिक रूप से विपन्न व्यक्ति भी धनकुबेर के भाल पर गुलाल का टीका लगा सकता है। यही एक ऐसा पर्व है,जब दफ्तर का चपरासी भी उच्चाधिकारी के सिर पर रंग उड़ेलने का अधिकार अनायास पा लेता है और अधिकारी भी अपने कार्यालय के सबसे छोटे कर्मचारी को गुलाल लगाते हुए, आत्मीय भाव से गले लगा लेता है। वाकई रंग छिड़कने का यह होली पर्व उन तमाम जाति व वर्गीय वर्जनाओं को तोड़ता है, जो मानव समुदायों के बीच असमानता बढ़ाती हैं। गोया, इस त्यौहार की उपादेयता को और व्यापक बनाने की जरूरत है। होली का पर्व हिरण्यकश्यप की बहन होलिका के दहन की घटना से जुड़ा है। ऐसी लोक-प्रचलन में मान्यता है कि होलिका को आग में न जलने का वरदान प्राप्त था। अलबत्ता उसके पास ऐसी कोई वैज्ञानिक तकनीक थी, जिसे प्रयोग में लाकर वह अग्नि में प्रवेश करने के बावजूद नहीं जलती थी। चूंकि होली को बुराई पर अच्छाई के पर्व के रूप में माना जाता है, इसलिए जब वह अपने भतीजे प्रहलाद को विकृत व क्रूर मानसिकता के चलते गोद में लेकर प्रज्वलित आग में प्रविष्ट हुई तो खुद तो जलकर खाक हो गई, किंतु प्रहलाद बच गए। उसे मिला वरदान सार्थक सिद्ध नहीं हुआ, क्योंकि वह असत्य और अनाचार की आसुरी शक्ति में बदल गई थी। वैदिक युग में होली को 'नवान्नेष्टि यज्ञ' कहा गया है। क्योंकि यह वह समय होता है, जब खेतों से पका अनाज काटकर घरों में लाया जाता है। जलती होली में जौ और गेहूं की बालियां तथा चने के बूटे भूनकर प्रसाद के रूप में बांटे जाते हैं। होली में भी बालियां होम की जाती हैं। यह लोक-विधान अन्न के परिपक्व और आहार के योग्य हो जाने का प्रमण है। इसलिए वेदों में इसे 'नवान्नेष्टि यज्ञ' कहा गया है। मसलन अनाज के नए आस्वाद का आगमन। यह नवोन्मेष खेती-किसानी की संपन्नता का द्योतक है,जो ग्रामीण परिवेश में अभी भी विद्यमान है। गोया यह उत्सवधर्मिता आहार और पोषण का भी प्रतीक है, जो धरती और अन्न के सनातन मूल्यों को एकमेव करता है। होली का सांस्कृतिक महत्व 'मधु' अर्थात 'मदन' से भी जुड़ा है। संस्कृत और हिंदी साहित्य में इस मदनोत्सव को वसंत ऋतु का प्रेमाख्यान माना गया है। वसंत यानी शीत और ग्रीष्म ऋतुओं की संधि-वेला। अर्थात एक ऋतु का प्रस्थान और दूसरी ऋतु का आगमन। यह वेला एक ऐसे प्राकृतिक परिवेश को रचती है, जो मधुमय होता है,रसमय होता है। मधु का ऋगवेद में खूब उल्लेख है। क्योंकि इसका अर्थ है,संचय से जुटाई गई मिठास। मधु-मक्खियां अनेक प्रकार के पुष्पों से मधु जुटाकर एक स्थान पर संग्रह करने का काम करती हैं। जीवन का मधु संचय का यही संघर्ष जीवन को मधुमयी बनाने का काम करता है। होली के सांस्कृतिक महत्व का दर्शन नैतिक, धार्मिक और सामाजिक आदर्शों को मिलाकर एकरूपता गढ़ने का काम करता है। तय है, होली के पर्व की विलक्षण्ता में कृषि, समाज, अर्थ और सद्भाव के आयाम एकरूप हैं। इसलिए यही एक ऐसा अद्वितीय पर्व है, जो सृजन के बहुआयामों से जुड़ा होने के साथ-साथ सामुदायिक बहुलता के आयाम से भी जुड़ा है।

खुशहाल समाजों की रैंकिंग से भारत भ्रमित न हो

खुशी एवं प्रसन्नता हम सबकी जरूरत है,लेकिन प्रश्न है कि क्या हमारी यह जरूरत पूरी हो पा रही है,ताजा आकलन से तो यही सिद्ध हो रहा है कि हम खुशी एवं प्रसन्नता के मामले में लगातार पिछड़ रहे हैं। विडम्बनापूर्ण स्थिति तो यह है कि हमारा भारतीय समाज एवं यहां के लोग अपने ज्यादातर पड़ोसी समाजों से कम खुश है। खुशहाली की रिसर्च में खुशहाली को राष्ट्रीय स्तर पर उपलब्ध भौतिक सुविधाओं से मापा जाता है।

- ललित गर्ग -

143 देशों के विश्व खुशहाली रैंकिंग में भारत 126वें स्थान पर रहा है जिसमें फिनलैंड ने लगातार छठीं बार सर्वोच्च स्थान पाया है। यह बात भी गौर करने की है कि भारत में दस अंकों का सुधार हुआ है, फिर भी भारत के लिये आश्चर्यकारी एवं विचारणीय है। फिनलैंड को दुनिया का सबसे खुशहाल देश करार दिया गया है, पर गौर कीजिए, वहां आबादी सिर्फ 56 लाख है। मतलब, इस देश की चुनौतियां बहुत कम हैं। धार्मिक वातावरण ऐसा है कि विद्वेष की ज्यादा गुंजाइश नहीं है। छोटा राष्ट्र होने की वजह से सरकारों के सामने समस्याएं कम है। अतः फिनलैंड की स्थिति अच्छी है, पर उसकी तुलना भारत जैसे 140 करोड़ आबादी वाले देश से कैसे हो सकती है? यह बहस का विषय है।

संयुक्त राष्ट्र द्वारा प्रायोजित इस वार्षिक रिपोर्ट में नॉर्डिक देशों ने 10 सबसे खुशहाल देशों में अपना स्थान बनाए रखा है। फिनलैंड के बाद डेनमार्क, आइसलैंड, स्वीडन ने शीर्ष स्थान हासिल किए हैं। इन सभी देशों में समाज समस्यामुक्त एवं काफी सुलझा हुआ है और विविधता वहां ज्यादा समस्याएं पैदा नहीं करती है। देखने की बात है कि खुशहाली की रिपोर्ट विगत एक दशक से भी ज्यादा समय से जारी हो रही है और पहली बार अमेरिका और जर्मनी जैसे विकसित देशों को शीर्ष 20 देशों में स्थान नहीं मिला है। पाकिस्तान पिछली बार 108वें स्थान पर था, इस बार 122वें पर आ गया है, पर तब भी भारत से चार पायदान ऊपर है। जिस देश में खूब महंगाई है, जहां की जनता त्राहिमाम-त्राहिमाम कर रही है, जहां धार्मिक उन्माद व्यापक है, जो आतंकवाद को प्रोत्साहन देता है, वह देश भी अगर हमसे खुशहाल है, तो ऐसी खुशहाली मापने के तरीकों पर विचार होना चाहिए। ऐसा प्रतीत होता है कि खुशहाली को तय करने के पैमानों में अवश्य ही कोई पूर्वाग्रह या आग्रह है। क्योंकि ऋण की गुहार लगाता एवं त्राहिमाम करता पाकिस्तान को 122वें स्थान की रैंकिंग देना विडंबनापूर्ण एवं विसंगतिमय हैं, जो इस सूचकांक के महत्व को घटा देती हैं। जो दुनिया के खुश देशों के आकलन में त्रुटि की पूरी संभावनाएं होने को दर्शाता है। अनेक सवाल खड़े करती है यह खुशहाल देशों की रैंकिंग। यह विडंबना ही है कि धार्मिक पाबंदियों वाला कुवैत दुनिया का 13वां सबसे खुशहाल देश है। ऐसी अतार्किक सूची देखकर अफसोस एवं आश्चर्य भी होता है और चिंता भी होती है। क्या खुशहाली को धार्मिक और सामाजिक स्वतंत्रता के आधार पर ज्यादा नहीं देखा जाना चाहिए? खुशहाली को केवल आर्थिक समृद्धि और संसाधनों की अधिकता में घटाकर देखना सही नहीं है। खुशहाली की रैंकिंग को देखकर भारत को कतई भ्रमित नहीं होना चाहिए। एक और विडंबना देखिए, निर्मम युद्ध लड़ रहा इजरायल पांचवां सबसे खुशहाल देश है! पीड़ित फलस्तीन 103वें स्थान पर है, तो रूस 72वें स्थान पर और यूक्रेन 105वें स्थान पर। ये देश युद्ध के बावजूद भारत से ज्यादा खुशहाल हैं। पता नहीं, इस रैंकिंग पर कितना भरोसा किया जाए? जहां तक भारत का सवाल है, खुशहाली के सभी पैमानों पर हमें अपने प्रयास बढ़ाने की जरूरत है। एक बड़ा सवाल यह भी है कि हम प्रसन्न समाजों की सूची में क्यों नहीं अव्वल आ पा रहे हैं? यह सवाल सत्ता के शीर्ष नेतृत्व को आत्ममंथन करने का अवसर दे रहा है, वहीं नीति-निर्माताओं को भी सोचना होगा कि कहां समाज निर्माण में त्रुटि हो रही है कि हम लगातार खुशहाल देशों की सूची में सम्मानजनक स्थान नहीं बना पा रहे हैं। भारत सरकार इस रिपोर्ट को कितनी गंभीरता से लेती है, यह देखने वाली बात है।

भारत में खुशहाली को बढ़ावा देने में यहां की जनसंख्या सबसे बड़ी बाधा है। भारत के अल्पसंख्यक समुदायों की कट्टरता एवं संकीर्णता भी खुशहाल समाज निर्माण की बड़ी बाधा है। भारत जैसे विशाल और असमान विकास वाले देश के लिए 126वां स्थान कितना मायने रखता है? भारत में कई तरह का भारत है, एक अमीर व खुशहाल भारत है, तो उसमें एक गरीब भारत भी है। गरीब भारत भी विकास कर रहा है, लेकिन आबादी इतनी ज्यादा है कि अभी देश को समग्रता में खुशहाल देशों में अव्वल स्थान बनाने में वक्त लगेगा। सबसे खुशहाल देश फिनलैंड की आबादी महज 56 लाख है, उसके लिए विकास आसान है। भारत के मुम्बई, दिल्ली, कोलकता शहर में इसमें कहीं ज्यादा लोग रहते हैं। वैसे भी खुशी महसूस करना व्यक्ति के खुद की सोच पर निर्भर करता है। इसलिये प्रश्न है कि हमारी खुशी का पैमाना क्या हो? अधिकतर लोग छोटी-छोटी जरूरतें पूरी होने को ही खुशी मान लेते हैं। इससे उन्हें उस पल तो संतुष्टि मिल जाती है, उनका मन खिल जाता है। लेकिन यह खुशी ज्यादा देर नहीं टिकती, स्थायी नहीं होती। इच्छा पूरी होने के साथ ही उनकी खुशी भी कमजोर होने लगती है। खुशी एवं प्रसन्नता हम सबकी जरूरत है, लेकिन प्रश्न है कि क्या हमारी यह जरूरत पूरी हो पा रही है, ताजा आकलन से तो यही सिद्ध हो रहा है कि हम खुशी एवं प्रसन्नता के मामले में लगातार पिछड़ रहे हैं। विडम्बनापूर्ण स्थिति तो यह है कि हमारा भारतीय समाज एवं यहां के लोग अपने ज्यादातर पड़ोसी समाजों से कम खुश है। खुशहाली की रिसर्च में खुशहाली को राष्ट्रीय स्तर पर उपलब्ध भौतिक सुविधाओं से मापा जाता है। लेकिन खुशियां का दायरा इतना छोटा तो नहीं होता। विकास की सार्थकता इस बात में है कि देश का आम नागरिक खुद को संतुष्ट और आशावान महसूस करे। स्वयं आर्थिक दृष्टि से सुदृढ़ बने, कम-से-कम कानूनी एवं प्रशासनिक औपचारिकताओं का सामना करना पड़े, तभी वह खुशहाल हो सकेगा। डिजिलीकरण, आर्थिक नवाचार जैसी घटनाओं ने आम आदमी को अधिक परेशानी एवं समस्याएं दी है। समस्याओं के घनघोर अंधेरों के बीच उनका चेहरा बुझा-बुझा है। न कुछ उनमें जोश है न होश। अपने ही विचारों में खोए-खोए, निष्क्रिय और खाली-खाली से, निराश और नकारात्मक तथा ऊर्जा विहीन। हाँ सचमुच ऐसे लोग पूरी नींद लेने के बावजूद सुबह उठने पर खुद को थका महसूस करते हैं, कार्य के प्रति उनमें उत्साह नहीं होता। ऊर्जा का स्तर उनमें गिरावट पर होता है। क्यों होता है ऐसा? कभी महसूस किया आपने? यह स्थितियां एक असंतुलित एवं अराजक समाज व्यवस्था की निष्पत्ति है। ऐसे माहौल में व्यक्ति एवं समाज खुशहाल नहीं हो सकता। खुशहाली सूचकांक के लिए अर्थशास्त्रियों एवं विभिन्न क्षेत्रों के विशेषज्ञों की एक टीम व्यापक स्तर पर शोध करती है, यह टीम समाज में सुशासन, प्रति व्यक्ति आय, स्वास्थ्य, जीवित रहने की उम्र, भरोसा, सामाजिक सहयोग, परोपकार, दान भावना, स्वतंत्रता और उदारता आदि को आधार बनाती है। रिपोर्ट का मकसद विभिन्न देशों के शासकों को आईना दिखाना है कि उनकी नीतियां लोगों की जिंदगी खुशहाल बनाने में कोई भूमिका निभा रही हैं या नहीं? हमारा शीर्ष नेतृत्व आजादी के बाद से ही निरन्तर आदर्शवाद और अच्छाई का झूठ रचते हुए सच्चे आदर्शवाद के प्रकट होने की असंभव कामना करता रहा है, इसी से जीवन की समस्याएं सघन होती गयी है, नकारात्मकता के इस व्यूह को तोड़ते हुए प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने खुशी एवं प्रसन्न जीवन के लक्ष्य को आकार दिया है, उन्होंने गहन अंधेरों से देश की जनता को बाहर निकालते हुए विगत एक दशक में अपने कामकाज एवं नीतियों से एक आशावाद उकेरा है। भारत में युवा सबसे अधिक खुश हैं, जबकि निम्न मध्यमवर्गीय लोग सबसे कम खुश हैं। भारत में अधिक उम्र उच्च जीवन संतुष्टि से जुड़ी है और यह उन दावों के विपरीत है कि उम्र और जीवन संतुष्टि के बीच सकारात्मक संबंध केवल उच्च आय वाले देशों में मौजूद है। भारतीयों के बीच संतोष के भाव, प्रति व्यक्ति सकल घरेलू उत्पाद, सामाजिक सहयोग, जीवन प्रत्याशा, स्वतंत्रता, उदारता के भाव में विस्तार जारी रहना चाहिए। भारत का वर्तमान खुशहाली वाला समाज बनने को तत्पर है, भले ही दुनिया की कुछ खुशहाली रैंकिंग तय करने वाली एजेंसियां इससे असहमत हो।

(लेखक, पत्रकार, स्तंभकार ई-253, सरस्वती कुंज अपार्टमेंट 25 आई. पी. एक्सटेंशन, पटपड़गंज, दिल्ली-92)

होली के त्योहार को बनाएं खुशनुमा और यादगार

- योगेश कुमार गोयल

रंगों के त्यौहार होली पर भला कौन ऐसा व्यक्ति होगा, जो आपसी द्वेषभाव भुलाकर रंग-बिरंगे रंगों में रंग जाना नहीं चाहेगा। लोग एक-दूसरे पर रंग डालकर, गुलाल लगाकर अपनी खुशी का इजहार करते हैं लेकिन होली के दिन प्राकृतिक रंगों के बजाय चटकीले रासायनिक रंगों का बढ़ता उपयोग चिन्ता का सबब बनने लगा है। ज्यादातर रंग अम्लीय अथवा क्षारीय होते हैं, जो व्यावसायिक उद्देश्य से ही तैयार किए जाते हैं और थोड़ी सी मात्रा में पानी में मिलाने पर भी बहुत चटक रंग देते हैं, जिससे होली पर इनका उपयोग अंधाधुंध होता है। ऐसे रंगों का त्वचा पर बहुत हानिकारक प्रभाव पड़ता है। शुष्क त्वचा वाले लोगों और खासकर महिलाओं व बच्चों की कोमल त्वचा पर तो इन रंगों का सर्वाधिक दुष्प्रभाव पड़ता है। अम्ल तथा क्षार के प्रभाव से त्वचा पर खुजलाहट होने लगती है और कुछ समय बाद छोटे-छोटे सफेद रंग के दाने त्वचा पर उभरने शुरू हो जाते हैं, जिनमें मवाद भरा होता है। यदि तुरंत इसका सही उपचार कर लिया जाए तो ठीक, अन्यथा त्वचा संबंधी गंभीर बीमारियां भी पनप सकती हैं। घटिया क्वालिटी के बाजारू रंगों से एलर्जी, चर्म रोग, जलन, आंखों को नुकसान, सिरदर्द इत्यादि विभिन्न हानियां हो सकती हैं। कई बार होली पर बरती जाने वाली छोटी-छोटी असावधानियां भी जिंदगी भर का दर्द दे जाती हैं। इसलिए अगर आप अपनी होली को खुशनुमा और यादगार बनाना चाहते हैं तो इन बातों पर अवश्य ध्यान दें -

- रासायनिक रंगों के स्थान पर प्राकृतिक रंगों का ही इस्तेमाल करें। ज्यादातर बाजारू रंगों में इंजन ऑयल तथा विभिन्न घातक केमिकल मिले होते हैं, जिनका त्वचा पर बहुत बुरा प्रभाव पड़ता है।
- होली खेलने से पहले चेहरे तथा पूरे शरीर पर सरसों अथवा नारियल का तेल या कोल्ड क्रीम अथवा सनस्क्रीन क्रीम लगा लें ताकि रोमछिद्र बंद हो जाएं और रंग त्वचा के ऊपरी हिस्से पर ही रह जाएं। इससे होली खेलने के बाद त्वचा से रंग छुड़ाने में भी आसानी होगी।
- होली खेलने से पहले बालों में अच्छी तरह तेल लगा लें और नाखूनों पर कैस्टर ऑयल लगाएं ताकि बाद में रंग आसानी से छुड़ाया जा सके।
- होली खेलने जाने से पूर्व आंखों में गुलाब जल डालें और जहां तक संभव हो, आंखों पर चश्मा लगाकर होली खेलें ताकि रंगों का असर आंखों पर न पड़ सके।
- महिलाएं होली खेलते समय मोटे तथा ढ़ीले-ढ़ाले सूती तथा गहरे रंग के वस्त्र पहनें। सफेद अथवा हल्के रंग के वस्त्र पानी में भीगकर शरीर से चिपक जाते हैं, जिससे सार्वजनिक रूप से महिला को शर्मिन्दगी का सामना करना पड़ सकता है।
- आप ऐसा व्यवहार हरगिज न करें, जिससे आपके रिश्तेदारों, पति के मित्रों अथवा अन्य पुरूषों को आपसे छेड़छाड़ करने का अनुचित अवसर मिल सके। अपना व्यवहार पूर्णतः संयमित, शालीन और मर्यादित रखें और सामने वाले की कोई गलत हरकत देखने के बाद भी उस पर मौन साधकर उसे और आगे बढ़ने के लिए प्रोत्साहित न करें।
- होली खेलने के तुरंत बाद स्नान अवश्य करें लेकिन त्वचा से रंग छुड़ाने के लिए कपड़े धोने के साबुन, मिट्टी के तेल, चूने के पानी, दही, हल्दी इत्यादि का प्रयोग हानिकारक है। चेहरे पर लगे गुलाल को सूखे कपड़े से अच्छी तरह पोंछ लें और रंग लगा हो तो नारियल तेल में रूई डुबोकर अथवा क्लींजिंग मिल्क से हल्के हाथ से त्वचा पर लगा रंग साफ करें। रंग छुड़ाने के लिए नहाने के पानी में थोड़ी सी फिटकरी डाल लें और ठंडे पानी से ही स्नान करें। गर्म पानी से रंग और भी पक्के हो जाते हैं। डिटर्जेंट सोप के बजाय नहाने के अच्छी क्वालिटी के साबुन का उपयोग किया जा सकता है।
- स्नान के बाद भी त्वचा पर खुजली या जलन महसूस हो तो गुलाब जल में ग्लिसरीन मिलाकर लगाएं।
- बालों से रंग छुड़ाने के लिए बालों को शैम्पू करें।
- स्नान के बाद आंखों में गुलाब जल डालें। होली खेलते समय यदि आंखों में रंग चला जाए अथवा आंखों में जलन महसूस हो तो आंखों को मलें नहीं बल्कि तुरंत नेत्र विशेषज्ञ से मिलें।

(लेखक 34 वर्षों से पत्रकारिता में निरंतर सक्रिय वरिष्ठ पत्रकार हैं)

कोई झूमे भंग के नशे में कोई फाग के गीतों में

- बाल मुकुन्द ओझा

रंग, उमंग, हास-परिहास और उल्लास का पर्व होली मुख्य रूप से रंगों का त्योहार है। इस दिन लोग एकजुट होकर खुशियां मनाते हैं और एक दूसरे को प्यार और स्नेह के रंगों में डुबोकर अपना उल्लास जाहिर करते हैं। हास-परिहास होली की आत्मा है। हँसना आदमी की सेहत के लिए लाभप्रद माना गया है। रंगों के त्योहार होली का सबको आतुरता से इंतजार रहता है। फाल्गुन महीना मौज़ मस्ती, उत्साह, मन की चंचलता से भरा होता है। फागुन का महीना आते ही जैसे समूचा वातावरण रंगीन हो जाता है। फाल्गुन मास की पूर्णिमा को यह त्योहार मनाया जाता है। होली का नाम सुनते ही हमारी रग रग फड़कने लग जाती है। यह एक ऐसा अनूठा पर्व है जब लोग अपने गिले-शिकवे खत्म कर पुराने दुश्मन को भी गले लगा लेते हैं। होली उन लोगों को भी हँसी-ठिठोली करने पर मजबूर कर देती है, जो धीर - गंभीर भाव-भंगिमा में रहते हैं। इस दिन बच्चे से बुजुर्ग तक सभी उम्र के लोग एक दूसरे पर रंग, अबीर-गुलाल आदि से होली खेलते हैं। ढोल मजीरे बजा कर होली के गीत गाये जाते हैं और घर-घर जा कर लोगों को गुलाल व रंग लगाया जाता है। सचमुच होली में रंग है, प्यार है, उमंग है तरंग, आनंद और उल्लास है। यह त्योहार जाति-भेद, छोटा - बड़ा अमीरी-गरीबी से ऊपर उठकर मित्रता और भाई-चारे का सन्देश देता है। इस दिन से फाग और धमार का गाना प्रारंभ हो जाता है। खेतों में सरसों खिल उठती है। बाग-बगीचों में फूलों की आकर्षक छटा छा जाती है। पेड़-पौधे, पशु-पक्षी और मनुष्य सब उल्लास से परिपूर्ण हो जाते हैं। होली का यह रंग बिरंगा त्योहार मुख्य रूप से दो दिन मनाया जाता है। पहले दिन होलिका दहन होती है। दूसरे दिन धुलेंडी मनाते है। इस दिन एक दूसरे पर रंग, अबीर-गुलाल लगाते हैं. साथ ही ढोल बजा कर होली के गीत गाते हैं। देश हमारा इतना रंगीला है कि इसका हर रंग पूरी दुनिया पर चढ़ गया है। बहुत से स्थानों पर लोग ढोलक-झाँझ-मंजीरों की धुन के साथ नृत्य-संगीत व रंगों में डूब जाते हैं। इस दिन जगह-जगह टोलियाँ रंग-बिरंगे कपड़े पहने नाचती-गाती दिखाई पड़ती हैं। बच्चे पिचकारियों से रंग छोड़कर अपना मनोरंजन करते हैं। सारा समाज होली के रंग में रंगकर एक-सा बन जाता है। धुलेंडी के दिन एक दूसरे को रंगने और गाने-बजाने का दौर दोपहर तक चलता है। इसके बाद स्नान कर नए कपड़े पहन कर शाम को लोग एक दूसरे के घर मिलने जाते हैं।

बच्चे और युवा अपने बड़ों के पांव छूते है। एक दूसरे के गले मिलते हैं और मिठाइयाँ खिलाते हैं। यह विशुद्ध मौज-मस्ती व मनोरंजन का सांस्कृतिक त्योहार है। रंगों का त्योहार होली समस्त त्योहारों का शिरोमणि है। यह हर्षोल्लास, उमंग, उत्साह, एकता, प्रेम और मेल-मिलाप का अनुपम उपहार लेकर आता है। आनन्द एवं उल्लास की अनुपम छटा बिखेरते इस अनूठे, चमत्कारी पर्व पर सभी प्रसन्न मुद्रा में दिखाई देते हैं। चारों ओर रंग, अबीर, गुलाल की फुहार उड़ती दिखाई देती है। बच्चे से बुजुर्ग तक इसे बड़े ही उत्साह व सौहार्दपूर्वक मनाते हैं। एक-दूसरे से मेल-जोल बढ़ाने और विभिन्नता में एकता का माना जाता है। होली में मस्ती, ठिठोली और हुड़दंग देखने को मिलता है। होली की याद या चर्चा आते ही मन मे हर्ष और मस्ती का सँचार हो जाता है,रगँ अबीर गुलाल और फाग से हम सराबोर हो जाते है। फाल्गुन के आगमन से ही मन मे अल्हडता चली आती है। जाने कहाँ गई वो होली जो कभी मेरे शहर को रंगों से सराबोर कर देती थी, मस्त कर देती थी और उसे पहचान देती थी, लेकिन अब न तो वह होली रही, न ही वह शोखी,मस्ती,रंगत एवं जिन्दादिली रही। आज होली बेनूर हो गई है।

(वरिष्ठ लेखक एवं पत्रकार, मॉडल टाउन, मालवीय नगर, जयपुर)

कविता

फाल्गुन

फाल्गुन आया और तुम आएं
तुम्हें देख कर मेरे अधरों पे
मुस्कान कभी आएं,
कभी जाएं।
मध्यम गति से पुरवा भीं,
अब खेतों में चलती जाएं
पोखर का पानी भी
अब शांत पड़ा है।
बीच खेतों में खड़ा बिजूका भी
जैसे अपनी जिद पर अड़ा है।
प्रकृति ने भी ओढ़ ली है।
हरी पीली चुनरिया
जैसे अब तैयार हों।
अपने परिणय (विवाह) के लिए
इधर हरिए तोते और सोन चिरैया भी
मंगल गीत गाने लगें है।
वो बैलों के गलें में पड़े घुंघरू भीं
धीमी धीमी आवाज में बज रहे हैं।
जैसे बज रही हो तोरण द्वार पर
हमारे विवाह की शहनाई।
फाल्गुन आया और तुम
आएं..

डॉ. कांता मीना
(शिक्षाविद् एवं साहित्यकार)

कौन नहीं जानता कि दिल्ली में आम आदमी पार्टी की सरकार के सत्ता पर आते ही अराजकता फैलने लगी। हद तो तब हो गई जब दिल्ली सरकार के मुख्य सचिव अंशु प्रकाश की मुख्यमंत्री ने अपने निजी सहायकों द्वारा सरकारी आवास पर मध्य रात्रि में बुलवाकर गुंडे किस्म के हिस्ट्रीशीटर विधायकों द्वारा लात- घूँसों से पिटाई करवा दी। ऐसा शर्मनाक वाकया पहले कभी नहीं सुना था कि मुख्यमंत्री के आवास पर किसी आला आई.ए.एस अफसर को सत्तासीन दल के विधायकों द्वारा घूँसों और लातों से पीटा जाए।

केजरीवाल अब अपने को करें निर्दोष साबित

- आर.के. सिन्हा

अरविंद केजरीवाल को प्रवर्तन निदेशालय ने दिल्ली की शराब नीति के जिन आरोपों के आधार पर पूछताछ के बाद गिरफ्तार कर लिया है, उन्हें साबित होना भर ही बाकी है। हां, पर इतना तो कहना ही होगा कि दिल्ली के मुख्यमंत्री के रूप में अरविंद केजरीवाल अपने को बार-बार अराजक मुख्यमंत्री के रूप में साबित करने में सफल रहे । वे लगातार केन्द्र सरकार और सरकारी अफसरों से लड़ने-झगड़ने के मूड में ही रहे। उन्होंने एक तरह से मान लिया कि देश भर में वह ही अकेले ईमानदार है। बाकी दुनिया भ्रष्ट है। उनसे उम्मीद थी कि वह देश में साफ-सुथरी और वैकल्पिक राजनीति का रास्ता साफ करेंगे। पर उन्होंने अपने खोखले दावों-वादों और कारनामों से देश को निराश ही किया। दिल्ली में अरविंद केजरीवाल से पहले भी सरकारें और मुख्यमंत्री रहे,पर कभी कोई ऐसा मसला नहीं आया। दिल्ली की चुनी हुई सरकारों और केन्द्र सरकारों के बीच मजे मजे में विकास के सब काम होते रहे। पर सन 2015 में दिल्ली में आम आदमी पार्टी (आप) की सरकार बनते ही हंगामा शुरू हो गया और होने लगा रोज का क्लेश, तकरार और आरोप- प्रत्यारोप का दौर । दिल्ली में 1951-52 में पहली बार विधानसभा के चुनाव हुए। दिल्ली के पहले मुख्यमंत्री कांग्रेस के चौधरी ब्रह्म प्रकाश बने। चौधरी साहब 1952 से 1955 तक मुख्यमंत्री रहे। उन्हें कांग्रेस ने हटाया और यहां का दूसरा मुख्यमंत्री बनाया सरदार गुरुमुख निहाल सिंह मुसाफिर को। गुस्ताखी माफ,कम ही दिल्ली वालों को पता है कि दिल्ली के दूसरे मुख्यमनंत्री एक सिख सज्जन थे। वे पहली दिल्ली विधानसभा के स्पीकर थे। वे 13 फरवरी, 1955 से 31 अक्टूबर, 1956 तक दिल्ली के मुख्यमंत्री रहे। उसके बाद विधानसभा का अस्तित्व समाप्त कर दिया गया। मुसाफिर जी ने मुख्यमंत्री पद पर रहते हुए दिल्ली में शराब की दुकानें खोलने नहीं दीं। अजीब इत्तेफाक है कि अरविंद केजरीवाल दिल्ली में शराब की दुकानें खोलने में सदैव अति उत्साह दिखाते रहे। उन्हें दिल्ली की शराब नीति में कथित घोटाले के कारण ही गिरफ्तार किया गया है। मुसाफिर जी के पुत्र एस. निहाल सिंह प्रख्यात पत्रकार थे। वे इंडियन एक्सप्रेस अखबार के संपादक भी रहे। बहरहाल, 1966 में दिल्ली को एक महानगर परिषद मिली। यह विधान सभा के समकक्ष थी। महानगर परिषद का मुखिया मुखिया कार्यकारी पार्षद होता था। इस पद पर विजय कुमार मल्होत्रा और जग प्रवेश चंद्र जैसे नेता भी रहे। दिल्ली को 1991 में फिर से संविधान में संशोधन करके राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र घोषित किया गया। नए परिसीमन के तहत विधानसभा का 1993 में चुनाव हुआ। उसके बाद मदनलाल खुराना, साहिब सिंह वर्मा, सुषमा स्वराज और शीला दीक्षित जैसे दिग्गज नेता दिल्ली के मुख्यमंत्री रहे। इस दौरान केन्द्र में कभी कांग्रेस के नेतृत्व वाली और कभी भाजपा के नेतृत्व वाली सरकारें काम करती रहीं। पर दिल्ली में विकास का पहिया कभी थमा नहीं। जब मदन लाल खुराना मंख्यमंत्री बने तब देश के प्रधानमंत्री पी.वी.नरसिंह राव थे। कहीं कोई दिक्कत नहीं आई । जब शीला दीक्षित मुख्यमंत्री थीं, तब प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी थे। तब भी दिल्ली का भरपूर विकास हो रहा था। कहीं कोई विवाद ही नहीं था। सारे विवाद आपसी बातचीत से हल हो रहे थे। अटल जी और शीला दीक्षित ने दिल्ली में मेट्रो रेल का विस्तार और बिजली की समस्या का स्थायी समाधान किया। यह बात अलग है कि अरविंद केजरीवाल हमेशा कहते रहे कि दिल्ली में बिजली की 24 घंटे सप्लाई उनकी वजह से मुमकिन हुई। हालांकि, उन्होंने कभी यह नहीं बताया कि दिल्ली में पेयजल संकट का वह हल क्यों नहीं कर सके। क्यों यमुना मैली ही होती रही? कैसे दिल्ली बन गई दुनिया की सबसे ज्यादा प्रदूषित राजधानी? अरविंद केजरीवाल ने इन सवालों के जवाब देने की कभी जरूरत महसूस नहीं की। अरविंद केजरीवाल को यही लगता रहा कि अखबारों में बड़े-बड़े खर्चीले विज्ञापन देकर वे अपने को महान साबित करते रहेंगे।

आप जब दिल्ली में जी.टी.रोड से आगे बढ़ते हैं, तो आपको दूर से ही भलस्वा में काला पहाड़ नजर आने लगता है। वह दिन में भी डराता है। अगर उसे पहली बार देखेंगे तो लगेगा कि मानो कोई प्राचीन किला हो। पर यह कूड़े का ढेर है। इस तरह के कूड़े के पहाड़ राजधानी में गाजीपुर तथा ओखला में भी है। भलस्वा, ओखला और गाजीपुर के इन पहाड़ों में कुछ औरत-मर्द कुछ बीनते हुए नजर आ जाते हैं। जिस राजधानी दिल्ली में हरी-भरी लुटियंस दिल्ली, नई दिल्ली, दिल्ली छावनी और दर्जनों अन्य शानदार एरिया हैं, वहां लगभग सौ एकड़ एरिया में फैले कूड़े के किले शर्मसार करते हैं। यह तीनों कूड़े के किले अरविंद केजरीवाल के तमाम दावों की कलई खोल कर रख देते हैं। इनके आसपास बेबस लोग रहते हैं। क्या कभी अरविंद केजरीवाल ने सोचा कि किस तरह से इनके पास लोग नारकीय स्थिति में रहते होंगे? इनसे हर वक्त भयंकर दुर्गंध आती रहती है। अब तो दिल्ली विधानसभा और नगर निगम में आम आदमी पार्टी की सरकारें हैं। पर यह कूडे के किले पहले की तरह से खड़े हैं या यह कहिये कि प्रतिदिन बड़े होते जा रहे हैं। यह कहना होगा कि दिल्ली नगर निगम ने कूड़े के निस्तारण और इसकी री-साइक्लिंग पर कोई ठोस कदम नहीं उठाए। क्या इन काले पहाड़ों को हटाने से मोदी सरकार ने मना किया था? राजधानी के एक एक बड़े भाग में लुटियंस दिल्ली आती है। इसमें केन्द्रीय मंत्री, सांसद, बड़े उद्योगपति वगैरह रहते हैं। इसके रख-रखाव पर मोटा बजट खर्च होता है। राजधानी के नई दिल्ली एरिया की देखभाल नई दिल्ली नगर परिषद (एनडीएमसी) करती है। यहां पर तो कमोबेश सब कुछ ठीक है। इसकी तुलना दुनिया के किसी भी शहर के हिस्से से की जा सकती है। इधर कोई कूड़े के पहाड़ भी नहीं हैं। मसला शेष दिल्ली का है। उसका हल भी मुमकिन है अगर कूड़े की-साइक्लिंग को लेकर रफ्तार से काम चले। कौन नहीं जानता कि दिल्ली में आम आदमी पार्टी की सरकार के सत्ता पर आते ही अराजकता फैलने लगी। हद तो तब हो गई जब दिल्ली सरकार के मुख्य सचिव अंशु प्रकाश की मुख्यमंत्री ने अपने निजी सहायकों द्वारा सरकारी आवास पर मध्य रात्रि में बुलवाकर गुंडे किस्म के हिस्ट्रीशीटर विधायकों द्वारा लात-घूँसों से पिटाई करवा दी। ऐसा शर्मनाक वाकया पहले कभी नहीं सुना था कि मुख्यमंत्री के आवास पर किसी आला आई.ए.एस अफसर को सत्तासीन दल के विधायकों द्वारा घूँसों और लातों से पीटा जाए। यदि कोई सरकार ही गुंडई पर उतारू हो जाये तो उससे भी तो फिर उसकी भाषा में ही तो निबटना होता है। फिलहाल तो अरविंद केजरीवाल को अपने को पाक साफ करना होगा।

(लेखक वरिष्ठ संपादक, स्तंभकार और पूर्व सांसद हैं)

उत्तर प्रदेश में लोकसभा चुनावों के सात चरणों का चक्रव्यूह पार करना नहीं होगा आसान

-अजय कुमार

उत्तर प्रदेश की 80 लोकसभा सीटों को लेकर पूरे देश मे कौतुहल दिखाई दे रहा है। लोकसभा सीटों के हिसाब से सबसे बड़े राज्य यूपी में मुकाबला त्रिकोणीय होता नजर आ रहा है। त्रिकोणीय मुकाबले में एक तरफ एनडीए के तले मोदी की ह्यसेनाह्न जीत की हुंकार भर रही है तो दूसरी ओर राहुल गांधी के अगुवाई में ह्यइंडीह्न गठबंधन ताल ठोक रहा है। दोनों गठबंधनों में बस फर्क इतना है कि जहां एनडीए की ओर से मोदी पुनः प्रधानमंत्री पद के दावेदार हैं, वहीं इंडी गठबंधन ने कौन होगा पीएम पर पत्ते नहीं खोले हैं, लेकिन लगता यही है कि यदि इंडी गठबंधन के लिये सत्ता की राह बनी तो राहुल गांधी प्रधानमंत्री पद के सबसे बड़े दावेदार होंगे। खैर, अभी किसी निष्कर्ष पर पहुंचना सही नहीं है। कौन होगा अगल प्रधानमंत्री ? यह सात चरणों के मतदान के बाद 04 जून को पता चलेगा, जब वोटों की काउंटिंग होगी। इसी लिये फिलहाल तो सात चरणों के चक्रव्यूह को भेदने के लिये ही सभी पार्टियो मैदान में ताल ठोंक रही हैं। 19 और 26 अप्रैल को प्रथम चरण एवं द्वितीय चरण का मतदान होगा। इन दोनों चरणो में पश्चिमी यूपी की 16 सीटों पर वोटिंग होगी। प्रथम चरण और दूसरे चरण के मतदान में पश्चिमी उत्तर प्रदेश की क्रमशः आठ-आठ सीटों के उम्मीदवारों के भाग्य का फैसला होगा। 07 मई को भी तीसरे चरण में दस सीटों पर मतदान होगा इसमें भी दस में से पश्चिमी यूपी की चार सीटें शामिल होंगी। इसके बाद 13 मई को चौथे, 20 मई को पांचवें, 25 मई को छठे और 01 जून को सातवें चरण का मतदान होना होगा। शुरू के तीन चरणों में जो राजनैतिक जंग पश्चिमी यूपी से शुरू होगी वह चौथे और पांचवे चरण में रूहेलखंड, अवध की सीटों पर तो छठे और सातवें चरण में पूर्वांचल में पहुंच कर समाप्त हो जायेगी। चार जून को नतीजे आयेंगे।

2024 लोकसभा चुनावों की शुरूआत पश्चिमी यूपी की आठ लोकसभा सीटों पर से होगा। पहले चरण में चुनाव के लिए आठ सीटों में से, भाजपा ने 2014 के चुनावों में सभी सीटें जीती थीं। 2014 में पार्टी ने अकेले प्रदेश भर में 71 सीटें जीतीं थीं। जबकि एनडीए गठबंधन के पास कुल 73 सीटें थीं। 2019 के चुनाव में इन सीटों पर सपा-रालोद और बसपा गठबंधन के खिलाफ लड़ाई में बीजेपी का प्रदर्शन खराब रहा। उन्होंने 8 में से केवल तीन सीटें जीतीं। ऐसे में सपा और बसपा को पूर्वांचल में कई सीटें मिलीं, जबकि बीजेपी को पूरे प्रदेश में सिर्फ 62 सीटें मिलीं थीं।

2024 का चुनाव संग्राम भी फिर पश्चिम यूपी से शुरू होगा। शुरूआत में पश्चिमी यूपी की 8 लोकसभा सीटों पर चुनाव होंगे। पिछले लोकसभा चुनाव के बाद से यहां के राजनीतिक हालात में काफी बदलाव आया है, जिसका असर चुनाव में दिख रहा है। यह चुनाव क्षेत्र में एक प्रमुख व्यक्ति रालोद नेता जयंत चौधरी की स्थिति भी तय करेगा। केंद्रीय मंत्री संजय बालियान की हैट्रिक कोशिशों की परीक्षा होगी। यह चुनाव तय करेगा कि बीजेपी नेता वरुण गांधी का राजनीतिक भविष्य क्या होगा। यह चुनाव यह भी तय करेगा कि नखतौर विधायक ओम कुमार संसद में जा सकेंगे या नहीं। यह क्षेत्र किसान और जाट नेता अजीत सिंह के प्रभाव वाला माना जाता है। चाहे आप जीतें या हारें, जीतने वाला पक्ष हमेशा सोचता है कि उसका पलड़ा भारी है। अजीत को अपनी बदनामी की भारी राजनीतिक कीमत भी चुकानी पड़ी। यह चुनाव अजीत सिंह के बिना होगा। सत्ता पक्ष और विपक्ष दोनों की ओर से जयंत चौधरी को अजीत का उत्तराधिकारी बनाने की कोशिशें अंत तक जारी रहीं। आखिरकार पूर्व प्रधानमंत्री चौधरी चरण सिंह को भारत रत्न देने की सत्ताधारी पार्टी की चाल सफल रही। पिछले चुनाव में जयंत जाट दलित मुस्लिम गठबंधन छोड़कर भारतीय जनता पार्टी में शामिल हो गए थे। यह चुनाव तय करेगा कि जयंत का फैसला कितना सही है। 2019 का लोकसभा चुनाव में जो सपा,बसपा और रालोद एक गठबंधन का हिस्सा थे,वह बिखर चुके हैं। बसपा अकेली चुनाव लड़ रही है तो रालोद ने बीजेपी का दामन थाम लिया है। इस बार पहले चरण की आठ सीटों में से चार पर सपा, तीन पर बसपा और एक पर रालोद को संघर्ष करना पड़ा। बसपा ने अपने हिस्से की तीनों सीटें (सहारनपुर, बिजनौर और नगीना) जीत लीं। सपा ने चार में से दो सीटें (मुरादाबाद और रामपुर) जीतीं। आरएलडी का खाता नहीं खुल सका। बीजेपी ने कैराना, मुजफ्फरनगर और पीलीभीत में सीटें जीती थीं। बात आजम की चर्चा के बिना पूरी नहीं हो सकती है। प्रथम चरण में ही रामपुर की संसदीय सीट के लिये मुकाबला होना है। 2019 और उसके पहले के चुनाव में कभी समाजवादी पार्टी का मुस्लिम चेहरा माने जाने वाले आजम खान की रामपुर समेत कई सीटों पर जीत तय रहती थी। पिछले पांच वर्षों में कई उतार-चढ़ाव से गुजरने के बाद, आजम खान को जेल हुई, दोषी पाया गया और विधायक के रूप में अयोग्य घोषित कर दिया गया। उपचुनाव हुआ जिसमें बीजेपी के घनश्याम लोधी सांसद बने। इस बार भी रामपुर में जेल में बंद आजम के कहने पर ही सपा चल रही है, अब नतीजे बतायेंगे क्या आजम अभी भी यहां ताकतवर हैं या फिर आजम को वोटर साइड लाइन कर चुके हैं। पहले चरण में ही बिजनौर में भी चुनाव होगा। एसपी-बीएसपी-आरएलडी गठबंधन में 2019 में बिजनौर की एक सीट बीएसपी के खाते में थी और उसके उम्मीदवार मुल्क नागर ने चुनाव जीता था। इस बार अपने चुनाव प्रचार को तेज करने के लिए रालोद ने चंदन चौहान और सपा ने यशवीर सिंह को मैदान में उतारा है। इस बार 2019 में तीनों मित्र दलों के उम्मीदवार अलग-अलग एक-दूसरे से मुकाबला करेंगे।

पश्चिमी यूपी की एक और चर्चित सीट मुजफ्फरनगर भी सुखियों में है।यहां भी 19 अप्रैल को मतदान होगा। 2019 के लोकसभा चुनाव में यहां से केंद्रीय मंत्री संजीव बालियान और आरएलडी प्रमुख अजीत सिंह एक-दूसरे पर नजरें गड़ाए हुए थे। बालियान लगातार दूसरी बार जीते। अजीत सिंह अब नहीं रहे और बदली हुई परिस्थितियों में आरएलडी और बीजेपी एक साथ हैं। ऐसे में रालोद भी इस बार बलियान में अपनी ताकत लगाएगी। सपा ने पूर्व सांसद हरेंद्र मलिक को अपना उम्मीदवार बनाया है।

पिछले चुनाव में बसपा ने महागठबंधन के जरिए सहारनपुर सीट जीती थी। बसपा के हाजी फजलुर्रहमान ने भाजपा के राघव लखनपाल को हराकर चुनाव जीता। इस बार सपा-कांग्रेस गठबंधन में यह सीट कांग्रेस के खाते में चली गई हैं। इसी प्रकार से कैराना की सीट भी कम महत्वपूर्ण नहीं है। यहां से कभी बीजेपी के दिग्गज नेता हुकुम सिंह चुनाव लड़ा करते थे। उनकी मौत के बाद 2019 के चुनाव में बीजेपी के प्रदीप कुमार चौधरी ने एसपी की तबस्सुम बेगम को हराकर जीत हासिल की। इस चुनाव में सपा ने पूर्व सांसद मनूर हसन की बेटी इकरा हसन और तबसेम बेगम को अपना उम्मीदवार बनाया है। इकरा के छोटे भाई नाहिद हसन विधायक हैं। इसी तरह से नगीना संसदीय सीट पर पिछले चुनाव में बसपा के गिरीश चंद्र ने महागठबंधन से जीत हासिल की और सांसद बने। इस बार एसपी ने रिटायर जज मनोज कुमार को मैदान में उतारा है, जबकि बीजेपी ने नहटूर से विधायक ओम कुमार को मैदान में उतारा है। इस बार दोनों पार्टियों के नए उम्मीदवार एक दूसरे को टक्कर दे रहे हैं। पीतलनगरी मुरादाबाद में सपा के हसन ने बीजेपी के कंवर सोरौश कुमार को हराकर चुनाव जीता। एसपी-कांग्रेस गठबंधन में यह सीट एसपी के हिस्से में है और बीजेपी-आरएलडी गठबंधन में यह सीट बीजेपी के हिस्से में है। यहां समाजवादी पार्टी को हराना बीजेपी के लिये आसान नहीं होगा। प्रथम चरण की एक और पीलीभीत लोकसभा सीट से पिछला चुनाव बीजेपी के वरुण गांधी ने जीता था, लेकिन कुछ दिनों बाद उनका रवैया बदल गया। अक्सर देखा गया कि वे सरकार को खुद को कटघरे में खड़ा करके सवाल उठाते थे। अबकी से यहां लड़ाई काफी रोचक होती दिख रही है।

2023 विधान सभा चुनावों में मात खाने के बाद दोबारा लोकसभा

अशोक भाटिया

आगामी लोकसभा त्रिपुरा चुनावों में 2023 विधान सभा चुनावों में मात खाने के बाद दोबारा लोकसभा चुनावों में 72 साल पुराने दुश्मनों को साथ ला दिया है ! बताया जाता है कि त्रिपुरा में इस बार लोकसभा चुनावों में दोनों ही सीटों पर कांटे की टक्कर देखने को मिल सकती है क्योंकि सूबे के 72 साल के चुनावी इतिहास में लेफ्ट और कांग्रेस साथ मिलकर चुनाव लड़ रहे हैं।2024 का चुनाव ये दल मिलकर लड़ने जा रहे है पर यदि इनका पुराना इतिहास देखें तो 2023 का चुनाव साथ लड़ने पर त्रिपुरा में दोनों दलों को कोई खास सफलता नहीं मिली थी। यदि हम त्रिपुरा का पुराना चुनावी इतिहास खंगाले तो 60 सदस्यों वाली त्रिपुरा विधानसभा में किसी भी पार्टी को सरकार बनाने के लिए कम से कम 31 सीटों की जरूरत होती है । पिछले 2023 के रिजल्ट को देखें तो भारतीय जनता पार्टी 32 सीटें जीत कर सबसे ज्यादा सीटें जीतने वाली पार्टी के रूप में उभरी थी । हालांकि, भाजपा का इस बार का प्रदर्शन साल 2018 के प्रदर्शन के मुकाबले का नहीं रहा जब पार्टी ने 36 सीटें जीती थीं। 2018 विधानसभा चुनाव की तरह अबकी बार भी भाजपा ने इंडिजेनस पीपल्स फ्रंट ऑफ त्रिपुरा (आईपीएफटी) के साथ गठबंधन कर चुनाव लड़ा था। जहां 2018 में आईपीएफटी ने 8 सीटें जीती थीं, वहीं इस बार ये पार्टी मात्र एक सीट ही जीत सकी है। इस एक सीट को मिला कर भाजपा गठबंधन की कुल 33 सीटें हो गई हैं जो सरकार बनाने के लिए काफी थी ।

सीटें घटने के साथ भाजपा के वोट-शेयर में भी कमी आई । पिछले चुनाव में भाजपा का वोट-शेयर करीब 44 फीसद रहा था। इस बार वो घट कर 39 फीसदी रह गया था ।

त्रिपुरा की राजनीति पर नजर रखने वालों का कहना है कि भाजपा की जीत के पीछे एक बड़ी वजह पिछले पांच साल में तेजी से विकास कार्यों का होना था। अगरतला में के एक वरिष्ठ पत्रकार जयंता भट्टाचार्य के अनुसार त्रिपुरा में नए रेल लिंक बने, नई सड़कें और राष्ट्रीय राजमार्ग बने। प्रधानमंत्री आवास योजना के तहत बहुत से लोगों को घर मिले। सामाजिक पेंशनों को बढ़ाया गया। शौचालय बनाए गए। बहुत सी कल्याणकारी योजनाएं चलाई गईं। इस सब का भाजपा की जीत में एक बड़ा योगदान रहा था। अगरतला एक वरिष्ठ पत्रकार देबराज देब भी मानते हैं कि केंद्र सरकार की विकास से जुड़ी प्रमुख योजनाओं का भाजपा की जीत में एक बड़ा हाथ रहा है। साथ ही वे कहते हैं कि कई बड़े इंफ्रास्ट्रक्चर और कनेक्टिविटी प्रोजेक्ट्स आने की वजह से भी भाजपा को फायदा हुआ।

बड़े इंफ्रास्ट्रक्चर प्रोजेक्ट्स में देबराज देब फेनी नदी पर बने भारत-बांग्ला मैत्री ब्रिज और दक्षिण त्रिपुरा के बांग्लादेश से लगते छोर पर सबरूम में बनाए जा रहे इंटीग्रेटेड चेक पोस्ट का ज़िक्र करते हैं। साथ ही वे अगरतला और बांग्लादेश के अखौरा के बीच शुरू होने जा रहे रेल लिंक प्रोजेक्ट को भी गिनाते हैं। देबराज देब कहते हैं कि इन सब इंफ्रास्ट्रक्चर प्रोजेक्ट्स की वजह से त्रिपुरा को एक बिजनेस हब बनाने की कोशिश की जा रही है। भाजपा के राज में अब तो ये भी कहा जा रहा है कि आने वाले समय में त्रिपुरा गुवाहाटी के बाद दक्षिण पूर्व एशिया का प्रवेश द्वार बन सकता है।

वे यह भी कहते हैं कि 2014 में केंद्र में भाजपा की सरकार आने के बाद से ही त्रिपुरा में कनेक्टिविटी के क्षेत्र में काफी बदलाव आए हैं, चाहे वो ब्रॉडगेज रेल कनेक्टिविटी की बात हो या त्रिपुरा में नवीनतम सुविधाओं से लैस त्रिपुरा के नए एयरपोर्ट टर्मिनल की। देब बताते हैं कि घर, पानी, कनेक्टिविटी, व्यापार, रोजगार जैसे मुद्दों पर काफी काम हुआ है भाजपा के शासन में। भाजपा का भी मानना है कि इन मुद्दों पर काम करने का फल उसे मिला है।

2023 के चुनावों में भाजपा का सीधा मुकाबला लेफ़्ट और कांग्रेस के गठबंधन से था। पिछले चुनावों में कांग्रेस एक भी सीट नहीं जीत पाई थी। इस बार पार्टी को तीन सीटों पर जीत मिली थी । लेकिन सीपीएम की सीटों की संख्या पिछले चुनावों में जीती 16 सीटों से घट कर इस बार 11 सीटों पर आ गई थी।

जानकारों का कहना है कि त्रिपुरा की राजनीति के इतिहास में जाएं तो ये साफ है कि लेफ़्ट और कांग्रेस के बीच एक लंबे अरसे तक तनाव और हिंसा का माहौल रहा है। दोनों ही पार्टियां अतीत में एक दूसरे पर हिंसा, राजनीतिक अपराध और हत्या के आरोप लगाती रही हैं। देबराज देब कहते हैं, ?उन हिंसक घटनाओं की यादें जनता के जहन में अब भी ज़िंदा हैं और इन दो प्रतिद्वंद्वियों के ठीक चुनाव से पहले एक साथ आ जाने के बाद जो दोनों पार्टियों को एक-दूसरे के वोट ट्रांसफर होने की उम्मीद थी, वो शायद नहीं हुआ। ?जानकारों की मानें तो कांग्रेस को शायद लेफ़्ट के साथ गठबंधन करने का थोड़ा फायदा हुआ, लेकिन लेफ़्ट को इस गठबंधन से कोई खास लाभ नहीं मिला। देबराज देब कहते हैं कि लेफ़्ट और कांग्रेस की केमिस्ट्री के न चलने की वजह से भाजपा का जीतना और आसान हो गया था।

पुरानी मार को भूल कर अब एत्रिपुरा में बताया जाता है कि 72 साल के चुनावी इतिहास में पहली बार लेफ्ट पार्टियां और कांग्रेस भाजपा से मुकाबला करने के लिए कोई लोकसभा चुनाव मिलकर लड़ रहे हैं। हालांकि दोनों पारंपरिक प्रतिद्वंद्वियों ने पिछले साल के विधानसभा चुनाव में संयुक्त रूप से सत्तारूढ़ पार्टी को चुनौती दी थी। हाई प्रोफाइल त्रिपुरा पश्चिम लोकसभा सीट पर मुख्य मुकाबला भाजपा उम्मीदवार तथा त्रिपुरा के पूर्व मुख्यमंत्री बिप्लब कुमार देब और राज्य कांग्रेस अध्यक्ष आशीष कुमार साहा के बीच होगा, जो इंडिया गठबंधन के साझा उम्मीदवार हैं।

दरअसल, कांग्रेस अध्यक्ष साहा और मौजूदा कांग्रेस विधायक सुदीप रॉय बर्मन ने मार्च 2018 में भाजपा के टिकट पर राज्य विधानसभा के लिए चुने जाने के बाद फरवरी 2022 में पार्टी छोड़ दी। सीपीएम के नेतृत्व वाले लेफ्ट फ्रंट को 25 साल बाद अपमानजनक हार देकर भाजपा पहली बार त्रिपुरा में सत्ता में आई। पिछले साल के विधानसभा चुनावों में, साहा और बर्मन ने भाजपा के खिलाफ कांग्रेस के उम्मीदवार के रूप में चुनाव लड़ा था, लेकिन साहा हार गये, जबकि बर्मन ने अपनी सीट बरकरार रखी।

देब, जिन्होंने 14 मई 2022 को भाजपा के केंद्रीय नेताओं के निर्देश पर मुख्यमंत्री पद से इस्तीफा दे दिया था, ने मई 2019 में लंबे आंतरिक कलह के बाद बर्मन को अपने मंत्रिपरिषद से हटा दिया था। बता दें कि वाम मोर्चा 1952 से हर चुनाव कांग्रेस के खिलाफ लड़ रहा है। कांग्रेस आखिरी बार 1988 में वाम दलों को हराकर त्रिपुरा में सत्ता में आई थी। पिछले साल के विधानसभा चुनावों में, लेप्ट फ्रंट ने, जिसने कांग्रेस के साथ सीट-बंटवारे की व्यवस्था में विधानसभा चुनाव लड़ा था। त्रिपुरा की 2 लोकसभा सीटों, त्रिपुरा पश्चिम और त्रिपुरा पूर्व में से चुनावी फोकस हमेशा त्रिपुरा पश्चिम लोकसभा सीट पर है, जिसे 1952 से सीपीएम ने 11 बार जीता था। कांग्रेस ने इस सीट पर 4 बार 1957, 1967, 1989 और 1991 के लोकसभा चुनावों में जीत हासिल की। इंडिजिनस पीपुल्स फ्रंट ऑफ त्रिपुरा के साथ गठबंधन में 2018 में भाजपा के सत्ता में आने के बाद इखढ उम्मीदवार और केंद्रीय मंत्री प्रतिमा भौमिक ने 2019 में पहली बार त्रिपुरा पश्चिम लोकसभा सीट जीती। इस बार भाजपा ने भौमिक को हटाकर देब को मैदान में उतारा, जो वर्तमान में राज्यसभा सदस्य हैं।

गौरतलब है कि त्रिपुरा की चुनावी राजनीति में आदिवासी और अनुसूचित जाति समुदाय के मतदाता महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। कुल 60 विधानसभा सीटों में से 30-30 सीटें त्रिपुरा पश्चिम और त्रिपुरा पूर्व लोकसभा सीटों में आती हैं। इनमें से 20 सीटें आदिवासियों के लिए और 10 सीटें अनुसूचित जाति समुदाय के लिए आरक्षित हैं। त्रिपुरा पश्चिम लोकसभा सीट में आने वाले 30 विधानसभा क्षेत्रों में से 7 आदिवासियों के लिए और 5 अनुसूचित जाति के लिए आरक्षित हैं। सियासी एक्सपर्ट शेखर दत्ता ने कहा कि सीपीएम सहित लेफ्ट पार्टियों के आदिवासियों और एस सी समुदाय के बीच बड़े पैमाने पर वोटर बेस में गिरावट के कारण 2018 के बाद से लगातार चुनावों में उनकी हार हुई है।

दत्ता ने बताया, ह्यसंगठनात्मक गिरावट के अलावा, नेतृत्व संकट और सत्ता विरोधी कारक अभी भी जारी हैं क्योंकि लेफ्ट फ्रंट 1978 से 1988 और फिर 1993-2018 तक त्रिपुरा में सत्ता में था। नए चेहरों के साथ, उन्हें भाजपा की चुनौती का सामना करने के लिए आदिवासियों और गैर-आदिवासियों दोनों के बीच संगठन का पुनर्निर्माण करना होगा।पुराने 10 साल के चुनावी इतिहास को देखते हुए नहीं लगता कि इंडिया गठबंधन कुछ सफलता प्राप्त कर पाएगी ।

इस मस्ती भरे और रंगारंग होली में शामिल होकर आपसी भेदभाव भुलाकर एक-दूसरे के कपोलों पर स्नेह से गुलाल मलें

-- सुरेश सिंह बैस शाश्वत

होली भारतीय संस्कृति की महानतम प्रतीक है। प्राचीन सभ्यता के साथ इसका चोली दामन का साथ है। रंगों के मस्ती भरे इस पर्व से हर प्राणी का हृदय उल्लसित और स्फूरित हो उठता है। यह त्यौहार आता है फागुन माह में ।और फागुन है फूलों का फलों का ,रंग रंग के फूल हैं गुलाब है चमेली है चंपा है व अन्यान्य फूलों के सुगंधित वातावरण से मन और उल्लसित और प्रफुल्लित हो उठता है। खेतों में लहलहाते सरसों व उसके तन पर पीले पीले फूलों की सर्वत्र पीली सी छाई हुई चादर मानो धरती पर फैल गई हो ।वैसे ही पलाश के केसरिया फूल जंगलों में यत्र तत्र सर्वत्र छाए रहते हैं। लगता है जैसे जंगल में अंगारों की आग सी लग गई हो। जंगल में भी मंगल इनके रंगों की छटा सी बिखर जाती है धरती पर। इसी समय पेड़ों के पुराने पत्ते झरकर नवांकुरों के नवजीवन का संदेश देते हुए प्रकृति के परिवर्तन के नियम पुनः परंपरा अनुसार दोहराते हुए नजारे प्रस्तुत करते हैं। चारों तरफ फैली हरियाली से लगता है जैसे प्रकृति स्वयं सजीव होकर हमें लुभा रही हो। पुष्पों पर भ्रमर की गुंजन, कोकिला की मीठी कुहू कुहू की कूक मन को सम्मोहित कर देती है। स्वार्गिक वातावरण में मनाए जाने वाली होली हमें अवसर प्रदान करती है गले मिलने की स्नेहा भाव से मिलजुल कर रहने की। पुराने बैर भाव एवं भेदभाव को मिटाने की। और यहां तक कि कतिपय संकल्प लेने की भी। कहने को तो होली पर गंदगी साफ की जाती है। और कूड़ा करकट इकट्ठा करके जला दिया जाता है। मान्यता यह भी है कि इसी के साथ साथ ईर्ष्या, द्वेष, घृणा, कलह, भेदभाव आदि को भी जला दिया जाता है। तथा लोगों का मन शुद्ध, कोमल, निर्मल एवं निर्विकार हो जाता है। यदि सचमुच ऐसा हुआ होता तो इस धरती पर प्रहलाद की सी मानसिकता होती ना कि हिरण्यकश्यप का उत्पीड़न, ?

आज हम देखते हैं कि अखबारों के पन्ने खून से रंगे होली का क्रंदन करती सुर्खियों को छापने के लिए मजबूर हैं ! जिसमें लिखा होता है रंगों के स्थान पर खून की होली खेली गई। लेकिन जिन लोगों पर मानव द्वारा खूनी पिचकारिओं से गर्म रंग डाला गया। वे अपने घर नहीं जा सके। क्योंकि उन्हीं के सुर्ख गुलाल ने उन्हें शांत और ठंडा कर दिया था। मानव की यह दानवीयता हिरण्यकश्यप की याद दिलाती है। वहीं कुछ लोगों की यह भी धारणा होती है कि वह इस दिन पूर्ण रूप से स्वतंत्र हैं। यानी फूहड़ मजाक करना, कीचड़ फेंकना शराब पीना, गाली गलोज करना, अश्लील छींटाकशी के अलावा अश्लील हरकतें कर अपनी असभ्य प्रवृत्ति का प्रदर्शन करना, अब आम बात हो गई है। हुड़दंग और गुंडागर्दी जैसे माहौल में किसका जी चाहेगा होली खेलने का। यह प्रतिक्रिया प्रायः आम जनों की एवं महिलाओं की रहती है। यही कारण है कि लोग आज होली खेलने से कतराने लगे हैं। छेड़छाड़ व गुंडागर्दी के आतंक के साए में इस पर्व का लुत्फ उठाने का अभाव सा रहता है। कुछ लोग तो होली के उत्सव में भाग न ले कर इस में होने वाले उदंडता मात्र को ही देखकर सहम जाते हैं। ऐसे सहमें एवं डरे हुए लोगों को जबरदस्ती घर से निकाल कर होली खिलाना कहां तक उचित है। हो सकता है कि वह किसी हुड़दंग के हादसे से गुजर चुके हों। या किसी मानसिक अशांति के कारण ना खेलना चाहते हों। ऐसे में उनके साथ जबरदस्ती करना उत्सव के मजे को किरकिरा ही करता है।

यह भी अक्सर देखा गया है कि लोग रंग डालने के अवसर के ताक में रहते हैं कि अमुक व्यक्ति पर रंग डाल कर भाग लिया जाए। ताकि सामने वाला उस पर रंग ना लगा सके। उस समय वे यह भी नहीं देख पाते कि सामने वाला कोई महत्वपूर्ण कार्य निपटा रहा है या होली खेलने की स्थिति या मूड में है कि नहीं। इससे कटुता भी उत्पन्न हो जाती है। होली पर अच्छे रुचि के रंगों का चुनाव भी करना चाहिए। जैसे काले, बैगनी, पक्के रंगों का चुनाव आपकी खराब रूचि का परिचय देते हैं। साथ ही जिस पर वे रंग लगाए जाते हैं वह प्रसन्नता का अनुभव नहीं करते हैं। इससे प्रेम संबंधों में दरार पड़ सकती है। यदि रंग महिला पर लगा रहे हो तो पूरी शालीनता का परिचय देते हुए रंग लगाएं। उचित यही है कि रंग डालिए हंसिए खिलखिलाईए। मस्ती के साथ त्यौहार मनायें और मनाने दें। मानते हैं होली मौज मस्ती और उमंग से भरा त्यौहार है। लेकिन इसका मतलब यह तो नहीं कि हम अपने शिष्टता और संस्कारों को तिलांजलि देकर गाली गलौज या अश्लील गीत गाएं या बेशर्मी भरे हरकतें करें। प्रेम से मिलना और प्रसन्नता के गीत गाना कोई बुराई नहीं। ऐसा गीत गाना जिसे सुनकर लोग आपको अशिष्ट कहें ।कहां तक यह उचित है। मुहल्लों, स्कूलों, दफ्तरों में इस अवसर पर व्यंगात्मक उपाधि सूची निकालने की भी परंपरा है। इसमें सावधानी यह बरती जानी चाहिए कि हम किसी को ऐसी उपाधि तो नहीं दे रहे हैं। जो उसे मानसिक रूप से पीड़ित कर दें। हंसी मजाक में शुद्धता का बर्ताव पहली शर्त है। तभी हम अपने शिष्ट संस्कारों का निर्वाह करने में सफल होंगे।

होली में रंग डालने के समय व स्थान का भी ध्यान रखना चाहिए। सड़क पर या छत पर या कहीं पर होने वाले हुड़दंग किसी भी बड़ी दुर्घटना को जन्म देकर प्रेम भरे परिवेश को विवाद के रूप में बदल देता है। इसलिए होली आमतौर पर घर के आंगन बाहरी बरामद हो एवं चबूतरो पर या अपने आसपास मोहल्ले के लोगों के बीच ही खेलना ज्यादा सुरक्षित और आनंददायक होता है। इस प्रकार होली पर अशिष्टता का नहीं शिष्टता का ध्यान रखा जाना अनिवार्य है। शिष्टता को हम वर्षभर निभाएं और होली पर भूल जाएं।यह तो कोई बात नहीं हुई ।शिष्टाचार की भूमिका होली पर पऔर भी अधिक महत्वपूर्ण हो जाती है। जब आप एक नहीं अनेक व्यक्तियों के संपर्क में आते हैं ।तो शिष्टता का ध्यान तो रखना ही पड़ेगा। होली में रंगों के लिए आप हल्के लाल ,गुलाबी ,पीले एवं नीले रंग का ही प्रयोग करें। गाढ़े रंग जहां फिजूलखर्ची हैं वही आपके और सामने वाले के शरीर के लिए हानिकारक भी हो सकते हैं। रंग वह हो जो आसानी से शरीर और कपड़ों में से उतर जाए। वह रंग किस काम का जो आजकल के महंगे कपड़ों से उतरते ही नहीं हो या शरीर के चमड़ी तक को साथ में उतार लें। या कट फट जाएं? इसलिए रंगों के चुनाव में भी शालीनता बरतीये। होली का समय भी निश्चित होना चाहिए ! सुबह से शाम तक रंग का पानी शरीर पर पडते रहे तो या भीगे रहने से व्यक्ति के बीमार होने की पूरी गुंजाइश बनी रहती है। अतः जरूरी है कि इस बदलते मौसम में हम रंगों की तासीर के मुताबिक घंटे दो घंटे तक ही सीमित समय में रहकर होली खेलें। इससे समय के बचत के साथ दैनिक कार्यक्रमों को यथा समय पर पूरा कर पाएंगे। वहीं ठंडी जुकाम खांसी बुखार जैसी बीमारियों से भी बच सकेंगे। सारा दिन रंग लिए घूमना जहां बेवकूफी व अशिष्टता है वहीं रोगों के लिए भी खुला आमंत्रण है।इसी तरह होली का आनंद लेने का यह कोई ढ़ंग नहीं है कि आप अपने से बड़ी उम्र के व्यक्ति पर रंग डालें। हो सकता है वह आपको कोई ऐसे जवाब दे दें जो आपकी शिष्टता के लिए चुनौती बन जाए ।इसलिए अच्छा यही है कि रंग हम उन्हीं पर ही डालें जो हमारे समकक्ष और परीचित हों । कई बार हम बच्चों को उकसा कर हम किसी वृद्ध पर रंग डलवा कर हंसते हैं ।यह कोई शालीन कार्य नहीं है ।होली पर हमें अपनी गरिमा व मयार्दा को स्मरण रखकर ही रंगों की बरसात करनी चाहिए। रंगों की मार से झुंझला कर सामने वाले व्यक्ति के कपड़े फाड़ें या उसे काटें नोंचे। यह भी अशिष्टता है ।आप भी उसे रंग लगाइए झुंझलाएं नहीं।

ऐसे समय में शिष्टता की छाप आपके सदव्यवहार को सर्वत्र लोकप्रिय और चर्चा का विषय बना देगी। जिससे परोक्ष रूप से आपके अनेक लाभ होंगे। लोग आपके बारे में अनर्गल बातें नहीं करेंगे तथा पूरा सम्मान देंगे। आपके व्यवहार की गरिमा मयार्दा शिष्टता शालीनता और सुसंस्कृत व्यवहार होली पर आपके संपूर्ण व्यक्तित्व का सही आकलन करते हैं। इसके लिए आवश्यक है कि हम इन्हें ना भूलें ।वैसे भी अब तो महंगाई की मार ने रंगों की चटखती रंगत और चमक को कम कर रखा है। आज लोगों की मानसिकता बदल गई है भावनाएं बदल गए हैं। लोग यहां तक कहते हैं कि जमाना भी बदल गया। मगर वास्तविकता यह है कि हमारे त्यौहार नहीं बदले। आज भी होली का त्यौहार अपने मूल में पारस्परिक प्रेम स्नेह और भारतीय संस्कृति औरआपसी भाईचारे का प्रतीक है। त्यौहार नहीं बदले तो फिर हम क्यों बदल गए? उल्लास को कम क्यों कर दिया ?इसे बदलने की अनुभूति अनुमति कोई भी भारतीय त्योहार नहीं देते। फिर हम ऐसा क्यों नहीं कर सकते भारत वासियों की अस्मिता के अनुरूप जब तक हम समेक्य होकर एक दूसरे के कदम से कदम मिलाकर नहीं चलेंगे तब तक एकता के सूत्र ह्नहम सब एक हैंह्न ! का जाप व्यर्थ है। हम बदलेंगे समाज बदलेगा हम सुधरेंगे तो समाज सुधरेगा। आइए इस मस्ती भरे और रंगारंग होली में शामिल होकर आपसी भेदभाव, रंगत, वेशभूषा, जात-पात, ऊंच-नीच भुलाकर एक-दूसरे के कपोलों पर स्नेह से गुलाल मलें, प्रेम से गले मिलें। मेरी यही अभिलाषा और आकांक्षा है। होली की आप सभी को बहुत-बहुत शुभकामनाएं और सभी देशवासियों को अभिनंदन वंदन।

अरविंद केजरीवाल की गिरफ्तारी से उपजते सवाल

आबकारी नीति घोटाले में दिल्ली के मुख्यमंत्री और आप सुप्रीमो अरविंद केजरीवाल को गिरफ्तार किया जाना सही है या गलत- यह प्रशासनिक और न्यायिक विमर्श का विषय है। लेकिन आम चुनाव 2024 के ठीक पहले और देश में आदर्श चुनाव आचार संहिता लागू होने के तत्काल बाद जिस तरह से उन्हें गिरफ्तार किया गया, यह भारतीय लोकतंत्र और सियासत के लिए कोई शुभ संकेत नहीं है !

मेरा स्पष्ट मानना है कि इस घटनाक्रम से आप पार्टी और इंडी गठबंधन को भारी क्षति के विपरीत काफी लाभ भी हो सकता है, बशर्ते कि पूरे घटनाक्रम का प्रस्तुतीकरण जनमानस में सही तरीके से किया जाए और सत्ता पक्ष को लाभ पहुंचाने की फितरत से हुई इस प्रशासनिक कार्रवाई के विरुद्ध हर गली-कूची के भ्रष्टाचार की फोटो और उसकी आधिकारिक अनदेखी के विरुद्ध पम्फलेट वितरण अभियान शुरू किया जाए। वहीं, जगह जगह सक्षम माननीय न्यायालय को पत्र भेजकर उसकी प्रतिलिपि सोशल मीडिया पर पोस्ट की जाए और स्थानीय मीडिया को भेजी जाए, ताकि भ्रष्टाचार विरोधी जनजागृति पैदा हो सके। वैसे तो लोकल मीडिया में ऐसे प्रकरण हमेशा प्रकाश में आते रहते हैं, लेकिन उनपर प्रशासनिक खामोशी के खिलाफ न्यायालय जाने के कम ही मामले प्रकाश में आते हैं। शायद इसलिए कि भ्रष्टाचार के हमाम में कहीं न कहीं हर कोई नँगा है। अमूमन विपक्षी दल भी ऐसे मामलों में धरना-प्रदर्शन के अलावा ज्यादा दूरदर्शी रवैये नहीं अपनाते, जिसके चलते ठोस कार्रवाई नहीं हो पाती। इससे जनता अक्सर परेशान रहा करती है। इसलिए भ्रष्टाचार का पुरजोर विरोध करना जरूरी है ताकि सत्ता पक्ष के इशारे पर पक्षपात पूर्ण कार्रवाई करने वाले भारतीय प्रशासन को चुनावों में बेनकाब करते हुए जनादेश मांगा जाए।

चाहे न्यायपालिका हो या मीडिया, प्रशासनिक तिकड़म को समझने में प्रायः विफल प्रतीत हुए हैं ! रही बात विधायिका की तो प्रशासनिक अधिकारियों को इस तरह की मनमानी करने की छूट देने के लिए सत्ता पक्ष के साथ-साथ विपक्ष भी कम जिम्मेदार

> आपको याद होगा कि अरविंद केजरीवाल और आप पार्टी का जन्म यूपीए सरकार के दूसरे कार्यकाल में चले एक भ्रष्टाचार विरोधी आंदोलन की कोख से ही हुआ है। ऐसे में आबकारी नीति घोटाले में आप मुखिया और दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल की गिरफ्तारी अपने आपमें एक यक्ष प्रश्न है। वह यह कि भारतीय सियासत वह काजल की कोठरी है, जहां से बेदाग निकलना नामुमकिन है। क्योंकि दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल के पास तो कोई विभाग भी नहीं था, फिर भी वो फंस गए। इस बात में कोई दो राय नहीं कि भ्रष्टाचार के मामले में भारतीय प्रशासन द्वारा जो पीक एंड चूज कार्रवाई की जाती है, वह भारतीय संवैधानिक व्यवस्था के लिए किसी अभिशाप से कम नहीं है।

नहीं है। क्योंकि जिन कानूनों के आधार पर ऐसी कार्रवाईयां होती आईं हैं, उसे अंतिम रूप तो आखिर संसद या विधान मंडलों में ही दी जाती है। सच कहूं तो देश में भ्रष्टाचार 'हरि अनंत, हरि कथा अनंता' की तरह सर्वव्यापी है। प्रशासनिक और पुलिस अधिकारियों की समझदारी या मिलीभगत से सही को गलत और गलत को सही ठहराने के बहुतेरे उदाहरण हर किसी को उसके आसपास में ही मिल जाएंगे। बावजूद इसके भ्रष्टाचार रोकने के लिए प्रशासनिक तिकड़म जारी रहती है। उसने अरविंद केजरीवाल को भ्रष्टाचारियों की कतार में खड़ा करके इस बात के संकेत दे दिए हैं कि 'भ्रष्टाचार' को 'शिष्टाचार' के इतर तरह तरह से परिभाषित करने का खेल न कभी चला है और न ही चलने दिया जाएगा। इसकी सूची में बलि का बकरा अक्सर राजनेता बनेंगे, जबकि उनसे जुड़े अधिकारियों की भी गिरफ्तारी साथ साथ होनी चाहिए। क्योंकि 'पवित्र पाप' यानी भ्रष्टाचार कोई भी राजनेता अकेला नहीं कर सकता, जब तक कि अधिकारियों का एक सलाहकार वर्ग या जिम्मेदार वर्ग उनसे मिला हुआ न हो।

यह ठीक है कि आप नेता अरविंद केजरीवाल को अब प्रमुख विपक्षी दलों का साथ मिल गया है, जिससे उनकी परेशानी कुछ कम होगी। लेकिन केंद्र में सत्तारूढ़ भाजपा को इससे लेने के देने भी पड़ सकते हैं। क्योंकि अरविंद केजरीवाल का आजतक का इतिहास यही रहा है कि अपने विरुद्ध पैदा किए हुए हर मुद्दे का सियासी लाभ अंततोगत्वा उन्होंने ही उठाया है। इस बार भी वो यही करेंगे ! हो सकता है कि दो राज्यों में अपनी सरकार बनाने वाली पहली विपक्षी पार्टी आप, जिसे अब राष्ट्रीय पार्टी का भी दर्जा मिल चुका है, अपने मिशन 2024 के तहत अपना देशव्यापी विस्तार कर ले और अपने सांसदों की संख्या 2 अंकों में लेते आये। यदि ऐसा होता है तो यह उसकी बड़ी उपलब्धि होगी। आपको पता होना चाहिए कि अरविंद केजरीवाल एकदम हठी राजनेता है। वो गिरफ्तार हो गए, लेकिन त्यागपत्र नहीं दिया। इससे मुख्यमंत्री रहते हुए गिरफ्तार होने वाले वो पहले राजनेता बन गए। आगे भी वो कोई बड़ा गुल अवश्य खिलाएंगे। आप नेता सत्येंद्र जैन, मनीष सिसोदिया, संजय सिंह के बाद अरविंद केजरीवाल की गिरफ्तारी से इस बात को बल मिलता है कि 'आप' नेताओं की अग्रिम पंक्ति को ईडी ने लगभग खाली कर दिया। हालांकि, उसकी दूसरी पंक्ति के नेता आपस में कितना सामंजस्य बिठाकर अगली रणनीति बनाएंगे, सारी भावी सफलता इस बात पर ही निर्भर करेगी। - कमलेश पांडेय

https://t.me/AllNewsPaperPaid

भगत सिंह की याद को जिन्दा रखने की कोशिश

लाहौर का शादमान चौक भले ही अब भीड़-भरा चौराहा हो, लेकिन यहां इंकलाब की अनुगूंज अब भी मद्धिम नहीं पड़ी है। भगत सिंह, राजगुरु और सुखदेव की शहादत को 93 वर्ष बीत चुके हैं। 23 मार्च 1931 को इन तीनों को लाहौर जेल में फांसी पर लटकाया गया था। यह हमारे इतिहास और संस्कृति की ताकत है कि 1947 में हुए देश के अप्राकृतिक विभाजन के बाद भी लाहौर ने भगत सिंह और उनके साथियों के अप्रतिम बलिदान को भुलाया नहीं है, बल्कि वहां के शहीद भगत सिंह मेमोरियल फाउंडेशन के अध्यक्ष इम्तियाज रशीद कुरैशी, एडवोकेट लाहौर हाईकोर्ट और उनके सहयोगी निरंतर इस मुहिम को जिंदा रखे हुए हैं। खुशी की बात है कि कुरैशी ने पांच नवंबर, 2018 को लाहौर उच्च न्यायालय से राज्य सरकार और जिला प्रशासन के लिए यह आदेश भी हासिल कर लिया कि शादमान चौक का नामकरण शहीद भगत सिंह के नाम पर कर दिया जाए, जबकि पाकिस्तान के कट्टरपंथी इसका लगातार विरोध कर रहे थे। पाकिस्तान में हम इसे इंकलाब के पैरोकारों की बड़ी जीत के तौर पर देख रहे हैं, जिसका श्रेय कुरैशी को जाता है। कुरैशी अनेक वर्षों से लाहौर के शादमान चौक पर अपने कुछ मित्रों के साथ इकट्ठे होकर भगत सिंह को शहादत दिवस और उनके जन्मदिन के मौके पर याद करने से चूकते नहीं हैं, हालांकि ऐसा करने के लिए उन्हें निरंतर पाकिस्तानी कट्टपंथियों और प्रशासन से बड़ी लड़ाई लड़नी पड़ी है। नौकरशाही ने जब उच्च न्यायालय के आदेश का पालन नहीं किया, तो कुरैशी न्यायालय के आदेश की अवमानना का मुद्दा लेकर फिर अदालत जा पहुंचे। एक मार्च, 2024 को लाहौर उच्च न्यायालय के न्यायाधीश शम्स महमूद मिर्जा ने ह्यभगत सिंह चौकह्न न बनाए जाने के मामले पर सुनवाई के बाद पश्चिमी पंजाब की सरकार के मुख्य सचिव जाहिद अख्तर जमान, डिप्टी कमिश्नर व प्रशासक लाहौर राफिया हैदर को अदालत की मानहानि याचिका के मद्देनजर 26 अप्रैल को पेश होने का नोटिस जारी किया है। यह कुरैशी की बड़ी जीत है। उम्मीद है कि उनकी यह मुहिम उस जगह को भगत सिंह चौक का नाम दे सकेगी, जहां ब्रिटिश साम्राज्यवाद ने लाहौर जेल में बने उस समय के फांसीघर में उनसे जीने का अधिकार छीन लिया था।

लोहिया ने दिया था कांग्रेस हटाओ देश बचाव का नारा

कुमार कृष्णन

जयंती पर विशेष

स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान और स्वतंत्रता के बाद ऐसे कई नेता हुए जिन्होंने अपने दम पर शासन का रुख बदल दिया उनमें एक थे राममनोहर लोहिया। प्रखर देशभक्त और समाजवादी विचारों के कारण अपने समर्थकों के साथ–साथ अपने विरोधियों के बीच भी अपार सम्मान हासिल किया। उनमें सन्त की सन्तता, फक्कड़पन, मस्ती, निर्लिप्तता और अपूर्व त्याग की भावना थी। वे समाजवादी इस मायने में थे कि, समाज ही उनका कार्यक्षेत्र था और वे अपने कार्यक्षेत्र को जनमंगल अनुभूतियों से महकाना चाहते थे। उनका सपना था कि, व्यक्ति-व्यक्ति के बीच कोई भेद, कोई दुराव और कोई दीवार न रहे। सब जन समान हों। सब जन सबका मंगल चाहते हों। सबमें वे हों और उनमें सब हों। वे दार्शनिक व्यवहार के पक्ष में नहीं थे। उनकी दृष्टि में जन को यथार्थ और सत्य से परिचित कराया जाना चाहिए। प्रत्येक जन जाने की कौन उनका मित्र है? कौन शत्रु है? जनता को वे जनतंत्र का निर्णायक मानते थे।

बाद में लोहिया बर्लिन रवाना हो गए। बर्लिन के हम्बोल्ट विश्वविद्यालय में प्रवेश लिया। विश्व विख्यात अर्थशास्त्री प्रोफेसर बर्नर जोम्बार्ट उसी विश्वविद्यालय में थे। लोहिया ने उन्हें ही अपना निर्देशक तथा परीक्षक चुना।चार साल के बाद लोहिया जी जर्मनी से डॉक्टरेट की उपाधि हासिल कर मातृभूमि पर लौटे।उनका विषय था अर्थशास्त्र। वे कलम के धनी थे। प्रतिभा की धार और विद्धत्ता ही उनकी पूंजी थी। वे सीधे मद्रास से प्रकाशित होने वाली अंग्रेजी पत्र हिन्दू के कार्यालय पहुंचे। उन्हें सम्पादक तो नहीं मिले, लेकिन सह-संपादक को लोहिया जी ने अपना परिचय दिया और लेख लिखकर देने का कारण बताया।

23 मार्च 1910 फैजाबाद के अकबरपुर में जन्मे राम मनोहर लोहिया के पिताजी हीरालाल पेशे से अध्यापक व सच्चे राष्ट्रभक्त थे। उनके पिताजी गांधी जी के अनुयायी थे। जब वे गांधी जी से मिलने जाते तो राम मनोहर को भी अपने साथ ले जाया करते थे। इस कारण गांधी जी के व्यक्तित्व का उन पर गहरा असर हुआ। लोहिया जी अपने पिताजी के साथ 1918 में अहमदाबाद कांग्रेस अधिवेशन में पहली बार शामिल हुए।पांच वर्ष की उम्र में पास ही की टण्डन पाठशाला में उनका नाम लिखा दिया गया। इसके बाद तमसा पार स्थित विश्वेश्वरनाथ हाई स्कूल में लोहिया को पांचवीं कक्षा में प्रवेश दिलाया गया। वे बुद्धि से कुशाग्र थे।मारवाड़ी विद्यालय में प्रवेश के बाद वे शहरी परिवेश से अचानक जुड़ गए, क्योंकि बम्बई का मारवाड़ी स्कूल विश्वेश्वरनाथ हाईस्कूल से कई अर्थों में अत्याधुनिक था। बम्बई से वे वाराणसी लौटे। काशी हिन्दू विश्वविद्यालय में इंटर का अध्ययन शुरू कर दिया। वहां से सन 1927 ई. में वहाँ से उन्होंने इण्टर की परीक्षा उत्तीर्ण की। इंटर पास करने के बाद सन 1927 में लोहिया कलकत्ता आ गए। उन्होंने सेंट जेवियर्स तथा स्काटिश चर्च जैसे ख्यातिनाम महाविद्यालय को छोड़कर विद्यासागर महाविद्यालय में प्रवेश लिया था।

बाद में लोहिया बर्लिन रवाना हो गए। बर्लिन के हम्बोल्ट विश्वविद्यालय में प्रवेश लिया। विश्व विख्यात अर्थशास्त्री प्रोफेसर बर्नर जोम्बार्ट उसी विश्वविद्यालय में थे। लोहिया ने उन्हें ही अपना निर्देशक तथा परीक्षक चुना।चार साल के बाद लोहिया जी जर्मनी से डॉक्टरेट की उपाधि हासिल कर मातृभूमि पर लौटे।उनका विषय था अर्थशास्त्र। वे कलम के धनी थे। प्रतिभा की धार और विद्धत्ता ही उनकी पूंजी थी। वे सीधे मद्रास से प्रकाशित होने वाली अंग्रेजी पत्र हिन्दू के कार्यालय पहुंचे। उन्हें सम्पादक तो नहीं मिले, लेकिन सह-संपादक को लोहिया जी ने अपना परिचय दिया और लेख लिखकर देने का कारण बताया। वह लेख उन्होंने वहीं बैठकर लिखा था। पारिश्रमिक स्वरूप उन्हें पच्चीस मिले ।वे अपने पिता से मिलने कोलकाता आए। अपने चाचा रामकुमार के घर गए। लोहिया को अपने चाचा से मालूम पड़ा कि, उनके पिता कारोबार बन्द कर सारा समय कांग्रेस को देने लगे हैं। लम्बी जेलयात्रा भी कर आए हैं। आजकल बड़ा बाजार को उन्होंने अपना कार्यक्षेत्र बना रखा है। चरखा समिति बना डाली है। वे हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय में भी बैठते हैं। हिन्दू-मुसलमान के भेदभाव को दूर करने के लिए कौमी बाल्टी रख छोड़ी है। उनकी दृष्टि में वह बाल्टी हिन्दू-मुसलमान एकता का प्रतीक है, क्योंकि दोनों ही उससे पानी लेकर पीते थे। लोहिया ने पाया कि कलकत्ता पहले से भी अधिक गरीब हो गया है। बेकारी बढ़ी है। सब कुछ अन-बदला सा पथराकर ठहर गया है।

कांग्रेस के सभी दिग्गज नेताओं ने दूसरे महायुद्ध के दौरान अंग्रेजों की शक्ति बढ़ाने की कोशिश की। गांधी जी नहीं माने। डॉ. लोहिया को गांधी जी का यह फैसला पसंद आया और वे भारत छोड़ो आंदोलन में कूद पड़े। डॉ. लोहिया अंग्रेजों को चकमा देकर गिरफ्तारी से बच निकले। अपनी समाजवादी मित्र मण्डली के साथ वे भूमिगत हो गये। भूमिगत रहते हुए भी उन्होंने बुलेटिनों, पुस्तिकाओं, विविध प्रचार सामग्रियों के अलावा समान्तर रेडियो 'कांग्रेस रेडियो' का संचालन करते हुए देशवासियों को अंग्रेजों से लोहा लेने के लिए प्रेरित किया। जब अगस्त क्रान्ति का उबाल ठंडा पड़ने लगा तब डॉ. लोहिया का ध्यान नेताजी सुभाष चन्द्र बोस की अगुआई में आजाद हिन्द फौज द्वारा छेड़े गये सशस्त्र मुक्ति संग्राम की ओर गया। उस समय भारत के पूर्वोत्तर भाग में नेताजी का विजय अभियान जारी था। डॉ. लोहिया नेताजी से मिलने की योजना बना ही रहे थे कि अचानक 20 मई, 1944 को उन्हें मुम्बई में गिरफ्तार कर लिया गया। दुर्भाग्य से अगस्त क्रांति के वीर सेनानी डॉ. लोहिया और आजाद हिन्द फौज के सेनानायक नेताजी सुभाषचन्द्र बोस का मिलन न हो सका।

अगस्त क्रांति के दौरान डॉ. लोहिया के कौशल और साहस से महात्मा गांधी अत्यंत प्रभावित हुए थे। उसके पहले बापू डॉ. लोहिया के कई विचारोत्तेजक लेख, बेबाक टिप्पणियाँ आदि अपने पत्र 'हरिजन' में प्रकाशित भी कर चुके थे। राष्ट्रीय नेताओं का यह मानना था कि अंग्रेजों के जाते ही पुर्तगाली भी गोवा से स्वयं कूच कर जायेंगे इसलिए वहां शक्ति झोंकने की जरूरत नहीं। लेकिन डॉ. लोहिया ने वहां जाकर आजादी की लड़ाई का बिगुल बजा ही दिया। उनका साथ महात्मा गांधी को छोड़कर और किसी बड़े नेता ने नहीं दिया।

आजादी के बाद नेहरू सरकार की नीतियां गांधी के विचारों से प्रतिकूल थीं। डॉ. लोहिया का समाजवाद गांधी की विचारधारा के अत्यंत निकट था। नेहरू सरकार की दशा-दिशा के कारण महात्मा गांधी का नेहरू से मोहभंग हो रहा था और लोहिया की तरफ रुझान बढ़ रहा था।आजादी के बाद देश साम्प्रदायिकता के संकट में फंस गया तो शांति और सद्भाव कायम करने में डॉ. लोहिया ने गांधी का सहयोग किया। इस प्रकार वे बापू के बेहद करीब आ गये थे।

28 जनवरी, 1948 को गांधी ने लोहिया से कहा, मुझे तुमसे कुछ विषयों पर विस्तार में बात करनी है। इसलिये आज तुम मेरे शयनकक्ष में सो जाओ। सुबह तड़के हम लोग बातचीत करेंगे। लोहिया गांधी के बगल में सो गये। उन्होंने सोचा कि जब बापू जागेंगे, तब वे जगा लेंगे और बातचीत हो जाएगी। लेकिन जब लोहिया की आंख खुली तो गांधी जी बिस्तर पर नहीं थे। बाद में जब डॉ. लोहिया गांधी से मिले तब गांधी ने कहा, तुम गहरी नींद में थे। मैंने तुम्हें जगाना ठीक नहीं समझा। खैर कोई बात नहीं। कल शाम तुम मुझसे मिलो। कल निश्चित रूप से मैं कांग्रेस और तुम्हारी पार्टी के बारे में बात करूंगा। कल आखिरी फैसला होगा। लोहिया 30 जनवरी, 1948 को गांधी से बातचीत करने के लिए टैक्सी से बिड़ला भवन की तरफ बढ़े ही थे कि तभी उन्हें गांधी की शहादत की खबर मिली। एक ठोस योजना की भ्रूण हत्या हो गयी। बापू अपनी शहादत से पहले अपने आखिरी वसीयतनामे में कांग्रेस को भंग करने की अनिवार्यता सिद्ध कर चुके थे। उस समय उन्होंने ऐसा स्पष्ट संकेत दिया था कि आजादी की लड़ाई के दौरान अनेकानेक उद्देश्यों के निमित्त गठित विविध रचनात्मक कार्य संस्थाओं को एक सूत्र में पिरो कर शीघ्र ही एक नया राष्ट्रव्यापी लोक संगठन खड़ा किया जायेगा। 1956 में डॉ. लोहिया और डॉ. भीमराव अम्बेडकर के बीच निकटता बढ़ने लगी थी। कांग्रेस को सत्ताच्युत करने के लिए वे दोनों एक मंच पर आने के लिये राजी हो रहे थे।

अमेरीकियों को भाने लगे होली के रंग

महेश खरे

मार्च में कैलीफोर्निया का मौसम गुलाबी होने लगता है। अमेरिका के इस महत्वपूर्ण राज्य में भारतीयों की संख्या भी सबसे ज्यादा है। नतीजतन भारतीय संस्कृति यहां प्रभावी है। फिर होली के रंगों का क्या कहना। इन दिनों वीकेंड पर प्री होली पार्टियों का चलन बढ़ा है। खास तौर से सैन होजे, फ्रेमोंट, सैन फ्रांसिस्को और लॉस एंजेलिस जैसे शहरों में शनिवार और रविवार के दिन भारतीयों के घरों में डीजे की मद्धिम धुन में रंग और अबीर से भीगे लोग आसानी से दिख जाएंगे।

अब अमेरिकियों को भी होली का अल्हड़पन गुदगुदाने लगा है। सैन फ्रांसिस्को के 'बे एरिया' में होली पर सबसे बड़ी रंगीन पार्टी यादगार बनती जा रही है। 2023 के मार्च महीने में हुई होली पार्टी में तो 5000 से अधिक लोगों ने शिरकत की थी। यहां के रंगोत्सव में भारतीयों के झुंड के साथ साथ अमेरिकी और चीनी परिवार भी मौज-मस्ती के लिए शामिल रहते हैं। रंगों का यह त्यौहार अमेरिका में भी सामाजिक समरसता का वाहक बन गया है। प्रेम और सद्भाव के रंग तो चेहरे से धुल जाते हैं। लेकिन, इंसानी दिल एकता के सूत्र में बंध जाते हैं।

कैलिफोर्निया के बाद भारतीयों की आबादी के मामले में टेक्सास का नंबर आता है। कैलिफोर्निया में जहां लगभग 9 लाख भारतवंशी रहते हैं वहीं टेक्सास में यह संख्या पांच लाख के पार है। ह्यूस्टन टेक्सास के इवेंट सेंटर में भी होली का गुलाल दूर दूर की आबादी को न्योता देता हुआ दिखाई देता है। हालांकि यहां प्रवेश पाने के लिए व्यक्ति को 10 से 15 डॉलर चुकाने पड़ते हैं। फिर भी अमेरिकी होरियारों की भीड़ खूब उमड़ती है। पांच साल से कम उम्र के बच्चों को इस रंग रंगीले आयोजन में फ्री एंट्री मिल जाती है। यहां भारतीय पॉप गायकों की टोलियां लोगों के आकर्षण का बड़ा केन्द्र रहती हैं। इसके अलावा बॉलीवुड कलाकारों की नृत्य मंडलियां और ऊंट की सवारी भी लोगों को लुभाती है। स्वाद के दीवानों के लिए स्ट्रीट फ्रूट में भारतीय और अमेरिकी व्यंजन सुलभ रहते हैं। निजी चिड़ियाघर में मनपसंद जानवरों का दीदार करके ही लोग घर लौटते हैं। लॉस एंजेलिस में भी जगह जगह होली समारोह होने लगे हैं। जो चाहता है उसी पर रंग डाला जाता है। कुछ घरों में फूलों की होली का चलन शुरू हुआ है।

न्यूयॉर्क और न्यू जर्सी में भी भारतीयों की अच्छी खासी आबादी है। नतीजतन यहां भी भारतीय पर्व बड़े उत्साह के साथ मनाए जाते हैं। न्यूयार्क का ओपन एयर उत्सव लोकप्रिय आयोजनों में से एक है। बिग एप्पल के रंगारंग समारोह का तो लोग इंतजार करते हैं। न्यू ब्रंसविक, न्यू जर्सी में इस बार होलिकोत्सव का पंद्रहवां आयोजन होगा। भारतीय लोकगीत सीमाओं के पार बसे लोगों के दिल दिमाग को भावविभोर करने लगे हैं। भोजपुरी, गुजराती और राजस्थानी गीतों की धमक अमेरिका तक पहुंच गई है। छोटे छोटे पारिवारिक आयोजनों में भी भारतीय लोक संस्कृति के सुर सजते हैं। राजस्थानी और गुजराती परिधानों में थिरकती नर्तकों की टोलियां आनंद को और रोचक बना देती हैं।

अमेरिका में बड़े सार्वजनिक आयोजनों के लिए बाकायदा ड्रेस कोड होता है। सफेद परिधान। पुरुष के लिए कुर्ता पाजामा या पेंट टीशर्ट और महिलाओं के लिए सलवार सूट या जींस के साथ सफेद टी-शर्ट। कुछ आयोजन स्थलों पर भी सफेद टी शर्ट बिक्री के लिए उपलब्ध रहती है। कैलिफोर्निया के होली मिलन समारोह में प्रवेश के लिए गाइडलाइन का पालन भी जरूरी है।आने वालों से आग्रह किया जाता है कि वे सफेद वस्त्र पहन कर ही आएं। धूप का चश्मा और कैप जरूर पहनें ताकि कैलीफोर्निया के सूरज की चुभती गर्म किरणों से बचाव हो सके। बता दें कि कैलिफोर्निया में घर से बाहर निकलते समय कैप पहनना शौकिया नहीं बल्कि धूप से बचाव के लिए जरूरी होता है। वरना सन स्ट्रोक का खतरा रहता है। लोग भी इस गाइडलाइन का अक्षरशः पालन करते हैं। अमेरिका में नियमों के उल्लंघन की परिपाटी ही नहीं है। भारतीय परिवार इनका अनुसरण बिना इफ बट किए करते हैं।

अमेरिका में अपने वतन से दूर जा बसे भारतवंशी परिवार होली ही नहीं सभी त्यौहारों को बड़े उत्साह के साथ मनाते हैं। नवरात्रि पर तो नौ दिन तक भजन पूजन और गरबा के आयोजन होते हैं। पिछले वर्ष 2023 में सैन होजे के एक स्कूल के विशाल प्रांगण में हुआ गरवा यादगार बन गया। लहंगा चुनरी में सजे धजे भारतीय परिवारों ने जमकर धमाल किया। गुजराती गीतों की धुन और ढोल-ढ़प की थाप पर डांडिया रास करते हुए बाल युवा वृद्ध जमकर थिरके। एक लाख से अधिक भारतीयों की उपस्थिति में जहां भारतवंशियों की एकता प्रदर्शित हो रही थी वहीं शक्ति की आराधना वातावरण को श्रद्धा से भर रही थी।

कैलिफोर्निया के बाद भारतीयों की आबादी के मामले में टेक्सास का नंबर आता है। कैलिफोर्निया में जहां लगभग 9 लाख भारतवंशी रहते हैं वहीं टेक्सास में यह संख्या पांच लाख के पार है। ह्यूस्टन टेक्सास के इवेंट सेंटर में भी होली का गुलाल दूर दूर की आबादी को न्योता देता हुआ दिखाई देता है। हालांकि यहां प्रवेश पाने के लिए व्यक्ति को 10 से 15 डॉलर चुकाने पड़ते हैं। फिर भी अमेरिकी होरियारों की भीड़ खूब उमड़ती है। पांच साल से कम उम्र के बच्चों को इस रंग रंगीले आयोजन में फ्री एंट्री मिल जाती है। यहां भारतीय पॉप गायकों की टोलियां लोगों के आकर्षण का बड़ा केन्द्र रहती हैं। इसके अलावा बॉलीवुड कलाकारों की नृत्य मंडलियां और ऊंट की सवारी भी लोगों को लुभाती है। स्वाद के दीवानों के लिए स्ट्रीट फ्रूट में भारतीय और अमेरिकी व्यंजन सुलभ रहते हैं। निजी चिड़ियाघर में मनपसंद जानवरों का दीदार कर-के ही लोग घर लौटते हैं। लॉस एंजेलिस में भी जगह जगह होली समारोह होने लगे हैं। जो चाहता है उसी पर रंग डाला जाता है। कुछ घरों में फूलों की होली का चलन शुरू हुआ है। न्यूयॉर्क और न्यू जर्सी में भी भारतीयों की अच्छी खासी आबादी है। नतीजतन यहां भी भारतीय पर्व बड़े उत्साह के साथ मनाए जाते हैं। न्यूयार्क का ओपन एयर उत्सव लोकप्रिय आयोजनों में से एक है। बिग एप्पल के रंगारंग समारोह का तो लोग इंतजार करते हैं। न्यू ब्रंसविक, न्यू जर्सी में इस बार होलिकोत्सव का पंद्रहवां आयोजन होगा। भारतीय लोकगीत सीमाओं के पार बसे लोगों के दिल दिमाग को भावविभोर करने लगे हैं। भोजपुरी, गुजराती और राजस्थानी गीतों की धमक अमेरिका तक पहुंच गई है। छोटे छोटे पारिवारिक आयोजनों में भी भारतीय लोक संस्कृति के सुर सजते हैं। राजस्थानी और गुजराती परिधानों में थिरकती नर्तकों की टोलियां आनंद को और रोचक बना देती हैं।

https://t.me/AllNewsPaperPaid

मास्कोमें आतंकी हमला

पिछले दो सालसे यूक्रेनके साथ रूस युद्धका दंश झेल रहा है। इस बीच राजधानी मास्कोमें बड़ा आतंकी हमला एक नये खतरेका संकेत है। मास्कोके क्रोकस सिटी स्थित सबसे बड़ी कन्सर्ट हालमें शुक्रवारको भीषण गोलीबारीसे पूरा शहर दहल गया। सूत्रोंके अनुसार स्वचालित हथियारोंके साथ सैन्य वर्दीमें पांच आतंकी कन्सर्ट हालमें घुसे गये और अचानक भीड़पर अन्धाधुंध फायरिंग कर दी। जो भी सामने दिखा उसे गोलियोंसे भुन दिया। इस हमलेमें डेढ़ सौसे अधिक लोगोंका मारा जाना और करीब इतने ही लोगोंका घायल होना अत्यन्त दुखद और दुर्भाग्यपूर्ण है। हमलावरोंने विस्फोटकोंका भी इस्तेमाल किया। यह हमला पूरी तरह सुनियोजित था। रूसी समाचार एजेंसीके अनुसार हमलावरोंने गोलीबारीके बाद हालमें आग लगा दी जिसे बुझानेके लिए हेलिकाप्टरकी भी मदद ली गयी। हालमें फंसे सौसे अधिक लोगोंको सुरक्षित बाहर निकाला गया है। बादमें सुरक्षाकर्मियोंने त्वरित काररवाई करते हुए एक हमलावरको दबोच लिया, जबकि चार फरार बताये जा रहे हैं। अपुष्ट जानकारीके अनुसार चारों फरार आतंकी भी ढेर दिये गये हैं। रूसकी सरकारने इसे आतंकी हमला करार दिया है लेकिन युद्धके दौरान यह आशंका भी स्वाभाविक है कि कहीं इसके पीछे यूक्रेनका हाथ तो नहीं। हालांकि अमेरिकाने कहा कि इस हमलेमें यूक्रेनका हाथ नहीं है और यूक्रेनने भी हमलेमें हाथ होनेसे इनकार किया है। हमलेमें किसका हाथ है यह तो जांचका विषय है जिसकी स्पष्ट तस्वीर पकड़े गये आतंकीसे गहन पूछताछके बाद ही साफ होगी लेकिन यह हमला बड़ी त्रासदी है, इससे इनकार नहीं किया जा सकता है। घटनाके बाद मास्को एयरपोर्टपर सुरक्षा बढ़ा दी गयी है। मास्कोसे तत्काल कोई प्रतिक्रिया तो अभी नहीं मिली है लेकिन इतना जरूर कहा गया है कि हर दोषीको कड़ी सजा दी जायगी। इस भयावह हमलेके बाद अमेरिकाने अपने नागरिकोंको अलर्ट करते हुए निर्देश जारी किया है कि मास्कोमें जो भी अमेरिकी नागरिक जहां हैं वे वहीं रहें। रूस इन दिनों जिस तरह चारों ओरसे युद्धकी विभीषिकासे जूझ रहा है उसे देखते हुए आतंकी हमला उसके लिए बड़ी चुनौती है। मास्कोमें हुए इस बर्बर हमलेकी वैश्विक स्तरपर भर्त्सना की जानी चाहिए। आतंकवादके विरुद्ध सभी देशोंको एक मंचपर आना होगा। यदि आतंकवादपर दोहरा चरित्र अपनानेवाले देश अब भी नहीं चेते तो आनेवाले समयकी भयावहताकी कल्पना भी नहीं की जा सकती है।

मदरसा बोर्ड असंवैधानिक

इलाहाबाद उच्च न्यायालयकी लखनऊ बेंचने शुक्रवारको एक बड़ा फैसला सुनाते हुए यूपी बोर्ड आफ मदरसा एजुकेशन एक्ट २००४ को असंवैधानिक घोषित कर दिया है और इसे धर्मनिरपेक्षताके सिद्धान्तका उल्लंघन बताया है। २००४ में इस कानूनके बननेसे पहले मदरसोंका प्रबन्धन शिक्षा विभाग करता था,जिसे बादमें अल्पसंख्यक कल्याण विभागको सौंप दिया गया था। ऐसेमें यह सवाल उठता रहा है कि क्या मदरसा शिक्षाको अल्पसंख्यक कल्याण मंत्रालयके तहत चलाना सही है, जबकि जैन, सिख, ईसाई आदि जैसे अन्य अल्पसंख्यक समुदायोंसे सम्बन्धित सभी अन्य शिक्षा संस्थान शिक्षा मंत्रालयके तहत चलाये जा रहे हैं, वहीं सरकारके पैसोंसे मदरसोंमें धार्मिक शिक्षा दी जा रही थी। यही कारण है कि न्यायालयने इसे धर्मनिरपेक्षताके बुनियादी सिद्धान्तोंके विपरीत माना है। न्यायालयके फैसलेके बाद अब मदरसोंको सरकारसे मिलनेवाली सहायता राशि बंद हो जायगी। इससे अनुदानित मदरसे भी बंद हो जायंगे। मदरसा बोर्डसे मान्यताप्राप्त १६,४६० मदरसोंमें १३ लाख ८३ हजार १०७ विद्यार्थी शिक्षा पा रहे हैं। न्यायालयके आदेशके बाद मदरसोंसे शिक्षा पा रहे १३ लाखसे अधिक छात्रोंके भविष्यका क्या होगा। यह बड़ा सवाल है। हालांकि न्यायालयकी खण्डपीठने उत्तर प्रदेश सरकारको एक योजना बनानेका निर्देश दिया है ताकि वर्तमानमें मदरसोंमें पढ़ रहे छात्रोंको औपचारिक शिक्षा प्रणालीमें समायोजित किया जा सके। फिलहाल यह इतना आसान नहीं है। इसके अलावा एक और यक्ष प्रश्न है कि अनुदानित मदरसे बंद कर दिये जाते हैं तो उसमें कार्यरत करीब १०,२०० शिक्षक और शिक्षणेतर कर्मचारियोंकी रोजी-रोटीपर संकट खड़ा हो जायगा। सरकारको इस सम्बन्धमें गम्भीरतासे विचार करते हुए इनके समायोजनके लिए योजना बनानी चाहिए। समान शिक्षाका अधिकार सबको प्राप्त हो और न्यायालयके फैसलेका अनुपालन सुनिश्चित किया जाय।

लोक संवाद

सियासी तस्वीरोंमें बदलाव

महोदय,- कहावत है कि राजनिति में कोई दोस्त या दुश्मन नहीं होते हैं। पार्टीमें रहते कसमें खायी जाती हैं। कहते भी है कि पार्टीको छोड़कर कभी नहीं जायंगे। लेकिन कभी ऐसा वक्त भी मजबूर करता दिखाई देता है कि इनको पसंद नहीं होते हुए भी जाना पड़ता है। झारखंडके पूर्व मंत्री शिबू सोरेनकी बहू और हेमंत सोरेनकी भाभी सीता झामुमो छोड़कर भाजपामें शामिल हो गयीं। भाजपा झामुमोकी राजनीतिक कट्टर पार्टी है। रामविलास पासवानके भाई पशुपति पारसने भी केंद्रीयमंत्री पदसे इस्तीफा दे दिया है। बताया जा रहा है कि पशुपतिनाथ एनडीएके घटक दलमें शामिल है। महाराष्ट्र नवनिर्माण सेनाके राज ठाकरेने केंद्रीय स्वराष्ट्रमंत्री अमित शाहसे भेंट की है। राज ठाकरे एनडीएमें शामिल होना चाहते हैं। राजनीतिमें कब क्या बदलाव आ जाये कुछ कहा नहीं जा सकता है। मुलायम सिंहकी पुत्र वधु भाजपामें शामिल होनेपर बहुत विरोध किया गया था। अपने ही पार्टीसे किनारा कर दूसरी पार्टीमें शामिल होनेके कई किस्से है। फिलहाल भाजपाकी बढ़ती लोकप्रियता और बढ़ते जनाधारकी वजहसे कांग्रेसके बड़े नेता भी भाजपामें शामिल हो रहे हैं। खिसकते जनाधार और पार्टीमें भविष्यको लेकर चिंतित नेताओंने निर्णय कर पार्टी छोड़नेका सिलसिला जारी रखा है। लोकसभा चुनावसे पहले और टिकट बंटवारेके पूर्व दलबदल राजनीति चलती रहेगी। अब कांग्रेसपर वोटबैंककी राजनीति करनेवाले नेता भी भरोसा नहीं कर रहे हैं। मनसे राज ठाकरेकी पार्टी महाराष्ट्रमें अच्छा प्रदर्शन नहीं कर सकी। उससे राजने एनडीएके घटक दलके साथ मिलनेका फैसला किया है। वह उचित और मनसेके लिए सफलता सूचक है, क्योंकि महाराष्ट्रमें मनमानी करनी और अपनी ताकतके जोरपर दबाना अब भूतकाल बन चुका है। मतदाताओंको आंख दिखाकर वोट नहीं ले सकते हैं। बदलते समीकरणके मद्देनजर विपक्षी दलोंकी अब ताकत नहीं रही है कि मोदीको चुनौती दे सके। मोदी हर कदमपर देशवासियोंको सुखी करनेके संकल्पके साथ आगे बढ़ रहे हैं। **-कांतिलाल मांडोत, सूरत।**

साइबर अपराधियोंका बढ़ता दायरा

महोदय,- वित्तके क्षेत्रमें शामिल सोशल मीडिया इन्फ्लुएंसर न केवल अपने चैनलसे पैसे बना रहे हैं, बल्कि इस क्षेत्रमें अग्रणी कंपनियोंसे करार कर उन्हें भी प्रोमोट कर रहे हैं। ऐसे चैनल लोगोंको अर्थ और वित्तके क्षेत्रमें जागरूक तो कर ही रहे हैं, इस क्रममें नये लोगोंको शेयर मार्केटसे जोड़नेमें भी मददगार हो सकते हैं। लेकिन तस्वीरका दूसरा पहलू यह है कि जिस तेजीसे देशमें इंटरनेटका विस्तार हो रहा है, उतनी ही रफ्तारसे साइबर अपराध भी बढ़ रहे हैं। पुलिसके आंकड़ोंके मुताबिक लाकडाउनके दौरान सिर्फ दिल्लीमें साइबर अपराधोंमें नब्बे प्रतिशतकी वृद्धि हुई जिसमें वित्तीय अपराधोंका आंकड़ा कुल अपराधोंका पचास प्रतिशत था। एक कंटेंट शैलीके रूपमें वित्त और अर्थ जैसे विषयोंका इंटरनेटपर उभरना निश्चित रूपसे देशके आर्थिक स्वास्थ्यके लिए अच्छा संकेत है। लेकिन शेयर बाजारका इतिहास स्कैम और धोखाधड़ीसे भरा हुआ रहा है। इस कारण नये निवेशक इसे निवेशके एक बेहतर विकल्पके रूपमें नहीं देख पाते। इसके अलावा इंटरनेटपर होनेवाले वित्तीय लेनदेन भी पूरी तरह सुरक्षित नहीं माने जाते। जाहिर है, एक अनाम कंटेंट क्रिएटरकी राय वित्त और अर्थ क्षेत्रकी बारीकियोंको समझनेमें दर्शकोंकी मदद भले ही कर सकती हो, परन्तु उसकी रायके मुताबिक निवेश भी किया जाय, यह जरूरी नहीं। वेश भी किया जाय, यह जरूरी नहीं। - **मुकुल श्रीवास्तव, वाया ईमेल।**

प्रकृति और मुहूर्तकी जुगुलबन्दी

होली मधु विद्याका मधु प्रसाद है। यह लोक-महोत्सव है। भारतकी भू-सांस्कृतिक आस्थाका नर्तन, दर्शन-दिग्दर्शन है। यहां लोक अभिव्यक्ति है, राष्ट्रीय एकत्व है और सांस्कृतिक समरसता है। लोक आनंदकी अनुभूति है। होली सबकी प्रीति है, राष्ट्रकी रीति है। भारतकी उमंग और भारतके मनकी रंग-तरंग है।

❒ हृदयनारायण दीक्षित

प्रकृति नित्य नूतन है। चिरन्तन और आनन्दरससे परिपूर्ण। इसके अन्त:पुरमें आनन्दरसका महास्रोत है। भारतीय चिन्तनमें इस स्रोतका नाम है-उत्स। उत्सव इसी आनन्द रसका आपूरण है। यूरोप और अमेरिकी समाजोंके उत्सव बाजार तय करता है और भारतके उत्सव तय करता है देश-काल। प्रकृति दर्शनीय है। नदियां हंसती नृत्य करती गति करती हैं। नदियोंके तटपर उत्सव और नृत्य। काल सबका नियंता है। भारतीय उत्सवोंमें प्रकृति और मुहूर्तकी जुगुलबन्दी है। होली भारतके मनका सामूहिक उल्लास है। द्यावा-अंतरिक्ष मदनरस, आनन्दरस और प्रीतिरसका वातायन। होली वसंतोत्सवोंका चरम है और वसन्त है प्रकृतिका अपनी परिपूर्णतामें खिलना। प्रकृति सदाबहार नायिका है। प्रकृतिमें नियमबद्धता है। वैदिक ऋषियोंने सृष्टिके इस संविधानको ऋत कहा, ग्रीष्म, वर्षा, शिशिर, हेमंत, पतझड़ और बसंत इसी ऋतके ऋतु-रूप हैं। बसंत परिपूर्ण प्राकृतिक तरूणाई है। भारतीय उत्सवोंका अन्त: प्रेरण यह भरीपूरी प्रकृति है। प्रकृतिकी अंग-अंग उमंगका नाम है बसंत। बसंत ऋतु राज है। पृथ्वी सगंधा है। सो फूलोंसे सुगंध उड़ती है, मरूद्गण इस सुगंधको दशों दिशाओंतक पहुंचाते हैं। धरती आकाश गंध आपूरित होते हैं। तिक्त नीम अशोक हो जाती है और बेहया हो जाती है मौलश्री। तब गुलाब रातरानी जैसी सुगंध देने लगता है और रातरानी कमलगंधमें हहराती प्रीति। प्रकृतिके सभी रूप रसवन्त हो जाते हैं। नदियां नर्तन करती हैं, झीले गीत गाती हैं, वनस्पतियां झूम उठती हैं। शरद् और ग्रीष्म गलमिलौवल करते हैं। पक्षी गीत गाते हैं। वे नियम बंधनमें रहते हैं। लेकिन बसंत और होलीमें शास्त्रीयताका कोई बंधन नहीं। होली आनन्दका अतिरेक है। अतिरेक प्राय: शास्त्रीय नहीं होता। होलीमें लोक अपने छन्द स्वयं गढ़ता है। ऊर्जाका अतिरेक उत्सव बनता है। मनुष्यकी तरह समाजका भी मूल-उत्स होता है। भारतीय समाजका मूल-उत्स संस्कृति है। होली भारतका मधुरस है, मधुछन्द है, सामगान है, लोकनृत्य है और लोक संस्कृतिका चरम है। भारतीय उत्सव है प्रकृतिका प्रसाद। होली महाप्रसाद है। होली पूरे बरसभरकी मधुऊर्जा है। परिपूर्ण उत्सव है। होली सम्पूर्ण मानव समाजको अंगांगी भावसे अंगीकृत करनेका नेह निमंत्रण है। आधुनिक मानस विदेशीपर मोहित है, परदेशी रंगके कारण रंगमें भंग है। नेह निमंत्रण है कि आओ चढ़ा ले रंग देशी कि रंग परदेशी उतर जाये। चहुदिश, दिक्काल, लाल गुलाल, सबके गाल। एक मुट्ठी गुलाल आपके भी गाल। होली मधु विद्याका मधु प्रसाद है। यह लोक-महोत्सव है। भारतकी भू-सांस्कृतिक आस्थाका नर्तन, दर्शन दिग्दर्शन है। यहां लोक अभिव्यक्ति है, राष्ट्रीय एकत्व है और सांस्कृतिक समरसता है। लोक आनन्दकी अनुभूति है। होली सबकी प्रीति है, राष्ट्रकी रीति है। भारतकी उमंग और भारतके मनकी रंग तरंग है। देशके उत्तरए दक्षिण और पूरब, पश्चिम होली सबकी प्यारी है। होली विश्ववारा हिन्दू संस्कृतिका मनआनन्द है। होली गीता गाता नृत्य मगन अध्यात्म है। धरती, आकाश, वन और सम्पूर्ण उपवनका गीत, संगीत है। होली जाति, पंथ उम्रसे परे जीवन्त महाउल्लास है। होलीकी तमाम कथाएं हैं। महाभारतमें भविष्य पुराणका उल्लेख है। कथाके अनुसार कृष्णने युधिष्ठिरको बताया कि राजा रघुके पास ढोण्ढा राक्षसीकी शिकायत हुई, यह बच्चोंको तंग करती थी। रघुको ज्योतिषियोंने बताया कि शिव वरदानके अनुसार उसे खेलते बच्चोंसे डरना चाहिए। फाल्गुन पूर्णिमाको लोग-बच्चे हंसे, ताली बजायें तीन बार अग्निके चक्कर लगायें, पूजा करें। गीत गायें। ऐसा ही किया गया, वह मर गयी। प्रह्लादकी कथा दूसरी है। हिन्दुस्थानके उत्तर पूर्वमें दैत्यों दानवोंका क्षेत्र पूर्व ईरान, एशियाई, रूसका दक्षिणी पश्चिमी हिस्सा और गिलगिट तब इलावर्त था। बेबीलोनियाकी प्राचीन गुफाओंके भित्ति चित्रोंमें विष्णु हिरण्याक्षसे युद्धरत हैं। हिरण्याक्ष हिरण्याकश्यपका भाई था। प्रह्लाद हिरण्याकश्यपका पुत्र था। वह पिताकी दैत्य परमपराका विरोधी था। तब उसे आगमें झोंका गया, कथाके अनुसार वह बच गया। प्रह्लाद भारतीय सत्याग्रही चेतनाका प्रतिनिधि था। ढेर सारी कथाएं हैं। ऐसी कथाओंके सत्य सांस्कृतिक स्रोत होते हैं। होली भारतका अपना सांस्कृतिक आयोजन है। यह सम्पूर्ण भारतीय जनका उल्लास है लेकिन कुछ स्वयंभू भौतिकवादी विद्वानोंने इसे मिस्र या यूनानसे आयातित बताया है। होली जैसा उत्सव बेशक मिस्रमें था, यूनानमें भी था। ऐसे क्षेत्रोंसे भारत के व्यापारिक सम्बंध थे। सत्यकेतु विद्यालंकारने वैदिक युगमें बताया कि वर्तमान ईराक और तुर्की राज्य क्षेत्रोंसे प्राप्त भग्नावशेषों एवं प्राचीन सभ्यताओंसे ज्ञात होता है कि उनका भारतके साथ घनिष्ठ व्यापारिक सम्बंध था। ऋग्वेदमें पक्षियोंके उड़ने वाले आकाश मार्ग और समुद्री नौका मार्ग के उल्लेख हैं। जैमिनिने होलाका पर्वका उल्लेख (४००-२०० ईसा पूर्व) किया और लिखा कि होलाका सभी आर्योंका उत्सव था। आचार्य हेमाद्रि (१२६०-७० ई.) ने पुराण उद्धरणोंसे होलीकी प्राचीनता दर्शायी है। वात्स्यायनके कामसूत्रमें यह एक बसंतोल्लास क्रीड़ा पर्व है। ऋग्वेदमें अग्निको अन्न समर्पित करने और तमाम वाद्य यंत्रोंके साथ गीत गानेके उल्लेख हैं। हजारों बरस पुरानी होलीकी परम्परा उत्सवधर्मा भरतभूमिमें ही उगी। बहुत संभव है कि मिस्र और यूनानने भी भरतभूमिसे ही ऐसी प्रेरणा ली हो। वैदिक पूर्वजोंका चित्त उत्सवधर्मा था। होली हजारों बरस प्राचीन राष्ट्रके सांस्कृतिक विकासका परिणाम है। इसके उत्सव ऋग्वेदमें हैं। ऋग्वैदिक पूर्वज सृजनशील है। सृजनशीलता ही वैदिक ऋचाएं कविताएं हैं। यहां मंत्रोंके साथ संगीत और नृत्य भी है। रूप, रस, गंध, स्पर्शकी अनुभूतिसे आनन्द रसका अतिरेक छलकता है। यही आनन्द उत्सव बनता है। ऋषि कवि अपने खेलमें देवताओंको भी साझीदार बनाते है, वे मरूतोंको उत्सव क्रीडन्ति बताते हैं। सोमको घोड़ेके समान खेलनेवाला बताते हैं। लेकिन सूर्य और अग्नि बड़े देवता है। सूर्य ऋतुएं विभाजित करता है। अग्नि ऋतु निर्माणकर्त्ता है। ऋषि अग्निसे कहते हैं कि वह खेलता हुआ हमारी ओर आये। अग्नि खेलते हुए आनेवाले अतिथि हैं। उनके स्वागतका आनन्द होलीमें ही खेलता हुआ ही आता है। तब लोक भी खेलता है, हंसता, गीता गाता नृत्य करता है। वैदिक परम्परामें अग्नि बड़े देवता हैं। पूर्वजोंने होली उत्सवमें अग्निको प्रधान बनाया। कृषि प्रधान राष्ट्रने जौ-गेहूंकी बालियां अग्नि देवको सौंपी, प्रसाद रूपमें स्वयं भी ग्रहण की। सूर्य अग्निका ही रूप है। उनके प्रकाशमें सात रंग है। पूर्वजोंने होली उत्सवको सतरंगी बनाया। ध्वनिमें सात सुर-आयाम हैं। पूर्वजोंने रंगोंके साथ सात सुर भी जोड़े। यहां रंग सुर छंद है, ताल लयसंगीत हैं, नृत्य और थिरकन है। होलीमें मर्यादित वर्जनाहीनता है। परिपूर्ण उन्मुक्तता है। उपनिषदोंमें परम सत्ताको रस बताया गया है-रसौ वै स:। होली रसपूर्ण है। प्रीतिरसके साथ रीतिरस। गीत और संगीत रस। मर्यादा रस और उन्मुक्त रस साथ-साथ हैं। होली आप सबको आनन्दरस रंगसे परिपूरित करे।

वैदिक परम्परामें अग्नि बड़े देवता हैं। पूर्वजोंने होली उत्सवमें अग्निको प्रधान बनाया। कृषि प्रधान राष्ट्रने जौ-गेहूंकी बालियां अग्नि देवको सौंपी, प्रसाद रूपमें स्वयं भी ग्रहण की। सूर्य अग्निका ही रूप है। उनके प्रकाशमें सात रंग है। पूर्वजोंने होली उत्सवको सतरंगी बनाया। ध्वनिमें सात सुर आयाम हैं। पूर्वजोंने रंगोंके साथ सात सुर भी जोड़े। यहां रंग सुर-छंद है, ताल लयसंगीत हैं, नृत्य और थिरकन है। होलीमें मर्यादित वर्जनाहीनता है। परिपूर्ण उन्मुक्तता है। उपनिषदोंमें परम सत्ता को रस बताया गया है-रसौ वै सः। होली रसपूर्ण है। प्रीतिरसके साथ रीतिरस। गीत और संगीत रस।

लोक साहित्यमें होलीके रंग

होली बसन्त ऋतुमें मनाया जानेवाला महत्वपूर्ण पर्व है। यह फाल्गुन मासकी पूर्णिमाको मनाया जाता है। पारम्परिक रूपसे यह पर्व दो दिन मनाया जाता है। पहले दिन होलिका दहन और दूसरे दिन धूलिवन्दन कहा जाता है।

❒ सपन कुमार चटर्जी

होली जिसे धुरड्डी, धुलेण्डी, धुरखेल या धूलिवन्दन कहा जाता है। राग-रंगका यह लोकप्रिय पर्व बसन्तका सन्देशवाहक भी है। फाल्गुन माहमें नाये जानेके कारण इसे फाल्गुनी भी कहते हैं। इस मौसममें खेतोंमें सरसो खिल उठती है। बाग-बगीचोंमें फूलोंकी आकर्षक छटा छा जाती है। पेड़-पौधे, पशु-पक्षी और मनुष्य सभी उल्लाससे परिपूर्ण हो जाते हैं। खेतोंमें गेहूंकी बालियां इठलाने लगती है। किसानोंका हृदय खुशीसे नाच उठता है। होली भारतका अत्यन्त प्राचीन पर्व है। इतिहासकारोंका मानना है कि आर्योंमें भी इस पर्वका प्रचलन था। जैमिनीके पूर्व मीमांसा-सूत्र और कथा गाहर्य-सूत्र, हस्तलिपियों और ग्रन्थोंमें भी इस पर्वका उल्लेख मिलता है। विंध्य क्षेत्रके रामगढ़ स्थानपर स्थित ईसासे ३०० वर्ष पुराने एक अभिलेखमें भी इसका उल्लेख किया गया है। संस्कृत साहित्यमें बसन्त ऋतु और बसन्तोत्सव अनेक कवियोंके प्रिय विषय रहे हैं। होलीके पर्वसे अनेक कहानियां जुड़ी हुई हैं इनमेंसे सबसे प्रसिद्ध भक्त प्रह्लादकी है। प्राचीन कालमें हिरण्यकशिपु नामक एक अत्यन्त बलशाली असुर था। अपने बलके दंभमें वह स्वयंको ही ईश्वर मानने लगा था। पुत्र प्रह्लादकी ईश्वर भक्तिसे क्रुद्ध होकर हिरण्यकशिपुने उसे अनेक कठोर दण्ड दिये, परन्तु उसने ईश्वर भक्तिका मार्ग नहीं छोड़ा। हिरण्यकशिपुकी बहन होलिकाको वरदान प्राप्त था कि वह अग्निमें भस्म नहीं हो सकती। हिरण्यकशिपुने आदेश दिया कि होलिका प्रह्लादको गोदमें लेकर आगमें बैठे। आगमें बैठनेपर होलिका तो जल गयी, परन्तु प्रह्लाद बच गया। प्रह्लादकी कथाके अतिरिक्त कुछ लोगोंका यह भी मानना है कि भगवान श्रीकृष्णने इस दिन पूतना नामक राक्षसीका वध किया था। इसी खुशीमें गोपियों और ग्वालोंने रासलीलाकी एवं रंग खेला था। होलीके पूर्वकी तरह इसकी पम्पराएं भी अत्यन्त प्राचीन है और इसका स्वरूप एवं उद्देश्य समयके साथ बदलता रहा है। प्राचीन कालमें यह विवाहित महिलाओं द्वारा परिवारकी सुख-समृद्धिके लिए मनाया जाता था और पूर्ण चन्द्रकी पूजा करनेकी परम्परा थी। वैदिक कालमें इस पर्वको नवात्रेष्टि यज्ञ कहा जाता था। उस समय खेतके अध पके अन्नको यज्ञमें दाम करके प्रसाद लेनेका विधान समाजमें व्याप्त था। अन्नको होला कहते हैं, इसीसे इसका नाम होलिकोत्सव पड़ा। बसन्त पंचमीके दिन लोग रेंडके पेड़का यथास्थान डण्डा गाड़कर लकड़ी इत्यादि एकत्रित करते हैं। पर्वका पहला दिन होलिका दहनपर लोग अपने उबटन इसमें डालते हैं। माना जाता है कि इससे शरीर रोगमुक्त रहता है। होलिकाका दहन समाजकी समस्त बुराइयोंके अंका प्रतीक है। यह बुराइयोंपर अच्छाइयोंकी विजयका सूचक है। अगला दिन धूलिवन्दन कहलाता है। इस दिन लोग रंगोंसे खेलते हैं।

भारतमें होलीका उत्सव अलग-अलग प्रदेशोंमें भिन्नताके साथ मनाया जाता है। ब्रजकी होली आज भी सारे देशके आकर्षणका केंद्र है। बरसानेकी लठमार होली काफी प्रसिद्ध है। इसमें पुरुष महिलाओंपर रंग डालते हैं और महिलाएं उन्हें लाठियों तथा कपड़ेके बनाये हुए कोड़ोंसे मारती हैं। इसी प्रकार मथुरा एवं वृन्दावनमें भी १५ दिनोंतक होलीका पर्व मनाया जाता है। कुमाऊंकी गीत बैठकीमें शास्त्रीय संगीतकी गोष्ठियां होती हैं। हरियाणाकी धुलंड़ीमें भाभी द्वारा देवरको सताये जानेकी प्रथा है। बंगालकी दोल जात्रा-चैतन्य महाप्रभुके जन्मदिनके रूपमें मनायी जाती है। महाराष्ट्रकी रंग पंचमीमें सूख गुलाल खेलने, गोवाके शिमगोमें जुलूस निकालनेके बाद सांस्कृतिक कार्यक्रमोंका आयोजन, पंजाबके होला-मोहल्लामें सिखों द्वारा शक्ति प्रदर्शनकी परम्परा है। तमिलनाडुकी कमन पोडिगई मुख्य रूपसे कामदेवकी कथापर आधारित बसन्तोत्सव है, जबकि मणिपुरके याओसांगमें योंगसांग उस नन्हीं झोपड़ीका नाम है जो पूर्णिमाके दिन प्रत्येक नगर ग्राममें नदी अथवा सरोवरके तटपर बनायी जाती है। दक्षिण गुजरातके आदिवासियोंके लिए होली सबसे बड़ा पर्व है। छत्तीसगढ़की होरीमें लोकगीतोंका अद्भुत परम्परा है। मध्यप्रदेशके मालवा अंचलके आदिवासी इलाकोंमें बेहद धूमधामसे होली मनाया जाता है। भगोरिया जो होलीका एक ही एक रूप है। बिहारका फगुआ भी मशहूर है। इस्कान या वृन्दावनमें बांके बिहारी मन्दिरमें अलग-अलग प्रकारसे होलीके श्रृंगार एवं उत्सव मनानेकी परम्परा है।

प्राचीन कालके संस्कृत साहित्यमें होलीके अनेक रूपोंका विस्तृत वर्णन है। श्रीमद्भगवत महापुराणमें रसोंके समूह रासका वर्ण है। अन्य रचनाओंमें रंग नामक उत्सवका वर्णन है, जिनमें हर्षकी प्रियदर्शिका एवं रत्नावली तथा कालीदासका कुमारसम्भवम् तथा मालविकानिमित्रम् शामिल हैं। कालीदास रचित ऋतु संहारमें पूरा एक सर्ग ही बसन्तोत्सवको अर्पित है। भारवी, माघ और अन्य कई संस्कृत कवियोंने बसन्तकी खूब चर्चा की है। चन्द बरदाई द्वारा रचित हिन्दीके पहले महाकाव्य पृथ्वीराज रासोंमें होलीका वर्णन है। भक्तिकाल और रीतिकालके हिन्दी साहित्यमें होली और फाल्गुन माहका विशिष्ट महत्व रहा है। आदिकालीन कवि विद्यापतिसे लेकर भक्तिकालीन सूरदास, रहीम, रसखान पद्माकर, जायसी, मीराबाई, कबीर और रीतिकालीन बिहारी, केशव, घनानन्द आदि अनेक कवियोंका यह विषय प्रिय रहा है। इस विषयके माध्यमसे कवियोंने जहां एक ओर नि:तान्त लौकिक नायक-नायिकाके बीच खेली गयी अनुराग और प्रीतिकी होलीका वर्णन किया है, वहीं राधाकृष्णके बीच खेली गयी प्रेम और छेड़छाड़से भरी होलीके माध्यमसे सगुण साकार भक्तिमय प्रेम और निर्गुण निराकार भक्तिमय प्रेमका निष्पादन कर डाला है। आधुनिक हिन्दी कहानियोंमें प्रेमचन्दकी राजा हरदोल, तेजेन्द्र शर्माकी एक बार फिर होली, ओम प्रकाश अवस्थीकी होली मंगलमय हो इत्यादि होलीके अलग-अलग रूप देखनेको मिलते हैं। भारतीय शास्त्रीय, उपशास्त्रीय, लोक तथा फिल्मी संगीतकी परम्पराओंमें होलीका विषेा महत्व है। शास्त्रीय संगीतमें धमारका होलीसे गहरा सम्बन्ध है। हालांकि ध्रुपद, धमार, छोटे एवं बड़े ख्याल और ठुमरीमें भी होलीके गीतोंका सौन्दर्य देखनेको मिलता है। कथक नृत्यके साथ होली, धमार और ठुमरीपर प्रस्तुत की जानेवाली अनेक सुन्दर बंदिशें लोकप्रिय होती है। भारतीय शास्त्रीय संगीतमें कुछ राग ऐसे हैं, जिनमें होलीके गीत विशेष रूपसे गाये जाते हैं। बसन्त, बहार, हिंडोल और काफी ऐसे ही राग हैं। उपशास्त्रीय संगीतमें चैती, दादरा और ठुमरीमें अनेक प्रसिद्ध होलियां हैं। भजनयुक्त संगीतसे सही होली जैसे होली खेलत रघुबीरा अवधमें, होली खेलत रघुबीरा। इसमें भगवान रामचन्द्रजीका अवधमें होली खेलनेका अद्भुत वर्णन एवं होली खेलत नन्दलाल ब्रीजमें, होली खेलत नन्दलाल, इस प्रकार भगवान श्रीकृष्णका बृजमें गोपियोंके साथ होली खेलनेका एक सजीव वर्णन देखनेको मिलता है। इसे सुननेके बाद लोग खुशीसे झूम उठते हैं। आज भी यह अत्यन्त प्रिय है। इस प्रकार होलीके अनेक रूप हमें देखनेको मिलते हैं। होली एक ऐसा पर्व है, जिसमें गिले-शिकवे दूर कर, एक-दूसरेके साथ गले मिलकर दोस्तीकी ओर हाथ बढ़ाता है। अर्थात् बुराइयोंसे अच्छाइयोंकी ओर जाता है। होलीका रंग मनमें उमंग जरूर लाती है।

चेहरेपर लगी गुलालसे लग रही भोली है,गले मिल लो भाई कि आज प्यारी होली है।

आत्मबोध

मस्ती भरा पर्व

❒ निखिल

होली अत्यन्त खुशनुमा रंगबिरंगा त्योहार है। प्यार भरे रंगोंसे सजा यह पर्व हर धर्म, संप्रदाय, जातिके बंधन खोलकर भाई-चारेका संदेश देता है। इस दिन सारे लोग अपने पुराने गिले-शिकवे भूलकर गले लगते हैं और एक दूजेको गुलाल लगाते हैं। बच्चे और युवा रंगोंसे खेलते हैं। फाल्गुन मासकी पूर्णिमाको यह त्योहार मनाया जाता है। होलीके साथ अनेक कथाएं जुड़ीं हैं। होली मनानेके एक रात पहले होलिकाको जलाया जाता है। इसके पीछे एक लोकप्रिय पौराणिक कथा है। भक्त प्रह्लादके पिता हरिण्यकश्यप स्वयंको भगवान मानते थे। वह विष्णुके विरोधी थे जबकि प्रह्लाद विष्णु भक्त थे। उन्होंने प्रह्लादको विष्णु भक्ति करनेसे रोका जब वह नहीं माने तो उन्होंने प्रह्लादको मारनेका प्रयास किया। प्रह्लादके पिताने आखिर अपनी बहन होलिकासे मदद मांगी। होलिकाको आगमें न जलनेका वरदान प्राप्त था। होलिका अपने भाईकी सहायता करनेके लिए तैयार हो गयी। होलिका प्रह्लादको लेकर चितामें जा बैठी परन्तु विष्णुकी कृपासे प्रह्लाद सुरक्षित रहे और होलिका जलकर भस्म हो गयी। यह कथा इस बातका संकेत करती है कि बुराईपर अच्छाईकी जीत अवश्य होती है। आज भी पूर्णिमाको होली जलाते हैं और अगले दिन सब लोग एक-दूसरेपर गुलाल, अबीर और तरह-तरहके रंग डालते हैं। यह त्योहार रंगोंका त्योहार है। इस दिन लोग प्रात:काल रंगोंसे अपने नाते-रिश्तेदारों एवं मित्रोंके घर जाते हैं और उनके साथ जमकर होली खेलते हैं। बच्चोंके लिए तो यह त्योहार विशेष महत्व रखता है। सभी लोग बैर-भाव भूलकर एक-दूसरेसे परस्पर गले मिलते हैं। कई लोग होलीकी टोली बनाकर निकलते हैं उन्हें हुरियारे कहते हैं। ब्रजकी होली, मथुराकी होली, वृंदावनकी होली, बरसानेकी होली, काशीकी होली भारत ही नहीं, विदेशोंमें भी मशहूर है। दूर-दूरसे लोग इस पर्वको मनानेके लिए आते हैं। आजकल अच्छी क्वॉलिटीके रंगोंका प्रयोग नहीं होता और त्वचाको नुकसान पहुंचानेवाले रंग खेले जाते हैं। यह सरासर गलत है। इस मनभावन त्योहारपर रासायनिक लेप एवं नशे आदिसे दूर रहना चाहिए। बच्चोंको भी सावधानी रखनी चाहिए। बच्चोंको बड़ोंकी निगरानीमें ही होली खेलना चाहिए। दूरसे गुब्बारे फेंकनेसे आंखोंमें घाव भी हो सकता है। रंगोंको भी आंखों और अन्य अंदरूनी अंगोंमें जानेसे रोकना चाहिए। यह मस्तीभरा पर्व मिलजुल कर मनाना चाहिए।

आसुरी प्रवृत्तियोंके नाशका दिन होलिकोत्सव

❒ श्यामा श्याम

होली वसंत ऋतुमें मनाया जाने वाला महत्वपूर्ण त्योहार है। होली ऐसा त्यौहार है जिसमें लोग रंगोंका खूब आनन्द लेते हैं, एक साथ मिलकर नाचना गाना धूम मचाना यही होलीके त्यौहारके महत्वको बढ़ाता है। इसीके साथ फाल्गुनमें कुछ दिन ऐसे होते है जिनमे कई बातोंका विशेष ध्यान रखा जाता है। हिन्दू पंचांगकी माने तो फाल्गुन मासके शुक्ल पक्षकी अष्टमीसे होलाष्टक लग जाता है। होलिका दहनतक मलमास और तारा अस्तकी मान्यता लिये होनेसे इन दिनोंमें कोई भी शुभ कार्य नहीं किये जाते है। इन दिनोंमें कई स्थानोंपर अंतिम संस्कार करनेसे पहले शांति कार्य भी किये जाते है। राग-रंगका यह लोकप्रिय पर्व वसंतका संदेशवाहक भी है। राग अर्थात् संगीत और रंग तो इसके प्रमुख अंग हैं ही, परन्तु इनको उत्कर्षतक पहुंचाने वाली प्रकृति भी इस समय रंग-बिरंगे यौवनके साथ अपनी चरम अवस्थापर होती है। फाल्गुन माहमें मनाये जानेके कारण इसे फाल्गुनी भी कहते हैं। होलीका त्योहार वसंत पंचमीसे ही आरम्भ हो जाता है। उसी दिन पहली बार गुलाल उड़ाया जाता है। इस दिनसे फाग और धमारका गाना प्रारम्भ हो जाता है। खेतोंमें सरसों खिल उठती है। बाग-बगीचोंमें फूलोंकी आकर्षक छटा छा जाती है। पेड़-पौधे, पशु-पक्षी और मनुष्य सब उल्लाससे परिपूर्ण हो जाते हैं। खेतोंमें गेहूंकी बालियां इठलाने लगती हैं। किसानोंका हृदय खुशीसे नाच उठता है। बच्चे-बूढ़े सभी व्यक्ति सब कुछ संकोच और रूढ़ियां भूलकर ढोलक-झांझ-मंजीरोंकी धुनके साथ नृत्य-संगीत एवं रंगोंमें डूब जाते हैं। चारों तरफ रंगोंकी फुहार फूट पड़ती है। होलीके दिन आम्र मंजरी तथा चंदनको मिलाकर खानेका बड़ा माहात्म्य है। होली भारतका अत्यंत प्राचीन पर्व है जो होली, होलिका या होलाका नामसे मनाया जाता था। वसंतकी ऋतुमें हर्षोल्लासके साथ मनाये जानेके कारण इसे वसंतोत्सव और काम-महोत्सव भी कहा गया है। होली भारतका अत्यंत प्राचीन पर्व है जो होली, होलिका या होलाका नामसे मनाया जाता था। वसंतकी ऋतुमें हर्षोल्लासके साथ मनाये जानेके कारण इसे वसंतोत्सव और काम-महोत्सव भी कहा गया है। पौराणिक कारण यह है कि प्रह्लादको भस्म करनेके लिए फाल्गुन शुक्ल अष्टमीसे तैयारी शुरू कर दी गयी थी। उनके पिता हिरण्यकश्यपने अपनी बहन होलिकाके साथ मिलकर प्रह्लादको जीवित जलानेका षड्यंत्र रचा था। परन्तु प्रह्लाद बच गये और होलिका स्वाहा हो गयी। प्रतिकूल परिस्थितियोंका सामना करने और उससे छुटकारा पानेके लिए होलाष्टकमें विष्णुके साथ नरसिंह स्तोत्रका पाठ करना चाहिए। इसी प्रकार अपने आराध्य देवोंके चरणोंमें निम्नानुसार रंग और पूजा सामग्री अर्पित करना चाहिए। जैसे यदि सूर्यके कारण कोई निर्बलता आ रही है तो सूर्यको कुमकुम अर्पित करें। चंद्रमाके लिए अबीर, मंगलके लिए, लाल चंदन या सिंदूर, बुधके लिए हरा रंग या मेहंदी, बृहस्पतिके लिए केशर, हल्दी पाउडर, शुक्रके लिए सफेद चंदन, मक्खन एवं मिश्री, शनिके लिए नीला रंग और राहू-केतुके लिए पंच गव्य अथवा गोबर गोमूत्रके साथ काले तिल अर्पण करने चाहिए। ज्योतिषीय आधारपर अष्टमीको चंद्रमा, नवमीको सूर्य, दशमीको शनि, एकादशीको शुक्र, दादशीको बृहस्पति, त्रयोदशीको बुद्ध, चतुर्दशीको मंगल एवं पूर्णिमाको राहू उग्र होकर काम प्रधान रहनेसे मांगलिक कार्य वर्जित माने जाते है। फाल्गुन पूर्णिमाको उच्च अभिलाषी सूर्य विषुवत रेखाके करीब होता है। इससे अन्य ग्रह अपने प्रभावके लिए स्वतंत्र हो जाते है। क्योंकि यह पूर्व शुक्र प्रधान, शक्ति संपन्न होता है। अत: मनुष्यमें हीन मनोवृत्तियां उजागर होकर नीच भावोंको दिखानेमें भी हिचक नहीं करतीं। द्वापर युगमें फाल्गुनकी पूर्णिमाको श्रीकृष्णने पूतनाका वध किया था। इसलिए पुतना यानी ढूंढ़ा राक्षसीको जलानेके लिए मालवा, राजस्थान, पंजाब आदि क्षेत्रोंमें गोबरसे बनी मालाएं आदि होलिकामें जलानेका भी प्रचलन है। हिरण्यकश्यपकी बढ़ती आसुरी प्रवृत्तिको देखतें हुए विष्णुजीने नरसिंह अवतार लिया। हिरण्यकश्यपको यह वरदान मिला था कि वह न तो दिनमें, रातमें, घरमें, घरके बाहर, आकाशमें, धरतीपर और इनसान या जानवरके मारनेसे नहीं मरेगा। हिरण्यकश्यपको मिले वरदानके कारण नरसिंह भगवानने घरकी देहरीपर उसे अपनी गोदमें लेकर उसका वध कर प्रह्लादको उनका अधिकार दिलाया। इसी वंशमें प्रह्लादके पौत्र राजा बलिको वामन अवतारसे लेकर असुरोंकी प्रसुप्त, सद्भावनाको जगाया एवं तीनों लोकोंपर अधिपत्य कर रहे, साम्राज्यसे मुक्त कराकर वैभव संपदाको जनहितमें वितरण करनेमें सफलता प्राप्त की थी। होलीके पर्वकी तरह इसकी परम्पराएं भी अत्यंत प्राचीन हैं और इसका स्वरूप और उद्देश्य समयके साथ बदलता रहा है। वैदिक कालमें इस पर्वको नवात्रैष्टि यज्ञ कहा जाता था। उस समय खेतके अधपके अन्नको यज्ञमें दान करके प्रसाद लेनेका विधान समाजमें व्याप्त था। अन्नको होला कहते हैं, इसीसे इसका नाम होलिकोत्सव पड़ा। भारतीय ज्योतिषके अनुसार चैत्र शुदी प्रतिपदाके दिनसे नववर्षका भी आरम्भ माना जाता है। इस उत्सवके बाद ही चैत्र महीनेका आरम्भ होता है। अत: यह पर्व नवसंवतका आरम्भ तथा वसंतागमनका प्रतीक भी है। इसी दिन प्रथम पुरुष मनुका जन्म हुआ था, इस कारण इसे मन्वादितिथि कहते हैं।

https://t.me/AllNewsPaperPaid

एक्स से

फलस्तीन, इजरायल, यूक्रेन और सूडान के युद्ध-पीड़ितों के लिए प्रार्थना करते समय हमें सीरिया को नहीं भूलना चाहिए। वहां के लोगों ने भी लंबे युद्ध के कारण बहुत नुकसान उठाया है- पोप फ्रांसिस/ ईसाई धर्मगुरु

अरविंद और आप का संकट

सवाल उठता है, कामयाब आंदोलन और सफल सियासत के बावजूद उनका यह सफर कारागार के सीखचों के पीछे कैसे जा पहुंचा? क्या महंगी चुनाव व्यवस्था इसकी वजह है, जहां हर पार्टी को ज्ञात-अज्ञात स्रोतों से आर्थिक मदद की दरकार होती है? अगर ऐसा है, तो फिर उनमें और औरों में क्या फर्क रह जाता है?

स्कैन करें
आजकल स्तंभ के तहत प्रकाशित आलेखों के लिए

शशि शेखर

आजकल

अपना 77वां वसंत जी रहे आजाद भारत में यह आम चुनाव नई रंगत लिए होगा। ऐसा पहली बार होगा, जब दो मुख्यमंत्री, एक उप-मुख्यमंत्री, सांसद और मंत्री भ्रष्टाचार के आरोप में सलाखों के पीछे होंगे। इनके अलावा दर्जनों ऐसे हैं, जो या तो जेल काट चुके हैं, या जाने की तैयारी में हैं। यह भ्रष्टाचार के खिलाफ प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की वायदाशुदा नीति का नतीजा है, या फिर प्रतिपक्ष को कमजोर करने की रणनीति?

वैचारिक तौर पर विभाजित वैश्विक समाज में ऐसे सवालों के उत्तर देना आसान नहीं, क्योंकि लोगों ने सत्य की श्वेत-श्याम छवि को अपने पसंदीदा रंगों के चश्मों से देखना शुरू कर दिया है। यही वजह है कि किसी ऐसे मामले की जांच के लिए घटनाओं को परत-दर-परत जांचना जरूरी है।

आम आदमी पार्टी से शुरू करते हैं। पिछले दशक के प्रारंभिक वर्षों में अरविंद केजरीवाल सत्य के 'योद्धा' के तौर पर उभरे थे। उन्होंने भारतीय राजस्व सेवा की चमक-दमक वाली नौकरी छोड़कर एनजीओ और आरटीआई के जरिये आसपास बिखरी बुराइयों से जूझने का संकल्प किया था।

अन्ना के आंदोलन ने उन्हें नए अवसर और नई ऊंचाई प्रदान की थी। वह उनके मंच से जब अपनी अति साधारण आवाज में गाते- *इंसान का इंसान से हो भाईचारा, यही पैगाम हमारा,* तब राजनीतिक भ्रष्टाचार और कदाचार से ऊबे हुए लोग उन पर रीझ-रीझ जाते। उन दिनों वह और उनके साथी कहते थे कि हमें राजनीति से मतलब नहीं है। हम तो सिर्फ सच्चाई, भाईचारे, और इंसाफ के लिए लड़ रहे हैं। उनके प्रशंसक उस वक्त आश्चर्यचकित रह गए, जब केजरीवाल ने राजनीतिक पार्टी बनाने की घोषणा कर डाली।

आम आदमी पार्टी की स्थापना के वक्त उनका तर्क था कि सियासत के सागर में उतरे बिना उसे साफ करना संभव नहीं। राजनीति की शुरुआत भी उन्होंने गैर-पारंपरिक तरीके से की। वह कभी ऑटो रिक्शा वालों के बीच जा बैठते, तो कभी मेहनतकशों के किसी और वर्ग की ओर रुख कर लेते। हालांकि, पहले चुनाव के बाद सत्ता के लिए उन्होंने उसी कांग्रेस का सहारा ले लिया, जिस पर वह कल तक भ्रष्टाचार के बेहद तीखे आरोप लगाते थे। आम आदमी पार्टी यह चुनाव भी कांग्रेस के साथ लड़ने जा रही है।

इस दौरान उनके कुछ पुराने साथियों को उनकी कथनी और करनी में भेद नजर आने लगा। कई शुरुआती साथियों ने या तो पार्टी छोड़ दी या वे बाहर कर दिए गए, लेकिन केजरीवाल अपने रास्ते पर बढ़ते रहे। उनमें निर्बल और निम्न मध्यमवर्गीय मतदाताओं को समझने की अद्भुत क्षमता है। बिजली और पानी के बिलों में रियायत देकर आम आदमी पार्टी ने दिल्ली के लोगों का दिल जीता। उन्होंने शिक्षा और स्वास्थ्य के क्षेत्र में भी बेहतर काम किया। दिल्ली की जनता ने भी लगातार दो चुनावों में जबरदस्त बहुमत देकर उनकी हौसला अफजाई की। उन्होंने पंजाब में सरकार बनाने में कामयाबी हासिल की और गुजरात विधानसभा के चुनावों में 12.92 प्रतिशत मत पाकर राष्ट्रीय राजनीतिक दल का दर्जा भी हासिल कर लिया।

सवाल उठता है, कामयाब आंदोलन और सफल सियासत के बावजूद उनका यह सफर कारागार के सीखचों के पीछे कैसे जा पहुंचा? क्या महंगी चुनाव व्यवस्था इसकी वजह है, जहां हर पार्टी को ज्ञात-अज्ञात स्रोतों से आर्थिक मदद की दरकार होती है? अगर ऐसा है, तो फिर उनमें और औरों में क्या फर्क रह जाता है?

वह जिस तथाकथित आबकारी घोटाले में गिरफ्तार किए गए हैं, वह भी आश्चर्यजनक है। उन्होंने अपने साथियों के साथ अनोखी आबकारी नीति का निर्माण किया था। इसके तहत दिल्ली में अंग्रेजी शराब बेहद सस्ती हो गई थी। क्या कमाल है? एक तरफ नीतीश कुमार बिहार में शराबबंदी

करके हुकूमत बचा रहे थे, तो दूसरी तरफ आम आदमी पार्टी सुरा की नई रसधार बहाकर लोकप्रियता तलाश रही थी।

इसी बीच आम आदमी पार्टी में पुराने आंदोलनकारियों की जगह नए चेहरे लेने लगे थे। विजय नायर उनमें से एक थे। वह पता नहीं कहां से आए और मीडिया सेल के प्रभारी बना दिए गए। उनके तौर-तरीके पार्टी की अब तक की रवायत से बिल्कुल अलग थे। नई शराब नीति में उनका भी दखल था। वह केजरीवाल के पहले ऐसे लेफ्टिनेंट थे, जो गिरफ्तार किए गए। बाद में उप-मुख्यमंत्री मनीष सिसोदिया और राज्यसभा के सदस्य संजय सिंह भी इसकी लपेट में आ गए। अब केजरीवाल की गिरफ्तारी ने कई सवाल खड़े कर दिए हैं। आम आदमी पार्टी का दावा है कि हमारे नेताओं को कोई 'मनी ट्रेल' न मिलने के बावजूद जेल भेजा गया, पर उन्हें अब तक अदालतों से कोई राहत नहीं मिल सकी है।

नई लीक गढ़ने के अभ्यस्त अरविंद ने इस बार भी अपना अलग रास्ता चुना है। अतीत में कई राजनेता मुख्यमंत्री या अन्य पदों पर रहते हुए भ्रष्टाचार के आरोपों में घिरे, मगर गिरफ्तारी से पूर्व सभी ने त्यागपत्र दे दिया। झारखंड के हेमंत सोरेन इसका नवीनतम उदाहरण हैं, पर केजरीवाल के साथियों ने उनके इस्तीफा न देने की घोषणा की है। सवाल उठता है कि क्या जेल से शासन चलाया जा सकता है? संविधान इस मसले पर चुप है, लेकिन 'जेल मैनुअल' के प्रावधान इसमें अड़चनकारी साबित होने जा रहे हैं। यह संभव नहीं है कि 'सिविल सर्विसेज' का इम्तिहान पास कर चुके अरविंद केजरीवाल इस तथ्य को नहीं जानते। क्या वह इस आपदा में कोई अवसर खोज रहे हैं? राजनीतिक हलकों में कयास उभर रहे हैं कि कहीं केजरीवाल और हेमंत के पक्ष में सहानुभूति की लहर तो नहीं उमड़ पड़ेगी?

ऐसे लोगों का तर्क है कि सिर्फ वही लोग गिरफ्तार होते हैं, जो भाजपा के विरोध में होते हैं। यह पार्टी नहीं 'वाशिंग मशीन' है। क्या यह नया ट्रेंड है? यकीनन नहीं। सुप्रीम कोर्ट ने जब सीबीआई को 'तोता' कहा था, तब किसकी सत्ता थी?

यहां एक और सवाल उठता है। आम आदमी पार्टी का ढांचा अभी तक परिपक्व दलों की भांति नहीं उभर सका है। इसके कार्यकर्ता अभी भी वॉलंटियर की तरह काम करते हैं। केजरीवाल और सिसोदिया के जेल जाने के बाद ऐसा कोई चेहरा नहीं दीखता, जो समूची पार्टी को एकजुट रख सके। झारखंड में हेमंत सोरेन के जेल जाने के बाद उनकी पार्टी झारखंड मुक्ति मोर्चा समान संकट से जूझ रही है। हेमंत की भाभी सीता सोरेन ने भाजपा की शरण ले ली है। अगर हेमंत सोरेन लंबे समय तक जेल में रहे, तो उनका परिवार पार्टी पर पकड़ कैसे कायम रख सकेगा?

आम चुनाव की प्रक्रिया शुरू हो चुकी है और ऐसे में भाजपा व कांग्रेस, दोनों चाहेंगी कि आंदोलन के गर्भ से उपजे ये दल विवादों की दलदल में गहरे फंस जाएं। वे जानती हैं, बाजार लुटने पर तमाशबीन सर्वाधिक फायदा उठाते हैं।

@shekharkahin
@shashishekhar.journalist

जीना इसी का नाम है

राजू नेपाली
सामाजिक कार्यकर्ता

इंसानियत कहां मानती है सरहदों की मजबूरियां

भारत-नेपाल के 1,500 से भी अधिक महिलाओं और बच्चों को मानव तस्करों व अपहर्ताओं के चंगुल से छुड़ाने में कामयाब रहे राजू को कई सम्मानों से नवाजा गया है। मगर राजू की रूह को सुकून तब मिलता है, जब वर्षों से बिछड़े हुए लोग अपने परिजनों से जा लिपटते हैं!

यह एक स्थापित तथ्य है कि हर चीज के दो पहलू होते हैं- एक अच्छा और दूसरा बुरा। यह इंसान के ऊपर है कि वह किस पक्ष को चुनता है। सोशल मीडिया भी इससे अछूता नहीं। इस पर सक्रिय लोगों ने जहां दुनिया में आग लगाई, समुदायों को जख्मी किया, तो इसके अनगिनत मुरीदों ने लोगों के जख्मों पर मरहम भी रखे, इंसानियत की ऊंची मिसालें भी कायम कीं। राजू नेपाली सोशल मीडिया के ऐसे ही मुरीद हैं, जो अब पश्चिम बंगाल और नेपाल के पिछड़े सरहदी इलाकों की हजारों जिंदगियों में आखिरी उम्मीद की तरह पैबस्त हो चुके हैं। किसी का बच्चा लापता हो, पुलिस से पहले वह राजू को याद करता है।

राजू का पूरा बचपन दार्जिलिंग और जलपाईगुड़ी में बीता। पिता चाय बागान में काम करते थे। मगर स्कूल में राजू का बहुत दिल न लग सका। सातवीं फेल राजू को तब कहां पता था कि एक दिन जिंदगी के इम्तिहान में वह सबसे अव्वल आएंगे! किशोरावस्था में ही वह नेपाल और पश्चिम बंगाल के उत्तरी जिलों में सक्रिय एक ईसाई मिशनरी से जुड़ गए थे। साल 1992 की बात है। राजू उन दिनों नेपाल में ही थे। वहां उनकी मुलाकात माया (बदला हुआ नाम) से हुई। सपनों व उत्साह से भरी माया की बातें किसी को भी प्रेरित कर सकती थीं। राजू और माया के बीच इतनी अच्छी समझ विकसित हुई कि राजू उनके पारिवारिक मित्र बन गए थे। जब भी वह उस इलाके से गुजरते, माया के परिवार से जरूर मिलते।

साल 1995 में एक दिन माया ने चहकते हुए राजू को बताया कि उसकी शादी तय हो गई है और उन्हें लाजिमी तौर मंगनी व शादी में मौजूद रहना है। राजू का भी उसी वर्ष विवाह हुआ था। वह माया की मंगनी में तो कुछ पल के लिए शामिल हुए, मगर दूसरी व्यस्तताओं के कारण शादी में शरीक न हो सके। शादी के दिन माया का ही फोन आया था- 'बधाई नहीं देंगे?' वह उनकी आखिरी बातचीत थी। उसके बाद न माया का कोई फोन आया और न ही उन्होंने कोई मैसेज किया। इधर मिशनरी में राजू की भी जिम्मेदारियां काफी बढ़ गई थीं।

कई महीनों बाद राजू माया के गांव की तरफ से निकल रहे थे, तो उनके माता-पिता से मिलने पहुंचे। वे बेहद दुखी थे, क्योंकि विदा होने के बाद से बेटी ने उनसे कोई संपर्क नहीं किया था और न ही उसके पति ने किसी किस्म की बातचीत की थी। राजू हैरान रह गए। कुछ आहत मन के साथ वह पश्चिम बंगाल लौट आए थे। फिर घर-परिवार की जिम्मेदारियों और मिशनरी के कामों में वक्त कम पड़ता गया और माया का ख्याल भी स्मृतियों के किसी कोने में जा दबा।

करीब एक दशक बाद मिशनरी के सम्मेलनों में भाग लेने के लिए राजू को मुंबई और पुणे जाना पड़ा। पुणे के एक ढाबे पर माया मिलीं। राजू एकबारगी उन्हें पहचान न सके। मगर

यकीन के अगले कुछ पल मौन और आंखों में उमड़ते आंसुओं के थे। बेबसी यह थी कि उन्हें बहाया भी नहीं जा सकता था! माया के साज-सिंगार से राजू पर सब कुछ उजागर हो चुका था। दस साल पहले पति द्वारा ही कोठे पर बेच दी गई युवती ने लगभग गिड़गिड़ाते हुए राजू से कहा, इस जहन्नुम से निकाल ले चलो! राजू ने पता पूछकर माया को आश्वस्त किया, क्योंकि कुछ ही दूरी पर खड़े कोठे के गुर्गे उन दोनों के ऊपर नजर गड़ाए हुए थे।

माया को उस दोजख से निकालने का काम आसान न था, मगर उन दोनों के पवित्र नेह का बंधन इतना मजबूत था कि राजू ने अपनी जान पर खेलकर माया को बचाने का फैसला किया। सबसे पहले उन्होंने मुंबई से बागडोगरा की फ्लाइट के टिकट बुक कराए और फिर ग्राहक बनकर बड़ी सावधानी से माया को वेश्यालय से बाहर निकाला। देहमंडी के पूरे तंत्र को चकमा देकर वह माया को बागडोगरा लाने में सफल हो गए थे, मगर यहां माता-पिता ही बेटी को अपनाने को तैयार न थे। चंद महीने के भीतर ही माया ने भयंकर पीड़ा में दम तोड़ दिया। वह एड्स की गिरफ्त में थीं।

इस मौत ने राजू को इस कदर झकझोरा कि उनकी जिंदगी की दिशा ही बदल गई। उन्होंने मानव तस्करी की शिकार बनी बच्चियों को बचाने का प्रण लिया। सबसे पहले उन्होंने इस तरह की मुहिम से जुड़ी संस्थाओं के कामकाज को समझा और फिर ईसाई मिशनरी की नौकरी से इस्तीफा देकर 'डुअर्स एक्सप्रेस मेल' नाम से अपना एक संगठन बनाया। राजू अब तक इतना तो जान ही चुके थे कि नौकरी या शादी के नाम पर गरीब लड़कियां मानव तस्करों के जाल में सबसे ज्यादा फंसती हैं और महज दो-तीन हजार रुपये के लोभ में स्थानीय लोग ही इसमें 'स्लीपर सेल' की भूमिका निभाते हैं। इसलिए समान सोच के नौजवानों की एक टीम के साथ राजू नेपाल और उत्तरी बंगाल में गांव-गांव, बस्ती-बस्ती घूम-घूमकर गरीब परिवारों को संदिग्ध स्थानीय लोगों और मानव तस्करी के प्रति आगाह करने लगे।

इस सिलसिले में जब वह विभिन्न इलाकों की पुलिस से मिले, तो उन्हें ऐसी-ऐसी दारूण कथाएं सुनने को मिलीं, जिनसे उनका इरादा और पक्का हो गया। माया के वक्त ही उन्हें गहरे एहसास हो चुका था कि सिर्फ पीड़िता की नहीं, माता-पिता व परिवारों की काउंसलिंग भी बहुत जरूरी है। इस काम में उनकी मदद के लिए कई अन्य संस्थाएं भी आगे

पुणे के एक ढाबे पर माया मिलीं। राजू एकबारगी तो उन्हें पहचान न सके। मगर यकीन के अगले कुछ पल मौन और आंखों में उमड़ते आंसुओं के थे। बेबसी यह थी कि उन्हें बहाया भी नहीं जा सकता था! माया के साज-सिंगार से राजू पर सब कुछ उजागर हो चुका था।

आईं। अपने मूल संगठन और साल 2015 से शुरू वाट्सएप ग्रुप 'स्टॉप इफ यू कैन' के जरिये भारत-नेपाल में 1,500 से भी अधिक महिलाओं व बच्चों को मानव-तस्करों और अपहर्ताओं के चंगुल से छुड़ाने में कामयाब रहे राजू को स्थानीय प्रशासन, मानवाधिकार संगठनों और सिक्किम सरकार ने कई सम्मानों से नवाजा है। मगर राजू नेपाली की रूह को सुकून तब मिलता है, जब वर्षों से बिछड़े हुए लोग अपने परिजनों से जा लिपटते हैं!

प्रस्तुति : चंद्रकांत सिंह

वो लम्हा

रॉबर्ट कोच
नोबेल से सम्मानित वैज्ञानिक

अखबार पढ़ने लगा पांच साल का बच्चा

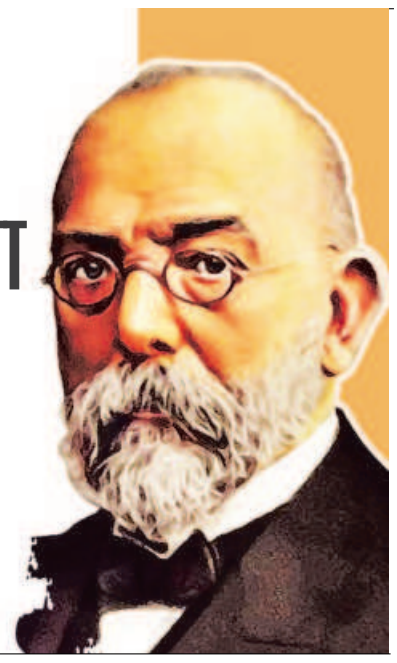

पूरे ग्यारह भाई और दो बहनें। छोटे भाइयों को बड़े भाइयों के बड़े होने का इंतजार रहता था, ताकि बड़ों के कपड़े उन्हें मिल जाएं। सप्ताह में दो दिन अच्छा खाना मिलता था। बाकी दिन ज्यादातर सूखा ब्रेड ही काम आता था। शक्कर का तो बच्चों ने स्वाद ही नहीं चखा था।

जर्मनी के क्लॉस्टल शहर में उस बच्चे ने जब होश संभाला, तब अपने परिवार को खूब लंबा-चौड़ा पाया। उसके दो बड़े भाई थे और उससे छोटे दस भाई-बहन। पूरे ग्यारह भाई और दो बहनें। छोटे भाइयों को बड़े भाइयों के बड़े होने का इंतजार रहता था, ताकि बड़ों के कपड़े उन्हें मिल जाएं। सप्ताह में दो दिन अच्छा खाना मिलता था। बाकी दिन ज्यादातर सूखा ब्रेड ही काम आता था। शक्कर का तो बच्चों ने स्वाद ही नहीं चखा था। पिता खदान में काम करके जरूरी काम लायक ही धन कमा पाते थे। देर रात पिता जब सुस्ताते थे, तब दूर देश की कहानियां सुनाते थे, तो वह बच्चा दुनिया घूमने की तमन्ना से भर जाता था। धन की सीमा होती है, पर मन की नहीं। मन तो बार-बार सरहद लांघ जाता है।

सरहद पार की खबरें अखबारों में ही आती हैं, तो वह बच्चा आसपास आने वाले अखबारों में झांकता रहता था। अखबार पढ़ने वालों से सुनता रहता था और पढ़े हुए अखबार को बार-बार पलटकर देखता था। एक-एक अक्षर में झांकते हुए वह बच्चा अखबार पढ़ना सीख गया। एक दिन मां-बाप, दोनों दांतों तले उंगली दबाने को मजबूर हो गए कि उनका महज पांच साल का बच्चा अखबार पढ़ रहा है, यह तो चमत्कार है। अक्षर तोतली आवाज में साकार होने लगे थे, जबकि बच्चा स्कूल भी नहीं गया था। वह निर्णायक क्षण था। खुशनसीब माता-पिता ने मन ही मन में इस बच्चे पर खास ध्यान देने का फैसला कर लिया था।

उसके बाकी भाई-बहन खूब खेलते थे, पर वह जीव-जंतु, फूल-पत्ती में ही लगा रहता था। एक दिन वह पिता के टूटे संदूक के सामान देख रहा था। उसमें उसे एक पुराना पॉकेट लेंस दिखाई दिया। उस मेग्नीफाइंग ग्लास में खरोच के निशान थे, पर बालक ने उसे उठा लिया और पिता के पास पहुंच गया, 'पापा, यह मुझे दे दीजिए, मैं अपने जंतुओं को इसकी मदद से देखूंगा।'

पिता फिर चौंके और उनके चेहरे पर मुस्कान पसर गई। वह जानते थे कि उनका पुत्र प्रकृति के प्रति अथाह जिज्ञासा से भरा हुआ है, तो इसे रोकना ठीक नहीं है। उन्होंने हर्ष के साथ कहा, 'लेंस ले लो और सदुपयोग करो।' फिर क्या था? वह बच्चा घंटों जीव-जंतुओं में निहारा करता था और उसे अलग ही संसार नजर आता था। प्रकृति प्रेम ही उसे चिकित्सा शास्त्र की ओर ले गया और इसमें एक खास पहलू यह भी था कि डॉक्टर बनने से तब दुनिया घूमने की संभावना थी। उम्र कुछ बढ़ी, तो दोनों बड़े भाई कमाने के लिए अमेरिका चले गए, पर उसे मां ने जाने नहीं दिया। मां की इच्छा थी कि कम से कम एक संतान पढ़कर नाम रोशन करे। किसी तरह परिवार ने हिम्मत दिखाई और उस स्कूल पास युवा को गोटिंगेन शहर उच्च शिक्षा के लिए भेज दिया गया।

तब पिता तो पुत्र की तेजी देख सकुचा जाते थे कि अगर रुचि दिखाएंगे, तो पैसे खर्च करने पड़ेंगे। समझदार युवा ने सोच लिया कि आगे रास्ता उसे खुद तय करना है। विश्वविद्यालय में उसने एक शोध पत्र लिखा, जिसमें सबसे ऊपर उसने लिखा - 'कभी निष्क्रिय मत रहो।' वाकई दुनिया जो दिख रही है और वह दुनिया, जिसे केवल मेग्नीफाइंग ग्लास से देखा जा सकता है, दोनों में कुछ भी निष्क्रिय नहीं है। वह शोध पत्र इतना कामयाब रहा कि पूरे 60 डॉलर पुरस्कार स्वरूप हासिल हुए। संग्रहालय में नौकरी भी मिल गई और लोग उस विद्यार्थी को रॉबर्ट कोच के नाम से जानने लगे। रॉबर्ट कोच (1843-1910) ने पिता को फिर अचंभित कर दिया, अपने मजाकिया लहजे में पिता को पत्र लिखा, 'कभी-कभी ऐसा होता है, अंधी मुर्गी को भी मक्के का दाना मिल जाता है, ऐसा ही मेरे साथ हुआ है।'

अब जैसे-जैसे परीक्षण की सुविधाएं बढ़ती गईं, रॉबर्ट कोच विशेष रूप से खतरनाक बैक्टीरिया के चक्रव्यूहों को भेदते चले गए। सबसे पहले उन्होंने जानलेवा बीमारी एंथ्रेक्स के बीजाणुओं की खोज की। चकित रोगविज्ञानी जूलियस कोहनहेम ने तब खुशी से भरकर कहा था, 'यह बहुत बड़ी खोज है और यह युवा रॉबर्ट कोच अपनी परीक्षण प्रतिभा से हमें आगे भी बहुत अचंभित और शर्मिंदा करेगा।' ऐसा ही हुआ। रॉबर्ट कोच ने बैक्टीरिया का पीछा करते-करते दुनिया को 24 मार्च, 1882 को बताया कि जानलेवा बीमारी तपेदिक का रोगाणु कैसे काम करता है और रातोंरात वह दुनिया में प्रसिद्ध हो गए। रोगाणुओं की विशाल बस्तियों में खोजते-खंगालते रॉबर्ट कोच ही थे, जिन्होंने एक दिन बताया कि हैजा क्यों होता है? उनकी खोजों ने ही अनेक प्रकार की दवाइयों के लिए रास्ता आसान किया। कभी खूब अभाव देखने वाले इस इंसान ने खूब पैसे कमाए, पर अहंकार उन्हें छू न पाया। वह कहते थे कि मैं तो टहल रहा था, स्वर्ण राह के किनारे पड़ा था, संयोग से वह मुझे दिख गया।' बेशक, नोबेल से सम्मानित इस वैज्ञानिक को दुनिया भूल न पाएगी।

प्रस्तुति : ज्ञानेश उपाध्याय

हिंदी साहित्य के सामाजिक खूंटे

तिरछी नजर

सुधीश पचौरी हिंदी साहित्यकार

साहित्य समाज को ढूंढ़ रहा है। समाज साहित्य को ढूंढ़ रहा है। लेकिन दोनों में से कोई किसी को नहीं मिल रहा। यूं साहित्य के पास सब कुछ है, छोटी कुरसी है, बड़ी कुरसी है, माला-दुशाला, पुष्पगुच्छ, प्रशस्ति-पत्र आदि सब हैं! साहित्यकार भी एक-दूसरे से मिलते-जुलते, लड़ते-झगड़ते रहते हैं और अगले ही पल पलटकर एक-दूसरे से गलबहियां करते रहते हैं, फिर भी सब बेकल होकर समाज को ढूंढ़ते रहते हैं, और समाज है कि मिलता ही नहीं।

कहीं चले जाइए, हरेक साहित्यकार का 'टेक ऑफ पॉइंट' यही होता है कि वह समाज के लिए जीता है और उसी के लिए मरा जाता है। न अंग्रेजी इस तरह से समाज-खोजी है, न फ्रेंच और न ही जर्मन, पर हिंदी की सुई अभी तक समाज में अटकी हुई है! इसका हर बड़ा-छोटा, खरा-खोटा, ज्ञानी-ध्यानी साहित्य और समाज के संबंधों को 'अन्योन्याश्रय' मानता है। जिससे भी पूछिए, वही कहता मिलेगा, वह जो भी लिखता है, समाज के लिए लिखता है, उसे दिशा देने के लिए लिखता है, उसे विश्व स्तरीय बनाने के लिए लिखता है।

जिस भाषा में ऐसे-ऐसे उद्धारक, हांकू और फेंकू हों, जो समाज के बिना साहित्य का नाम तक नहीं लेते; जो हर कविता-कहानी को नाप-जोखकर बताते हों कि इस कविता में इत्ता समाज है और इस कहानी में इत्ता; इसमें दस प्रतिशत समाज है और नब्बे प्रतिशत साहित्य है और उसमें सत्तर फीसदी समाज और तीस फीसदी साहित्य, उस भाषा का कोई क्या बिगाड़ सकता है?

हिंदी में तो ऐसे-ऐसे समाज-खोजी हैं, जो किसी कविता या कहानी में फटी-टूटी चप्पल देख लेते हैं, जो उसे सीधे समाजवादी यथार्थवाद का आदर्श मानकर, उसी पर कुर्बान होने लगते हैं। एक बार किसी कवि की कविता में 'बीड़ी' का जिक्र आ गया, तो उसे सर्वहारा का कवि कहकर लाल सलाम किया जाने लगा। एक की कहानी में पल्लेदार का जिक्र आ गया, तो उसे सीधे क्रांतिकारी बता दिया गया।

हिंदी की प्रायः हर गोष्ठी में समाज को इसी तरह ढूंढ़ा जाता है और किसी की फटी बनियान या झोंपड़ी देखते ही उसे समाज के खूंटे से बांधने लगते हैं। इसी तरह समाज भी साहित्य को ढूंढ़ता रहता है और कहीं जरा सी भी 'तुकबंदी' मिल जाती है, तो वह उसी पर वाह-वाह करने लगता है और उसे ही महाकवि मानने लगता है।

एक वक्त में कुछ आचार्यों ने साहित्य को समाज की जगह 'लोक' के खूंटे से बांध दिया, तो बेचारा बरसों तक कोल्हू के बैल की तरह लोक के ही चक्कर काटता रहा। फिर कुछ नए आचार्यों ने लोक की जगह उसे जनता के खूंटे से बांध दिया, तो वह वर्षों तक जनता के खूंटे के चक्कर मारता रहा, फिर कुछ ज्ञानियों ने जनता की जगह उसे आम आदमी के खूंटे से बांध दिया और वह दशकों तक आम आदमी के चक्कर मारता रहा, उसके बाद कुछ ने उसे मजदूर-किसान के खूंटे से बांध दिया और वह इस खूंटे के इर्द-गिर्द दिनों तक घूमता रहा, इसके बाद हिंदी के *प्राण! तुम लघु लघु गात* वालों ने उसे लघुमानव के खूंटे से बांध दिया, फिर किसी ने गरीबी की रेखा के खूंटे से बांध दिया और हिंदी साहित्य बरसों तक इसी रेखा के चक्कर लगाता रहा, फिर उसे 'मिडिल क्लास' ने अपने खूंटे से बांध लिया और आजकल उसे जातिवाद और धर्म के खूंटों से बांधने की कोशिश की जा रही है।

सब जानते हैं कि जाति जाति के लिए जीती है, धर्म धर्म के लिए जीता है, जबकि साहित्य सबके लिए जीता था और जीता है, लेकिन इन दिनों साहित्य के लिए कोई नहीं जीता। साहित्य के लिए जिए, तो समाज अपने आप मिल जाए, क्योंकि साहित्य ही समाज है; क्योंकि साहित्य में ही समाज है! कबीर के पद को बदलकर कहें, तो कहना होगा 'समाज को कहां ढूंढ़े रे बंदे वो तो साहित्य के अंदर है!

इसलिए हे प्रभु! साहित्य को किसी खूंटे से न बांधो। उसे साहित्य ही रहने दो, कोई नाम न दो।

कटाक्ष

राजेंद्र धोड़पकर

https://t.me/AllNewsPaperPaid

राजनीति, राजनीति और सिर्फ गंदी राजनीति जहां पानी, जंगल, पर्यावरण के लिए कोई जगह नहीं है, जबकि हम जिंदा हैं तो इन्हीं चीजों की वजह से। हद है कि सरकार के लिए इसके कोई मानी नहीं। 18 दिन हो गए सोनम वांगचुक के अनशन के लेकिन सरकार की कोई प्रतिक्रिया नहीं है। सोनम वांगचुक का जो स्टैंड रहा 370 हटाने के प्रति वह यह तय करने का आधार नहीं हो सकता कि आज हमें उनका साथ देना चाहिए या नहीं. जो भी जल, जंगल, पर्यावरण और सामुदायिक, सांप्रदायिक सद्भाव को, संविधान के मूल्यों को बचाने के लिए संकल्परत है, उसका साथ देना होगा बिना शर्त!

— सुजाता, लेखक @Sujata1978

कृषि संकट

भारत डोगरा

बहुपक्षीय हल से सुधरेगी खाद्य व्यवस्था

हाल के महीनों में देखा गया कि विश्व के अनेक किसान अपनी मांगों को लेकर सड़कों पर आए। जहां एक ओर यह यूरोप में बार-बार देखा गया, वहीं भारत में भी देखा गया। दूसरी ओर एक अन्य स्तर पर देखें तो कई वैज्ञानिकों ने मिट्टी की गुणवत्ता कम होने और जल-संकट बढ़ने की ओर ध्यान दिलाया है, जबकि अनेक उपभोक्ता संगठनों ने खाद्यों की गुणवत्ता पर चिंता प्रकट की है। आखिर, विश्व में ये सवाल बार-बार क्यों उठ रहे हैं? वास्तव में विश्व कृषि और खाद्य व्यवस्था की अनेक बुनियादी समस्याएं ही समय-समय पर इन विभिन्न समाचारों की सुर्खियों के रूप में प्रकट हो रही हैं।

पहली प्रमुख बात तो यह है कि विश्व में शहरी (और विशेषकर महानगरीय) सभ्यता को अधिक महत्त्व दिया गया है और ग्रामीण सभ्यता की उपेक्षा हुई है। दूसरी महत्त्वपूर्ण बात यह है कि कृषि-क्षेत्र की आय में जितना विस्तार हुआ है, उसका मुख्य हिस्सा कृषि आधारित उद्योग को मिला है और किसानों को बहुत कम मिला है। तरह-तरह की कृषि उपज के व्यापार में लगी बड़ी कंपनियों और इस उपज पर आधारित तरह-तरह के पैकिटबंद या डिब्बाबंद उत्पाद बनाने वाले उद्योगों का प्रसार बहुत तेजी से हुआ है जबकि साधारण किसान इन बढ़ते व्यवसायों के बीच कहीं खो से गए हैं। कृषि कार्य में जो नई तकनीक इन उद्योगों के प्रसार के साथ लाई गई हैं, उनसे कृषि कार्य की मंहगाई बहुत बढ़ी है। साधारण किसानों का अनुभव है कि रासायनिक खाद, कीटनाशक दवाओं आदि पर खर्च बढ़ता ही जा रहा है, उत्पादकता उतनी नहीं बढ़ रही हैं। इन सब का मिला-जुला असर है कि छोटे किसानों का संकट बढ़ रहा है और उनमें से अनेक जमीन से वंचित हो रहे हैं। यदि किसानों का संकट बढ़ रहा है तो किसान-मजदूरों का संकट और भी बढ़ रहा है। पहले की अपेक्षा अब उन्हें जहरीले रसायनों और खतरनाक उपकरणों से काम करना पड़ता है। बढ़ती तादाद में प्रवासी मजदूरों से ये खतरनाक काम करवाए जाते हैं, जो बाद में कोई मुआवजा भी प्राप्त नहीं कर सकते हैं।

कृषि भूमि के प्राकृतिक उपजाऊपन का बहुत तेजी से ह्रास हो रहा है। भूमि सूचना और संदर्भ अंतरराष्ट्रीय केंद्र, हॉलैंड द्वारा किए गए एक अध्ययन के अनुसार 196 करोड़ हैक्टेयर भूमि का कुछ न कुछ ह्रास हो चुका है। भूमि के ह्रास के साथ ही खाद्य पदार्थों की गुणवत्ता में भी तेजी से गिरावट आई है। भूमि में अधिक रासायनिक खाद डालने के साथ ही समस्या आरंभ हो जाती है तथा कीटनाशकों, खरपतवार नाशकों आदि रसायनों के छिड़काव से और बढ़ जाती है। अनाज या अन्य फसल को बाद में जो तरह-तरह से परिष्कृत किया जाता है, या डिब्बाबंद उद्योग के अनुकूल बनाया जाता है, उससे भी प्रायः कई स्तरों पर पोषक तत्व कम होते हैं और खतरनाक रसायन जोड़े जाते हैं। केवल चमक, रंग, गाढ़ेपन, चटपटेपन और आकर्षक पैकिंग की खातिर अनेक हानिकारक पदार्थ उपभोक्ताओं को खिलाए जाते हैं। लगभग पूरे विश्व के खेतों में जैव विविधता का तेजी से ह्रास हो रहा है। फसलों की संख्या और इनकी किस्मों की संख्या कम हो रही है। एक ही तरह की फसल और किस्म, या एक से जैविक आधार की किस्म बोने के कारण बीमारियों और प्रकोपों के तेजी से फैलने का खतरा बढ़ रहा है। जेनेटिक इंजीनियरिंग के नये उत्पादों से बीमारियों के फैलने की संभावना की चेतावनी भी अनेक विशेषज्ञ दे चुके है।

> पूरे विश्व जैव विविधता का तेजी से ह्रास हो रहा है। फसलों की संख्या और इनकी किस्मों की संख्या कम हो रही है। एक ही तरह की फसल और किस्म, या एक से जैविक आधार की किस्म बोने से बीमारियों और प्रकोपों के तेजी से फैलने का खतरा बढ़ रहा है। जेनेटिक इंजीनियरिंग के नये उत्पादों से बीमारियों के फैलने की संभावना की चेतावनी भी अनेक विशेषज्ञ दे चुके है। जीएम फसलों के प्रसार से पर्यावरण, स्वास्थ्य और खेती-किसानी के अनेक गंभीर संकट जुड़े हैं। पर्यावरण के व्यापक विनाश का कृषि पर प्रतिकूल असर पड़ रहा है। वायु-प्रदूषण, जल प्रदूषण, वर्षा, वन कटान, ग्रीनहाऊस गैसों में वृद्धि, इनसे जुड़ा जलवायु का बदलाव और समुद्र के जल-स्तर में वृद्धि की संभावना-इन सब के अनेक हानिकारक परिणाम है पर एक महत्त्वपूर्ण पक्ष सभी का है कि इनसे कृषि को भी बहुत नुकसान हो रहा है, या होने की आशंका है

जीएम फसलों के प्रसार से पर्यावरण, स्वास्थ्य और खेती-किसानों के अनेक गंभीर संकट जुड़े हैं। पर्यावरण के व्यापक विनाश का कृषि पर तरह-तरह से प्रतिकूल असर पड़ रहा है। वायु-प्रदूषण, जल प्रदूषण, वर्षा, वन कटान, ग्रीनहाऊस गैसों में वृद्धि, इनसे जुड़ा जलवायु का बदलाव और समुद्र के जल-स्तर में वृद्धि की संभावना-इन सब के अनेक हानिकारक परिणाम है पर एक महत्त्वपूर्ण पक्ष सभी का है कि इनसे कृषि को भी बहुत नुकसान हो रहा है, या होने की आशंका है। कृषि कार्य के साथ जुड़े पशु-पक्षियों के प्रति क्रूरता की प्रवृत्ति भी प्रायः बढ़ रही है। एक ओर मनुष्य इन पशुओं से क्रूरता कर रहा है, दूसरी ओर काफी हद इस क्रूरता के कारण ही पशु-पक्षियों में ऐसे रोग फैल रहे हैं जिनके दुष्परिणाम मनुष्यों तक भी पहुंचते हैं। ब्रिटेन में सदा शाकाहारी रही गायों को मांस खिलाने से मैड काओ नामक भयानक बीमारी फैली थी। अनाज (और कुछ अन्य खाद्य पदार्थों) का सीधे-सीधे मनुष्य के पोषण के लिए उपयोग करने के स्थान पर यह प्रवृत्ति बढ़ रही है कि उन्हें पहले पशुओं को खिला कर उन्हें मोटा किया जाए ताकि उनसे उच्च कोटि का मांस प्राप्त किया आए। दस किग्रा. अनाज इस तरह खिलाया जाता है तो एक किग्रा. मांस प्राप्त किया जा सके। तरह- तरह की शराब बनाने के लिए भी अनाज और खाद्य सामग्री का उपयोग बढ़ रहा है। इस तरह विश्व के लगभग 40 प्रतिशत खाद्यान्न का उपयोग मांस और मदिरा प्राप्त करने के लिए हो रहा है। खाद्य और कृषि व्यवस्था के ये जो लक्षण विश्व स्तर पर देखे जा रहे हैं, किसी न किसी रूप में, कम या अधिक सीमा तक हमारे देश में भी दिखाई दे रहे हैं या हम इनकी ओर बढ़ रहे हैं।

अमृतसर जिले में एक किसान ने इस लेखक को बताया कि अब बीज बाद में आते हैं, उनके लिए दवाई बाजार में पहले आ जाती हैं। पश्चिम उत्तर प्रदेश के एक किसान नेता ने कहा कि अब अनेक किसान कह रहे हैं-एक दिन जमीन जवाब दे जाएगी। डॉ. रिछारिया ने छत्तीसगढ़ में कुछ वर्ष पहले धान की 17000 किस्मों और उपकिस्मों की पहचान की थी। अब उनमें से अनेक तेजी से लुप्त हो रही हैं। भारत में अनेक छोटे किसान संकट में हैं, और भूमिहीनों के साथ अनेक छोटे किसानों को भी दूर-दूर प्रवासी मजदूर के रूप में भटकना पड़ता है। यदि भारतीय कृषि के बारे में एक बात पूरी तरह से स्पष्ट है, तो वह यह है कि भारत छोटे किसानों का देश है। सो, छोटे किसानों की जरूरतों को ध्यान में रखकर ही खेती की सब नीतियां बनानी चाहिए और भूमि सुधार द्वारा खेती पर आधारित भूमिहीन मजदूरों को भी छोटा किसान बनने का अवसर यथासंभव अवश्य दिया जाना चाहिए। संयुक्त राष्ट्र संघ के खाद्य एवं कृषि संगठन ने स्पष्ट स्वीकार किया है कि प्रति एकड़ कम खर्च में उत्पादकता बढ़ाने की क्षमता छोटे किसानों में अधिक है। यदि वैज्ञानिकों को स्पष्ट निर्देश दिया जाए कि देश ने प्रकृति संरक्षण के अनुकूल कृषि विकास का रास्ता चुनना है तो इस तरह की तकनीक विकसित हो सकती है, जो रसायनरहित होने के कारण सस्ती, टिकाऊ या उत्पादकता और आय की दृष्टि से भी स्वीकार्य हो। फसल और खाद्य एवं प्रसंस्करण भी ग्रामीण और कस्बा स्तर पर अधिक होना चाहिए ताकि इससे अधिक स्थानीय रोजगारों का सृजन हो।

कॉन्क्लेव कल्चर

मीडिया

सुधीश पचौरी

> कॉन्क्लेवों ने समाज का 'नया ऐलीटीकरण' किया है। 'कॉन्क्लेव कल्चर' ने इस 'ऐलीट कल्चर' का 'समाजीकरण' आसान किया। उनको पापूलर और स्वीकृत बनाया। सेठों को नेताओं की ताकत की खुशबू मिली। चिंतकों को नेताओं और नेताओं को चिंतकों-विचारकों का सान्निध्य मिला और सब विचारक बन गए

पिछले पखवाड़े कई मीडिया हाउसों ने कोई तीन 'कॉन्क्लेव' किए। इन सभी में राजनेता व सेलीब्रिटीज आए, बोले। सबसे तगड़ा 'पीएम' बोले, उन्होंने क्या कहा, यह इस टिप्पणी का विषय नहीं। सभी में पूरे-पूरे दिन विचार हुए। सभी चाहते रहे कि विचारों को एकत्र किया जाए और मीडिया के जरिए लाइव करके सबको बताया जाए कि आज के वक्त में हमारे नेता हमारे, सेलीब्रिटीज क्या, कैसा सोचते हैं, कि देश की समकालीन सामाजिक-राजनीतिक समस्याओं को वे किस प्रकार से देखते हैं और उनका 'हल' किस तरह से होते देखना चाहते हैं।

इन 'कॉन्क्लेवों' में देश के बड़े मीडियाकर्मी, बड़े सेठ, साहूकार, कंपनियों के बड़े एक्जीक्यूटिव, सामाजिक कार्यकर्ता और सेलीब्रिटीज शामिल होते हैं। यहां आम जनता नहीं बुलाई जाती। 'कॉन्क्लेव' की फॉरमेट होती ही ऐसी है। किसी आम सेमिनार, गोष्ठी, संगोष्ठी, सम्मेलन, समारोह या खुली जनसभा की तरह नहीं होते। हमेशा विशिष्ट लोगों की सभा की तरह किसी 'क्लोज्ड डोर' मीटिंग की तरह होते हैं। अंग्रेजी शब्दकोष बताते हैं कि 'कॉन्क्लेव' का अर्थ पहले 'बंद कमरे' से लिया जाता था जो बाद में किसी 'बंद कमरे' या 'बंद हॉल' में होती 'मीटिंग' में बदल गया। तो भी, 'कॉन्क्लेव' सिर्फ 'बंद कमरे' या 'बंद हॉल' में किसी आम 'मीटिंग' की तरह नहीं होते।

आजकल वे किसी पांच सात सितारा होटल के बड़े हॉल या सभागार में होते हैं जिनमें आमंत्रित बैठते हैं। ऐसे हॉल भी होते हैं, जिनमें खानपान के लिए गुलदस्तों से सजी-धजी गोल मेजें और कुरसियां लगी होती हैं। खानपान के एक से एक बढ़िया व्यंजन-भोजन होते हैं जिनको खाते-पीते हुए लोग मंच से आते विचारों को सुनते हैं और ताली पीटते हैं और अपने पसंदीदा वक्ता का अभिवादन करते हैं...और, आज के 'कॉन्क्लेवों' में कुछ चरचाएं होती हैं, मीडिया से लाइव प्रसारित होती हैं और मीडिया आर्काइवों में रखी जाती हैं। ये समाज के विशेष और चुनिंदा लोगों की किसी 'प्राइवेट लिमिटेड सभा' की तरह होते हैं, जहां राजनेता, विचारक, समाजसेवी खिलाड़ी, बॉलीवुड के हीरो-हीरोइन आदि सब शामिल होते हैं। यहां यदि कुछ चुने हुए सांसद या मंत्री हो सकते हैं तो शाहरुख खान या दीपिका पादुकोण भी हो सकती हैं। यदि यहां कुछ समाज चिंतक, पत्रकार, रिटायर्ड अफसर हो सकते हैं तो कुछ फिल्मों में 'आयटम सोंग्स' देने वाले/वाली, नाचने गाने वाले/वाली, भी हो सकते हैं। सेलीब्रिटीज भी विचारक की तरह नजर आते हैं।

देश-विदेश के नामी-गिरामी ज्ञानियों, बुद्धिजीवियों, समाजसेवियों, समाज चिंतकों, नेताओं और सेलीब्रिटीज को एक साथ पेश कर 'कॉन्क्लेव' अपने को एक 'जनतांत्रिक मंच' जैसा बना देते हैं। इन कॉन्क्लेवों में वही-वही बातें प्रकट हुईं जो आए दिन की चरचाओं में आती रहती हैं। सभी ने आज की राजनीति के तापमान और जनता के मूड को टटोलने की कोशिश की। कॉन्क्लेवों ने यही किया। उन्होंने कई हेड लाइनें दीं। लेकिन इन 'कॉन्क्लेवों' ने कुछ अतिरिक्त भी किया। देश-विदेश के ऐलीट और विशिष्ट जन एक साथ बैठे, आपस में मिले-जुले और इस तरह सबने 'समान हित समूह' जैसा होने का अनुभव किया। 'कॉन्क्लेव' ने उनका एक 'मित्र क्लब' जैसा बनाया। 'ऐलीट वर्ग' को नेताओं से जोड़ा। नेताओं को 'ऐलीट वर्ग' से जोड़ा। सब एक दूसरे से हितों का हाथ मिलाते दिखे। कुछ ने अपने इष्ट नेताओं के लिए हाजिरी दी। कुछ ने सेलीब्रिटीज के दर्शन कर अपने को धन्य समझा। सब एक साथ देर तक खाए, पिए, जिए और अपने को देश के विशिष्टों में भी 'विशिष्ट' महसूस किए।

कॉन्क्लेवों ने समाज का 'नया ऐलीटीकरण' किया है। 'कॉन्क्लेव कल्चर' ने इस 'ऐलीट कल्चर' का 'समाजीकरण' आसान किया। उनको पापूलर और स्वीकृत बनाया। सेठों को नेताओं की ताकत की खुशबू मिली। चिंतकों को नेताओं और नेताओं को चिंतकों-विचारकों का सान्निध्य मिला और सब विचारक बन गए। समाज को चलाने वाले, हिलाने-डुलाने वाले बने। बड़े पैसे, बड़ी राजनीति व ऐलीट व मनोरंजन इंडस्ट्री का नया 'मिरर' बना। उच्च ज्ञान और ऊंचे चिंतन की इस प्रक्रिया से आम जनता बाहर रखी गई। इस तरह जो चिंतन फिंतन हुआ ऐलीट के द्वारा ऐलीट के लिए हुआ। ऐसे 'कॉन्क्लेवों' का होना बताता है कि अपना समाज अब 'जनसमाज' नहीं रह गया है। 'ऐलीट समाज' बन चला है, जिसे ऐलीट ही हिलाता है, ऐलीट ही डुलाता है, ऐलीट ही चलाता है।

यही है आज की नई 'कॉन्क्लेव कल्चर'!

मास्को पर इस्लामिक स्टेट का हमला

वैश्विकी

डॉ. दिलीप चौबे

> रूसी अधिकारियों को यदि मास्को हमले के पीछे यूक्रेन के शामिल होने के कोई भी पुख्ता सबूत मिले तो राष्ट्रपति ब्लादीमिर पुतिन की जवाबी कार्रवाई बहुत भयावह होगी। यदि इसमें जर्मनी, फ्रांस जैसे किसी देश की मिलीभगत पाई गई तो पुतिन उसे अवश्य दंडित करेंगे। यह घटनाक्रम दुनिया को तीसरे विश्व युद्ध की ओर ले जा सकता है

यूक्रेन के विदेश मंत्री दिमित्री कुलेबा की प्रस्तावित भारत यात्रा के पहले मास्को में भीषण आतंकवादी हमले से पूरा परिदृश्य बदल गया है। पहले अनुमान था कि युद्ध के मोर्चे पर लगातार पीछे रह रहा यूक्रेन भारत की मध्यस्थता के जरिये रूस के साथ कोई सम्मानजनक सहमति बनाने का इच्छुक है। यूक्रेन ही नहीं बल्कि उसके सरपस्त अमेरिका और ब्रिटेन जैसे देश भी अब स्वीकार करने लगे हैं कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी नाजुक पड़ाव पर राष्ट्रपति ब्लादीमिर पुतिन के फैसलों को प्रभावित करने की क्षमता रखते हैं। कम-से-कम पुतिन मोदी की राय को वजन तो अवश्य देते हैं।

मास्को के संगीत सभागार में हुए आतंकी हमले में 143 मारे गए। रूस में इस तरह के आतंकी हमले करीब दो दशक पूर्व के कालखंड में होते थे जब वह चेचेन्या में मुस्लिम पृथकतावादियों के खिलाफ अभियान चला रहा था। यूक्रेन युद्ध के दौरान इस तरह का हमला होना सवाल खड़ा करता है कि इसके पीछे वास्तविक ताकत कौन है? फिलहाल रूसी सुरक्षा एजेंसियों ने 4 हमलावरों को गिरफ्तार किया है जिनकी पहचान अब्दुल्ला, मोहम्मद जैसे नामों से की गई है। आतंकी संगठन इस्लामिक स्टेट ने इस हमले की जिम्मेदारी ली है। कुछ महीने पहले इस्लामिक स्टेट ने ईरान में कमांडर सुलेमानी के मकबरे पर भी ऐसा ही हमला किया था। विचारणीय प्रश्न है कि ऐसे समय में जब अमेरिका और पश्चिमी देशों की मदद से इस्राइल गाजा में नरसंहार कर रहा है उस समय इस्लामिक स्टेट फिलिस्तीन के मित्र देशों को निशाना क्यों बना रहा है। इससे रूस और ईरान के इन आरोपों को बल मिलता है कि अमेरिकी खुफिया एजेंसी सीआईए और इस्राइल की खुफिया एजेंसी मोसाद इस्लामिक स्टेट को हैंडल करते हैं।

रूसी अधिकारियों को यदि मास्को हमले के पीछे यूक्रेन के शामिल होने के कोई भी पुख्ता सबूत मिले तो राष्ट्रपति ब्लादीमिर पुतिन की जवाबी कार्रवाई बहुत भयावह होगी। यदि इसमें जर्मनी, फ्रांस जैसे किसी देश की मिलीभगत पाई गई तो पुतिन उसे अवश्य दंडित करेंगे। यह घटनाक्रम दुनिया को तीसरे विश्व युद्ध की ओर ले जा सकता है। पिछले दिनों जर्मनी के सैन्य अधिकारियों ने क्रीमिया में रूस के महत्त्वपूर्ण कर्व पुल को नष्ट करने की रणनीति पर यूक्रेन के साथ चर्चा की थी। जर्मनी लंबी दूरी तक मार करने वाले टॉरस मिसाइल यूक्रेन को मुहैया कराने पर विचार कर रहा है। साथ ही फ्रांस के राष्ट्रपति हाल के दिनों में रूस के खिलाफ बढ़-चढ़कर बोल रहे हैं। यूक्रेन में नाटो देशों के सैनिकों को भेजने की बात की जा रही है। ऐसा करके यह यूरोपीय देश 'कयामत' को न्योता दे रहे हैं। यदि पुतिन को उकसाने की कोशिश की गई तो यूरोप में बड़े पैमाने पर जंग छिड़ सकती है जिसमें परमाणु हथियारों के प्रयोग से भी इनकार नहीं किया जा सकता है।

यूक्रेन के विदेश मंत्री कुलेबा की भारत यात्रा यदि हुई तो उसका एजेंडा क्या होगा इस पर पूरी दुनिया की नजर होगी। मास्को हमले के बाद यूक्रेन खुद को निर्दोष और उत्पीड़ित होने का स्वांग रचने की स्थिति में नहीं होगा। रूस भी यूक्रेन के मंसूबों के प्रति पहले से कहीं अधिक आशंकित है। आज रूस को भारत की ही तरह सीमा पर आतंकवाद के खतरे का सामना है। अब रूस को भी ऐसी ही दहशतगर्दी का सामना है। स्थिति ज्यादा गंभीर है क्योंकि यूक्रेन के पीछे अमेरिका, ब्रिटेन जैसे देशों की शह है।

भारत के लिए उचित यह होगा कि यूक्रेन के विदेश मंत्री की यात्रा टालने का सुझाव दे। किसी तथाकथित शांति मसौदे पर चर्चा करने का अभी ये समय नहीं है। विशेषकर ऐसे समय जब यूक्रेन के राष्ट्रपति जेलेंस्की अड़ियल रवैया अपनाए हुए हैं तथा युद्ध के मोर्चे पर रूस को हराने का दिवास्वप्न देख रहे हैं। विदेश मंत्री एस जयशंकर को भी ध्यान रखना होगा कि यदि भारत की ओर से रूस को कोई बिन मांगी और अनचाही सलाह दी गई तो राष्ट्रपति पुतिन उसे दुत्कार देंगे। जयशंकर की कूटनीति भारत-रूस के बीच संबंधों में कड़वाहट पैदा कर सकती है। प्रधानमंत्री मोदी को भी अपनी भूमिका और प्रभाव की सीमा का ध्यान रखना होगा। किसी अन्य देश के कहने पर या उसके प्रभाव में रूस-यूक्रेन युद्ध पर राय कायम करना भारत के हित में नहीं है।

फागुन की मस्ती और आधी आबादी

होली

चंद्रिका आर्या

भारत में हमेशा से ही सांस्कृतिक उत्सवों को बड़े उत्साह के साथ मनाया जाता रहा है। हमारी पारंपरिक विरासत में प्रकृति के बदलते रूपों का स्वागत उत्सव के रूप में किया जाता है, इसी का एक उदाहरण है 'होली का त्योहार'। सभी पर्वों की तरह होली भी ऐसा पर्व था जो महिलाओं के बिना नहीं मनाया जाता था और इसमें महिलाओं की पूरी भागीदारी होती थी, जैसे होलिका की पूर्ण विधि-विधान से पूजा करना, व्रत का संकल्प लेना, होलिका के चारों ओर फेरी लगाना आदि। माना जाता रहा है कि महिलाएं ही परंपराओं को आगे बढ़ाती हैं अर्थात महिलाएं परंपराओं की सक्रिय वाहक हैं। परंतु समय बीतने के साथ-साथ महिलाओं के लिए होली ने पर्व या उत्सव की बजाय चिंता का रूप धारण कर लिया है। प्राचीन समय में होली का त्योहार शांतिपूर्ण ढंग से मनाया जाता रहा है जिसमें चंदन और प्राकृतिक रंगों का उपयोग किया जाता था, जिनका आंखों और त्वचा पर कोई दुष्प्रभाव नहीं पड़ता था। आजकल रंगों का स्वरूप बढ़ गया है जो मानवीय स्वास्थ्य और सुरक्षा के लिए खतरा पैदा करता है।

इसके अतिरिक्त 'होली है' की आड़ में सार्वजनिक जगहों पर किसी पर भी गुब्बारे फेंकना, पानी या रंग उड़ाना जैसी गतिविधियां हर्षोल्लास के पर्व को असुरक्षा के माहौल में बदल देती हैं। सड़कों पर असीमित तथा अमर्यादित तरीकों से रंग, पानी का प्रयोग तथा पुरुषों द्वारा मदिरा पान करके हुड़दंग का माहौल महिलाओं के लिए दोगुनी चिंता पैदा करता है, जिसको नियंत्रित करना सरकार के लिए भी चुनौतीपूर्ण कार्य होता है। पुरुषों ने 'बुरा न मानो होली है' के नाम पर महिलाओं के साथ छेड़छाड़ का लाइसेंस ले लिया है। वे ऐसे नारों का प्रयोग अपने नापाक और गंदे व्यवहारों को सही ठहराने के लिए करते हैं। बीते कुछ वर्षों से हमारे यहां होली का उत्सव अक्सर महिला उत्पीड़न की घटनाओं से धूमिल होने लगा है। जैसे पिछले वर्ष झारखंड में 65 वर्षीय बुची देवी, जो 6 लोगों से अपने बेटे को रंग लगाने से बचा रही थीं, की मरने तक की गई पिटाई हो या फिर दिल्ली में नशे में धुत पुरुषों के समूह द्वारा जापानी महिला के साथ होली के नाम पर की गई छेड़छाड़ इत्यादि हजारों मामले हर वर्ष सामने आते हैं।

होली के नाम पर बढ़ते अपराधों से महिलाओं विशेषकर अविवाहित युवतियों के मन में इस पर्व को लेकर कोई विशेष उत्साह देखने को नहीं मिलता। होली में महिलाओं का रंग बसंत होता ही नहीं है, उनका मन नाचता नहीं है क्योंकि जो त्योहार उन्हें घर से बाहर निकलने से डराता हो, भला महिलाएं उसका जश्न कैसे ही मनाएंगी। होली के प्रति महिलाओं में बढ़ती अरुचि से यह त्योहार उनको उत्साहित करने की बजाय उनके कंधों पर अतिरिक्त काम और जिम्मेदारियों का बोझ बढ़ा देता है। पुरुष प्रधान समाज में महिलाओं की परिवार के प्रति प्राथमिक प्रतिबद्धता होने के कारण त्योहार के दिन विभिन्न प्रकार के व्यंजन बनाने, घर की सफाई करने जैसे कामों के अलावा पुरुषों के नशा करने से उन्हें घरेलू हिंसा का शिकार भी होना पड़ता है। उनके लिए होली का दिन अन्य दिनों से और कठिन हो जाता है। इस दिन उनका कामकाज तो बढ़ता ही है, साथ ही छेड़छाड़, जबरदस्ती और यौन हिंसा भी बढ़ जाती हैं। आवश्यकता है कि सरकार और पुलिस प्रशासन होली के नाम पर महिलाओं पर बढ़ रहे अत्याचार को रोकने के लिए सख्त कदम उठाएं तथा दोषियों के खिलाफ सख्त कार्रवाई करके समाज में सकारात्मक संदेश दें।

नंगा नंगे को नंगा कहे

बतंगड़ बेतुक

विभांशु दिव्याल

झल्लन आया, हमने सर उठाया तो उसके चेहरे पर चिंता का बादल-सा उमड़ आया, 'काहे ददाजू, काहे चेहरे पर उदासी का टोकरा उठाये हो, कहां का दर्द उठा लाये हो?' हमने कहा, 'झल्लन, आज हम सचमुच थोड़ा दुखी हो रहे हैं, शायद वही भाव हमारे चेहरे पर नमूदार हो रहे हैं।' वह बोला, 'वही तो हम पूछ रहे हैं कि कौन सा दुख आपको साल रहा है जिसे आप जैसा निर्दुखी इंसान मन में पाल रहा है?' हमने कहा, 'झल्लन, हम अपने सर्वोच्च न्यायालय के बांडी फैसले पर दुख मना रहे हैं जिसकी वजह से हमारे मोदी जी और उनके कारकुन एन चुनाव से पहले खुद को संकट में पा रहे हैं। यह तो तुझे पता ही होगा कि चंदा खुलासे के बाद से विपक्षी उन पर हफ्ता वसूली, लूटपाट, ईडी आदि के जरिए जबरन उगाही, देश का सबसे बड़ा घोटालेबाज होने और न जाने कैसे-कैसे आरोप लगा रहे हैं, और हमारे भ्रष्टाचार विरोधी मोदी जी को ही भ्रष्टाचार का सेवक-पोषक बता रहे हैं। लगता है बांड कांड मोदी जी को रुला देगा और तीसरी बार प्रधानमंत्री बनने के उनके सपने को बनारस के मणिकर्णिका घाट पर डुबा देगा।'

झल्लन ने हमारी तरफ हैरत से देखा, थोड़ा मुस्कुराया, फिर उसने जोरदार ठहाका लगाया, 'क्या ददाजू, हम तो सोचे थे कि आप पर कोई गंभीर संकट आन पड़ा है या किसी भयानक घरेलू परेशानी ने आपको आ जकड़ा है पर यहां तो हे हे हाहा हैया, खोदा पहाड़ निकली चुहिया।' हमने कहा, 'तू हमारी बात हल्के में ले रहा है, इस कांड से आहत होकर हमारे महान देश की महान जनता कैसे सत्ता पलट सकती है इस पर ध्यान नहीं दे रहा है।' वह बोला, 'ददाजू, हम तो खूब ध्यान दे रहे हैं पर आप ही नहीं समझ पा रहे हो, जो जनता को लेकर संशय मन में ला रहे हो, और महान जनता पर से अपना भरोसा उठा रहे हो। जो जनता महंगाई, बेरोजगारी जैसे खुद से जुड़े मुद्दों पर परेशान नहीं होती, आपने कैसे समझ लिया कि बांड खुलासे जैसे पिद्दी से मुद्दे से परेशान हो जाएगी और अपने मोदी जी को छोड़कर किसी और की हो जाएगी। इसीलिए हम कह रहे हैं कि देश की जनता को लेकर कोई शंका मन में मत बिठाइए, जनता की जड़ महानता पर भरोसा करना सीख जाइए।'

हमने कहा, 'पर इतना तो तू मानेगा कि विपक्ष के हाथ में एक मनचाहा हथियार लग गया है जिसे वह चुनाव में खुलकर आजमाएगा, मोदी के विरुद्ध खूब चलाएगा।' झल्लन ने फिर ठहाका लगाया, बोला, 'क्या ददाजू, किस विपक्ष की बात कर रहे हो, विपक्ष क्या आवाज उठाएगा, ज्यादा चिल्लाएगा तो उलटे मुंह खुद जमीन पर आ जाएगा। विपक्ष का बोलना ऐसा होगा कि नंगा नंगे से कहे कि तू नंगा दिख रहा है, चोर चोर से कहे कि तू चोरी कर रहा है।' हमने कहा, 'तू कहना क्या चाहता है, आखिर किस बिंदु पर आना चाहता है?' झल्लन बोला, 'ददाजू, कहते हैं कि कुल चंदे का छप्पन प्रतिशत उस बीजेपी को मिला जो दस साल से हल्ला मचा रही है, इस समय अपने बूते 303 सीटें लाकर अपनी मनमर्जी से सरकार चला रही है, चारों तरफ अपना दबदबा बना रही है लेकिन चवालीस प्रतिशत चंदा जो बेचारे, निरीह, दुखी, प्रताड़ित, उत्पीड़ित विपक्षी दलों के खाते में आया है वह कहां से आया है, किसने भिजवाया है। इनमें से कुछ तो बेचारे इतने मासूम हैं जिन्हें यही पता नहीं कि करोड़ों का चंदा उन्हें किसने दिया, कोई शरीफ आया और करोड़ों के बांड बिना किसी को बताए-जताए इनके दरवाजे के बाहर रखे बक्से में डालकर चुपचाप खिसक लिया। इनमें कोई भी न अपने चंदे का खाता उजागर कर रहा है और न इनके भीतर का सच सामने ला रहा है और मजाक तो ये है ददाजू कि मोदी के 'गुंडे' ईडी ने उगाही के लिए जिस कंपनी के विरुद्ध अपनी हथौड़ी चलायी वह चंदा बीजेपी की धुर विरोधी दक्षिण की पार्टी को दे आयी। आप देख लीजिए ददाजू, सारे के सारे विपक्षी कुछ दिन हल्ला मचाएंगे और फिर अपनी ही पैसा उगाही की करतूतों के प्रेत से डरकर चुप हो जाएंगे।'

हमने कहा, 'चल तेरी बात मान भी जाये तो तू ये तो मानेगा कि सुप्रीम कोर्ट ने चुनावी फंड को पारदर्शी बनाने के लिए अपने आदेश का जो डंडा चलाया है, वह एक सही कदम उठाया है?' झल्लन बोला, 'ददाजू, नीचे से ऊपर तक सड़ांध भरी है जिसमें हर राजनीतिक दल ने भागीदारी करी है। अगर सर्वोच्च न्यायालय भी मैदान में आकर खुद चुनावी राजनीति में आ जाये तो चुनौती देते हैं कि उसका हाल भी चंदा छिपाऊ दल जैसा न हो जाये।' हमने कहा, 'तो इस पर रोक का कोई कदम नहीं उठाया जाना चाहिए, राजनीतिक दलों द्वारा धन उगाही की जो काली प्रक्रिया चलायी जा रही है उसे वैसे ही चलते रहने देना चाहिए?'

झल्लन बोला, 'ददाजू, जब तक चुनावी लोकतंत्र का मौजूदा स्वरूप रहेगा तब तक पैसे का जो खेल होता रहा है, वही होता रहेगा। इस पर रोक लगाने के लिए सुप्रीम कोर्ट का कोई आदेश काम नहीं करेगा, इसके लिए तो लोकतंत्र के मौजूदा ढांचे को ही सर के बल खड़ा करना पड़ेगा।'

> हमने कहा, 'चल तेरी बात मान भी जाये तो तू ये तो मानेगा कि सुप्रीम कोर्ट ने चुनावी फंड को पारदर्शी बनाने के लिए अपने आदेश का जो डंडा चलाया है, वह एक सही कदम उठाया है?' झल्लन बोला, 'ददाजू, नीचे से ऊपर तक सड़ांध भरी है जिसमें हर राजनीतिक दल ने भागीदारी करी है। अगर सर्वोच्च न्यायालय भी मैदान में आकर खुद चुनावी राजनीति में आ जाये तो चुनौती देते हैं कि उसका हाल भी चंदा छिपाऊ दल जैसा न हो जाये।' हमने कहा, 'तो इस पर रोक का कोई कदम नहीं उठाया जाना चाहिए, राजनीतिक दलों द्वारा धन उगाही की जो काली प्रक्रिया चलायी जा रही है उसे वैसे ही चलते रहने देना चाहिए?' झल्लन बोला, 'ददाजू, जब तक चुनावी लोकतंत्र का मौजूदा स्वरूप रहेगा तब तक पैसे का जो खेल होता रहा है, वही होता रहेगा। इस पर रोक लगाने के लिए सुप्रीम कोर्ट का कोई आदेश काम नहीं करेगा, इसके लिए तो लोकतंत्र के मौजूदा ढांचे को ही सर के बल खड़ा करना पड़ेगा

हमें गर्व है हम भारतीय हैं

राष्ट्रीय सहारा

सहारा इण्डिया मास कम्युनिकेशन के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक जिया कादरी द्वारा सहारा इंडिया मास कम्युनिकेशन प्रेस, सी-2,3,4, सेक्टर-11, नोएडा में मुद्रित तथा 705-706, सातवां तल, नवरंग हाउस, 21 के.जी. मार्ग, नई दिल्ली से प्रकाशित। । समूह संपादक - डॉ. विजय राय। स्थानीय संपादक - रत्नेश मिश्र* ।

दूरभाष - दिल्ली कार्यालय - 23352368, 23352369, 23352371, 23352372, फैक्स - 23352370, दूरभाष - नोएडा प्रेस 0120-2444755, 2444756 फैक्स - 2550750

वर्ष-33, अंक 222 आर.एन.आई. सं. 53469/91, पंजीकरण संख्या UP/BR /GZB- 38/2024-2026 *इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन तथा कानूनी मामलों के लिए उत्तरदायी

https://t.me/AllNewsPaperPaid

दो बड़ी लड़ाइयां-आम चुनाव और आईपीएल-आने वाले महीनों में हमारा ध्यान खींचे रखने वाली थीं। लेकिन अब इनमें से एक का अंजाम छुपा नहीं रह गया है, तो सभी की नजरें और उत्साह आईपीएल पर जा टिके हैं।
— हर्ष गोयनका, उद्योगपति @hvgoenka

होली

अखिलेश आर्येन्दु

पूर्णता की ओर ले जाने वाला रंगोत्सव

भारतीय सांस्कृतिक, सामाजिक और धार्मिक परंपराएं सनातन से समृद्ध रही हैं। यही वजह है कि आज भी पर्वों और त्योहारों का बाजारीकरण होने के बावजूद इनमें समाहित मूल्य, उत्सवधर्मिता और विश्वास का खात्मा नहीं हुआ है। जिन विशेषताओं के कारण हम अपनी संस्कृति को उत्सवों और पर्वों से जोड़ते हैं, उनमें प्रेम, सौहार्द, भाईचारे और मैत्री जैसे तमाम मूल्यों को भी इसमें सम्मिलित करते हैं। जिस तरह से प्रेम, सौहार्द, भाईचारे और मैत्री की भावनाएं हमारे अंदर की कालिमा को पूरी तरह धो डालते हैं और उसकी जगह वासंती छबीले रंग की उत्पत्ति होती है और हमारा ही नहीं हर किसी का मन, चित्त और दिल इसके रंग में सराबोर हो जाता है। छोटे-बड़े, धनी-निर्धन, ऊंच-नीच और दूसरी तमाम गंदी भावनाएं वैसी ही खत्म ऐसे हो जाती हैं, जैसी अग्नि में होलिका जल कर खत्म हो गई थी। लेकिन आज के बाजार में होली जैसा पावन भाईचारे और संवेदनाओं को प्रेम का रंग देने वाला अद्भुत त्योहार और उत्सव भी बाजार के रंग में ऐसा रंगता जा रहा है कि इसकी मौलिकता, सात्विकता और मूल्य सभी खतरे में पड़ते दिखाई पड़ने लगे हैं।

होली के जितने भी रंग हैं, सबके अपने खास मायने, भाव-दृष्टि, रंग और संदर्भ हैं। इन संदर्भों से जुड़ी होती है हमारी अंतस की वह चेतना जो होली को त्योहार के रूप में नहीं, बल्कि उत्सव और जीवनदर्शन के रूप में ग्रहण कर स्वयं को प्रेम की विह्वलता के शुभ संकल्प से सराबोर कर जाती है। इस तरह देखें तो होली हमारी अंतस-चेतना का ऐसा निश्छल और स्वच्छ जीवन-पर्व है, जो हमें स्वयं में डूबने और प्रेम तथा सच को सबके सम्मुख स्वीकार करने के लिए प्रेरित करता है। जो ऊर्जा, शक्ति, सत्साहस, नेह और पवित्रता इस पर्व से हम प्राप्त करते हैं, उसे यदि वर्ष भर बढ़ाते जाएं तो हमारा सारा जीवन भी वैसा ही उमंग और तरंग के रंग में डूबा उत्सव बन जाएगा जैसे होली का उत्सव। और मैं तो कविता के रूप में यही कहूंगा-खोल दो बंधन निलय का/देख लो पर्दा उठाकर/अपने हृदय के उस विजन में/जो चाहता है प्रेम के सच्चे रंग में रंगना। होली अवध और भोजपुर के लोक जीवन में जहां फगुआ बनकर लोगों में मस्ती भर देती है, वहीं नई फसल में पक कर तैयार हुए जौ,गेहूं और अन्य फसलों की बालियां प्रकृति के जीवन की गदराई छटा में झूमती हुई होलिका दहन के साथ नये स्वाद-सुगंध को जीवन में अमित सुरभि बिखरते हुए मन-तन को मदकता-मस्ती से सराबोर कर देती है। अमराई की सुगंधि में भ्रमरों के साथ चिड़ियों और कोयल की मधुर कूक कानों में घुलकर ऋतुराज वसंत और होली की पूर्णता (पूर्णिमा के साथ पूर्ण होता हुआ) का अहसास दिलाते हैं, वहीं वैदिक परंपरा में फाल्गुन पूर्णिमा के दिन वर्ष की पूर्णता का नया रंग भी बिखेरता दिखाई पड़ता है।

लेकिन सबसे बड़ा प्रतीक इस त्योहार का प्रेम का वह छलकता अमृत-कलश है जिसमें हमारा अंतर-जगत् ऐसे डूब जाता है कि हमें बाहर की अपनी सुध-बुध का ही कोई पता नहीं रह जाता है। रंग, अबीर और पिचकारी को यूं तो शरीर, मन और आत्मा की उपमा करने वाले भी इसे एक ओर जहां आध्यात्मिक-पर्व के रूप में देखते हैं वहीं पर सहिणुता, शुभता, सद्भावना, प्रेम, सत्य और भाईचारे के कारण इसे मूल्यों और धर्म का सबसे अनोखा पर्व मानने वालों की भी कमी नहीं है। इसी तरह एकता, मैत्री, समर्पण, श्रद्धा और रंगों की परंपरा के साथ महान् सांस्कृतिक और सामाजिक पर्व के रूप में देखने वाले इसे सारी मानव जाति का मैत्री और एकता के महान् सूत्र में बाधने वाले प्रिय पर्व को लाखों वर्षों से मनाते आ रहे हैं।

नई फसल, फल, मेवों और रसों की नूतन ऊर्जा से हम भर कर होली के इसके पुरातन और वैज्ञानिक तथा शुद्ध आध्यात्मिक व सामाजिक तथा सांस्कृतिक चेतना और महानता

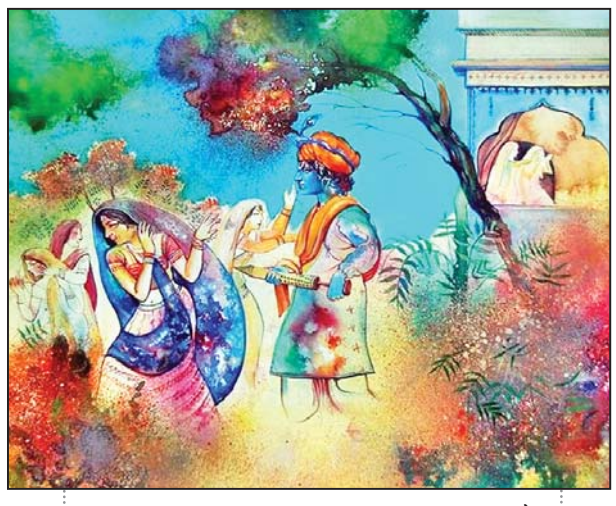

को समझ कर यदि इस पर्व को सही मायने में उल्लास और सुख के पावन पर्व की तरह मनाए तो इसके गिरते स्वरूप को हम रोक लेंगे। विकृति किसी भी पर्व के लिए स्वीकार नहीं है। न तो आहार-विहार के साथ, न व्यवहार-विश्वास के साथ और न तो जीवन धर्म और सृजन के साथ ही। हम होली को या अवधी-भोजपुरी के फगुआ को इसके फागुनी और होलिकत्व के गहनतम और सरलतम स्वरूप को यदि अपने जीवन-साहित्य के नवसृजन के साथ जोड़कर इसे मानव समाज के एक मैत्री, एकता और सद्भावना के साथ जीवन की विविधता और उमंग के उत्सव के रूप देखें तो होली का स्वरूप हमें अपने सात्विक जीवन के परिमार्जन और पारिवारिक और सामाजिक जीवन के नव विहान-पर्व के साथ सांस्कृतिक चेतना के गहनतम विश्वास और प्रेम की उमंग का नया संदर्भ ही दिखाई पड़ेगा। जहां न तो कहीं बदले की भावना का कोई स्थान होगा, न तो शराब और भांग तथा जुआ-सट्टे का कोई जगह होगी और न ही किसी को परेशान करके उसे दुख पहुंचाने की कोई बात ही होगी। रंग-अबीर-गुलाल हो या प्राकृतिक सेमल और अन्य रंगों की प्राकृतिक उमंग ही, सभी हमारे लिए स्वीकार बनते दिख पड़ेंगे। प्रकृति, प्राणी, वनस्पति और ऋतु चारों का जैसा सामंजस्य इस समय दिखता है, उसी ने मानव को नवसृष्टि के रूप में उल्लास और प्रेम के उत्सव के रूप में, स्वीकार करने के लिए प्रेरित भी किया होगा। यह उल्लास और प्रेम का उत्सव हमें इस विचार के लिए प्रेरित करता है कि नफरत, द्वेष, क्रोध, बदले की भावना, किसी प्रकार की विद्रूपता और अवांछनीय स्वभाव या व्यवहार की हमारे जीवन में कोई जगह नहीं है।

सनातन काल से इस दिन घरों में यज्ञ-हवन और उल्लास का उत्सव मनाने का यही भाव रहा है जहां सभी मानसिक विद्रूपताएं, विगलित धारणाएं और मान्यताएं तथा स्वभाव-व्यवहार हवन कुंड या होलिका में जलकर ऐसे नष्ट हो जाते हैं, जैसे होलिका में खरपतवार जल कर नष्ट हो जाते हैं और धरती मां पूरी तरह साफ-सुथरी बन जाती हैं। जीवन के जितने भी रंग हैं, सभी रंगों में वासंती और प्रेम का रंग सबसे गहरा, स्थिर और शुभ माने गए हैं। प्रकृति भी अपने नये अंकुरों, रंगों और उमंगों में चारों तरफ हंसती-बिहंसती हमसे यही तो कहती है, होली के इस रंग को अपने स्वभाव, व्यवहार और विचारों से ऐसा बना दो कि कोई इसे अपने निहित स्वार्थ में बदरंग न कर सके। 'होली खेले रघुबीरा अवध में होली खलें रघुबीरा।' ब्रज में कृष्ण और गोपिकाएं भी प्रकृति के प्रेम और वासंती भाव में ऐसे भाव-विभोर हो गए कि उन्हें पता ही नहीं कि प्रेम, सद्भावना और मैत्री के अलावा कुछ और भी रंग हो सकता है कि नहीं।

जिन सांस्कृतिक, सामाजिक, आध्यात्मिक, राजनीतिक और धार्मिक परंपराओं और प्रवृत्तियों को मानव की सहजता में होली-फगुआ के इस उल्लासमय रूप को परंपरा और जीवनधर्मिता का पर्व बनाया गया, हम उसे सहजता से निभाने और आगे बढ़ाने का प्रेममय दृढ़ता प्रदान कर पाएं तो होली अपने सही स्वरूप में हमारे जीवन का एक महानतम पर्व बनकर हमें जीवन को प्रेममय बनाने की दृढ़ता और स्थिरता देकर पूर्णता की ओर ले जाती दिखाई पड़ेगी। हम इसे बाजारू-रूप रंग में न रंगकर मानवीय और आत्मिक-जीवन के सही रंग में देखने का प्रयास करें तो होली का सही स्वरूप हमारे जीवन-रंग में ढलता दिखाई पड़ेगा। होली राष्ट्रीय, सांस्कृतिक, मानवीय, सामाजिक और जीवनी-शक्ति का सबसे प्राकृतिक संदर्भ है, जिसे अपना कर हम इसके मूल्यपरक स्वरूप को अपना कर और प्रचारित-प्रसारित करने की जगह बना सकते हैं। ■

जिन सांस्कृतिक, सामाजिक, आध्यात्मिक, राजनीतिक और धार्मिक परंपराओं और प्रवृत्तियों को मानव की सहजता में होली-फगुआ के इस उल्लासमय रूप को परंपरा और जीवनधर्मिता का पर्व बनाया गया, हम उसे सहजता से निभाने की प्रेममय दृढ़ता प्रदान कर पाएं तो होली अपने सही स्वरूप में जीवन का महानतम पर्व बन कर हमें जीवन को प्रेममय बनाने की दृढ़ता और स्थिरता देकर पूर्णता की ओर ले जाती दिखेगी। हम इसे मानवीयता के रंग में देखने का प्रयास करें तो होली का सही स्वरूप जीवन-रंग में ढलता दिखाई पड़ेगा

उड़े है रंग-गुलाल सब तरफ

जाहिद खान

मुल्क में मनाए जाने वाले तमाम त्योहारों में होली ऐसा त्योहार है, जो मुखतलिफ मजहब के लोगों को आपस में जोड़ने का काम करता है। होली, दिलों के फासलों को दूर करने का एक जरिया बन जाती है। लोग आपस में गले मिलकर अपने सभी पुराने मतभेद, गिले-शिकवे भुला देते हैं। उर्दू अदब में दीगर त्योहारों की बनिस्बत होली पर खूब लिखा गया है।

उर्दू अदब में होली

होली, शायरों का पसंदीदा त्योहार रहा है। उत्तर भारत के शायरों में अमूमन सभी ने होली के रंग की फुहारों को अपनी शे'र-ओ-शायरी में बांधा है। शायरों के शायर मीर तकी 'मीर' के अदब में 'होली' उन्वान से उनकी एक लंबी मसनवी में आसफुद्दौला के दरबार की होली का तफ्सील से ब्योरा मिलता है। होली की बहारों को वे कुछ इस खूबसूरत अंदाज में बयां करते हैं,'होली खेले आसफुद्दौला वजीर/रंग सुहबत से अजब है खुर्दो-पीर/कुमकुमे जो मारते भरकर गुलाल/जिसके लगता आन कर फिर मेंहदी लाल।' वहीं एक और दीगर मसनवी 'साकीनामा होली' में उनकी कैफियत है,'आओ साकी, बहार फिर आई/होली में कितनी शादियां लाई/फिर लबालब है आब-ए-रंग/और उड़े है गुलाल किस किस ढंग।'

उर्दू शायरों में नजीर अकबराबादी ऐसे शायर हैं, जिन्होंने होली पर सबसे ज्यादा दस नज्में लिखी हैं। उनके जमाने में ब्रज में किस तरह से होली खेली जाती थी, इन नज्मों को पढ़ने से अंदाजा लगाया जा सकता है। नजीर होली को सिर्फ हिन्दुओं का त्योहार नहीं मानते, बल्कि उनका कहना था कि यह साझा त्योहार है और इसे हिन्दू-मुस्लिम, दोनों को मिल-जुलकर मनाना चाहिए। नजीर की शायरी की जबान भी आमफहम है जिसका हर कोई लुत्फ उठा सकता है। होली के दिल-कश अंदाज को अपनी एक नज्म में उन्होंने कुछ इस तरह से बांधा है,'कोई तो रंग छिड़कता है कोई गाता है/जो खाली रहता है, वो देखने को आता है।'

एक ही शायर होली को कितने अलग-अलग अंदाज से देखता है, यह उनकी होली विषयक नज्मों को पढ़ कर जाना जा सकता है, 'गुलजार खिले हों परियों के और मजलिस की तैयारी हो/कपड़ों पर रंग के छींटों से खुशरंग अजब गुलकारी हो/मुंह लाल, गुलाबी आंखें हों और हाथों में पिचकारी हो/उस रंग भरी पिचकारी को अंगिया पर तक भारी हो।' आखिरी मुगल बादशाह बहादुर शाह 'जफर' भी होली पर लिखने से खुद को नहीं बचा पाए। फागुन के महीने में होने वाले इस रंगों के उत्सव में लोग एक दूसरे पर रंग या गुलाल डालते और वसंत ऋतु के गीत गाते हैं। इस मौके पर गाये जाने वाले गीत, फाग कहलाते हैं। 'जफर' ने होली पर नज्मों और गजलों के बरक्स होली की कई फागें लिखीं। यह फागें मुकामी जबान ब्रज में लिखी गई हैं। उनकी ऐसी ही एक मशहूर फाग है,'क्यों मो पे रंग की मारी पिचकारी?देखो कुंवर जी दूंगी मैं गारी/भाग सकूं मैं कैसे मो सों भागा निहं जात/ठाड़ी अब देखूं और को सन्मुख आत/बहुत दिनन में हाथ लगे हो कैसे जानू दूं।'

दक्षिण भारत के अहम शायर मोहम्मद कुली कुतब शाह को भारतीय त्योहारों और उनसे जुड़े लोक-विश्वासों की गहरी समझ थी। यही वजह है कि उनकी शायरी में ये सबरंग बार-बार आते हैं,'बसंत खेलें इश्क की आ पियारा/तुम्हीं मैं चांद में हूं जूं सितारा/जीवन के हौज खाने में रंग मदन भर/सू रोमा रोम चर्किया लाए धारा/नबी सदके बसंत खेल्या कुतब शाह/रंगीला हो रहिया तिरलोक सारा।' ख्वाजा हैदर अली, जिन्हें हम 'आतिश' के नाम से जानते हैं, के दीवान में होली पर कई शे'र मिल जाते हैं। अपने एक शे'र में वे होली को इस अंदाज में मनाने का पैगाम देते हैं, 'होली शहीद-ए-नाज के खूं से भी खेलिए/रंग इसमें है गुलाल का बू है अबीर की। 'उर्दू शायरों की होली से मुताल्लिक तमाम नज्मों, गजलों और मसनवियों को पढ़ने से साफ मालूम चलता है कि उस गुजरे दौर में किस तरह का बहुलतावादी सांस्कृतिक परिवेश था और इस त्योहार को हिन्दू-मुस्लिम किस कदर खुलूस और मुहब्बत से मनाते थे। ■

व्यंग्य

बौराने का आनंद लीजिए

प्रह्लाद युग से पंच जी (5-जी) युग तक की होली के स्वैग में कितना कुछ बदलाव आया है, यह बताने के लिए होली के सामाजिक, सांस्कृतिक, वैज्ञानिक आदि सहित बहुआयामी पहलुओं पर चर्चा आवश्यक है। विज्ञान के दृष्टिकोण से देखा जाए तो होली असीम ऊर्जा प्रदान करने वाला महापर्व है। होलियाना मिजाज को देखते हुए लाठी टेक कर चलने वाला पैंसठ वर्षीय बुढ़े जीजा भी अपनी दक्षता एवं कुशलता से फागुन में सोलह-बीस साल की युवा साली अथवा सलहज का जुगाड़ कर लेते हैं जबकि ताजा-ताजा बालिग नवयुवक मोहल्ले, टोले में भाभी जी का। होली के दौरान च्यवनप्राश का सेवन किए बिना ही गांव के युवा से वयोवृद्ध तक के हाड़-मांस में अद्वितीय स्फूर्ति का संचार होने लगता है। अपनी आयु और औकात के अनुरूप टिन, चदरा, कनस्तर की धुन और फगुआ राग पर अपनी गायकी से संपूर्ण गांव की भौजाई को रिझाने की जुगाड़ में लग जाते हैं। इनकी रहस्यमयी इच्छा और शक्ति (इच्छाशक्ति) पर चिकित्सा विज्ञान भी अचंभित है। सांस्कृतिक दृष्टिकोण से होली को गीत-संगीत का पर्व माना जा सकता है।

कुकुरमुत्ते की तरह पनपने वाले क्षेत्र के इंडियन आइडल (लोक गायक) होली की आड़ में द्विअर्थी भोजपुरी गीत-संगीत को बाकायदा भुनाने में लग जाते हैं। चौक-चौराहे पर पान की दुकान, सैलून के स्वामी एवं टेम्पो चालक भौजी, साली के महिमामंडित होली गीतों का प्रोमो तेज ध्वनि वाले ब्लूटूथ स्पीकर पर फाल्गुन आगमन के पहले से ही करने लगता है। भले ही फागुन के आगमन पर पेड़ से पत्ता झड़े, न झड़े, आलस्य बढ़ाने वाली हवाएं चले, न चले, लेकिन द्विअर्थी गीत खूब चलते हैं। क्षेत्रीय गायक अपने धरोहर अश्लील गानों से सभ्य समाज में फगुनाहट का अहसास कराने में एड़ी-चोटी का जोर लगा देते हैं। सामाजिक प्रभाव के तहत होली रिश्तेदारों के आपसी संबंध प्रगाढ़ बनाता है। यह और बात है कि प्रगाढ़ता का अनुबंध जीजा-साली और देवर-भाभी पर ही लागू होता है। मजे की बात है कि सरकार ने अभी तक इस पर संज्ञान नहीं लिया है अन्यथा नाम परिवर्तन की आड़ में अब तक इस पर्व को जीजा-साली, देवर-भौजाई वैश्विक रंग महोत्सव का नाम दे दिया गया होता। होली वात्सल्य और बाहुबल प्रदाता है। होली के दिन बंदा सामने से आ रहे हर काले,पीले रंग से पूते अथवा बाबा इलायची की तरह सिल्वर पेंटेड चेहरे को बिना पहचाने ही गले लगाने को आतुर दिखता है। आजीवन सहोदर को गले न लगाने वाला भाई, पड़ोसी से टेढ़ा मुंह बात करने वाले फगुआ प्रेमी भी सस्ते नशे से अपनी इंसानियत की डिस्चार्ज हो चुकी बैट्री को हंड्रेड परशेंट रिचार्ज कर डालता है और बंदा पूरे गांव वालों को गले लगा-लगा कर भाईचारे का टॉपअप मुफ्त में बांटता फिरता है। बीपीएल समुदाय के फगुआ प्रेमी भी होली में रंग-गुलाल खरीद गली-मुहल्ले में फलां या ढिमका की जोरू को 'हैप्पी होली भौजी' बोल कर होली की शुभकामनाएं देने में व्यस्त रहता है।

ड्राय स्टेट में फगुआ प्रेमी चोरका दारू का जुगाड़ लगाने का अथक प्रयास में लगा रहता है, तो कुछ बीपीएल कैटगरी के फगुआ प्रेमी भांग अथवा सस्ता नशा कर समाज, शासन और प्रशासन सहित समस्त संसार को ललकारने में लग जाता है। होली ज्ञान प्रदायिनी महापर्व है। कुछ मानवों को जल संरक्षण के दिव्य ज्ञान की प्राप्ति होली के दौरान होती है और वो वाटरलेस होली का ज्ञान बांचना शुरू करते हैं। कुल मिलाकर कह सकते हैं कि 'कब है होली' का उद्घोष करने वाले रामगढ़ के आदरणीय गब्बर सिंह को भी होली का इंतजार उतनी बेसब्री से न रहा होगा, जितना यूपी-बिहार में देवर, जीजा, शराबियों और भोजपुरी गायकों को रहता है। तो चलिए, 'बुरा न मानो होली है' के सार्वजनिक मंत्रोच्चार के साथ इस बहुआयामी महापर्व में बौराने का आनंद लिया जाए।

■ विनोद कुमार विक्की

राग रंग | आलोक पराड़कर

देसज में उड़ता फाग

मिर्जापुर की कजरी, अवध के सोहर, राजस्थान के लोक गीतों के बीच देश के विभिन्न अंचलों से आए लोक कलाकारों के मोहक और कभी अचरज में डालने वाले प्रदर्शन दो दिनों तक लखनऊ के कला प्रेमियों को खूब रिझाते रहे। अवसर था देसज के वार्षिक उत्सव का। लोक गायिका होने के साथ ही मालिनी अवस्थी लोक कलाओं के संरक्षण के लिए भी प्रयासरत रहती हैं। उनकी संस्था सोनचिरैया इस निमित्त समय-समय पर विविध आयोजन करती है।

इसी क्रम में संस्था का यह दो दिवसीय उत्सव देसज बीते 19 और 20 मार्च को लखनऊ के लोहिया पार्क के मुक्ताकाशीय मंच पर हुआ तो देश के विभिन्न क्षेत्रों से आए लोक कलाकारों की प्रस्तुतियां देखते ही बनीं। देसज का यह तीसरा वर्ष रहा जबकि इस मौके पर ही संस्था द्वारा कजरी गायन में दीर्घ साधना और असाधारण योगदान के लिए मिर्जापुर की प्रसिद्ध गायिका उर्मिला श्रीवास्तव को पांचवा लोक निर्मला सम्मान प्रदान किया गया। याद करते चलें कि महिला कलाकारों को उनकी असाधारण प्रतिभा के लिए दिया जाने वाला यह सम्मान उर्मिला श्रीवास्तव के पूर्व तीजन बाई (छत्तीसगढ़), गुलाबो सपेरा (राजस्थान), शारदा सिन्हा (बिहार) और मंजम्मा जोगती (कर्नाटक) को दिया जा चुका है।

देसज में इस बार भी विभिन्न अंचलों से आए लोक कलाकारों का संगम हुआ जिनकी प्रस्तुतियों को अलग-अलग देखना प्रभावपूर्ण तो था ही लेकिन कुछ कार्यक्रमों का इस प्रकार संयोजन किया गया था कि विभिन्न अंचलों के लोक कलाकार अपनी कला प्रस्तुतियों के साथ इसमें शामिल होकर एकमेक हो गए। इस बार देसज में मुख्यतः ऐसे लोक कलाकारों को आमंत्रित किया गया था जिनके प्रदर्शनों में शौर्य परंपराएं निहित रही हैं। केरल के कलारीपयट्टू, बंगाल के रायबेंशे, पंजाब के गतका, कश्मीर के राऊफ में कठिन करतबों, कलाबाजियों, आसनों और शस्त्र प्रदर्शनों को लोक नृत्यों के साथ देखना अचरज में डालने वाला था तो उत्तर प्रदेश के लोक कलाकारों का मलखंभ पर किया गया प्रदर्शन भी उनके कठिन अभ्यास का परिचायक रहा। इनके बीच असम के बिहू, बुंदेलखंड के नौरता, राजस्थान के कालबेलिया और मणिपुर के रास ने देशज को मोहक रंग दे दिए। इस प्रकार करीब पांच सौ लोक कलाकारों ने इस उत्सव में सहभागिता कर अपनी लोक कलाओं के प्रदर्शन किए। इन प्रदर्शनों ने यह भी बताया कि हमारा देश लोक कलाओं की दृष्टि से कितना समृद्ध है, उनके कितने रंग और विविधताएं हैं, लोक नृत्यों और लोक गीतों की धुनों में कितना गहरा आकर्षण है और लोक कलाकारों ने किस प्रकार इन्हें सहेज कर रखा है।

सम्मान से अभिभूत उर्मिला श्रीवास्तव ने कहा कि मिर्जापुर की कजरी की लोकप्रियता पूरे विश्व में है। यहां की हर बेटी को कजरी याद होती है। हालांकि कजरी मुख्यतः देवी की आराधना का गीत है। उन्होंने 'पिया मेंहदी मंगाइ द मोतीझील से.., कइसन खेले जइबू...' सहित कई लोकप्रिय कजरी सुनाईं तो समारोह में यह भी बताया गया कि किस प्रकार फिल्मों में लोक धुनों का इस्तेमाल हुआ है। मदर इंडिया फिल्म का लोकप्रिय गीत 'होली आई रे कन्हाई...' भी इन्हीं लोक धुनों पर आधारित है। संस्था की अध्यक्ष और लोक गीतों की मर्मज्ञ विद्याबिंदु सिंह ने कहा कि इन गीतों में सामूहिक परिवार का चित्र उभरता है और वर्षा में कजरी खेलने जाने को लेकर चिंता व्यक्त की गई है।

मालिनी अवस्थी ने कहा कि संस्था लगातार लोक गीतों और उनकी धुनों के संरक्षण के प्रयास में लगी है। इनका अभिलेखीकरण किया जा रहा है और संग्रह तैयार किया गया है।

उत्सव की पहली संध्या में गुजरात के उस्मान मीर ने गायन प्रस्तुत किया। उन्होंने 'हे री सखि मंगल गाओ री...', 'लंबी जुदाई...', 'मेरे मौला तेरा शुक्रिया...' सुनाया। उर्मिला श्रीवास्तव और उस्मान मीर के साथ कलाकारों के अनुरोध पर गायन में मालिनी अवस्थी ने भी साथ दिया। वैसे समारोह में समूह लोक गायन का भी आयोजन था। उत्सव में 111 महिलाओं के दल ने अवधी लोक गीत सुनाए तथा सोहर गाकर उत्सव का आगाज किया। होली के पूर्व लखनऊ ने लोक कलाओं के ये खूबसूरत रंग खूब देखे। आकर्षक ढंग से सजाए गए उत्सव स्थल पर दोनों संध्याओं में भारी भीड़ रही। ■

कैनवस | जय त्रिपाठी

चित्रों की भावनात्मक प्रतिध्वनि

समकालीन भारतीय कला परिदृश्य को देखते हुए इस समय कलाकारों की महत्त्वाकांक्षा एक नये अर्थ के साथ सामने आती दिखाई देती है। यह संदर्भित रचनाकार के सामने एक मूल्य की तरह उपस्थित है। असल में यह रचनात्मक बनावट कई सारे सूक्ष्म संकेत भी देती है और यदि वर्तमान के दबावों को स्वीकार करते हुए इस रचनात्मक विस्तार को समझने का प्रयास करें तो यह रचनात्मकता कला में प्रचलित इस मान्यता का सिद्धांततः विरोध भी करती है। संभवतः कम ही कलाकार इस रचनात्मक प्रतिबद्धता को दरकिनार करने का साहस कर पाते होंगे। मैं इसी भाव से दिल्ली की दीर्घाओं में इधर लगातार प्रदर्शित होने वाले कलाकारों के कला कौशल को देखा रहा था। दिल्ली की धूमिमल कला दीर्घा में 'डिवाइन एंकाउंटर्स' शीर्षक से चित्रकार **नवल किशोर** के रेखांकन की एकल चित्र प्रदर्शनी लगी है। प्रदर्शनी 18 अप्रैल तक चलेगी। इनके रेखांकन नवल लगते हैं। कलाकार में भटकाव न होकर चित्र शृंखला एकाग्रचित्त मन का स्वरूप है। विषय प्रधान चित्र तथा रेखांकन शैली का शीर्षक चित्रकार के आध्यात्मिक भावों के प्रेम को दर्शाता है। यह प्रेम उनकी कृतियों में कई परतों पर उभरते चेहरों की आकृतियों के साथ-साथ रेखाओं में गढ़े गए आकारों की कलात्मक दूरदर्शिता है। चित्रकार की रचनाओं में आकार संयोजन एवं रेखाकंन में रंगों का पारदर्शी प्रयोग चित्रों में मौलिकता लाता है।

कलाकार का रेखाकंन कौशल 'डिवाइन एंकाउंटर्स' शीर्षक से प्रदर्शित उनके चित्रों में स्पष्ट दिखाई देता है। कलाकार का रचना विचार उनकी मानसिक प्रक्रिया में सृजनात्मक शक्ति से कुछ नया कर देने का प्रयत्न करता है। किशोर का यह नवल रेखांकन उनके काम के कलात्मक सौंदर्यबोध का मूर्त आकार है। भावनात्मक प्रतिध्वनि को दर्शाती कलाकृतियों में रेखांकन का रूप एक कलात्मक प्रक्रिया है।

नई दिल्ली की ललित कला अकादमी की दीर्घाओं में एक साथ तीन एकल कला प्रदर्शनियां प्रदर्शित हैं। ये प्रदर्शनियां कलाकारों के भिन्न-भिन्न समय काल की अवधि के दौरान किए जाने वाले कामों को संदर्भित करती हैं। गैलरी न. 2 में **रीना भटनागर** के एकल चित्रों की प्रदर्शनी लगी है। 'अर्बन सिंफनी' शीर्षक से प्रदर्शित रीना ने अमूर्त चित्रण के विविध रूपों की शृंखला को संवेदनात्मक दृष्टिकोण से प्रदर्शित किया है। यह महिला चित्रकार अपने भावानुरूप आकाश की ऊंचाई से मूर्तन को अमूर्त रूप में कैनवस की सतह पर रचती हैं। रीना ने गगनचुंबी इमारतों के साथ शहरी दृश्य को अमूर्त अभिव्यक्तियों के माध्यम से रंगों के क्यूबिक आकारों में रचा है। रंगों के ब्लॉक उत्कृष्ट हैं। छोटे चित्र विषय की प्रधानता के साथ इस तरफ आकृष्ट करते हैं।

गैलरी न. 3 में चित्रकार **मनीष कुमार गोंड** की 'गद्दी' शीर्षक से प्रदर्शित एकल कलाकृतियों की प्रदर्शनी में रचनात्मक प्रवाह है। कृतियों में रेखांकन, रंग संयोजन कलाकार के संवेदनशील मन-मस्तिष्क से उपजा कलात्मक दृष्टिकोण है। हिमाचल के कलाकार मनीष ने गद्दी समुदाय के पुरुष और कानों में बालियां पहने महिलाओं कौवा, कबूतर, घोंसला, मछली, कमल तथा भेड़ आदि को विभिन्न आकार, बनावट आदि के माध्यम से अभिव्यक्त कर जटिल संयोजन का रूप दिया है। अच्छे और बुरे को दशति अधिकतर चित्रों को संवेदनशीलता से रचा है। प्रेक्षक के तौर पर प्रदर्शनियां हमें यह भी बताती चलती हैं कि कलाकार परंपरागत कला में नये प्रयोग करने की संभावना और आधुनिक चित्रों को देखने के तरीकों के प्रति नजरिया बदलते हैं। कला सामग्री और कला की प्रतीकात्मक प्रवृत्ति पर नये विचारों के साथ नये प्रयोग करते हैं, जिसमें कलाकार नवीनतम कलात्मक कला को समकालीन चित्रों में दर्शाता है। आज की भारतीय आधुनिक कला में चाक्षुष कला का यह काल खंड इतना बहुविध और विस्तारित है कि इसको समग्रता में नहीं, बल्कि अनेक स्तर पर भी रचनात्मक प्रवाह के रूप में देखा जा सकता है। ■

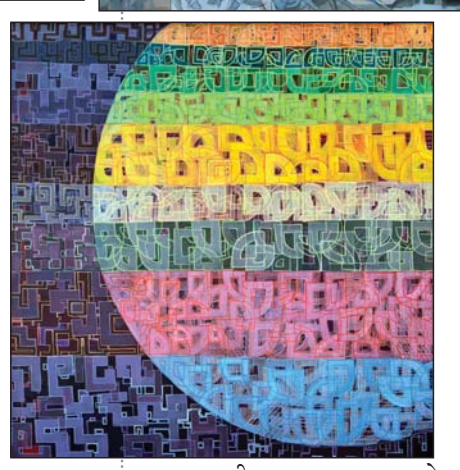

https://t.me/AllNewsPaperPaid

लोकतंत्र किसी को डकैती डालने की छूट नहीं देता: योगी आदित्यनाथ

● अरविंद केजरीवाल पर योगी का बड़ा बयान

● कहा, मुख्यमंत्री राज्य का मालिक नहीं सेवक होता है, हम कानून से ऊपर नहीं

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल की गिरफ्तारी पर यूपी के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने कहा है कि कोई भी कानून से बड़ा नहीं हो सकता। उन्होंने कहा कि देश में लोकतंत्र है इसीलिए अरविंद केजरीवाल बार-बार दिल्ली के मुख्यमंत्री बन सके। मगर लोकतंत्र किसी व्यक्ति, पार्टी या संस्था को डकैती डालने की छूट नहीं देता। मुख्यमंत्री प्रदेश का मालिक नहीं होता। हमारा काम जनसेवक और कस्टोडियन का होता है। कोई भी, फिर चाहे मैं ही क्यों न हूं, अगर नियम विरुद्ध आचरण करूंगा तो मुझपर भी देश का कानून लागू होगा। कोई व्यक्ति या सरकार खुद को कानून से ऊपर मानने लगे तो ये गलत है। ईडी एक स्वतंत्र नियामक संस्था है और केजरीवाल का मामले में कोर्ट में है, इसे अब कोर्ट ही तय करेगी। ये बातें शनिवार को मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने एक निजी टीवी चैनल के साथ बातचीत के दौरान कही।

प्रदेश के बारे में आज देश और दुनिया की धारणा बदली है*उन्होंने कहा कि यूपी में जो भी परिवर्तन दिखाई देता है उसका श्रेय प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी और यूपी की जनता को दिया जाना चाहिए। प्रदेश के बारे में आज देश और दुनिया की धारणा बदली है। 2017 से पहले यहां लोगों के सामने पहचान का संकट था। हर दूसरे दिन दंगा होता था। न बेटी सुरक्षित थी न व्यापारी। सुरक्षा की स्थिति बदतर थी। प्रदेश में विकास का माहौल नहीं था। सरकारों ने अपने परिवार का विकास किया। जातियता के नाम पर प्रदेश को विभाजित किया गया। मगर, आज ये नये भारत का नया यूपी है, जो देश की उभरती हुई अर्थव्यवस्था वाला प्रदेश है। यहां सर्वाधिक निवेश को धरातल पर उतारने का कार्य हुआ है। यूपी आज इन्फ्रास्ट्रक्चर डेवलपमेंट की योजनाओं को सबसे तीव्रता के साथ आगे बढ़ाने वाला प्रदेश बन चुका है। मुख्यमंत्री ने आश्वस्त किया कि लोकसभा चुनाव में उत्तर प्रदेश पिछली बार से बेहतर प्रदर्शन करेगा। उन्होंने बताया कि प्रदेश में उनकी सरकार का सात साल का कार्यकाल पूरा होने जा रहा है। तीन साल सरकार ने कोरोना जैसी वैश्विक महामारी का सामना किया। हमें चार वर्ष ही अपनी योजनाओं को प्रभावी ढंग से जमीनी धरातल पर उतारने का मौका मिला। इसके बावजूद हमें यूपी की जीडीपी को दोगुना करने में सफलता मिली। आज यूपी एक रेवेन्यू सरप्लस स्टेट बन चुका है। 2017 से पहले हमें अपने कर्मचारियों को तनख्वाह देने तक का पैसा नहीं होता था। कोई बड़ा बैंक हमें पैसा नहीं देता था।

मुख्यमंत्री ने बदायूं की घटना को वीभत्स बताया। उन्होंने कहा बुलडोजर अन्यायियों और अत्याचारियों के साथ साथ इन्फ्रास्ट्रक्चर डेवलपमेंट के लिए चलता है। सीएम ने प्रदेश में हुए एनकाउंटर पर कहा कि पुलिस नियमानुसार अपना काम करती है। बेटी और व्यापारी को कोई भी परेशान करेगा तो कानून का राज स्थापित करने के लिए जो भी उपाय है वो किया जाएगा। योगी ने कहा कि कहा कि हम हिन्दू आस्था के साथ खिलवाड़ नहीं कर पाए, इसलिए शायद मुसलमानों के मन में जगह नहीं बना पाए। हिन्दुस्तान में हमें यहां की मूल आत्मा का सम्मान करना पड़ेगा। हिन्दू भारत की मूल आत्मा है। उसका अपमान नहीं किया जा सकता, जिसको गलतफहमी होगी कि हम इस भावना का अपमान करके राजनीति करेंगे, तो हम ऐसी राजनीति को ठोकर मारते हैं। हम देश की सुरक्षा और हिन्दु आस्था के सम्मान पर कोई समझौता नहीं कर सकते। ईश्वर की कृपा और जनता का आशीर्वाद हमारे साथ है। आजम खां के मामले में सीएम ने कहा कि उनके कर्मों के कारण उन्हें न्यायालय से सजा मिली है। भारत की न्यायपालिका स्वतंत्र है। सीएम योगी ने सीएए के सवाल पर कहा कि भारत में मुस्लिमों की आबादी आजादी के बाद हिन्दुओं से कई गुना तेजी से बढ़ी है। मगर पाकिस्तान, बांग्लादेश और अफगानिस्तान में हिन्दू आबादी कई गुना घटी है। अगर भारत सरकार यहां जन्मी सभी उपासनाविधियों को मानने वाले शरणार्थियों को सीएए के माध्यम से भारत की नागरिकता दे रही है तो इसका स्वागत करना चाहिए था। इसके बदले अगर कोई हिंसा का रास्ता अख्तियार करता है तो उसके साथ सख्ती से निपटा जाना चाहिए। सीएए भारत के वसुधैव कुटुम्बकम की अवधारणा है। सीएम योगी ने सपा-कांग्रेस गठबंधन पर कहा कि ये पहले भी हो चुका है। इन्हें प्रदेश की जनता ने अच्छे ढंग से सबक सिखा दिया था। यही कारण है कि राहुल और प्रियंका यूपी में आने का साहस नहीं दिखा पा रहे। अब आप झूठे वादे करके प्रदेश की जनता की आखों में धूल नहीं झोंक सकते। भाजपा अपने सहयोगियों के साथ यूपी में अबतक का सबसे बेहतरीन प्रदर्शन करने जा रही है। ये पहला चुनाव होगा जिसके परिणाम के बारे में पूरा देश आश्वस्त है। मोदी की गारंटी पर देश का विश्वास है। चार जून को परिणाम आएंगे और मोदी जी तीसरी बार देश के प्रधानमंत्री बनेंगे।

सीएम योगी ने कहा कि कर्नाटक, तेलंगाना और महाराष्ट्र में पार्टी मजबूत स्थिति में है। इसके अलावा आंध्र प्रदेश, तमिलनाडु और केरल में जहां बीजेपी कभी पीछे थी, वहां भी हम अच्छी सीटें लेकर आएंगे। सीएम ने बसपा के बारे में कहा कि उसका अपना वोटबैंक हैं। उसकी नेता मायावती तीन बार प्रदेश की सीएम रह चुकी हैं। बसपा कमजोर पड़ेगी तो उसका लाभ भाजपा को मिलेगा। 2019 में सपा और बसपा मिलकर अपनी ताकत आजमा चुके हैं। सीएम योगी ने इस बात के संकेत भी दिये कि इस बार भाजपा यूपी की सभी 80 सीटें जीतेगी।

योगी मथुरा से शुरू करेंगे अपना चुनावी अभियान

मुख्यमंत्री ने कहा कि भारतीय जनता पार्टी विकास की बात करती है, ध्रुवीकरण की राजनीति नहीं करती। हम लोकआस्था का सम्मान करते हैं। हम कर्फ्यू नहीं लगाते, कांवड़ यात्रा का मार्ग प्रशस्त करते हैं। प्रदेश में स्पिरिचुअल टूरिज्म में यूपी में बहुत संभावनाएं हैं। उन्होंने कहा कि वह जितनी बार अयोध्या, मथुरा और काशी गये हैं, उतना कोई भी मुख्यमंत्री नहीं गया। यही कारण है कि 2017 से पहले की अयोध्या और अब की अयोध्या में संभावनाओं के मामले में 100 गुना ज्यादा बढ़ोतरी हुई है। लाखों लोगों को रोजगार मिला है। सीएम ने बताया कि वो अपना चुनावी अभियान मथुरा में से करेंगे।

सीएम योगी पांच दिन में 15 लोकसभा क्षेत्रों में प्रबुद्ध सम्मेलनों को संबोधित करेंगे

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

लोकसभा चुनाव को लेकर भाजपा ने अपना चुनाव अभियान तेज कर दिया है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी तो चुनावी सभाओं के जरिए प्रदेश को गर्माएंगे ही मगर यूपी में पार्टी की चुनावी कमान मुख्य रूप से मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ संभालेंगे। योगी पांच दिन में 15 प्रबुद्ध सम्मेलनों के जरिए प्रबुद्ध वर्ग के बीच पार्टी की बात रखेंगे। पार्टी की ओर से इन प्रबुद्ध सम्मेलनों का कार्यक्रम तय हो गया है। फिलहाल पहले और दूसरे चरण में जिन सीटों पर चुनाव होना है, वहां प्रबुद्ध सम्मेलनों का कार्यक्रम जारी किया गया है। योगी 27 मार्च से 31 मार्च के बीच पांच जिलों की 15 लोकसभा सीटों पर प्रबुद्ध सम्मेलनों को संबोधित करेंगे। दरअसल चुनावी माहौल बनाने के लिए भाजपा का यह प्रयोग पिछले लोकसभा और विधानसभा चुनावों में भी प्रभावशाली सिद्ध हुआ है। प्रबुद्ध सम्मेलनों के जरिए पार्टी प्रबुद्ध वर्ग को साधेगी। यही तबका फिर पार्टी के लिए सियासी हवा बनाएगा। इन प्रबुद्ध सम्मेलनों को मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ संबोधित करेंगे। पार्टी की ओर से इसका कार्यक्रम तय कर दिया गया है। पश्चिमी उत्तर प्रदेश की इन सभी सीटों पर होने वाले प्रबुद्ध सम्मेलनों में भाजपा के साथ रालोद की भी हिस्सेदारी रहेगी। यही कारण है कि प्रबुद्ध सम्मेलनों का मुख्यमंत्री का कार्यक्रम भाजपा के क्षेत्रीय अध्यक्षों, लोकसभा प्रभारियों, जिलाध्यक्षों के साथ ही रालोद के जिलाध्यक्षों को भी भेजा गया है मुख्यमंत्री 27 मार्च को मथुरा में 11, मेरठ में एक और गाजियाबाद में तीन बजे से प्रबुद्ध सम्मेलनों को संबोधित करेंगे। 28 मार्च को बिजनौर में 11 बजे, अमरोहा में 1 एक बजे और मुरादाबाद में 3 बजे से प्रबुद्ध सम्मेलनों में शामिल होंगे।

29 मार्च को शामली, मुजफ्फर नगर और सहारनपुर, 30 मार्च को बागपत (मोदीनगर), बुलंदशहर, गौतमबुद्ध नगर और 31 मार्च को बरेली, रामपुर और पीलीभीत में सम्मेलन करेंगे।

होली पर पूरे प्रदेश में होगी निर्बाध विद्युत आपूर्ति

● यूपीपीसीएल अध्यक्ष ने अधिकारियों को दिए निर्देश विद्युत व्यवस्था ट्रिपिंग विहीन और आदर्श होनी चाहिए

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

रंगों के त्योहार होली पर प्रदेशवासियों को उच्च कोटि की निर्बाध विद्युत आपूर्ति की जाएगी। सीएम योगी की मंशा के अनुरूप उत्तर प्रदेश पावर कारपोरेशन (यूपीपीसीएल) के अध्यक्ष डॉक्टर आशीष गोयल ने पांचों डिस्कॉम को कटौती मुक्त और ट्रिपिंग विहीन विद्युत आपूर्ति सुनिश्चित करने के निर्देश दिए हैं। इस दौरान प्रदेश में 24 घंटे विद्युत आपूर्ति की जाएगी। उल्लेखनीय है कि इससे पहले सरकार दशहरे, नवरात्र और दीपावली के साथ ही अयोध्या में श्री रामलला विग्रह की प्राण प्रतिष्ठा के अवसर पर प्रदेश के सभी 75 जनपदों के ग्रामीण क्षेत्रों, नगर पंचायत मुख्यालयों, तहसील मुख्यालयों और जनपद मुख्यालयों में बिना कटौती 24 घंटे विद्युत आपूर्ति सुनिश्चित कर रिकॉर्ड बना चुकी है।

अध्यक्ष डॉ आशीष कुमार गोयल ने बताया कि होली के पर्व के महत्व को देखते हुए प्रदेश को प्रकाश युक्त रखने का निर्णय लिया गया है। इससे आमजन के साथ ही व्यवसाय को भी लाभ होगा। अध्यक्ष ने बताया है कि पर्व के दौरान पूरे प्रदेश भर में सभी क्षेत्रों को 24 घंटे कटौती मुक्त विद्युत प्राप्त होगी। अध्यक्ष ने विभागीय अधिकारियों को निर्देशित किया कि इस संदर्भ में पूरी तरह सावधानी बरतें और सबको अनवरत विद्युत प्राप्त हो इसके लिए सभी आवश्यक कदम उठाएं। उन्होंने बताया कि वितरण में लगे अधिकारियों को त्योहार पर निर्बाध विद्युत आपूर्ति के लिए कहा गया है। डिस्कॉम के प्रबंध निदेशकों, मुख्य अभियंताओं सहित विद्युत निगम के अधिकारियों को निर्देशित किया गया है कि होली के बाद भी प्रदेश में निर्धारित शिड्यूल के अनुरूप विद्युत आपूर्ति सुनिश्चित की जाए।

मालूम हो की प्रदेश में ग्रामीण क्षेत्रों में जहां 18 घंटे आपूर्ति निर्धारित की गई है तो वहीं नगर पंचायत मुख्यालयों के लिए 21.30 घंटे, तहसील मुख्यालयों के लिए 21.30 घंटे और जनपद मुख्यालयों के लिए 24 घंटे आपूर्ति निर्धारित की गई है। वहीं बुंदेलखंड के सभी 7 जनपदों के ग्रामीण क्षेत्रों में 20 घंटे विद्युत आपूर्ति निर्धारित की गई है। इन सभी क्षेत्रों में निर्धारित शेड्यूल के अनुरूप विद्युत आपूर्ति सुनिश्चित की जा रही है। हालांकि, त्योहारों के अवसर पर यूपीपीसीएल सभी क्षेत्रों में 24 घंटे विद्युत आपूर्ति मुहैया कराने में जुट गया है।

बीजेपी ने बीते दस वर्षों में गरीब कल्याण व महिला सशक्तिकरण पर बेहतरीन कार्य किए: त्रयंबक त्रिपाठी

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

भाजपा के प्रदेश उपाध्यक्ष, व लखनऊ महानगर प्रभारी त्रयंबक त्रिपाठी ने कहा कि जनता ने एक बार फिर प्रधानमंत्री मोदी को चुनने का मन बना लिया है। उत्तर प्रदेश की सभी सीटों पर हम भारी मतों से विजय प्राप्त करेंगे।

त्रिपाठी शनिवार को इन्दिरा नगर सेक्टर 22 स्थित सरस्वती विद्या मन्दिर के सभागार में लोकसभा चुनाव में पूर्वी विधानसभा संचालन समिति के सदस्यों की आयोजित बैठक को संबोधित कर रहे थे बैठक में लखनऊ महानगर अध्यक्ष आनंद द्विवेदी, भाजपा वरिष्ट नेता नीरज सिंह, विधान परिषद सदस्य मुकेश शर्मा भी मुख्य रुप से उपस्थित रहे। त्रिपाठी ने कहा कि भारतीय जनता पार्टी ही एकमात्र ऐसी पार्टी है जिसने पिछले 10 वर्षों में गरीब कल्याण महिला सशक्तिकरण सांस्कृतिक उत्थान सहित विकास के सभी आयामों पर बेहतरीन कार्य किया है। इस आधार पर अबकी बार 400 पार भाजपा सरकार। महानगर अध्यक्ष आनंद द्विवेदी ने कहा कि आगामी लोकसभा चुनाव में भी सभी को अपनी जिम्मेदारी के अनुरूप सर्वश्रेष्ठ कार्य करते हुए भारी मतों से जीत हासिल करनी है। प्रधानमंत्री मोदी के नेतृत्व में और मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ की दिशा में पूरा माहौल भारतीय जनता पार्टी के पक्ष में है लखनऊ लोकसभा में हमको पिछले जीत के अंतर को और बढ़ाकर रिकार्ड मतों से जीत प्राप्त करनी है। भाजपा वरिष्ठ नेता नीरज सिंह ने कहा कि पार्टी द्वारा चलाए जा रहे विभिन्न अभियानों के माध्यम से हम जनता के बीच घर-घर तक पहुंचे हैं। हमें बताना है कि भारतीय जनता पार्टी प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के दृढ़ संकल्प के साथ देश को विकसित भारत बनाने के लिए कार्य कर रही है। इस लक्ष्य को पूरा करने के लिए पुन: मोदी जी को प्रधानमंत्री बनाना है। वही विधान परिषद सदस्य मुकेश शर्मा ने सभी लोकसभा चुनाव के सभी आयामों पर विस्तृत जानकारी दी। बैठक में महामंत्री त्रिलोक अधिकारी, उपाध्यक्ष धनश्याम दास अग्रवाल, विवेक सिंह तोमर, लोकसभा विस्तारक राघवेंद्र उपाध्याय जी एवं अन्य पदाधिकारी उपस्थित रहे।

वर्तमान वक्त में स्वतंत्र रूप से कार्य कर रही है ईडी: ओम प्रकाश राजभर

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

सुहेलदेव भारतीय समाज पार्टी के अध्यक्ष और कैबिनेट मंत्री ओमप्रकाश राजभर ने कहा है कि वर्तमान वक्त में ईडी स्वतंत्र रुप से कार्य कर रही है। पहली की सरकार में ईडी काम नहीं कर पाती थी। अरविन्द केजरीवाल पर ईडी की कार्यवाही बिल्कुल सही है। कैबिनेट मंत्री ओमप्रकाश राजभर ने लखनऊ स्थित पार्टी कार्यालय में शनिवार को बयान देते हुए कहा कि अखिलेश यादव को भी ईडी का डर है। अखिलेश के लोग भी जानते हैं कि कहीं उनके पर कार्यवाही ना शुरु हो जाए। इसके कारण उनकी पार्टी छोड़कर जा रहे हैं। पल्लवी पटेल, स्वामी प्रसाद मौर्य भी छोड़कर चले गए। अल्पसंख्यक विभाग की योजना पर ओमप्रकाश राजभर ने कहा कि मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ से मिलकर अल्पसंख्यक विभाग के कुछ मामले रखे हैं। जिसमें विभाग का बजट बढ़ाने का विषय है। इसके साथ ही सामूहिक विवाह का प्रस्ताव रखा है। मदरसा एक्ट पर आए हाईकोर्ट के निर्णय पर उन्होंने कहा कि ये हाईकोर्ट का आदेश है। इसमें अभी कुछ कह नहीं सकते हैं।

घोसी लोकसभा सीट के सुहेलदेव भारतीय समाज पार्टी के उम्मीदवार व बेटे अरविन्द राजभर पर उन्होंने कहा कि हमारे उम्मीदवार का जीतना तय है। समाजवादी पार्टी के उम्मीदवार ने पिछली बार जो मत पाए थे, उतना ही तो फिर पाएंगे। क्षेत्र की जनता हमारे साथ है। इतना ही नहीं, यूपी में 80 लोकसभा सीटें और देश में 400 के पार सीटें हमारा एनडीए गठबंधन जीतेगा।

लोहिया ने समाज में व्याप्त हर प्रकार की 'जड़ता' पर कठोर प्रहार किए: योगी

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने डॉ.राम मनोहर लोहिया की 114 वीं जयन्ती पर अपनी विनम्र श्रद्धांजलि देते हुए एक्स के माध्यम से कहा कि डॉ.राम मनोहर लोहिया ने समाज में व्याप्त हर प्रकार की 'जड़ता' पर कठोर प्रहार किए।

मुख्यमंत्री ने आगे कहा कि समरस और भेदभाव मुक्त समाज के निर्माण में उनकी भागीदारी अतुलनीय है। सप्त क्रांति के प्रणेता, सामाजिक न्याय के पुरोधा, वंचितों और शोषितों के उत्थान हेतु सदैव समर्पित रहे डॉ. लोहिया की जयंती पर उन्हें विनम्र श्रद्धांजलि अर्पित है। मुख्यमंत्री के अलावा प्रदेश के उपमुख्यमंत्री केशव प्रसाद मौर्य ने सोशल मीडिया के माध्यम से कहा कि भारतीय स्वतंत्रता संग्राम सेनानी, प्रखर राजनीतिक चिंतक एवं समाजवादी राजनेता डॉ. राम मनोहर लोहिया जी की जयंती पर उन्हें शत-शत नमन करता हूं। उपमुख्यमंत्री ब्रजेश पाठक द्वारा भी अपनी भावनाएं व्यक्त की गई है। इसी तरह उत्तर सरकार में मंत्री जितिन प्रसाद ने कहा कि भारतीय स्वतंत्रता संग्राम सेनानी के रुप में प्रख्यात, प्रखर राजनीतिक चिंतक के रुप में पहचाने जाने वाले एवं समाजवादी राजनेता डॉ.राम मनोहर लोहिया की जयंती पर उन्हें मेरा शत-शत नमन है। विधायक राजेश्वर सिंह ने समाजवादी राजनेता डॉ.राम मनोहर लोहिया की जयंती पर याद कर नमन किया है।समाजवादी पार्टी के महासचिव और बदांयू लोकसभा सीट से उम्मीदवार शिवपाल सिंह यादव ने एक्स के माध्यम से अपनी भावनाओं को व्यक्त करते हुए कहा कि स्वतंत्रता संग्राम सेनानी, कलजयी व क्रांतिधर्मी चिंतक और भारतीय समाजवाद के अप्रतिम प्रवक्ता डॉ.राममनोहर लोहिया की जयंती पर नमन है।

मुख्यमंत्री ने बलिदान दिवस पर भगत सिंह, सुखदेव व राजगुरु को दी श्रद्धांजलि

लखनऊ। सीएम योगी आदित्यनाथ ने भारत मां के सच्चे भक्त और क्रांतिकारियों को बलिदान दिवस पर याद करते हुए उन्हें श्रद्धांजलि दी है। अपने सोशल मीडिया अकाउंट एक्स से पोस्ट कर मुख्यमंत्री ने लिखा कि मां भारती के सच्चे आराधक, अमर क्रांतिकारी भगत सिंह, सुखदेव और राजगुरु को उनके बलिदान दिवस पर विनम्र श्रद्धांजलि। अपने अद्वितीय संघर्ष से स्वाधीनता आंदोलन को नई ऊर्जा देने वाले इन हुतात्माओं के अतुल्य त्याग और बलिदान के लिए कृतज्ञ राष्ट्र उनका सदैव ऋणी रहेगा। इसी तरह उप मुख्यमंत्री केशव प्रसाद मौर्य ने अपने सोशल मीडिया अकाउंट से पोस्ट कर लिखा कि मातृभूमि की स्वतंत्रता के लिए अपने प्राणों की आहुति देकर युवाओं के हृदय में राष्ट्रवाद की अलख जगाने वाले महान क्रांतिकारी, मां भारती के वीर सपूत एवं अमर बलिदानी भगत सिंह, सुखदेव एवं राजगुरु के शहीदी दिवस पर उन्हें विनम्र श्रद्धांजलि।

जनता भी चाहती थी कि सपा और कांग्रेस का गठबंधन हो

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं पूर्व मुख्यमंत्री अखिलेश यादव ने कहा है कि इंडिया गठबंधन पूरी मजबूती से चुनाव मैदान में है। जनता भी चाहती थी कि समाजवादी पार्टी और कांग्रेस पार्टी का गठबंधन हो। समाजवादी पार्टी उसी दिशा में आगे बढ़ी। समाजवादियों की हमेशा कोशिश रही है सभी को साथ लेकर चलने की। गठबंधन बन गया है। लोकसभा चुनाव में भाजपा हारेगी। जनता भाजपा के घमंड का घड़ा फोड़ेगी। भाजपा देश में चार सौ सीटे हारेगी।

अखिलेश यादव ने कहा कि समाजवादी पार्टी ने पीडीए का नारा दिया है। पीडीए को एकजुट किया है। हमने सबको पीडीए की छतरी के तहत जोड़ा है। पीडीए सामाजिक न्याय का नारा है। पीडीए के साथ बहुत अन्याय हुआ है। भेदभाव हुआ है। इसमें पिछड़े, दलित, अल्पसंख्यक, आदिवासी, आधी आबादी महिलाएं और पीड़ित दुखी अगड़े सब शामिल हैं। नौकरियों में आरक्षण नहीं दिया। मदरसा एक्ट खत्म कर दिया। आदिवासियों को उनका हक नहीं मिला। आधी आबादी महिलाएं असुरक्षित हैं। भाजपा की सरकारों में महिलाओं के साथ अपराध की घटनाएं बढ़ी है। उत्तर प्रदेश में समाजवादी सरकार के दौरान महिला सुरक्षा के लिए बहुत काम किए गए थे, भाजपा सरकार ने सब कुछ बर्बाद कर दिया। प्रदेश में हर दिन महिलाओं के साथ जघन्य घटनाएं सामने आ रही है।

अखिलेश यादव ने कहा कि इलेक्टोरल बांड मामले में भाजपा की घंटी बज गयी है। भाजपा अब इससे ध्यान हटाने के लिए नेताओं को झूठे मामलों में फंसा रही है। भाजपा लोकतंत्र की हत्या कर रही है। महंगाई, बेरोजगारी, अन्याय, किसानों की समस्यायें, किसानों की एमएसपी, महिलाओं की सुरक्षा, इलेक्टोरल बांड में भाजपा की वसूली ये सब बड़े मुद्दे हैं। भाजपा इन मुद्दों का मुकाबला नहीं कर पा रही है। वह चुनाव हार चुकी है। इसीलिए लोकतांत्रिक तरीके से लड़ाई लडने के बजाय पार्टियों के खाते सीज कर रही है। विपक्ष की आवाज दबाई जा रही है। खाते सीज करने से आगे बढ़कर अब तो भाजपा सरकार मुख्यमंत्री भी सीज कर रही है। अखिलेश यादव ने कहा कि भाजपा सरकार ने समाजवादी पार्टी के वरिष्ठ नेता मोहम्द आजम खां साहब पर झूठे मुकदमें दर्ज कराए। उन्हें और उनके परिवार को परेशान किया। समाजवादी पार्टी पूरी तरह से उनके और परिवार के साथ है। वे पार्टी के बड़े नेता हैं। उन्होंने कई बार पार्टी को चुनाव जिताया है। हम उनकी राय लेते हैं। भाजपा झूठे मुकदमों का बड़ा रिकार्ड बना रही हैं।

राज्यपाल ने की प्राकृतिक रंगों से होली खेलने की अपील: राज्यपाल

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

राज्यपाल आनंदीबेन पटेल ने प्रदेशवासियों एवं देशवासियों को शुभ एवं रंगों भरी होली की बधाई देते हुए सभी के जीवन में आनंद एवं उमंग की कामना की है। अपने बधाई संदेश में राज्यपाल ने कहा कि होली आनंद, उमंग, सौहार्द, सहिष्णुता, समरसता, सद्भाव व एकता के विविध रंगों का उत्सव है।

मेरी कामना है कि उमंग और उल्लास का यह पर्व हमारी सांस्कृतिक विविधता में निहित राष्ट्रीय चेतना को और शक्ति प्रदान करे। इस अवसर पर राज्यपाल ने प्रदेशवासियों से प्राकृतिक रंगों से होली खेलने की अपील की।

मतदाताओं को मतदान से 5 दिन पूर्व जारी की जाएगी मतदाता सूचना पर्ची

● बीएलओ मतदाता या उसके परिवार के किसी वयस्क सदस्य को पहुंचाएंगे मतदाता सूचना पर्ची

● प्रत्येक परिवार को हिन्दी में रंगीन वोटर गाइड भी दी जाएगी

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

मुख्य निर्वाचन अधिकारी नवदीप रिणवा ने बताया कि लोकसभा सामान्य निर्वाचन-2024 की निर्वाचक नामावली में पंजीकृत सभी मतदाताओं को मतदाता सूचना पर्ची जारी की जाएगी। इस मतदाता सूचना पर्ची के आगे के भाग पर निर्वाचक नामावली में भाग संख्या व नाम, क्रम संख्या, पोलिंग स्टेशन का नाम तथा मतदान का दिनांक, क्यू आर कोड इत्यादि का उल्लेख होगा। मतदाता सूचना पर्ची के पीछे के भाग पर पोलिंग स्टेशन का नक्शा तथा बीएलओ का नाम, बीएलओ का कॉन्टेक्ट नम्बर, मतदान करने के लिए आयोग द्वारा निर्धारित वैकल्पिक दस्तावेज का विवरण तथा अन्य महत्वपूर्ण निर्देश आदि उल्लिखित रहेगा। मतदाता सूचना पर्ची के साथ प्रत्येक परिवार को हिन्दी में रंगीन वोटर गाइड भी दी जाएगी।

उन्होंने बताया कि भारत निर्वाचन आयोग के निर्देशानुसार समस्त पंजीकृत मतदाताओं को मतदाता सूचना पर्ची का वितरण मतदान की तिथि के 9 दिन पूर्व से लेकर मतदान की तिथि से 5 दिन पूर्व तक समस्त मतदाताओं को उपलब्ध करायी जाएगी। बीएलओ द्वारा मतदाता सूचना पर्ची, पंजीकृत मतदाता को या उसके परिवार के किसी वयस्क सदस्य को रजिस्टर पर हस्ताक्षर कराने के बाद दी जायेगी। मुख्य निर्वाचन अधिकारी ने बताया कि रंगीन वोटर गाइड में चित्रों के माध्यम से मतदाता ईवीएम से कैसे अपना मतदान करें तथा भारत निर्वाचन आयोग द्वारा दी जा रही सुविधा ऐप्स जैसे सक्षम-ईसीआई, वोटर हेल्पलाइन ऐप, अपने अभ्यर्थी को जाने (नो योर कैन्डिडेट) ऐप तथा सी-विजिल ऐप की जानकारी दी गयी है। इसके साथ ही पंजीकरण, मतदान, दिव्यांगजनों एवं वरिष्ठजनों को घर से मतदान तथा डाक मतपत्र की सुविधा के बारे में बताया गया है।

प्रथम चरण के मतदान के लिए लगाई गईं 317 स्टैटिक सर्विलेंस टीम

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

भारत निर्वाचन आयोग द्वारा 16 मार्च, 2024 को लोकसभा सामान्य निर्वाचन-2024 की निर्वाचन तिथियों की घोषणा के साथ ही प्रदेश में स्वतंत्र, निष्पक्ष, शांतिपूर्ण, भयमुक्त, प्रलोभनमुक्त, समावेशी व सुरक्षित मतदान कराने के लिए पूरे प्रदेश में आदर्श आचार संहिता लागू हो गयी।

मुख्य निर्वाचन अधिकारी ने बताया कि आदर्श आचार संहिता का अनुपालन सुनिश्चित कराने में अब तक सार्वजनिक एवं निजी स्थानों से कुल 29,65,431 प्रचार-प्रसार सामग्री हटायी गयी। इसमें सार्वजनिक स्थानों से 18,15,006 तथा निजी स्थानों से 11,50,425 प्रचार-प्रसार सामग्री हटायी गयी। इस दौरान सार्वजनिक स्थानों से वालराइटिंग के 1,99,317, पोस्टर के 8,38,468, बैनर के 5,32,581 एवं अन्य 2,44,640 मामलों में कार्यवाही की गयी। इसी प्रकार निजी स्थानों में से वालराइटिंग के 1,40,830, पोस्टर के 5,31,290, बैनर के 3,17,955 एवं अन्य 1,60,350 मामलों में कार्यवाही की गयी। इसी प्रकार अब तक वाहनों में बीकन लाइट, फ्लैग के दुरुपयोग के 219 मामलों में तथा लाउडस्पीकर एक्ट के उल्लंघन के 550 मामलों में कार्यवाही की गयी। बिना अनुमति के सभा व भाषण करने, मतदाताओं को लुभाने के लिए नकदी बांटने एवं अन्य मामलों में 8 एफआईआर दर्ज की गयी।

मुख्य निर्वाचन अधिकारी ने बताया कि आदर्श आचार संहिता के प्रभावी अनुपालन में पुलिस, आयकर, आबकारी, नार्कोटिक्स एवं अन्य विभागों द्वारा कार्यवाही की जा रही है। सघन जॉच के लिए 508 अंतर्राज्यीय चेक पोस्ट तथा 1746 चेक पोस्ट राज्य के भीतर संचालित किये गये हैं। पुलिस विभाग द्वारा 22 मार्च तक 3,21,283 लाइसेंसी शस्त्र जमा कराये गये। इसके अलावा अपराधिक व्यक्तियों के 287 लाइसेंसी शस्त्र जब्त किये गये। 3,501 लाइसेंसी शस्त्र निरस्त कर जमा कराये गये। इसी प्रकार सीआरपीसी के तहत निरोधात्मक कार्यवाही करते हुए 8,15,834 लोगों को पाबन्द किया गया।

यूपी बोर्ड ने शनिवार तक कुल 23857119 उत्तर पुस्तिकाओं का मूल्यांकन पूरा किया

लखनऊ/ प्रयागराज। नकलविहीन परीक्षाएं संपन्न कराने के बाद अब यूपी बोर्ड रिकॉर्ड समय में परीक्षाफल घोषित करने की दिशा में आगे बढ़ रहा है। इसके लिए उत्तरपुस्तिकाओं के मूल्यांकन का कार्य त्वरित गति से किया जा रहा है। इस क्रम में यूपी बोर्ड ने शनिवार तक कुल 2,38,57,119 उत्तर पुस्तिकाओं का मूल्यांकन पूर्ण कर लिया है। इस तरह परीक्षा में सम्मिलित रहे परीक्षार्थियों की कुल दो करोड़ पचासी लाख उत्तर पुस्तिकाओं के सापेक्ष अब तक 83.46 प्रतिशत उत्तर पुस्तिकाएं मूल्यांकित हो चुकी हैं। मालूम हो की विगत वर्ष बोर्ड ने 100 दिनों के अंदर परीक्षाफल घोषित कर एक रिकॉर्ड बनाया था। इस बार बोर्ड इस अवधि में और सुधार कर सकता है। बोर्ड के सचिव दिब्यकांत शुक्ल ने बताया कि शनिवार 23 मार्च को 242 मूल्यांकन केंद्रों पर मूल्यांकन कार्य सम्पादित हुआ।

भारतीय मूल्यों में विश्ववन्धुत्व का भाव निहित है: भूपेन्द्र सिंह चौधरी

लखनऊ। भारतीय जनता पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष भूपेन्द्र सिंह चौधरी एवं प्रदेश महामंत्री (संगठन) धर्मपाल सिंह ने प्रदेशवासियों को होलिकोत्सव की अनंत शुभकामनाएं दी हैं। पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष भूपेन्द्र सिंह चौधरी ने होलिकोत्सव पर्व पर शुभकामना संदेश में कहा कि भारतीय मूल्यों में विश्ववन्धुत्व का भाव निहित है और यह भाव सभी भारतीय पर्वो में परिलक्षित होता है। होली का पर्व अधर्म, अत्याचार, अन्याय व असत्य के दहन और सत्य स्वरूपी सप्तरंगों के उल्लास का पर्व है। होलिकोत्सव का संदेश है कि धर्म और सत्यरूपी प्रहलाद को ही शेष रहना है। ईश्वर से प्रार्थना है कि होलिका दहन के साथ अधर्म, असत्य, अत्याचार, अनीति, अनाचार, वैमनस्यता, घृणा, पाप के प्रत्येक भाव का दहन हो और जन-जन स्नेह व प्रेम के रंगो से सराबोर होकर अपने राष्ट्रीय व सामाजिक दायित्वों का निवर्हन करते हुए विकसित भारत के संकल्प की पूर्णता में अपनी सहभागिता सुनिश्चित करे।

https://t.me/AllNewsPaperPaid

ईशावास्यमिदं सर्वं यत्किञ्च जगत्यां जगत्
भगवान इस जग के कण-कण में विद्यमान हैं।

ओडिशा : पक्ष-विपक्ष का खेला

ओडिशा में भारतीय जनता पार्टी व बीजू जनता दल (बीजद) के बीच चुनावी गठबन्धन नहीं बन सका है। इसकी प्रमुख वजह यह है कि राज्य में सत्तारूढ़ दल बीजू जनता दल है और केन्द्र में सत्ता पर काबिज भारतीय जनता पार्टी है। यही भारतीय जनता पार्टी ओडिशा में बीजू जनता दल की प्रमुख विपक्षी पार्टी है जबकि कांग्रेस तीसरे नम्बर पर खिसक चुकी है। लोकसभा चुनावों के साथ ही ओडिशा में विधानसभा चुनाव भी होंगे। यदि बीजू जनता दल और भाजपा के बीच गठबन्धन हो जाता तो चुनावी मैदान में बहुत ही उलझन की स्थिति पैदा हो जाती क्योंकि विपक्षी पार्टी और सत्तारूढ़ पार्टी एक ही पक्ष बनकर चुनावी मैदान में उतरते और विपक्ष की प्रमुख भूमिका में कांग्रेस पार्टी स्वयं ही आ जाती।

पिछले 25 साल से राज्य के मुख्यमन्त्री पद पर बीजू जनता दल के नेता श्री नवीन पटनायक पदासीन हैं और उनकी पार्टी बीजू जनता दल का राज्य में खासा दबदबा है। नवीन पटनायक स्व. बीजू पटनायक के सुपुत्र हैं और उन्हीं की राजनैतिक विरासत के सहारे सत्ता में बने हुए हैं लेकिन भाजपा ने बीजू जनता दल के साथ गठबन्धन न बनाकर चुनाव लड़ने का फैसला करके पार्टी ने लोकसभा चुनावों के लिए कांग्रेस का मैदान साफ कर दिया है। दोनों पार्टियों के बीच जिस तरह पिछले 15 दिन से गठबन्धन की खबरें चल रही थीं उसका परोक्ष लाभ कांग्रेस को मिलना तय है मगर यह सब कांग्रेस पार्टी के नेताओं की योग्यता पर निर्भर करेगा कि वे किस तरह ओडिशा के राजनैतिक माहौल का फायदा उठाते हैं क्योंकि जनता में यह सन्देश पहुंच चुका है कि भारतीय जनता पार्टी और बीजू जनता दल में भीतर खाने आपसी एकता है। वैसे गौर से देखा जाये तो ओडिशा की राजनीति बहुत ही दिलचस्प है और इसने एक से बढ़कर एक राजनेता जैसे माइकल मधुसूदन दत्त से लेकर डा. हरे कृष्ण मेहताब तक दिये हैं। बाद में इनमें बीजू पटनायक व श्रीमती नन्दिनी सत्पथी का नाम भी जुड़ा। मगर आज की तारीख में इस राज्य के पास ऐसा कोई नेता नहीं है जिसकी राष्ट्रीय स्तर पर पहचान हो। संभवत: इसी वजह से भाजपा ने अकेले चलने का फैसला भी किया है क्योंकि पार्टी मानती है कि राज्य की जनता के बीच प्रधानमन्त्री श्री नरेन्द्र मोदी की लोकप्रियता बहुत ज्यादा है अत: विधानसभा व लोकसभा के चुनाव एक साथ होने पर उसे मोदी के नाम पर वोट मांगने में सुविधा होगी।

> **लोकसभा चुनावों के साथ ही ओडिशा में विधानसभा चुनाव भी होंगे। यदि बीजू जनता दल और भाजपा के बीच गठबन्धन हो जाता तो चुनावी मैदान में बहुत ही उलझन की स्थिति पैदा हो जाती क्योंकि विपक्षी पार्टी और सत्तारूढ़ पार्टी एक ही पक्ष बनकर चुनावी मैदान में उतरते और विपक्ष की प्रमुख भूमिका में कांग्रेस पार्टी स्वयं ही आ जाती। पिछले 25 साल से राज्य के मुख्यमन्त्री पद पर बीजू जनता दल के नेता श्री नवीन पटनायक पदासीन हैं और उनकी पार्टी बीजू जनता दल का राज्य में खासा दबदबा है। नवीन पटनायक स्व. बीजू पटनायक के सुपुत्र हैं और उन्हीं की राजनैतिक विरासत के सहारे सत्ता में बने हुए हैं**

पिछले लोकसभा चुनावों में भाजपा को इस राज्य में अच्छी सफलता मिली थी। इसकी असली वजह भी श्री मोदी की लोकप्रियता ही मानी गई थी। मगर भाजपा यहां अचानक ही दूसरे नम्बर की पार्टी नहीं बनी है। सत्तर के दशक तक ओडिशा में स्व. चक्रवर्ती राजगोपालाचारी की स्वतन्त्र पार्टी दूसरे नम्बर की पार्टी हुआ करती थी और 1967 में इसकी स्व. आर.एन. सिंह देव की सरकार भी थी। स्वतन्त्र पार्टी मूलत: ऐसे पुराने राजे-रजवाड़ों की पार्टी थी जिनकी रियासतें राज्य के बहुत बड़े हिस्से में हुआ करती थी। शुरू में ये रजवाड़े उड़िया गणतन्त्र परिषद के झंडे तले एकत्रित हुए थे और लोकतान्त्रिक चुनाव प्रणाली के जरिये इन सबकी रियाया भी उन्हें वोट देती थी। बाद में जब 1956 में राजा जी ने कांग्रेस छोड़ कर अपनी अलग स्वतन्त्र पार्टी बनाई तो गणतन्त्र परिषद का स्वतन्त्र पार्टी में विलय हो गया। मगर 1974 में स्वतन्त्र पार्टी का भी चौधरी चरण सिंह के नेतृत्व वाले भारतीय लोक दल में विलय हो गया। मगर श्री बीजू पटनायक इससे पहले ही कांग्रेस से अलग हो गये थे और उन्होंने अपनी अलग उत्कल कांग्रेस बना ली थी। इस पार्टी का भी 1974 में लोकदल में विलय हो गया। बाद में 1977 में जब 1975 में लगी इमरजेंसी के उठने के बाद चुनाव हुए और लोकदल का भी जनता पार्टी में विलय हो गया तो राज्य के लोगों ने विधानसभा से लेकर लोकसभा तक में जनता पार्टी को वोट दिया।

1977 में जनता पार्टी के नेता नीलमणि राउतराय इस राज्य के मुख्यमन्त्री बने। मगर उनकी सरकार ज्यादा नहीं चली। जनता पार्टी का 1980 में विघटन होने के बाद जब जनसंघ समेत सभी विपक्षी दल अपने-अपने नये चोलों में आये तो जनसंघ (भाजपा) ने स्वतन्त्र पार्टी के दबदबे वाले राज्यों में अपनी पैठ बनानी शुरू की। इनमें सबसे प्रमुख ओडिशा, गुजरात व राजस्थान थे। ओडिशा में आदिवासियों की भी बहुत बड़ी संख्या रहती है। इन्हीं आदिवासियों में भाजपा ने अपनी पहुंच बढ़ाई। केन्द्र में 1998 में जब स्व. अटल बिहारी वाजपेयी की एनडीए की सरकार काबिज थी तो बीजू जनता दल इसका हिस्सा बना मगर 2009 में उसने इस गठबन्धन को छोड़ दिया और कांग्रेस व भाजपा दोनों से बराबर दूरी रखने का ऐलान किया। 1998 के बाद से ही राज्य की राजनीति में बदलाव आना शुरू हुआ। इसका एक कारण राज्य के आदिवासी इलाकों में सक्रिय ईसाई मिशनरियां भी थीं।

यह इतिहास लिखने का आशय मात्र इतना सा है कि हमें इस हकीकत का अन्दाजा हो सके किस प्रकार इस राज्य में भाजपा का विकास हुआ है जिसकी वजह से वह आने वाले चुनावों में अपने बूते पर जाने का हौसला रख रही है। कारण साफ है कि बीजू जनता दल ने पिछले 25 वर्षों के दौरान सत्ता में रहते हुए राज्य की प्रमुख पार्टी माने जाने वाली कांग्रेस की जमीन साफ जैसी कर दी है और बची-खुची जमीन भाजपा ने हथिया ली है। अत: तार्किक रूप से देखा जाये तो असली मुकाबला भी इन दोनों पार्टियों के बीच ही है। यदि ये दोनों आपस में मिलकर लोकसभा व विधानसभा चुनावों में साझा उम्मीदवार उतारतीं तो खुद-ब-खुद कांग्रेस प्रमुख विपक्षी पार्टी की मुद्रा में आ जाती और सत्ता विरोधी रोष को अपनी चुनावी पूंजी बना लेती। मगर खतरा अब भी है क्योंकि बीजू जनता दल 2014 से केन्द्र में बनी मोदी सरकार को हर संकट के समय अपना समर्थन देने में पीछे नहीं रही है। केवल किसानों के तीन विधेयकों के मुद्दे पर ही यह भाजपा से छिटक कर अलग हो गई थी।

आदित्य नारायण चोपड़ा
Adityachopra@punjabkesari.com

और दिखावटी दुनिया का...

गीता पाढा

शायद मन की आवाज को हम अपने अंदर दबा रहे हैं,
और दुनिया की भेड़ चाल पर हम भी चलते जा रहे हैं,
सच्ची खुशी और दिल के सुकून से खुद को बहुत दूर पा रहे हैं,
और दिखावटी दुनिया का हम भी हिस्सा बनते जा रहे हैं..!!

केजरीवाल की गिरफ्तारी बदलेगी दिल्ली की हवा ?

मिर्च मसाला
त्रिदीब रमण
gossipguru.in

'जिस गली में कभी जम्हूरियत रहा करती थी
आज वहां चुप सन्नाटों का अनगढ़ शोर है
मैली-मैली सी हैं ये बोसीदा हवाएं,
करवटें लेती बेचैनियां
गूंगी आस्थाओं के नमन हर ओर हैं''

ऐसे दौर में जबकि देश में सबसे बड़े चुनावी महासमर की दुंदुभि बज चुकी है, दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल की गिरफ्तारी और ईडी को 6 दिनों का रिमांड मिलने से दिल्ली की सियासी फिजाओं में कई अलग-अलग रंग घुल चुके हैं। सूत्रों की मानें तो दिल्ली शराब घोटाले में केजरीवाल को गिरफ्तार करने से पहले केंद्रीय एजेंसियों ने इसके हर पहलू का बारीक मुआयना भी किया था। केजरीवाल की गिरफ्तारी के समय-काल को लेकर बाकायदा देश की खुफिया एजेंसियों के 'इनपुट' को भी खंगाला गया था।

दरअसल, केंद्रनीत सत्ताधारी दल की असली चिंता इस बात को लेकर थी कि ऐन चुनावी माहौल में केजरीवाल की गिरफ्तारी से दिल्ली का जनमानस कितना उद्वेलित होगा। साथ ही दिल्ली की सातों लोकसभा सीटें जो फिलहाल भाजपा के कब्जे में हैं, केजरीवाल की गिरफ्तारी से इनकी चुनावी संभावनाओं पर क्या असर पड़ेगा। सूत्रों की मानें तो इन खुफिया रिपोर्ट के इनपुट के बाद ही दिल्ली के लोकसभा चुनाव 6वें फेज़ यानी 25 मई को आहूत किए गए। इसके पीछे यही रणनीति समझी जाती है कि वक्त इन सियासी प्रत्यांचाओं की मार को और मद्दिम कर देगा। सो, केजरीवाल की गिरफ्तारी के बाद मुकाबले को एकतरफा बनाने की सधी कोशिश हुई है। वहीं इस ताज़ा सियासी घमासान से 'इलेक्टोरल बांड' का मुद्दा भी थोड़ा दब गया है।

राघव कहां हैं?

एक ऐसे वक्त जबकि अरविंद को अपने सबसे दुलारे राघव चड्ढा की सबसे ज्यादा जरूरत थी तो राघव चड्ढा ऐन वक्त परिदृश्य से गायब हैं। जब इनकी ढुंढाई शुरू हुई तो पता चला कि चड्ढा ने 8 मार्च को ही लंदन की फ्लाइट पकड़ ली थी। सूत्र यह भी खुलासा करते हैं कि राघव 'रेटिना डिटेचमेंट प्रॉब्लम' से जूझ रहे हैं और लंदन के 'मूरफील्डस आई हास्पिटल' में इनकी आंखों का ऑपरेशन भी होना है। बावजूद इसके राघव चड्ढा लंदन में यत्र-तत्र घूमते पाए गए। वे लंदन स्कूल ऑफ इकॉनामिक्स गए, वहां के पार्लियामेंट भी गए, घूम-घूम कर कई स्थानों पर स्पीच भी दी और एक-एक कर भारतीय मूल के सांसदों से भी मिल रहे हैं।

सूत्रों की मानें तो दिल्ली शराब घोटाले में ईडी का अगला निशाना राघव चड्ढा हो सकते थे। सूत्र यह भी खुलासा करते हैं कि जब राघव पर ईडी द्वारा केस दर्ज करने की सुगबुगाहट तेज हो गई तो प्रियंका चोपड़ा उसके संकट मोचक के रूप में अवतरित हो गईं। सनद रहे कि प्रियंका राघव की नई नवेली पत्नी परिणति चोपड़ा की रिश्ते में बहन लगती हैं। प्रियंका चोपड़ा के राजनीतिक रसूख और उनकी सत्ताधारी दल में ऊंची पहुंच कोई छुपी बात नहीं है। सो, लगता है राघव चड्ढा को फिलहाल अभयदान मिल गया है।

केजरीवाल की गद्दी पर कौन होगा काबिज?

अरविंद केजरीवाल को बहुत पहले ही इस बात का इल्म हो गया था कि ऐन चुनाव के काल में ईडी उन्हें बख्शने के मूड में नहीं है लिहाजा, उनकी गिरफ्तारी कभी भी हो सकती है। केजरीवाल ने अपने स्थानांपन्न विकल्प की तलाश बहुत पहले शुरू कर दी थी। जो भी पार्टी पदाधिकारी या विधायक उनसे मिलने आता तो केजरीवाल उनका मन टटोलने का प्रयास करने लगते थे। अपने सुप्रीमो की भावनाओं को भांपते हुए ज्यादातर आप विधायकों ने दिल्ली की अगली मुख्यमंत्री के तौर पर उनकी पत्नी सुनीता केजरीवाल का ही नाम आगे किया।

सुनीता केजरीवाल ने भी हिरासत से आए केजरीवाल के संदेश को आमजनों में एक भावुक अपील के तौर पर पहुंचा कर ऐसे कयासों को आकार ही दिए हैं। पर केजरीवाल के अपने मंत्रिमंडल के दो मंत्री ऐसे भी थे जिन्हें यह आइडिया रास नहीं आ रहा था। इनमें से एक मंत्री सिसोदिया के करीबी माने जाते हैं जबकि दूसरे मंत्री अपने बेबाक बोलों के लिए चर्चा में रहते हैं। यह वही मंत्री हैं जिनके आचरण और मंशा को लेकर केजरीवाल भी सशंकित हो गए थे और पिछले काफी समय से उनके पर कुतरने की तैयारियों में जुटे थे।

परीक्षा पर चर्चा के बहाने

जाहिर तौर पर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी सियासत के उस्ताद बाजीगरों में शुमार होते हैं और किसी मौके को उत्सव में बदलने की कारीगरी उनसे बेहतर किसी को आती भी नहीं। चूंकि यह 'परीक्षा पर चर्चा' का सातवां आयोजन था सो पीएमओ इसे एक बड़े इवेंट में तब्दील करने में जुट गया। इससे पहले पीएम ने जब वर्चुअली स्कूली छात्रों के साथ परीक्षा पर चर्चा की थी तो 38 लाख से ज्यादा बच्चे इससे जुड़े थे। सो, आयोजकों ने इस बार इस संख्या को ढाई करोड़ तक पहुंचाने का लक्ष्य रखा।

कहते हैं सीबीएसई अधिकारियों ने खुद इस बाबत देश भर के स्कूलों से संपर्क साधा और उन्हें आगाह किया कि 'इस चर्चा के दौरान ज्यादा से ज्यादा बच्चे, शिक्षक और अभिभावक जुटने चाहिए। कोताही बरतने की सूरत में स्कूल की मान्यता के समक्ष संकट उत्पन्न हो सकता है।' आयोजक इस बात से भली-भांति वाकिफ थे कि 12वीं में पढ़ने वाले बच्चे अपनी उम्र के 18वें पड़ाव में प्रवेश करते हुए पहली बार के वोटर हो सकते हैं और ये प्रथम बार के वोटर पीएम मोदी के आभामंडल के मुरीद हुए बिना नहीं रह सकते। सो, जब पिछले 29 जनवरी को प्रगति मैदान स्थित भारत मंडपम में परीक्षा पर चर्चा का यह आयोजन संपन्न हुआ तो इससे वर्चुअली और फिज़िकली 2 करोड़ से ज्यादा बच्चे शामिल हुए, इसके अलावा 15 लाख शिक्षक और 6 लाख अभिभावक भी इस कार्यक्रम का हिस्सा बने। यानी दूर तक पहुंचा संदेश।

ओम बिड़ला और रामलला

विगत 11 मार्च को लोकसभा स्पीकर ओम बिड़ला अपने संसदीय क्षेत्र के तकरीबन 150 विशिष्ट लोगों को लेकर रामलला के दर्शन के लिए अयोध्या धाम पहुंचे। स्पीकर महोदय के साथ जबर्दस्त सिक्यूरिटी भी चल रही थी। उनके साथ आए सुरक्षाकर्मी भी खुश थे कि चलो इस बहाने रामलला के दर्शन तो हो जाएंगे। जब ओम बिड़ला का यह कारवां राम मंदिर पहुंचा तो वे पहले अपने लोगों को मंदिर परिसर का भ्रमण कराने लगे। इसी दौरान रामलला के दर्शन के लिए आम लोगों की भीड़ बढ़ने लगी। जब तक स्पीकर महोदय मंदिर की सीढ़ियां चढ़ अंदर जाने लगे तो वहां इतनी धक्का-मुक्की हुई कि उन्हें नजदीक से रामलला के दर्शन ही नहीं हो पाए। उनके साथ आए लोगों का भी बस यही हाल था। स्पीकर महोदय अपने साथ अपना फोटोग्राफर भी लेकर आए थे ताकि रामलला के साथ अपनी फोटो भी क्लिक करा सकें, पर उनकी यह इच्छा भी अधूरी रह गई।

...और अंत में

कांग्रेसी नेता मनीष तिवारी के घर जल्द ही शहनाई गूंजने वाली है। उनकी बेटी इनेका तिवारी जल्द ही अपने क्रिकेटर दोस्त हिम्मत सिंह के साथ विवाह बंधन में बंधने जा रही हैं। हिम्मत आईपीएल क्रिकेटर हैं और एक संपन्न जाट परिवार से ताल्लुक रखते हैं। ये दोनों दिल्ली के हिंदू कॉलेज में कभी साथ-साथ पढ़ा करते थे। इनेका ने उसके बाद एक बड़े कॉरपोरेट में नौकरी कर ली, हाल में ही उन्होंने अपनी नौकरी से त्यागपत्र दे दिया है ताकि वह अपने पिता के चुनाव प्रबंधन के कार्य को अंजाम दे सकें। परिवार से जुड़े सूत्र खुलासा करते हैं कि इनेका और हिम्मत की शादी एक 'डेस्टीनेशन वेडिंग' होगी जो आने वाले दिनों में श्रीलंका के कैंडी में संपन्न होने वाली है।

चुनावी बांड्स और 'हमाम'

खरी-खरी बात
-वीरेन्द्र कपूर

एक लोकप्रिय कहावत है-'इस हमाम में सब नंगे हैं'। लिहाजा चुनावी बांड खरीदने वालों और प्राप्तकर्ताओं के बारे में चल रहे खुलासे एक बार फिर साबित करते हैं कि जब पैसों की बात आती है तो कोई भी पार्टी भर्त्सना से परे नहीं है। ये सभी पैसों के लालची हैं और जो कोई भी पैसा देने को तैयार है -चाहे वह काला हो या कोई-उससे इसे प्राप्त करने में इन्हें कोई झिझक नहीं है।

निस्संदेह, आप धन मांगने के लिए किसी पार्टी को दोषी नहीं ठहरा सकते। दरअसल, पिछले कुछ वर्षों में चुनाव महंगे हो गए हैं। बहुत सारा पैसा चाहिए। यहां तक कि भाजपा और कम्युनिस्टों को भी, जो हालिया समय तक प्रचार के लिए समर्पित कार्यकर्ताओं पर भरोसा कर सकते थे, अब कार्यकर्ताओं को हायर करने की जरूरत पड़ती है। इस मामले में भाजपा भाग्यशाली है कि उसके पास आरएसएस के स्वयंसेवकों की एक टीम है, जिस पर उसे भरोसा है, लेकिन जैसे-जैसे पार्टी बड़ी हुई, उसे भी बाहरी लोगों को काम पर रखना पड़ा। लेकिन चुनावी बांड के साथ यह अल्पकालिक प्रयोग, जिसे सुप्रीम कोर्ट ने पारदर्शिता की कमी के कारण असंवैधानिक ठहरा दिया, चुनावी फंडिंग को अंडरग्राउंड कर सकता है। बहरहाल, कम से कम पांच साल तक चले चुनावी बांड के इस प्रयोग ने यह स्थापित करने में जरूर मदद की कि हमेशा शीर्ष औद्योगिक घराने ही राजनीतिक दलों को धन देने की जरूरत महसूस नहीं करते हैं। अज्ञात व्यवसायों और कंपनियों ने भी बड़े पैमाने पर पार्टियों को वित्तपोषित किया है।

महज एक सप्ताह पहले तक फ्यूचर गेमिंग और होटल सर्विसेज के बारे में किसने सुना था? इसके मालिक सैंटियागो मार्टिन, एक समय म्यांमार में दिहाड़ी मजदूर के रूप में काम करते थे। अब कोयंबटूर में स्थित, मार्टिन का फ्यूचर गेमिंग सबसे बड़ा दानकर्ता बनकर उभरा है। उसने 1368 करोड़ रुपए के इलेक्टरोल बांड खरीदे। कंपनी ने इसमें से सबसे ज्यादा रकम 540 करोड़ रुपए ममता बनर्जी की तृणमूल कांग्रेस को 540 दिए, उसके बाद डीएमके को 509 करोड़ रुपये। इसमें से वाईएसआर कांग्रेस को 160 करोड़ रुपए, बीजेपी को 100 करोड़ और कांग्रेस 50 करोड़ रुपए मिले।

तमिलनाडु स्थित लॉटरी किंग को पश्चिम बंगाल, आंध्र प्रदेश, भाजपा और कांग्रेस में पार्टियों को फंड देने की आवश्यकता क्यों होगी? प्रश्न का उत्तर आसानी से दिया जा सकता है। लॉटरी के प्रमोटर के रूप में, अपने और उन विभिन्न उत्तर-पूर्वी राज्यों में, मार्टिन उन राज्यों की सद्भावना पर निर्भर थे जो दूसरे तरीके से देखेंगे जब उनकी लॉटरी उनके अधिकार क्षेत्र में बेची जाएगी। लॉटरी व्यापार रडार के तहत संचालित होता है क्योंकि अधिकांश राज्यों में इस पर प्रतिबंध है।

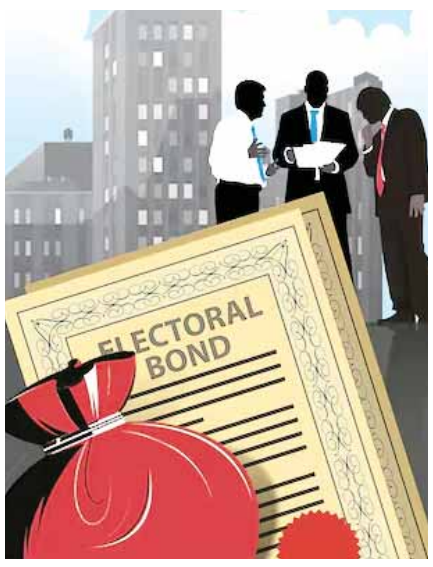

कोई भी पार्टी किसी दूसरी पार्टी पर आरोप लगाकर उंगली नहीं उठा सकती। क्योंकि उन सभी पार्टियों ने कुछ वैध व्यवसायों और कुछ बेहद संदिग्ध व्यवसायों से पैसा लिया है। इसमें आम आदमी पार्टी को कोलकाता स्थित एक नामी शेल कंपनी के माध्यम से एक शराब कंपनी ने 10 करोड़ चंदा दिया है। हालांकि इस साइन-बोर्ड कंपनी ने खुद को 40 लाख रुपये का घाटा बताया है, लेकिन बावजूद इसके अलग-अलग पार्टियों को ईबी के माध्यम से 112 करोड़ रु. राशि का चंदा दिया है, जिसमें से सत्तारूढ़ दल भाजपा को एक करोड़ रुपये, आम आदमी पार्टी को 10 करोड़ रुपये, तृणमूल कांग्रेस पार्टी को 59 करोड़ और कांग्रेस पार्टी को 25 करोड़ रुपये चंदे के तौर पर मिले हैं। हालांकि अभी यह ज्ञात नहीं है कि आप को किया गया भुगतान उत्पाद शुल्क घोटाले से जुड़ा है या नहीं। एक लोकप्रिय कहावत ईबी विवाद में एकदम सही साबित होती है, 'जो शीशे के महल में रहते हैं, वह दूसरों पर पत्थर नहीं मारते हैं'। अब ऐसे में ईबी के बारे में खुलासे ने सभी पार्टियों को कलंकित किया है या नहीं। क्योंकि उन सभी पार्टियों ने संदिग्ध स्रोतों से धन स्वीकार किया है या फिर केंद्र या राज्य सरकार द्वारा किए गए उपकार के बदले में अन्यथा जैसा भी मामला हो।

मौजूदा लोकसभा चुनाव के बाद चुनावों के लिए सर्वोत्तम फंडिंग कैसे की जाए, इस पर एक ईमानदार राष्ट्रीय बहस होनी चाहिए। अन्यथा, ईबीएस पर प्रतिबंध के बाद पार्टियां अपने मामलों को व्यवस्थित करने के लिए काले धन पर अधिक निर्भर हो जाएंगी। निश्चित रूप से सर्वोच्च न्यायालय का यह इरादा नहीं था जब उसने पारदर्शिता की कमी के कारण ईबी को असंवैधानिक घोषित किया था। अब ऐसे में कुछ कंपनियां पारदर्शी तरीके से तो कुछ पर्दे के पीछे से राजनीतिक पार्टियों को चंदा देंगे, जब तक कि पार्टियों को फंडिंग की कोई वैकल्पिक व्यवस्था नहीं मिल जाती।

होली के रंग

श्रीमती किरण चोपड़ा
डायरेक्टर- पंजाब केसरी द हिन्द समाचार लि.
चेयरपर्सन- वरिष्ठ नागरिक केसरी क्लब
मुख्य संरक्षिका- चौपाल
सदस्य- राष्ट्रीय सलाहकार मण्डल, एकल
संरक्षिका- भारतीय लोक विकास परिषद
ब्रांड एंबेसडर- बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ
/kiranchopra01
kiranchopra@punjabkesari.com
kiranchopradesk@gmail.com

अगर होली की बात की जाए तो यह भारत के इतिहास में सबसे ज्यादा रंगीला और मस्त त्यौहार है लेकिन जिस तरह से त्यौहारों पर आधुनिकता हावी है तो होली का त्यौहार भी इससे अछूता नहीं रहा। महज 20-25 साल पहले जिस तरह से होली मनाई जाती थी और जिस तरह आज मनाई जा रही है इन दोनों में बहुत अंतर आ चुका है। गुजरे जमाने की होली मनाने की परम्परा अब ऐसे लगता है कि जैसे वह पुरानी आन-बान-शान और हंसी मजाक लुप्त हो रहा है। गलियों-मोहल्लों में होलिका दहन पर अर्थात एक दिन पहले मंगल गीत गाए जाते थे और महिलाओं के अलग ग्रुप होते थे, पुरुषों के अलग और मांगलिक गीतों का ऐसा कम्पीटीशन होता था, होलिका दहन के बाद सब घरों को लौट जाते थे और अगले दिन सभी के घर जाकर गुलाल लगाया जाता था।

आज की तारीख में होली आधुनिक रूप ले चुकी है और कहते हैं कि सभ्य लोग इससे दूर होने लगे हैं। बाजार से रैडिमेड गुज्जियां डिब्बों में सजाकर उपहार में देने का रिवाज तो है लेकिन प्यार की मिठास नहीं है। सोशल मीडिया पर इसके बारे में शेयर किया जा रहा है कि अब सिर्फ दिखावा रह गया है। प्राकृतिक दृष्टिकोण से होली जो मार्च में आती है उस समय सर्दी की विदाई और गर्मी का आगमन हो रहा होता है। अगर एक-दूसरे को

प्राकृतिक रंग लगाया जाए या भगवान कृष्ण के प्रेम को दर्शाने के लिए गीला रंग भी लगा दिया जाए तो एक परम्परा के तौर पर इसे स्वीकार किया जाता था लेकिन अब कैमिकलों से भरे रंग हमारी त्वचा को काफी नुक्सान पहुंचा देते हैं। अनेक विशेषज्ञ लोग आजकल सोशल मीडिया पर स्वास्थ्य और पर्यावरण से जुड़े कारणों का हवाला देते हैं। मेरे व्यक्तिगत तौर पर मानना है कि फूलों के रंग त्वचा को नुक्सान नहीं पहुंचाते हैं, यह बात डाक्टरों की एडवाइजरी पर आधारित है। टेसू के फूलों का रंग मानवीय शरीर पर सकारात्मक प्रभाव डालता है और जीवन में एक नई उमंग और ऊर्जा प्राप्त होती है लेकिन सूखे रंगों में रसायन की मिलावट घातक परिणाम उत्पन्न करती है, इसीलिए लोग इससे बचने की कोशिश करते हैं लेकिन यह तय है कि होली को लेकर लोगों का उत्साह हमेशा सातवें आसमान पर होता है।

दिल्ली के चांदनी चौक इलाके में होली पर ठिठोलियों के लिए मूर्ख सम्मेलन हुआ करता है। जिसमें सब छोटे-बड़े और प्रसिद्ध हस्तियां शामिल होती हैं लेकिन होली की असली गरिमा तो रंगों से ही जुड़ी है। अलग-अलग तरीके से एक-दूसरे को बधाई देने लगे हैं।

''आओ उदासी भगाएं, खुशियों के रंग भरें,
जिन्दगी एक मस्ती है, जिसमें होली का रंग भरें,
भगवान कृष्ण की तरह जीवन में मस्त रहें,
सबका सम्मान करें, होली में मस्त-मस्त रहें।''

यह सच है कि हमें प्राकृति के बारे में सोचना चाहिए और सबका फर्ज है कि वह स्वास्थ्य का ध्यान रखें। रंगों के त्यौहार होली को सनातन हिन्दू संस्कृति के मुताबिक मनाएं। होली को लेकर फिल्मों में तरह-तरह के गीत आज भी प्रचलित हैं। खुद भगवान ने ऊंच-नीच और जात-पात तथा मतभेद भुलाकर होली मनाए जाने का वर्णन किया है। भक्त प्रहलाद से जुड़ा होलिका दहन और हिरण्य कश्यप का वध हर कोई जानता है। फागुन के महीने का यह पर्व इसीलिए धार्मिक मूल्य रखता है। मथुरा और वृंदावन में लट्ठमार होली तथा बांके बिहारी मंदिर में फूलों की होली देखने के लिए पूरी दुनिया के पर्यटक देखने आते हैं। यह हमारी होली की पवित्रता है जिसे दुनिया के पर्यटक कैमरों में कैद करके पूरी दुनिया को दिखाते हैं। इसे ही धर्म की जय और आपसी सद्भावना के रूप में दर्शाया जाता है। श्रीकृष्ण सागर में बाल कृष्ण ने एक बार अपनी मां यशोदा से राधा के गौरे रंग पर सवाल किया था और यह भी कहा कि मैं काला हूं और मुझे राधा का रंग दे दिया जाए। इसे लेकर अनेक गीत और छंद रचे गए हैं जिनकी गूंज नंदगांव और बरसाने से पूरे भारत में गूंजती है। यह एक सच्चा प्रेम है, यह सच्ची भक्ति है और यही होली की शक्ति है। इसीलिए मथुरा, वृंदावन में जो होली खेली जाती है वह कृष्ण और राधा की टोलियां बनकर एकात्म रूप से आपसी सद्भाव बढ़ाती हैं। होली की यही परम्परा है और प्यार भरा संदेश है जो रंगों से उड़ता है, रंगों से जुड़ता है-आओ इसी होली के रंग में रंग जाएं।

किसानों की आय दोगुनी नहीं हुई : शरद पवार

पुणे, (पंजाब केसरी): राकांपा (एसपी) प्रमुख शरद पवार ने शनिवार को केंद्र सरकार पर निशाना साधते हुए कहा कि सत्ता में बैठे लोगों को देश के किसानों की कोई परवाह नहीं है। उन्होंने दावा किया कि केंद्र 2024 तक किसानों की आय दोगुनी करने के अपने वादे को पूरा करने में विफल रहा है।

पवार महा विकास आघाड़ी के संजय राउत, बालासाहेब थोराट और सुप्रिया सुले जैसे नेताओं की उपस्थिति में महाराष्ट्र के पुणे जिले के इंदापुर में किसान रैली को संबोधित कर रहे थे। एमवीए में कांग्रेस, राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी (शरदचंद्र पवार) और उद्धव ठाकरे के नेतृत्व वाली शिवसेना (उद्धव बालासाहेब ठाकरे) शामिल हैं। ये सभी दल विपक्षी दलों के गठबंधन 'इंडिया' का हिस्सा है। पवार ने कहा, देश में अब स्थिति अलग है। आगामी (लोकसभा) चुनाव बहुत महत्वपूर्ण हैं। प्रधानमंत्री ने आश्वासन दिया था कि 2024 तक किसानों की आय दोगुनी हो जाएगी, लेकिन ऐसा नहीं हुआ। महाराष्ट्र में लोकसभा की 48 सीटों के लिए चुनाव 19 अप्रैल से 20 मई के बीच पांच चरणों में होंगे।

दिल्ली आर.एन.आई. नं. 40474/83
पंजाब केसरी
दिल्ली कार्यालय :
फोन आफिस : 011-30712200, 45212200,
प्रसार विभाग : 011-30712224
विज्ञापन विभाग : 011-30712229
सम्पादकीय विभाग : 011-30712292-93
मैगजीन विभाग : 011-30712330
फैक्स : 91-11-30712290, 30712384, 011-45212383, 84
Email: Editorial@punjabkesari.com
स्वत्वाधिकारी दैनिक समाचार लिमिटेड, 2-प्रिंटिंग प्रैस कॉम्पलैक्स, नजदीक वजीरपुर डीटीसी डिपो, दिल्ली-110035 के लिए मुद्रक, प्रकाशक तथा सम्पादक अनिल शारदा द्वारा पंजाब केसरी प्रिंटिंग प्रैस, 2-प्रिंटिंग प्रैस कॉम्पलैक्स, वजीरपुर, दिल्ली से मुद्रित तथा 2, प्रिंटिंग प्रैस कॉम्पलैक्स, वजीरपुर, दिल्ली से प्रकाशित।

दैनिक जागरण

जिसने नई चीज सीखने की आशा छोड़ दी, वह बूढ़ा है

एक और आतंकी हमला

मास्को के एक सभागार में भीषण आतंकी हमले ने फिर यह बताया कि जिहादी आतंकवाद किस तरह अभी भी दुनिया के लिए खतरा बना हुआ है। इस हमले में सौ से अधिक लोग मारे गए और बड़ी संख्या में घायल हुए। रूस की राजधानी में किए गए इस आतंकवादी हमले की जिम्मेदारी खूंखार आतंकी संगठन इस्लामिक स्टेट के उस खुरासान गुट ने अपने सिर ली है, जो अफगानिस्तान में सक्रिय रहा है और वहां भी रूस के साथ-साथ अमेरिका के ठिकानों को भी निशाना बना चुका है। वह पाकिस्तान और ईरान में भी आतंकी हमले कर चुका है। चूंकि इस्लामिक स्टेट-खुरासान गजवा-ए-हिंद की तथाकथित इस्लामी मान्यता के फितूर से ग्रस्त है, इसलिए भारत को भी सचेत रहने की आवश्यकता है। इसलिए और भी अधिक, क्योंकि यह आतंकी गुट भारत पर कब्जा करने की डींग हांकता रहा है। वह भारत के मुसलमानों को अपने साथ जोड़ने के लिए भी सक्रिय है। ऐसे कई भारतीय पकड़े भी गए हैं, जो उसके लिए काम करने को तैयार थे अथवा उसके इशारे पर आतंकी हमले की साजिश रच रहे थे। माना जाता है कि इस्लामिक स्टेट ने मास्को को इसलिए अपना निशाना बनाया, क्योंकि एक समय रूसी सेना ने सीरिया में उसकी कमर तोड़ने का काम किया था। रूस पहले भी जिहादी आतंकी गुटों का निशाना बन चुका है। उसके यहां कई आतंकी हमले चेचेन्या के जिहादी संगठनों ने किए हैं।

रूस की मानें तो मास्को में आतंकी हमले को अंजाम देने वाले आतंकियों को यूक्रेन ने उकसाया। जहां यूक्रेन ने इस आरोप से इन्कार किया है, वहीं अमेरिका ने कहा है कि उसने तो रूस को ऐसे किसी हमले की सूचना दी थी। पता नहीं सच क्या है, लेकिन इस आतंकी हमले के बाद रूस यूक्रेन के प्रति और अधिक आक्रामक हो जाए तो हैरानी नहीं। यदि इस आतंकी हमले के चलते रूस और यूक्रेन के बीच जारी युद्ध और व्यापक रूप लेता है तो इसके नतीजे अच्छे नहीं होंगे। वर्तमान में विश्व समुदाय केवल रूस और यूक्रेन के बीच की जंग से ही त्रस्त नहीं है। वह इजरायल और हमास के बीच जारी लड़ाई के बुरे असर से भी दो-चार है। हमास का समर्थन करने के नाम पर यमन के एक हिस्से पर काबिज हाउती विद्रोही लाल सागर में समुद्री जहाजों को निशाना बना रहे हैं। सेना सरीखे इस सशस्त्र संगठन के हमले के शिकार कई समुद्री जहाजों को भारत की नौसेना ने बचाया है। फिलहाल यह कहना कठिन है कि रूस मास्को में हुए आतंकी हमले का जवाब किस तरह देगा, लेकिन इसमें कोई संदेह नहीं कि इस्लामिक स्टेट जैसे आतंकी संगठन तब तक दुनिया के लिए सिरदर्द बने रहेंगे, जब तक विश्व समुदाय उनसे एकजुट होकर नहीं निपटता। विडंबना यह है कि विश्व समुदाय अभी तक आतंकवाद को परिभाषित तक नहीं कर सका है। इसी के चलते कई देश आतंकवादी संगठनों को आतंकी मानने के लिए तैयार नहीं।

मदरसा शिक्षा

उच्च न्यायालय द्वारा उत्तर प्रदेश मदरसा शिक्षा बोर्ड अधिनियम को असंवैधानिक घोषित करने के बाद यह सुनिश्चित किया जाना चाहिए कि मदरसों में पढ़ रहे 13.57 लाख छात्र-छात्राओं के भविष्य और उनके शिक्षा के अधिकार पर कोई विपरीत प्रभाव न पड़े। यह जिम्मेदारी अब वर्तमान सरकार की बनती है कि वह मदरसों में पढ़ रहे छात्र-छात्राओं के लिए आगे की शिक्षा के प्रभावी उपाय करे। कोर्ट ने साफ तौर पर कहा भी है कि छात्रों को विभिन्न बोर्ड के नियमित स्कूलों में समायोजित किया जाए। चाहे राज्य पर्याप्त संख्या में सीटें बढ़ाए या नए विद्यालयों की स्थापना करे। यद्यपि इस काम में अधिक दिक्कत इसलिए नहीं आनी चाहिए, क्योंकि अधिनियम को असंवैधानिक बताया गया है, मदरसों को नहीं। आधारभूत ढांचा तो मौजूद है ही, करना केवल इतना है कि न्यायालय की मंशा के अनुरूप इन्हें धार्मिक शिक्षा का केंद्र बनने से रोककर सामान्य विद्यालयों के रूप में मान्यता दे दी जाए। पिछले कुछ समय में वर्तमान राज्य सरकार ने मदरसों को आधुनिक बनाने के लिए दूरगामी प्रभाव वाले प्रयास किए हैं। इस क्रम में उन मदरसों को चिह्नित किया जा चुका है, जो नियमों एवं मान्यता के विपरीत चल रहे थे। ऐसे मदरसों को अलग कर शिक्षा के समुचित ढांचे वाले मदरसों को बेसिक एवं माध्यमिक शिक्षा परिषद से मान्यता दी जा सकती है। 2004 में बने मदरसा शिक्षा बोर्ड अधिनियम को लेकर कोर्ट की यह टिप्पणी गंभीर अर्थ रखती है कि सरकार के पास ऐसी कोई शक्ति नहीं है कि वह धार्मिक शिक्षा के लिए बोर्ड का गठन कर दे। इससे इंगित होता है कि यह अधिनियम बनाते समय जल्दबाजी की गई। इस प्रकरण से भविष्य के लिए सीख मिलती है कि तुष्टीकरण के लिए नीतियों को विधिक स्वरूप देने से पहले संविधान की मूल भावना को अच्छी तरह समझ लेना चाहिए, अन्यथा नुकसान उस वर्ग के भविष्य का ही होता है जिसे संतुष्ट करने के लिए ऐसी प्रक्रिया अपनाई जाती है।

कौन कितने पानी में

संजय गुप्त

विपक्ष यह तो अच्छे से जान रहा है कि भाजपा के तरकश में कई तीर हैं, लेकिन वह उनकी प्रभावी काट पेश नहीं कर पा रहा है

निर्वाचन आयोग की ओर से लोकसभा चुनाव की घोषणा करते ही पक्ष-विपक्ष की क्षमता और उनकी जीत की संभावनाओं का आकलन शुरू हो गया है। वैसे तो हर चुनाव जिज्ञासा जगाता है, लेकिन यह लोकसभा चुनाव इसलिए कुछ अलग है, क्योंकि जहां मोदी सरकार अपने दस साल की अनेक उपलब्धियों के साथ मजबूती से चुनाव मैदान में है, वहीं विपक्ष न तो कोई नैरेटिव खड़ा कर पा रहा है और न ही कोई वैकल्पिक एजेंडा पेश कर पा रहा है। वह और विशेष रूप से कांग्रेस के नेतृत्व वाला गठबंधन आइएनडीआइए जिन मुद्दों के सहारे जनता को लुभाने की कोशिश कर रहे हैं, वे वामपंथी और समाजवादी सोच से प्रेरित नजर आते हैं। जहां भाजपा अपने गठबंधन राजग को विस्तार देने में लगी हुई है, वहीं आइएनडीआइए अपने सहयोगियों के बीच एकजुटता दिखाने में सफल नहीं हो पा रहा है। उसके कई घटक उससे छिटक चुके हैं या कांग्रेस से मिलकर चुनाव लड़ने से इन्कार कर चुके हैं। विपक्ष यह तो जान रहा है कि भाजपा के तरकश में कई तीर हैं, लेकिन वह उनकी काट पेश नहीं कर पा रहा है। इसमें संदेह है कि वह अगले 40-50 दिनों में कोई ऐसा विमर्श खड़ा कर पाएगा, जिससे मतदाता उसकी तरफ आकर्षित हों।

कांग्रेस ने पिछले लोकसभा चुनाव में करीब 20 प्रतिशत वोट हासिल किए थे। वह आज भी देश भर में असर रखने वाला प्रमुख विपक्षी दल है। यह भाजपा भी समझ रही है और इसीलिए वह उसकी चुनौती को हल्के में नहीं ले रही है। भाजपा परिवारवाद और भ्रष्टाचार का मुद्दा आगे कर कांग्रेस पर निशाना साध रही है। इसके जवाब में राहुल गांधी भी प्रधानमंत्री मोदी को कठघरे में खड़ा करने का कोई मौका नहीं छोड़ रहे हैं। राहुल गांधी प्रधानमंत्री पर नित नए लांछन लगाते हैं, लेकिन ऐसा करते हुए वह ऐसा दिखाते हैं, जैसे 2014 में कांग्रेस को सत्ता से बाहर कर देश ने गलती की और वह केंद्र की सत्ता के स्वाभाविक दावेदार हैं। गांधी परिवार उस राजघराने जैसा व्यवहार कर रहा है, जिससे उसका राजपाट गलत तरीके से छीन लिया गया हो। राहुल गांधी प्रधानमंत्री को जितना लांछित करते हैं, मोदी को उतनी ही ताकत मिलती है। राहुल की समस्या यह है कि वह बिना सोचे-समझे कुछ भी कह जाते हैं। बीते दिनों उन्होंने यह कह दिया कि हिंदू धर्म में एक शब्द है शक्ति और वह उससे ही लड़ रहे हैं। प्रधानमंत्री पर राजनीतिक हमला करने के लिए हिंदू धर्म का उल्लेख करने का तुक समझ नहीं आया। इस पर हैरानी नहीं कि प्रधानमंत्री मोदी ने राहुल गांधी के बयान को एक मुद्दा बना लिया और कांग्रेस को जवाब देना मुश्किल हो गया।

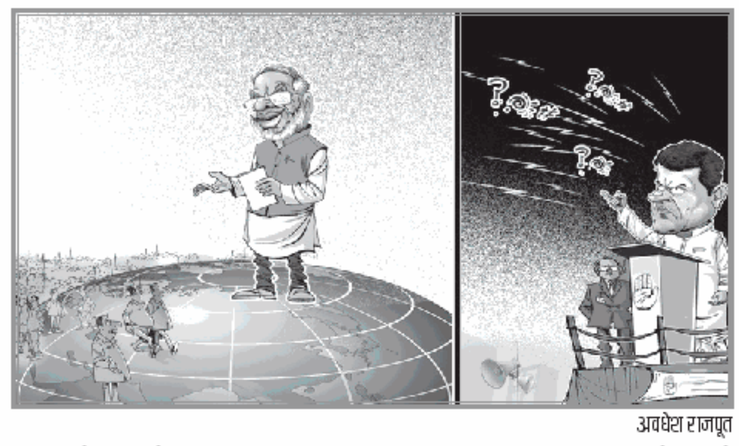

अवधेश राजपूत

कांग्रेस की कमजोर स्थिति के बाद भी भाजपा आगामी लोकसभा चुनाव जीतने के लिए हर तरह के प्रयास कर रही है। भाजपा ने अपनी चुनावी तैयारी लगभग उसी समय शुरू कर दी थी, जब यह संकेत मिलने लगे थे कि कांग्रेस विपक्षी दलों को साथ लेकर लोकसभा चुनाव में उतरने की तैयारी कर रही है। उसकी तैयारियां तो पीछे रह गईं, लेकिन भाजपा आगे निकल गई। राजग का विस्तार करने और सहयोगी दलों के साथ सीटों का बंटवारा करने में वह आइएनडीआइए से आगे दिख रही है।

विपक्षी दल भाजपा को एक हिंदूवादी पार्टी के रूप में प्रचारित करते हैं, जबकि भाजपा भारतीयता और हिंदुत्व को एक-दूसरे का पर्याय बताती है। उसके समर्थक भी ऐसा ही मानते हैं। भाजपा भारतीयता की बात करके अपने विचार जनता के बीच लेकर जाती है। भाजपा राष्ट्र प्रेम के जरिये राष्ट्र उत्थान को प्राथमिकता देती है। इसके साथ ही भारतीय संस्कृति को विशेष महत्व देती है। जहां भाजपा भारतीय संस्कृति को महत्व देती है, वहीं उसके विरोधी दल उसकी उपेक्षा करते हैं। कुछ तो सेक्युलरिज्म के नाम पर सनातन धर्म पर हमला करने में भी संकोच नहीं करते। जब वे ऐसा करते हैं, तो खुद का नुकसान ही करते हैं। जब कोई राजनीतिक दल भारतीय संस्कृति को महत्व देने से इन्कार करता है तो वह भारतीयता की अनदेखी करने का ही काम करता है। विपक्षी दल यह देखने को तैयार नहीं कि भाजपा जिन कारणों से देश की सबसे बड़ी पार्टी बनी, उसमें एक बड़ा कारण भारतीयता को महत्व देना है। जनसंघ के नए अवतार के रूप में 1980 में गठित भाजपा को 1984 के लोकसभा चुनाव में मात्र दो सीटें मिली थीं। 2014 में उसने अपने बलबूते 282 सीटें हासिल कीं और 2019 में 303। यह धारणा एक हद तक सही है कि भाजपा की उत्तर के मुकाबले दक्षिण में उतनी पैठ नहीं है, पर इसकी अनदेखी नहीं की जा सकती कि प्रधानमंत्री मोदी के नेतृत्व में वह दक्षिण में अपने पैर जमाने के लिए हर संभव कोशिश कर रही है।

कांग्रेस और उसके अधिकांश सहयोगी दल परिवारवाद की राजनीति के प्रतीक हैं। भाजपा भ्रष्टाचार के साथ परिवारवाद की राजनीति के विरोध को धार दे रही है। इसके चलते जनता का एक वर्ग यह समझने लगा है कि कांग्रेस और अधिकांश क्षेत्रीय दल परिवार विशेष की निजी जागीर बनकर रह गए हैं और उनकी प्राथमिकता परिवार हित अधिक होती है और जनहित एवं राष्ट्रहित कम। यह बहुत हद तक सच भी है। मतदाताओं की जागरूकता से ही वंशवादी राजनीति को हतोत्साहित किया जा सकता है। उन्हें ऐसा करने के साथ ही अपने मत का प्रयोग जाति, क्षेत्र, भाषा, पंथ के आधार पर करने से बचना चाहिए। लोकतंत्र के लिए यह शुभ नहीं कि मतदान प्रत्याशी की योग्यता के बजाय जाति, क्षेत्र, भाषा, पंथ के आधार पर हो। इसी तरह यह भी ठीक नहीं कि मतदाताओं का एक वर्ग किसी लोभ-ललाच में आकर मतदान करे या फिर मतदान के प्रति उदासीन बना रहे। यह उदासीनता दूर होनी चाहिए, क्योंकि लोकतंत्र की मजबूती के लिए यह आवश्यक है कि अधिक से अधिक लोग मताधिकार का प्रयोग करें और ऐसा करते समय अपने हित के साथ राष्ट्र के हित का भी ध्यान रखें। राजनीतिक दलों के लिए भी यह आवश्यक है कि उनकी गतिविधियां लोगों में मतदान को लेकर उत्साह जगाएं।

response@jagran.com

होली पर डिजिटल क्रांति के छींटे

हास्य-व्यंग्य

अर्चना चतुर्वेदी

जो यह मानते हैं कि गले मिलकर और गुलाल लगाकर होली मनाई जाती है, वे शायद मोबाइल की महिमा नहीं जानते

आखिरकार त्योहार भी डिजिटल क्रांति की चपेट में आ ही गए। वे बेचारे पहले ही प्रदूषण, शोर आदि के आरोप से बरी नहीं हो पा रहे थे। ऊपर से इंस्टाग्राम, फेसबुक एवं वाट्सएप का आक्रमण और हो गया। होली तो ऐसा त्योहार है, जिसके और भी दुश्मन हैं। एक पार्टी के नेता कहते हैं कि पानी न बहाओ, कीचड़ हो जाएगा। कीचड़ हुआ तो जनता को परेशानी होगी। दूसरी पार्टी के नेता कहते हैं कि बहने दो पानी। होने दो कीचड़। कीचड़ होगा तभी तो कमल खिलेगा। नेता भी आखिर इंसान हैं। आप विश्वास कीजिए उन्हें भी जनता की परेशानी की चिंता होती है और इस देश की जनता तो वैसे भी खुश रहती है। कौन वोट डाले वाले सोच की जनता को चाहिए भी क्या? बकैती का जो काम पहले पान की दुकान पर जाकर निपटाती थी, आज घर बैठे फेसबुक, वाट्सएप के जरिये निपटा देती है। चुनावी होली का आनंद भी आज लोग मोबाइल हाथ में लिए घर बैठे ले रहे हैं।

डिजिटल क्रांति के युग में त्योहार तो क्या हर रिश्ता मोबाइल पर ही निपटा दिया जाता है। लोग सामने वाले को भले ही शुभप्रभात न बोलें, पर अमेरिका वाली मित्र को फूल भेजना नहीं भूलते। डिजिटल क्रांति के युग में जो लोग सोचते हैं कि शरीर पर सरसों का तेल मलकर, पुराने कपड़े पहन कर, एक-दूसरे से गले मिलकर, गुलाल लगाकर होली मनाई जाती है, वे शायद अभी पुराने जमाने में ही जी रहे हैं। एक-एक हफ्ते पहले से चूल्हे पर तरह-तरह के पकवान बनाती औरतें अब यह कहने लगी हैं, 'बाप रे आज के जमाने में कौन इतना समय बर्बाद करता है। वह भी इतना आयली फूड। इसके चक्कर में तो जिम में घंटों पसीना बहाना पड़ेगा। न बाबा न, हम तो लो कैलरी फूड ही खाएंगे। हमारी मेकअप फ्रेंडली स्किन रंगों से खराब हो गई तो। बहुत महंगा पड़ता है स्किन स्पेशलिस्ट। कौन अपना बजट बिगाड़े।' यही है आज का सोच।

आज की पीढ़ी के अनुसार होली खेलने की नहीं, सिर्फ दिखाने की चीज है। इसमें लोगों की, रंगों की, पकवानों की जरूरत नहीं पड़ती। डिजिटल होली मनाने के लिए सबसे पहले उलटे हाथ से चुटकी भर हर्बल कलर लीजिए। अब अपने दोनों गालों पर लगाइए। अच्छा-सा मुंह बनाइए। अब अपने सीधे हाथ से मोबाइल से सेल्फी खींचिए। अब हैप्पी होली वाली लाइन के साथ वाट्सएप, इंस्टाग्राम और फेसबुक पर स्टेटस अपलोड कर दीजिए। क्या कहा आपने कि बिना गुझिया, दहीबाड़े, कांजी के पानी के कैसी होली? ओके, रुकिए। गूगल इमेज से अपने मनचाहे पकवान की इमेज अपलोड करें। उसके नीचे लिखना न भूलें कि मम्मी के हाथ का टेस्टी यम्मी होली स्पेशल फूड। अब दोस्तों को वाट्सएप कर दीजिए। उधर से भी जवाब आएगा-यम्मी! साथ में जुबान लटकती स्माइली। मन गई न होली। अब भला क्या जरूरत है इतना कुछ बनाओ और बैठ कर प्लेट सजा कर लोगों का इंतजार करो। कुछ लोगों को डिजिटल होली के ढेरों फायदे दिखते हैं। पहले वे सिर्फ अपने मोहल्ले तक ही सीमित थे। आज इंस्टाग्राम, वाट्सएप एवं फेसबुक के युग में वे घर बैठे पूरी दुनिया संग इको फ्रेंडली के साथ-साथ पाकेट फ्रेंडली होली भी मनाते हैं। इसके लिए बस होली के तरह-तरह के मैसेज फारवर्ड करें। फेसबुक मित्रों की पोस्ट लाइक करें। उनके घिसे-पिटे जुमलों पर वाह-वाह करें। पकवानों की फोटो पर वेरी टेस्टी या यम्मी लिख रिप्लाई करें। रंग लगे चेहरों को नाइस बताएं। तो हुआ न- हल्दी लगे न फिटकरी और रंग चोखा ही चोखा।

यदि श्रीकृष्ण इस डिजिटल क्रांति के दौर में होते तो शायद बृज में होला...क्या होली भी न होती। गुलाल की, फूलों की और यहां तक कि लट्ठमार होली भी न होती। न ही होती गोपियों संग रासलीला, क्योंकि सब इंस्टाग्राम, वाट्सएप एवं फेसबुक पर होली मना लेते। न गोकुल से बरसाना जाने की मेहनत करनी पड़ती, न गुलाल उड़ता और न लट्ठ की मार खानी पड़ती। क्या आप भी मित्रों को होली की बधाई के मैसेज के साथ मिठाई एवं रंग के फोटो भेजने की फिराक में हैं? आपका इरादा भी हो तो, हमारी तरफ से हैप्पी होली!!

response@jagran.com

https://t.me/AllNewsPaperPaid

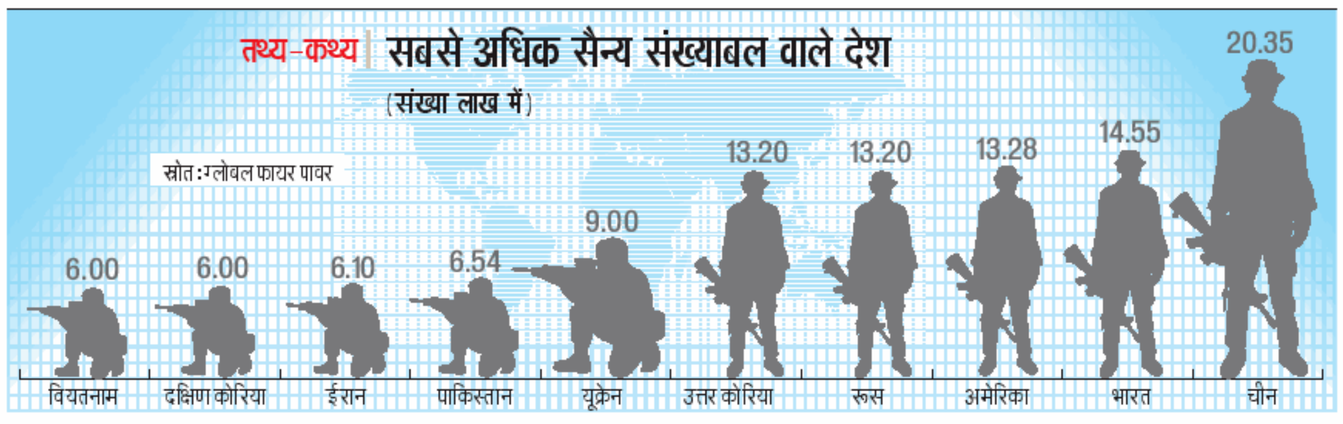

ऊर्जा

अंतश्चेतना के रंग

भारतीय संस्कृति उत्सव धर्मी है। नित आने वाली मुसीबतों से जब मनुष्य की जीवनी शक्ति क्षीण होने लगती है, तब विविधवर्णी लोकसंस्कृति के नए संस्करणों के साथ त्योहारों का आगमन होता है, जो तन-मन में अतिशय ऊर्जा का संचरण कर मनुष्य की जीवनी शक्ति को बढ़ाते हैं, जिससे जीवन का अग्रिम पथ प्रशस्त होता है और ये दीर्घ जीवन का आधार बन जाते हैं। रंगों का त्योहार होली भी ऐसा ही है। इसके रंग प्रेम, हर्ष और उल्लास के प्रतीक हैं। लाल रंग प्रगाढ़ स्नेह और प्रेम का परिचायक है। इसीलिए इस पर्व पर लाल गुलाल से अर्चन और वंदन कर सभी को प्यार से अभिसिंचित किया जाता है। किंतु इस प्रकार बाह्य रूप से रंजित होकर हम क्षणिक आनंद का अनुभव ही कर सकते हैं। इसमें अंतःकरण की चित्तवृत्तियों को अनुरंजित करने की ताकत नहीं होती। वास्तविक आनंद तो अंतर्मन को अभिषिक्त करने वाले दिव्य रंगों से मिलता है, जो हमारी अंतश्चेतना में जागृत होते हैं।

सृष्टि के कारणभूत आकाशादि पंचतत्वों के रंगयुक्त होने से सृजन काल में ही रंगों की सृष्टि हुई, जो प्रकृति में सर्वत्र दृष्टिगोचर होते हैं। वसंत में इन्हीं का प्रस्फुटन प्रकृति सुंदरी का श्रृंगार करता है। त्रिगुणात्मक सृष्टि का अंग होने से रंग जब मानव की अंतश्चेतना में प्रवेश करते हैं तो चित्तवृत्तियों को रंजित कर मानव शरीर और उसकी क्रियाविधि को प्रभावित करते हैं। मन-मस्तिष्क को प्रभावित कर ये गंभीर रोगियों को भी स्वस्थ करने की क्षमता रखते हैं। भारतीय दर्शन में सत्वगुण को लघु और प्रकाशक माना गया है जबकि रजो एवं तमोगुण भारी होने के साथ मोह, आलस्य और ज्ञानांधता उत्पन्न करने वाले हैं। इसीलिए सत्वगुण की प्रचुरता से अंतश्चेतना में जीवन को आनंदित करने वाले रंगों की सृष्टि होती है। इसके लिए हमें अपने आहार-विहार को सात्विक रखने की आवश्यकता है, जिससे अंतर्मन को उल्लसित करने वाले दिव्य रंगों की सृष्टि हो सके।

डा. सत्यप्रकाश मिश्र

एआइ से जैविक हथियारों का खतरा

मुकुल व्यास

एआइ से डिजाइन किए गए प्रोटीन के संभावित लाभ बहुत अधिक हैं, पर अगर गलत हाथों में पड़ जाएं तो जोखिम भी बहुत हैं

एआइ लगातार अपना दायरा बढ़ा रही है और विभिन्न क्षेत्रों में अपनी जड़ें फैला रही है। हालांकि स्वास्थ्य, विज्ञान और चिकित्सा के क्षेत्र में इसके नवीनतम प्रवेश ने उत्साह के साथ-साथ कुछ चिंता पैदा भी की है। क्या एआइ द्वारा डिजाइन किए गए प्रोटीन किसी दिन जैविक हथियारों की तरह खतरा पैदा कर सकते हैं? यह उन शोधकर्ताओं के मन में सवाल है जो अब प्रोटीन डिजाइन प्रौद्योगिकी के नैतिक उपयोग को सुनिश्चित करने के लिए सुरक्षा उपायों की वकालत कर रहे हैं। पूरी तरह से नए प्रोटीन का मंथन करने में सक्षम एआइ टूल किसी साइंस फिक्शन फिल्म की तरह लगते हैं, लेकिन यह आज एक वास्तविकता है। वाशिंगटन विश्वविद्यालय के विज्ञानी विशिष्ट कार्यों के लिए प्रोटीन डिजाइन करने के लिए एआइ टूल का उपयोग कर रहे हैं। एआइ के प्रोटीन डिजाइन का उपयोग रोग प्रतिरोधक क्षमता उत्पन्न करने से लेकर दवाओं की लक्षित डिलीवरी के लिए किया जा रहा है। इसके उपयोग की संभावनाएं अनंत हैं। हालांकि संभावित खतरे भी बहुत चिंताजनक हैं। इन चिंताओं को दूर करने के लिए शोधकर्ताओं ने प्रोटीन डिजाइन में एआइ के जिम्मेदार उपयोग को बढ़ावा देने के लिए एक पहल शुरू की है। वे इस शक्तिशाली टूल को गलत हाथों में पड़ने या गलत तरीके से दुरुपयोग होने से रोकना चाहते हैं। दुनिया भर के विशेषज्ञ यह सुनिश्चित करने के लिए एकजुट हो रहे हैं कि जैव प्रौद्योगिकी में एआइ के उपयोग के साथ समुचित सुरक्षा उपाय होने चाहिए। हालांकि कुछ विज्ञानियों का मानना है कि एआइ का दुरुपयोग रोकने के लिए अधिक ठोस उपायों की आवश्यकता है। उनका कहना है कि हमें सरकारी कार्रवाई और नियमों की जरूरत है। केवल स्वैच्छिक मार्गदर्शन से काम नहीं चलेगा।

जैविक युद्ध में एआइ के संभावित खतरों की तरफ इशारा करने वाली हालिया रिपोर्ट से भी इस मुद्दे पर तत्काल विचार करना जरूरी हो गया है। अल्फाफोल्ड जैसे एआइ प्रोग्राम के साथ प्रोटीन संरचना की भविष्यवाणी करना आसान हो गया है। चिंता की बात यह है कि ये प्रौद्योगिकियां अनजाने में खतरनाक रोगजनकों या विषाक्त पदार्थों के निर्माण की सुविधा प्रदान कर सकती हैं। एआइ से डिजाइन किए गए प्रोटीन के संभावित लाभ बहुत अधिक हैं। अगर वे गलत हाथों में पड़ जाएं तो जोखिम भी बहुत हैं। हालांकि कुछ विज्ञानी मांग कर रहे हैं एआइ क्षेत्र के विनियमन के लिए सरकारी कानून बहुत कड़े नहीं होने चाहिए। कड़े नियम उन दवाओं, टीकों और सामग्रियों के विकास को सीमित कर सकते हैं, जो एआइ द्वारा डिजाइन किए गए प्रोटीन से उत्पन्न हो सकती हैं। एआइ-जनित खतरों से बचाव के लिए ऐसे एआइ माडल होने चाहिए, जो समय पर इन खतरों का पता लगा सकें।

(लेखक विज्ञान के जानकार हैं)

राजरंग

पर्दा हट गया

खासतौर से राजनीति में कुछ बातें ऐसी होती हैं, जो पर्दे से हटीं तो नुकसान हो जाता है। चुनावी बांड भी ऐसा ही मामला है। विपक्षी दलों ने इसे जोर-शोर से उठाया था और यह साबित करने में जुटे थे कि भाजपा ने गलत तरीके से फंड जुटाया है, लेकिन यह क्या, सुप्रीम कोर्ट ने बांड पर भी ऐसे समय यानी चुनाव के वक्त में रोक लगा दी जब चंदा आ रहा होता है और राजनीतिक दलों को किसने फंड दिया इसको भी उजागर कर दिया। खुल कर चर्चा शुरू हो गई और यह भी पता चल गया कि विवादित नाम वालों ने तो विपक्षी दलों को भी खूब पैसे दिए। दबे-छिपे सुर में अब विभिन्न राजनीतिक दलों के रणनीतिकार परेशान हैं कि पहले जो आया वह तो खत्म हो चुका है, आगे कैसे चंदा आएगा इसका भरोसा भी नहीं है। जिनके पास संसाधन हैं वे तो फिर भी कोई न कोई रास्ता निकाल लेंगे, लेकिन जिनके पास संसाधन सीमित हैं वे क्या करें। विपक्षी राजनीतिक दलों के नेता भी कहने लगे हैं कि चुनावी बांड पर रोक तो नहीं लगनी चाहिए थी।

तीसरी पारी

कहा जाता है कि राजनीति में धैर्य बहुत जरूरी है। कई ऐसे नेता हैं, जो अपनी जड़ें जमाने में वर्षों लगाते हैं। फिर कभी टिकट न मिलने पर, तो कभी बार-बार की हार उन्हें पैदल कर देती है, लेकिन कुछ सितारे ऐसे हैं, जिनकी चमक पर कोई फर्क नहीं पड़ता। ये वे चेहरे हैं, जो क्रिकेट या फिल्मी दुनिया में नाम कमाने के बाद राजनीति का रुतबा देख उस ओर खिंचे चले जाते हैं। कुछ तो इस 'सेकेंड इनिंग' में भी बढ़िया पारी खेल रहे हैं, लेकिन बहुतेरे ऐसे हैं, जो ब्रेक के बाद फिर पुराने पेशे में थर्ड इनिंग यानी तीसरी पारी के लिए चले गए। ताजा नाम भाजपा से कांग्रेस में आए क्रिकेटर नवजोत सिंह सिद्धू और गौतम गंभीर का है। सिद्धू फिर कमेंट्री बाक्स में हैं तो गौतम केकेआर के मेंटर बन गए। फिर फिल्मों में गदर मचाने पहुंचे सनी देओल, हंसराज हंस और टीएमसी सांसद नुसरत जहां के नाम भी इसी कड़ी में हैं।

उम्मीद बाकी है

आम चुनाव की घोषणा से पहले से ही कांग्रेस पार्टी से छोटे-बड़े नेताओं का पलायन हो रहा है और यह सिलसिला जारी है, लेकिन इन सबके बीच कांग्रेस के लिए खुशी की बात यह भी है कि बालीवुड से जुड़े कुछ चेहरे से लेकर गायक-गायिका उससे जुड़ने को तैयार दिख रहे हैं। कांग्रेस नेता इस बात को लोगों को जोर-शोर से बता रहे हैं कि उनके नेता सिर्फ जा ही नहीं रहे हैं, बल्कि कई नए लोग पार्टी में आने को भी तैयार हैं। वे बता रहे हैं कि बालीवुड की अभिनेत्री स्वरा भास्कर तो लोक गायिका नेहा सिंह राठौर कांग्रेस में शामिल होना चाह रही हैं। राठौर दिल्ली में लोकसभा चुनाव में कांग्रेस से उम्मीदवार बनना चाह रही हैं और पार्टी के समक्ष इंटरव्यू भी दे चुकी हैं। वहीं स्वरा भास्कर को मुंबई से टिकट देने की चर्चा चल रही है। हालांकि हाल फिलहाल किसी शख्सीयत के कांग्रेस में शामिल होने की घोषणा नहीं हुई है, लेकिन उम्मीद बाकी है।

नौकरशाह से नेता तक

ओडिशा में भाजपा और बीजद के बीच गठबंधन की बातें पिछले दस दिनों से खूब चर्चा में थीं। अब अटकलें खत्म हो गईं और ठीकरा पूर्व नौकरशाह से नेता बने वीके पांडियन पर फूटा। दरअसल वीके पांडियन जिस तरह बीजद में मजबूत हो रहे हैं उससे उनकी पार्टी के कुछ लोग भी डरे हुए हैं। कुछ ऐसा ही वाकया बिहार में नौकरशाह से नेता और फिर सांसद एवं मंत्री बने नीतीश कुमार के खास आरसीपी सिंह को लेकर भी हुआ था। बाद में वह नीतीश कुमार की सूची से ही बाहर हो गए। ओडिशा में बीजद सांसद भर्तृहरि महताब ने इस्तीफा दे दिया है। आने वाले दिनों में देखना होगा कि स्थिति किस तरफ रुख करती है।

संस्थापक-स्व. पूर्णचन्द्र गुप्त, पूर्व प्रधान संपादक-स्व.नरेन्द्र मोहन, नॉन एग्जीक्यूटिव चेयरमैन-महेन्द्र मोहन गुप्त, प्रधान संपादक-संजय गुप्त, जागरण प्रकाशन लि. के लिए: नीतेन्द्र श्रीवास्तव द्वारा 501, आई.एन.एस. बिल्डिंग, रफी मार्ग, नई दिल्ली से प्रकाशित और उन्हीं के द्वारा डी-210, 211, सेक्टर-63 नोएडा से मुद्रित, संपादक (राष्ट्रीय संस्करण) -विष्णु प्रकाश त्रिपाठी*
दूरभाष : नई दिल्ली कार्यालय : 011-43166300, नोएडा कार्यालय : 0120-4615800, E-mail: delhi@nda.jagran.com, R.N.I. No. DELHIN/2017/74721 *इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन हेतु पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी। समस्त विवाद दिल्ली न्यायालय के अधीन ही होंगे। हवाई/रेल शुल्क ₹-2 अतिरिक्त।

****

जिसने नई चीज सीखने की आशा छोड़ दी, वह बूढ़ा है

एक और आतंकी हमला

मास्को के एक सभागार में भीषण आतंकी हमले ने फिर यह बताया कि जिहादी आतंकवाद किस तरह अभी भी दुनिया के लिए खतरा बना हुआ है। इस हमले में सौ से अधिक लोग मारे गए और बड़ी संख्या में घायल हुए। रूस की राजधानी में किए गए इस आतंकवादी हमले की जिम्मेदारी खूंखार आतंकी संगठन इस्लामिक स्टेट के उस खुरासान गुट ने अपने सिर ली है, जो अफगानिस्तान में सक्रिय रहा है और वहां भी रूस के साथ-साथ अमेरिका के ठिकानों को भी निशाना बना चुका है। वह पाकिस्तान और ईरान में भी आतंकी हमले कर चुका है। चूंकि इस्लामिक स्टेट-खुरासान गजवा-ए-हिंद की तथाकथित इस्लामी मान्यता के फितूर से ग्रस्त है, इसलिए भारत को भी सचेत रहने की आवश्यकता है। इसलिए और भी अधिक, क्योंकि यह आतंकी गुट भारत पर कब्जा करने की डींग हांकता रहा है। वह भारत के मुसलमानों को अपने साथ जोड़ने के लिए भी सक्रिय है। ऐसे कई भारतीय पकड़े भी गए हैं, जो उसके लिए काम करने को तैयार थे अथवा उसके इशारे पर आतंकी हमले की साजिश रच रहे थे। माना जाता है कि इस्लामिक स्टेट ने मास्को को इसलिए अपना निशाना बनाया, क्योंकि एक समय रूसी सेना ने सीरिया में उसकी कमर तोड़ने का काम किया था। रूस पहले भी जिहादी आतंकी गुटों का निशाना बन चुका है। उसके यहां कई आतंकी हमले चेचेन्या के जिहादी संगठनों ने किए हैं। रूस की मानें तो मास्को में आतंकी हमले को अंजाम देने वाले आतंकियों को यूक्रेन ने उकसाया। जहां यूक्रेन ने इस आरोप से इन्कार किया है, वहीं अमेरिका ने कहा है कि उसने तो रूस को ऐसे किसी हमले की सूचना दी थी। पता नहीं सच क्या है, लेकिन इस आतंकी हमले के बाद रूस यूक्रेन के प्रति और अधिक आक्रामक हो जाए तो हैरानी नहीं। यदि इस आतंकी हमले के चलते रूस और यूक्रेन के बीच जारी युद्ध और व्यापक रूप लेता है तो इसके नतीजे अच्छे नहीं होंगे। वर्तमान में विश्व समुदाय केवल रूस और यूक्रेन के बीच की जंग से ही त्रस्त नहीं है। वह इजरायल और हमास के बीच जारी लड़ाई के बुरे असर से भी दो-चार है। हमास का समर्थन करने के नाम पर यमन के एक हिस्से पर काबिज हाउती विद्रोही लाल सागर में समुद्री जहाजों को निशाना बना रहे हैं। सेना सरीखे इस सशस्त्र संगठन के हमले के शिकार कई समुद्री जहाजों को भारत की नौसेना ने बचाया है। फिलहाल यह कहना कठिन है कि रूस मास्को में हुए आतंकी हमले का जवाब किस तरह देगा, लेकिन इसमें कोई संदेह नहीं कि इस्लामिक स्टेट जैसे आतंकी संगठन तब तक दुनिया के लिए सिरदर्द बने रहेंगे, जब तक विश्व समुदाय उनसे एकजुट होकर नहीं निपटता। विडंबना यह है कि विश्व समुदाय अभी तक आतंकवाद को परिभाषित तक नहीं कर सका है। इसी के चलते कई देश आतंकवादी संगठनों को आतंकी मानने के लिए तैयार नहीं।

सकारात्मक संकेत

बिहार बोर्ड के इंटरमीडिएट परीक्षा परिणाम में छात्राओं का बढ़िया प्रदर्शन एक सकारात्मक संकेत है, जहां अभिभावक भी बेटियों की शिक्षा के प्रति निरंतर जागरूक हो रहे हैं। इसी का प्रभाव है कि वे न केवल पढ़ाई, अपितु अच्छा प्रदर्शन भी कर रही हैं। लड़कियों की शिक्षा के प्रति हाल के वर्षों में जागरूकता बढ़ी है। शहरों में तो पहले भी लड़कियों की पढ़ाई को लेकर जागरूकता थी, पर ग्रामीण क्षेत्रों में हर वर्ग के लोगों में बेटियों को अच्छी से अच्छी शिक्षा देने का जो भाव उत्पन्न हुआ है, वह बदलते समाज का द्योतक है। इस वर्ष जारी परीक्षा परिणाम में 88.84 प्रतिशत छात्राएं सफल रही हैं, जबकि छात्रों की सफलता का प्रतिशत 85.69 है। विज्ञान, कला और वाणिज्य संकाय के 24 टापर में छात्राओं की संख्या 13 रही है, जबकि 11 छात्रों ने इस सूची में स्थान बनाया है। यह परिणाम बता रहा है कि छात्राएं न केवल सफलता के आंकड़ों में अव्वल है, बल्कि श्रेष्ठ प्रदर्शन में भी आगे रही हैं। छात्र-छात्राओं की सफलता का प्रतिशत ठीक कहा जा सकता है, पर यह शत-प्रतिशत हो, इसकी समीक्षा भी की जानी चाहिए। जिन संस्थानों ने अच्छा प्रदर्शन किया, वहां देखा जाना चाहिए कि पठन-पाठन का क्या तौर-तरीका रहा, विद्यार्थियों को किस तरह प्रोत्साहित करते हुए उनकी अच्छी तैयारी कराई गई। जहां का प्रदर्शन खराब रहा है, उसका भी मूल्यांकन किया जाना चाहिए कि यह स्थिति क्यों रही। उद्देश्य सफलता को और अधिक ऊंचाई तक ले जाना और जहां कमियां हैं, उसे ठीक करने का होना चाहिए। बिहार बोर्ड ने उत्तरपुस्तिकाओं का मूल्यांकन शुरू होने के बाद केवल 29 दिनों में परिणाम घोषित कर दिया, यह भी सराहनीय है।

बेटियों को और सुविधाएं देने की आवश्यकता है, जिससे महिला शिक्षा के मामले में राज्य तेजी से आगे बढ़ सके।

कह के रहेंगे

माधव जोशी

जागरण जनमत

कल का परिणाम

क्या केजरीवाल की गिरफ्तारी से आम चुनावों में आम आदमी पार्टी को सहानुभूति का लाभ मिलेगा?

आज का सवाल

क्या अरविंद केजरीवाल को मुख्यमंत्री के पद से इस्तीफा देना चाहिए?

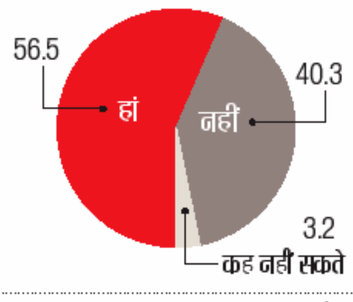

परिणाम जागरण इंटरनेट संस्करण के पाठकों का मत है। सभी आंकड़े प्रतिशत में।

कौन कितने पानी में

संजय गुप्त

विपक्ष यह तो अच्छे से जान रहा है कि भाजपा के तरकश में कई तीर हैं, लेकिन वह उनकी प्रभावी काट पेश नहीं कर पा रहा है

निर्वाचन आयोग की ओर से लोकसभा चुनाव की घोषणा करते ही पक्ष-विपक्ष की क्षमता और उनकी जीत की संभावनाओं का आकलन शुरू हो गया है। वैसे तो हर चुनाव जिज्ञासा जगाता है, लेकिन यह लोकसभा चुनाव इसलिए कुछ अलग है, क्योंकि जहां मोदी सरकार अपने दस साल की अनेक उपलब्धियों के साथ मजबूती से चुनाव मैदान में है, वहीं विपक्ष न तो कोई नैरेटिव खड़ा कर पा रहा है और न ही कोई वैकल्पिक एजेंडा पेश कर पा रहा है। वह और विशेष रूप से कांग्रेस के नेतृत्व वाला गठबंधन आइएनडीआइए जिन मुद्दों के सहारे जनता को लुभाने की कोशिश कर रहे हैं, वे वामपंथी और समाजवादी सोच से प्रेरित नजर आते हैं। जहां भाजपा अपने गठबंधन राजग को विस्तार देने में लगी हुई है, वहीं आइएनडीआइए अपने सहयोगियों के बीच एकजुटता दिखाने में सफल नहीं हो पा रहा है। उसके कई घटक उससे छिटक चुके हैं या कांग्रेस से मिलकर चुनाव लड़ने से इन्कार कर चुके हैं। विपक्ष यह तो जान रहा है कि भाजपा के तरकश में कई तीर हैं, लेकिन वह उनकी काट पेश नहीं कर पा रहा है। इसमें संदेह है कि वह अगले 40-50 दिनों में कोई ऐसा विमर्श खड़ा कर पाएगा, जिससे मतदाता उसकी तरफ आकर्षित हों।

कांग्रेस ने पिछले लोकसभा चुनाव में करीब 20 प्रतिशत वोट हासिल किए थे। वह आज भी देश भर में असर रखने वाला प्रमुख विपक्षी दल है। यह भाजपा भी समझ रही है और इसीलिए वह उसकी चुनौती को हल्के में नहीं ले रही है। भाजपा परिवारवाद और भ्रष्टाचार का मुद्दा आगे कर कांग्रेस पर निशाना साध रही है। इसके जवाब में राहुल गांधी भी प्रधानमंत्री मोदी को कठघरे में खड़ा करने का कोई मौका नहीं छोड़ रहे हैं। राहुल गांधी प्रधानमंत्री पर नित नए लांछन लगाते हैं, लेकिन ऐसा करते हुए वह ऐसा दिखाते हैं, जैसे 2014 में कांग्रेस को सत्ता से बाहर कर देश ने गलती की और वह केंद्र की सत्ता के स्वाभाविक दावेदार हैं। गांधी परिवार उस राजघराने जैसा व्यवहार कर रहा है, जिससे उसका राजपाट गलत तरीके से छीन लिया गया हो। राहुल गांधी प्रधानमंत्री को जितना लांछित करते हैं, मोदी को उतनी ही ताकत मिलती है। राहुल की समस्या यह है कि वह बिना सोचे-समझे कुछ भी कह जाते हैं। बीते दिनों उन्होंने यह कह दिया कि हिंदू धर्म में एक शब्द है शक्ति और वह उससे ही लड़ रहे हैं। प्रधानमंत्री पर राजनीतिक हमला करने के लिए हिंदू धर्म का उल्लेख करने का तुक समझ नहीं आया। इस पर हैरानी नहीं कि प्रधानमंत्री मोदी ने राहुल गांधी के बयान को एक मुद्दा बना लिया और कांग्रेस को जवाब देना मुश्किल हो गया।

अवधेश राजपूत

कांग्रेस की कमजोर स्थिति के बाद भी भाजपा आगामी लोकसभा चुनाव जीतने के लिए हर तरह के प्रयास कर रही है। भाजपा ने अपनी चुनावी तैयारी लगभग उसी समय शुरू कर दी थी, जब यह संकेत मिलने लगे थे कि कांग्रेस विपक्षी दलों को साथ लेकर लोकसभा चुनाव में उतरने की तैयारी कर रही है। उसकी तैयारियां तो पीछे रह गईं, लेकिन भाजपा आगे निकल गई। राजग का विस्तार करने और सहयोगी दलों के साथ सीटों का बंटवारा करने में वह आइएनडीआइए से आगे दिख रही है।

विपक्षी दल भाजपा को एक हिंदूवादी पार्टी के रूप में प्रचारित करते हैं, जबकि भाजपा भारतीयता और हिंदुत्व को एक-दूसरे का पर्याय बताती है। उसके समर्थक भी ऐसा ही मानते हैं। भाजपा भारतीयता की बात करके अपने विचार जनता के बीच लेकर जाती है। भाजपा राष्ट्र प्रेम के जरिये राष्ट्र उत्थान को प्राथमिकता देती है। इसके साथ ही भारतीय संस्कृति को विशेष महत्व देती है। जहां भाजपा भारतीय संस्कृति को महत्व देती है, वहीं उसके विरोधी दल उसकी उपेक्षा करते हैं। कुछ तो सेक्युलरिज्म के नाम पर सनातन धर्म पर हमला करने में भी संकोच नहीं करते। जब वे ऐसा करते हैं, तो खुद का नुकसान ही करते हैं। जब कोई राजनीतिक दल भारतीय संस्कृति को महत्व देने से इन्कार करता है तो वह भारतीयता की अनदेखी करने का ही काम करता है। विपक्षी दल यह देखने को तैयार नहीं कि भाजपा जिन कारणों से देश की सबसे बड़ी पार्टी बनी, उसमें एक बड़ा कारण भारतीयता को महत्व देना है। जनसंघ के नए अवतार के रूप में 1980 में गठित भाजपा को 1984 के लोकसभा चुनाव में मात्र दो सीटें मिली थीं। 2014 में उसने अपने बलबूते 282 सीटें हासिल कीं और 2019 में 303। यह धारणा एक हद तक सही है कि भाजपा की उत्तर के मुकाबले दक्षिण में उतनी पैठ नहीं है, पर इसकी अनदेखी नहीं की जा सकती कि प्रधानमंत्री मोदी के नेतृत्व में वह दक्षिण में अपने पैर जमाने के लिए हर संभव कोशिश कर रही है।

कांग्रेस और उसके अधिकांश सहयोगी दल परिवारवाद की राजनीति के प्रतीक हैं। इस पर हैरानी नहीं कि भाजपा भ्रष्टाचार के साथ परिवारवाद की राजनीति के विरोध को धार दे रही है। इसके चलते जनता का एक वर्ग यह समझने लगा है कि कांग्रेस और अधिकांश क्षेत्रीय दल परिवार विशेष की निजी जागीर बनकर रह गए हैं और उनकी प्राथमिकता परिवार हित अधिक होती है और जनहित एवं राष्ट्रहित कम। यह बहुत हद तक सच भी है। मतदाताओं की जागरूकता से ही वंशवादी राजनीति को हतोत्साहित किया जा सकता है। उन्हें ऐसा करने के साथ ही अपने मत का प्रयोग जाति, क्षेत्र, भाषा, पंथ के आधार पर करने से बचना चाहिए। लोकतंत्र के लिए यह शुभ नहीं कि मतदान प्रत्याशी की योग्यता के बजाय जाति, क्षेत्र, भाषा, पंथ के आधार पर हो। इसी तरह यह भी ठीक नहीं कि मतदाताओं का एक वर्ग किसी लोभ-ललाच में आकर मतदान करे या फिर मतदान के प्रति उदासीन बना रहे। यह उदासीनता दूर होनी चाहिए, क्योंकि लोकतंत्र की मजबूती के लिए यह आवश्यक है कि अधिक से अधिक लोग मताधिकार का प्रयोग करें और ऐसा करते समय अपने हित के साथ राष्ट्र के हित का भी ध्यान रखें। राजनीतिक दलों के लिए भी यह आवश्यक है कि उनकी गतिविधियां लोगों में मतदान को लेकर उत्साह जगाएं।

response@jagran.com

होली पर डिजिटल क्रांति के छींटे

हास्य-व्यंग्य

अर्चना चतुर्वेदी

जो यह मानते हैं कि गले मिलकर और गुलाल लगाकर होली मनाई जाती है, वे शायद मोबाइल की महिमा नहीं जानते

आखिरकार त्योहार भी डिजिटल क्रांति की चपेट में आ ही गए। वे बेचारे पहले ही प्रदूषण, शोर आदि के आरोप से बरी नहीं हो पा रहे थे। ऊपर से इंस्टाग्राम, फेसबुक एवं वाट्सएप का आक्रमण और हो गया। होली तो ऐसा त्योहार है, जिसके और भी दुश्मन हैं। एक पार्टी के नेता कहते हैं कि पानी न बहाओ, कीचड़ हो जाएगा। कीचड़ हुआ तो जनता को परेशानी होगी। दूसरी पार्टी के नेता कहते हैं कि बहने दो पानी। होने दो कीचड़। कीचड़ होगा तभी तो कमल खिलेगा। नेता भी आखिर इंसान हैं। आप विश्वास कीजिए उन्हें भी जनता की परेशानी की चिंता होती है और इस देश की जनता तो वैसे भी खुश रहती है। कौन वोट डाले वाले सोच की जनता को चाहिए भी क्या? बकैती का जो काम पहले पान की दुकान पर जाकर निपटाती थी, आज घर बैठे इंस्टाग्राम, फेसबुक और वाट्सएप के जरिये निपटा देती है। चुनावी होली के रंगों का आनंद भी आज लोग मोबाइल हाथ में लिए घर बैठे ले रहे हैं।

डिजिटल क्रांति के इस युग में त्योहार तो क्या हर रिश्ता मोबाइल पर ही निपटा दिया जाता है। लोग सामने वाले को भले ही शुभप्रभात न बोलें, पर आसनसोल से लेकर अमेरिका वाली मित्र को फूल भेजना नहीं भूलते। डिजिटल क्रांति के युग में जो लोग सोचते हैं कि शरीर पर सरसों का तेल मलकर, पुराने कपड़े पहन कर, एक-दूसरे से गले मिलकर, गुलाल लगाकर होली मनाई जाती है, वे शायद अभी पुराने जमाने में ही जी रहे हैं। एक-एक हफ्ते पहले से चूल्हे पर तरह-तरह के पकवान बनाती औरतें अब यह कहने लगी हैं, 'बाप रे आज के जमाने में कौन इतना समय बर्बाद करता है। वह भी इतना आयली फूड। इसके चक्कर में तो जिम में घंटों पसीना बहाना पड़ेगा। न बाबा न, हम तो लो कैलरी फूड ही खाएंगे। हमारी मेकअप फ्रेंडली स्किन रंगों से खराब हो गई तो। बहुत महंगा पड़ता है स्किन स्पेशलिस्ट। कौन अपना बजट बिगाड़े।' यही है आज का सोच।

आज की पीढ़ी के अनुसार होली खेलने की नहीं, सिर्फ दिखाने की चीज है। इसमें लोगों की, रंगों की, पकवानों की जरूरत नहीं पड़ती। डिजिटल होली मनाने के लिए सबसे पहले उलटे हाथ से चुटकी भर हर्बल कलर लीजिए। अब अपने दोनों गालों पर लगाइए। अच्छा-सा मुंह बनाइए। अब अपने सीधे हाथ से मोबाइल से क्लिक...क्लिक..कर सेल्फी खींचिए। अब हैप्पी होली वाली लाइन के साथ वाट्सएप, इंस्टाग्राम और फेसबुक पर स्टेटस अपलोड कर दीजिए। क्या कहा आपने कि बिना गुझिया, दहीबाड़े, कांजी के पानी के कैसी होली? ओके, रुकिए। गूगल इमेज से अपने मनचाहे पकवान की इमेज अपलोड करें। उसके नीचे लिखना न भूलें कि मम्मी के हाथ का टेस्टी यम्मी होली स्पेशल फूड। अब दोस्तों को वाट्सएप कर दीजिए। उधर से भी जवाब आएगा-यम्मी! साथ में जुबान लटकती स्माइली। मन गई न होली। अब भला क्या जरूरत है इतना कुछ बनाओ और बैठ कर प्लेट सजा कर लोगों का इंतजार करो। कुछ लोगों को डिजिटल होली के ढेरों फायदे दिखते हैं। पहले वे सिर्फ अपने मोहल्ले तक ही सीमित थे। आज इंस्टाग्राम, वाट्सएप एवं फेसबुक के युग में वे घर बैठे पूरी दुनिया संग इको फ्रेंडली के साथ-साथ पाकेट फ्रेंडली होली भी मनाते हैं। इसके लिए बस होली के तरह-तरह के मैसेज फारवर्ड करें। फेसबुक मित्रों की पोस्ट लाइक करें। उनके घिसे-पिटे जुमलों पर वाह-वाह करें। पकवानों की फोटो पर वेरी टेस्टी या यम्मी लिख रिप्लाई करें। रंग लगे चेहरों को नाइस बताएं। तो हुआ न- हल्दी लगे न फिटकरी और रंग चोखा ही चोखा।

यदि श्रीकृष्ण इस डिजिटल क्रांति के दौर में होते तो शायद बृज में होला...क्या होली भी न होती। गुलाल की, फूलों की और यहां तक कि लट्ठमार होली भी न होती। न ही होती गोपियों संग रासलीला, क्योंकि सब इंस्टाग्राम, वाट्सएप एवं फेसबुक पर होली मना लेते। न गोकुल से बरसाना जाने की मेहनत करनी पड़ती, न गुलाल उड़ता और न लट्ठ की मार खानी पड़ती। क्या आप भी मित्रों को होली की बधाई के मैसेज के साथ मिठाई एवं रंग के फोटो भेजने की फिराक में हैं? आपका इरादा भी हो तो, हमारी तरफ से हैप्पी होली!!

response@jagran.com

https://t.me/AllNewsPaperPaid

ऊर्जा

अंतश्चेतना के रंग

भारतीय संस्कृति उत्सव धर्मी है। नित आने वाली मुसीबतों से जब मनुष्य की जीवनी शक्ति क्षीण होने लगती है, तब विविधवर्णी लोकसंस्कृति के नए संस्करणों के साथ त्योहारों का आगमन होता है, जो तन-मन में अतिशय ऊर्जा का संचरण कर मनुष्य की जीवनी शक्ति को बढ़ाते हैं, जिससे जीवन का अग्रिम पथ प्रशस्त होता है और ये दीर्घ जीवन का आधार बन जाते हैं। रंगों का त्योहार होली भी ऐसा ही है। इसके रंग प्रेम, हर्ष और उल्लास के प्रतीक हैं। लाल रंग प्रगाढ़ स्नेह और प्रेम का परिचायक है। इसीलिए इस पर्व पर लाल गुलाल से अर्चन और वंदन कर सभी को प्यार से अभिसिंचित किया जाता है। किंतु इस प्रकार बाह्य रूप से रंजित होकर हम क्षणिक आनंद का अनुभव ही कर सकते हैं। इसमें अंतःकरण की चित्तवृत्तियों को अनुरंजित करने की ताकत नहीं होती। वास्तविक आनंद तो अंतर्मन को अभिषिक्त करने वाले दिव्य रंगों से मिलता है, जो हमारी अंतश्चेतना में जागृत होते हैं।

सृष्टि के कारणभूत आकाशादि पंचतत्वों के रंगयुक्त होने से सृजन काल में ही रंगों की सृष्टि हुई, जो प्रकृति में सर्वत्र दृष्टिगोचर होते हैं। वसंत में इन्हीं का प्रस्फुटन प्रकृति सुंदरी का श्रृंगार करता है। त्रिगुणात्मक सृष्टि का अंग होने से रंग जब मानव की अंतश्चेतना में प्रवेश करते हैं तो चित्तवृत्तियों को रंजित कर मानव शरीर और उसकी क्रियाविधि को प्रभावित करते हैं। मन-मस्तिष्क को प्रभावित कर ये गंभीर रोगियों को भी स्वस्थ करने की क्षमता रखते हैं।

भारतीय दर्शन में सत्वगुण को लघु और प्रकाशक माना गया है जबकि रजो एवं तमोगुण भारी होने के साथ मोह, आलस्य और ज्ञानांधता उत्पन्न करने वाले हैं। इसीलिए सत्वगुण की प्रचुरता से अंतश्चेतना में जीवन को आनंदित करने वाले रंगों की सृष्टि होती है। इसके लिए हमें अपने आहार-विहार को सात्विक रखने की आवश्यकता है, जिससे अंतर्मन को उल्लसित करने वाले दिव्य रंगों की सृष्टि हो सके।

डा. सत्यप्रकाश मिश्र

तथ्य-कथ्य | सबसे अधिक सैन्य संख्याबल वाले देश

(संख्या लाख में)

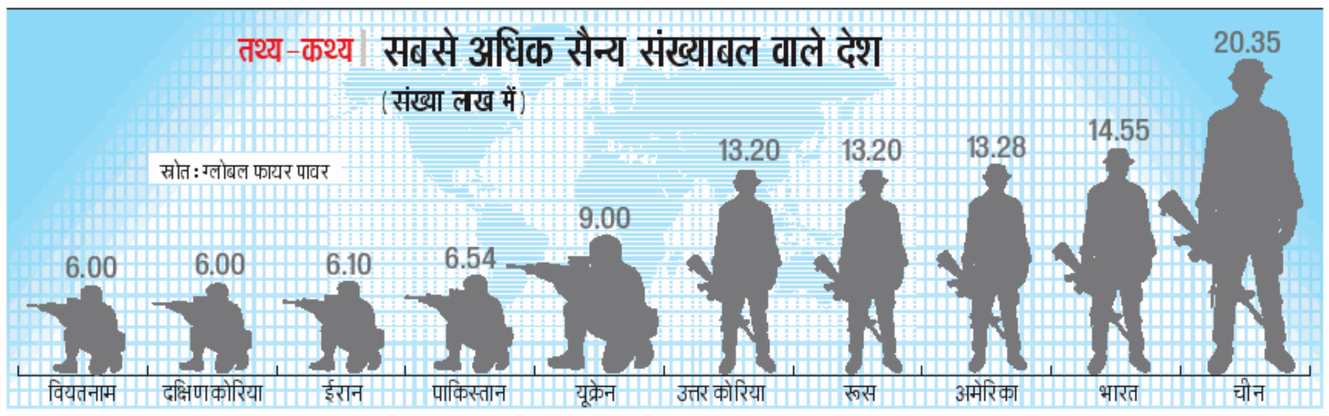

पर्दा हट गया

खासतौर से राजनीति में कुछ बातें ऐसी होती हैं, जो पर्दे से हटीं तो नुकसान हो जाता है। चुनावी बांड भी ऐसा ही मामला है। विपक्षी दलों ने इसे जोर-शोर से उठाया था और यह साबित करने में जुटे थे कि भाजपा ने गलत तरीके से फंड जुटाया है, लेकिन यह क्या, सुप्रीम कोर्ट ने बांड पर भी ऐसे समय यानी चुनाव के वक्त में रोक लगा दी जब चंदा आ रहा होता है और राजनीतिक दलों को किसने फंड दिया इसको भी उजागर कर दिया। खुल कर चर्चा शुरू हो गई और यह भी पता चल गया कि विवादित नाम वालों ने तो विपक्षी दलों को भी खूब पैसे दिए। दबे-छिपे सुर में अब विभिन्न राजनीतिक दलों के रणनीतिकार परेशान हैं कि पहले जो आया वह तो खत्म हो चुका है, आगे कैसे चंदा आएगा इसका भरोसा भी नहीं है। जिनके पास संसाधन हैं वे तो फिर भी कोई न कोई रास्ता निकाल लेंगे, लेकिन जिनके पास संसाधन सीमित हैं वे क्या करें। विपक्षी राजनीतिक दलों के नेता भी कहने लगे हैं कि चुनावी बांड पर रोक तो नहीं लगनी चाहिए थी।

तीसरी पारी

कहा जाता है कि राजनीति में धैर्य बहुत जरूरी है।

राजरंग

कई ऐसे नेता हैं, जो अपनी जड़ें जमाने में वर्षों लगाते हैं। फिर कभी टिकट न मिलने पर, तो कभी बार-बार की हार उन्हें पैदल कर देती है, लेकिन कुछ सितारे ऐसे हैं, जिनकी चमक पर कोई फर्क नहीं पड़ता। ये वे चेहरे हैं, जो क्रिकेट या फिल्मी दुनिया में नाम कमाने के बाद राजनीति का रुतबा देख उस ओर खिंचे चले जाते हैं। कुछ तो इस 'सेकेंड इनिंग' में भी बढ़िया पारी खेल रहे हैं, लेकिन बहुतेरे ऐसे हैं, जो ब्रेक के बाद फिर पुराने पेशे में थर्ड इनिंग यानी तीसरी पारी के लिए चले गए। ताजा नाम भाजपा से कांग्रेस में आए क्रिकेटर नवजोत सिंह सिद्धू और गौतम गंभीर का है। सिद्धू फिर कमेंट्री बाक्स में हैं तो गौतम केकेआर के मेंटर बन गए। फिर फिल्मों में गदर मचाने पहुंचे सनी देओल, हंसराज हंस और टीएमसी सांसद नुसरत जहां के नाम भी इसी कड़ी में हैं।

उम्मीद बाकी है

आम चुनाव की घोषणा से पहले से ही कांग्रेस पार्टी से छोटे-बड़े नेताओं का पलायन हो रहा है और यह सिलसिला जारी है, लेकिन इन सबके बीच कांग्रेस के लिए खुशी की बात यह भी है कि बालीवुड से जुड़े कुछ चेहरे से लेकर गायक-गायिका उससे जुड़ने को तैयार दिख रहे हैं। कांग्रेस नेता इस बात को लोगों को जोर-शोर से बता रहे हैं कि उनके नेता सिर्फ जा ही नहीं रहे हैं, बल्कि कई नए लोग पार्टी में आने को भी तैयार हैं। वे बता रहे हैं कि बालीवुड की अभिनेत्री स्वरा भास्कर तो लोक गायिका नेहा सिंह राठौर कांग्रेस में शामिल होना चाह रही हैं। राठौर दिल्ली में लोकसभा चुनाव में कांग्रेस से उम्मीदवार बनना चाह रही हैं और पार्टी के समक्ष इंटरव्यू भी दे चुकी हैं। वहीं स्वरा भास्कर को मुंबई से टिकट देने की चर्चा चल रही है। हालांकि हाल फिलहाल किसी बड़े शख्सीयत के कांग्रेस में शामिल होने की घोषणा नहीं हुई है, लेकिन उम्मीद बाकी है।

नौकरशाह से नेता तक

ओडिशा में भाजपा और बीजद के बीच गठबंधन की बातें पिछले दस दिनों से खूब चर्चा में थीं। अब अटकलें खत्म हो गईं और ठीकरा पूर्व नौकरशाह से नेता बने वीके पांडियन पर फूटा। दरअसल पांडियन जिस तरह बीजद में मजबूत हो रहे हैं उससे उनकी पार्टी के कुछ लोग भी डरे हुए हैं। कुछ ऐसा ही वाकया बिहार में नौकरशाह से नेता और फिर सांसद एवं मंत्री बने नीतीश कुमार के खास आरसीपी सिंह को लेकर भी हुआ था। बाद में वह नीतीश कुमार की सूची से ही बाहर हो गए। ओडिशा में बीजद सांसद भर्तृहरि महताब ने इस्तीफा दे दिया है। आने वाले दिनों में देखना होगा कि स्थिति किस तरफ रुख करती है।

पोस्ट

मास्को हमले में सौ से अधिक लोग मारे गए हैं और कई गंभीर हालत में हैं। रूस इस हमले के लिए तैयार नहीं था। अमेरिकी एजेंसियों ने जिहादी हमले की चेतावनी दी थी जिस पर पुतिन ने ध्यान नहीं दिया। अब जानकारी मांग रहे हैं। हाल में वह हमास की हिमायत करने लगे थे। शायद अब होश आ जाए। शिव कांत@shivkant

दिल्ली के शराब घोटाले की सच्चाई क्या है, इसका फैसला अदालत को करना है। मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल पर इस घोटाले में भ्रष्टाचार का आरोप लगा है। उनकी गिरफ्तारी हुई है और वह मुख्यमंत्री के पद से अभी तक चिपके हुए हैं? यह कैसी नैतिकता है? उन्हें तत्काल अपने पद से इस्तीफा देना चाहिए। कुर्सी से चिपके रहने की जिद आगे जाकर भारतीय राजनीति को और खोखली कर देगी।

संजय निरुपम@sanjaynirupam

कल्पना कीजिए कि राजनीति कैसी हो सकती है। एक समय देश के सर्वश्रेष्ठ मुख्यमंत्रियों में से एक शीला दीक्षित को अरविंद केजरीवाल के अपमानजनक शब्दों का सामना करना पड़ा और आज उसी कांग्रेस को सबकुछ भूलकर अरविंद केजरीवाल का बचाव करना पड़ रहा है।

पल्लवी घोष@_pallavighosh

जनपथ

नैतिकता को घोलकर गटक गया वह यार,
बैठे-बैठे जेल से चलती है सरकार।
चलती है सरकार चलेगा कब तक ऐसे,
राजनीति में लोग आ गए कैसे-कैसे!
पैसे हेतु जमीर दिखा दिल्ली में बिकता,
जब मुखिया ही स्वयं गटक बैठा नैतिकता!!

- ओमप्रकाश तिवारी

संस्थापक-स्व. पूर्णचन्द्र गुप्त, पूर्व प्रधान सम्पादक- स्व. नरेन्द्र मोहन, नॉन एग्जीक्यूटिव चेयरमैन- महेन्द्र मोहन गुप्त, प्रधान सम्पादक -संजय गुप्त

जागरण प्रकाशन लिमिटेड के लिये आनन्द त्रिपाठी द्वारा दैनिक जागरण प्रेस C-5, C-6 & 15 इंडस्ट्रियल एरिया, पाटलिपुत्रा, पटना - 800013 से प्रकाशित एवं मुद्रित, सम्पादक (बिहार/प.बंगाल)-विष्णु प्रकाश त्रिपाठी, स्थानीय सम्पादक - आलोक मिश्रा * दूरभाष : 0612-2277071, 2277072, 2277073

E.mail : patna@pat.jagran.com, R.N.I. NO. BIHHIN/2000/03097* इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं सम्पादन हेतु पी.आर.बी.एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी पटना जीपीओ रजि.नं. R-10/NP-18/14-16 समस्त विवाद पटना न्यायालय के अधीन ही होंगे। वर्ष 24 अंक 340

****

भगवान वास्तव में केवल एक कलाकार हैं। उन्होंने जिराफ, हाथी और बिल्ली का आविष्कार किया। उनकी कोई वास्तविक शैली नहीं है, वह बस चीजें आजमाते गए।
- पाब्लो पिकासो

बंगाल का वह क्षेत्र जहां चाय के बागान मिलते हैं, वहां काफी गहराई में छोटे हाथियों की एक कब्र मिली है। अवशेषों में हाथी के चारों पैर ऊपर की ओर देखकर शोधकर्ता भी असमंजस में हैं। कई हाथियों के पैरों के आसपास की जमीन का संकुचित होना और मृत्यु के बाद घसीटे जाने का संकेत देती चोटें, किस ओर इशारा करती हैं ?

क्या हाथियों के भी कब्रिस्तान होते हैं?

हाथियों को अपने मृत बच्चों के शरीर को ले जाते देखा गया है। जब वे किसी अन्य हाथी के या फिर किसी अन्य प्रजाति के शव के पास से गुजरते हैं, तो उनका व्यवहार अक्सर बदल जाता है।

लूसी ए बेट्स ■ लियाने प्रूप्स

क्या हाथियों के भी कब्रिस्तान होते हैं? विश्व की कुछ संस्कृतियों में ऐसे लोकप्रिय मिथक जरूर मिलते हैं, लेकिन इनके प्रमाण अब तक नहीं मिले थे। लेकिन हाल ही में एशियाई हाथियों की एक कब्रगाह के पुरावशेषों ने पुरानी बहस को फिर जन्म दिया है कि क्या हाथियों को भी दफनाया जाता था?

जर्नल ऑफ थ्रेटेंड टैक्सा में प्रकाशित शोध में दो वैज्ञानिकों ने इससे जुड़े पांच उदाहरणों का जिक्र किया है। भारत में बंगाल का वह क्षेत्र, जहां चाय के बागान मिलते हैं, वहां काफी गहराई में छोटे हाथियों की एक कब्र मिली है। खास बात है कि यहां मिले अवशेषों में हाथी के चारों पैर ऊपर की ओर हैं। यह देखकर शोधकर्ता भी असमंजस में हैं। हालांकि उनका कहना है कि हाथियों की असामान्य स्थिति की कई वजहें हो सकती हैं। कई हाथियों के पैरों के आसपास की जमीन का संकुचित होना और मृत्यु के बाद घसीटे जाने का संकेत देती चोटें, सभी हाथियों को जान-बूझ कर दफनाने की प्रथाओं की ओर इशारा करती हैं। इससे यह सवाल भी उठता है कि क्या हाथियों के समुदाय में मृत्यु के बाद अपने साथी को दफनाने की व्यवस्था होती है। अगर यह सही है कि जानवरों में भी मृत्यु और दुख की समझ होती है, तो इसका मतलब तो यही है कि मनुष्य उतना भी अनूठा नहीं, जितना उसे अमूमन समझा जाता है। पुरातात्विक साक्ष्य बताते हैं कि हमारे होमिनिड पूर्वज कम से कम एक लाख साल या शायद इससे भी ज्यादा समय से मृतकों को दफनाते रहे हैं। कालांतर में कुछ संस्कृतियों में शवों को जलाने का उपक्रम शुरू किया गया। हालांकि शवों को प्रकृति में विलीन करना महत्वपूर्ण नहीं है, बल्कि इस प्रक्रिया के जरिये उस वक्त के लोगों के दिमाग में क्या चलता होगा या उनकी भावनाएं कैसी होती होंगी, यह अनुमान लगाना महत्वपूर्ण है। हमारे पूर्वजों के लिए दफनाना केवल शवों का निपटान नहीं था, बल्कि अपने दुख की अभिव्यक्ति और जो गुजर चुके हैं, उनके प्रति सम्मान भी था। विभिन्न संस्कृतियों में मरे हुए लोगों को याद रखने के तरीकों के रूप में लोग उनके अंतिम संस्कार में अपना समय और प्रयास लगाते हैं। जाहिर है कि दफनाना भी हमारी भावना और सहानुभूति का स्पष्ट संकेत है।

माना जाता है कि मृत्यु के उपरांत हमारी प्रतिक्रियाएं मानवता को दर्शाती हैं। लेकिन आज तक किसी पशु प्रजाति में मृत्यु को लेकर प्रतिक्रिया में ऐसा सामाजिक प्रतिनिधित्व नहीं दिखा है। लोक परंपराओं और सदियों से चले आ रहे किस्से-कहानियों को छोड़ दें, तो किसी भी पशु प्रजाति में अपने मृतकों को व्यवस्थित रूप से दफनाने के प्रमाण नहीं मिलते हैं।

■ क्या हाथी को जान-बूझ कर दफनाया गया

यह निष्कर्ष निकालना कि हाथियों के समुदाय में कभी अंत्येष्टि की रस्म होती होगी, जल्दबाजी होगा। विचार के स्तर पर यह भले ही दिलचस्प लगे, लेकिन व्यवहार में इसे प्रमाणित नहीं किया जा सकता। यह भी हो सकता है कि हाथियों का समूह कहीं जा रहा हो और हाथियों के कुछ बच्चे खाई में गिर गए हों। हालांकि हाथियों की भावनाओं के बारे में जो बातें हम जानते हैं, वे भी कम महत्वपूर्ण नहीं हैं। हाथियों को अपने मृत बच्चों के शरीर को ले जाते देखा गया है। जब वे किसी अन्य हाथी या फिर किसी अन्य प्रजाति के शव के पास से गुजरते हैं, तो उनका व्यवहार अक्सर बदल जाता है। ऐसे अवसरों पर हाथी अमूमन मृत हाथी के शरीर की चुपचाप जांच करते हैं, सिर झुकाकर उसके अंगों को सूंघते हैं या शायद छूते हैं, शव को हिलाने या जगाने की कोशिश करते हैं और दुर्लभ अवसरों पर यह भी हो सकता है कि वे उस पर मिट्टी या पेड़ की पत्तियां या तने डालने की कोशिश करते हों। ये ठीक वैसी ही प्रतिक्रियाएं हैं, जो मनुष्य शोक की अवस्था में दिखाते हैं।

■ मृत्यु को समझना

मृत साथियों के प्रति दिलचस्पी दिखाने वाले अकेले हाथी नहीं हैं। कौवों में भी यही प्रवृत्ति दिखती है। वे भी मृत कौवे को बीच में रखकर एकत्रित होते हैं, जिसे उनके अंतिम संस्कार की प्रक्रिया के रूप में पहचाना जाता है। ऐसा महसूस होता है कि कौवों का यह जमावड़ा उन्हें किसी खतरे से बचने के बारे में जानने का अवसर प्रदान करता है कि ऐसा न हो कि वे भी उसी स्थिति में पहुंच जाएं। इसके अलावा, चींटियां भी अपने मृतकों को दूर कर देती हैं। चींटियां दरअसल मृत चींटियों द्वारा स्रावित होने वाले रसायनों से उन्हें पहचानती हैं। चींटियों की कुछ प्रजातियों में तो मृत चींटियों को दफनाने की भी परंपरा दिखती है, ताकि बीमारी के स्थानांतरण की आशंका को सीमित किया जा सके। हालांकि शोधकर्ता भी यह मानते हैं कि चींटियों या हाथियों के इस व्यवहार का मतलब यह कतई नहीं निकालना चाहिए कि उन्हें जिंदगी या मौत की कोई समझ है। 1950 के दशक में जीव विज्ञानी और कीट विज्ञानी ईओ विल्सन ने एक प्रयोग के तहत जीवित चींटियों पर एक खास रसायन लगाया, नतीजा यह हुआ कि बाकी चींटियां उनके साथ मृत जैसा ही व्यवहार करने लगीं। बाकी चींटियों ने उन्हें पकड़ कर बाहर खींच लिया और झुंड से अलग फेंक दिया। रसायनों के प्रति कुछ ऐसी ही प्रतिक्रियाएं चूहों में भी देखी गईं। चूहे भी मृत चूहों से आने वाली खास गंध पर प्रतिक्रिया देते हैं। यहां तक कि जिन लकड़ियों से गंध आने लगती है, चूहे उन पर भी वैसी ही प्रतिक्रिया देते हैं। हालांकि चूहे और चींटियों के ये उदाहरण स्पष्ट तौर पर मनुष्य या हाथियों सहित कई प्रजातियों में दिखने वाले शोक व्यवहार से अलग हैं। जहां तक हाथियों की बात है, तो यह कहना फिलहाल मुश्किल है कि हाथी वास्तव में अपने मृत साथियों को दफनाते हैं या नहीं, लेकिन परिवार के किसी सदस्य की मृत्यु पर उनकी भावनात्मक प्रतिक्रियाएं जरूर देखने लायक होती हैं।

धूप आने दो

■ क्या हाथी रोते हैं

मनुष्य कई भावनात्मक वजहों से रोते हैं, जैसे दर्द, भय, उदासी या अकेलापन। हाथी भी इन सभी का अनुभव करते हैं और इंटरनेट पर कई रील्स में आप हाथियों को रोते हुए देख भी सकते हैं। लेकिन उन्हें होने वाले दुख और उनकी आंखों के आंसुओं में अब तक कोई संबंध स्थापित नहीं हो पाया है। किसी अन्य जानवर की तुलना में हाथी अपने समूह के दूसरे सदस्यों के प्रति ज्यादा सहानुभूति रखने के लिए जाने जाते हैं। वे दूसरे हाथियों की रक्षा करते हैं, उन्हें आराम देते हैं, कमजोर हाथियों की मदद करते हैं, इत्यादि। अगर कभी जानवरों के आंसुओं और उनकी भावनाओं में कोई संबंध मिले, तो शायद हाथी इसके लिए पहले उम्मीदवार होंगे। हाथियों के आंसुओं के कारण दरअसल जैविक होते हैं। मनुष्यों और अन्य स्तनधारियों की आंखों में जब कोई कचरा जाता है, तो आंसू उन्हें बाहर निकालते हैं, जबकि हाथियों में आंसुओं की इस व्यवस्था की कमी होती है, इसलिए उनके आंसू निकलते रहते हैं।

https://t.me/AllNewsPaperPaid

जानना जरूरी है
संस्कृति के पन्नों से

आशुतोष गर्ग
लेखक एवं अनुवादक

मेघनाद के युद्धभूमि में पहुंचते ही स्थिति पलट गई। उसके युद्ध-कौशल के समक्ष देवता परास्त हो गए। मेघनाद ने देवराज इंद्र को बंदी बना लिया और उसे लंका लाकर रावण के सामने खड़ा कर दिया।

मेघनाद को 'इंद्रजीत' क्यों कहते हैं?

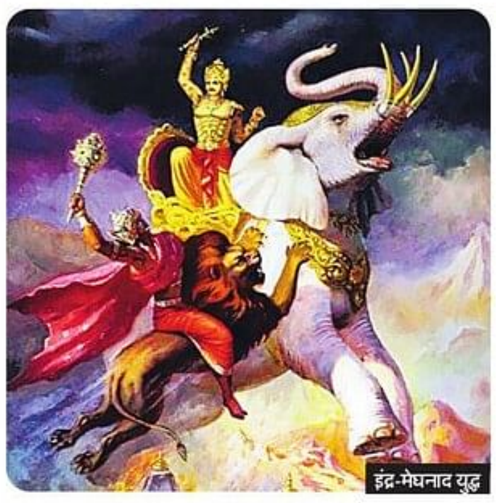

इंद्र-मेघनाद युद्ध

ब्रह्मा से वरदान पाकर रावण लगभग अजेय हो गया था। शक्तिशाली व्यक्ति प्रायः उच्छृंखल हो ही जाता है। रावण की सेना ने यत्र-तत्र आक्रमण किए और एक दिन उसकी सेना देवलोक पर चढ़ आई। देवताओं के लिए रावण से लड़ना सरल नहीं था, फिर भी देवताओं ने राक्षसों को कड़ी टक्कर दी। रावण ने जब देखा कि देवताओं को युद्ध के सामान्य तरीकों से परास्त करना संभव नहीं होगा, तो उसने अपने वीर पुत्र मेघनाद को युद्धभूमि में भेजा।

मेघनाद अपने पिता की भांति शक्तिशाली होने के साथ-साथ अनेक तांत्रिक शक्तियों का स्वामी एवं मायाजाल में निपुण था। उसने ये सब सिद्धियां निकुंभला की गुफा में तामसी साधना करके अर्जित की थीं। कठोर तप द्वारा मेघनाद ने अग्निहोम, अश्वमेध, बाहुस्वर्ण, राजसूय, गोमेद और वैष्णव जैसे छह महान यज्ञ भी संपन्न किए थे। उसके पास भगवान शिव द्वारा दिया गया दिव्य रथ था, जो क्षण भर में किसी भी स्थान पर पहुंच सकता था। वह अदृश्य होकर शत्रु से युद्ध कर सकता था। मेघनाद के पास एक अजेय धनुष, दो अक्षय तरकश और अनेक दिव्यास्त्र भी थे। कुल मिलाकर मेघनाद एक खतरनाक और असाधारण योद्धा था।

मेघनाद के युद्धभूमि में पहुंचते ही स्थिति पलट गई। शीघ्र ही उसके युद्ध-कौशल के समक्ष देवता परास्त हो गए। मेघनाद ने देवराज इंद्र को बंदी बना लिया और उसे लंका लाकर रावण के सामने खड़ा कर दिया। इंद्र की ऐसे दशा देखकर रावण की खुशी का ठिकाना न रहा। अब देवलोक रावण के अधीन था।

इंद्र के बंदी बना लिए जाने से देवलोक में शोक की लहर थी। इस समाचार के साथ जब देवतागण ब्रह्मा के पास पहुंचे, तो उन्हें अहसास हुआ कि उन्हीं के वरदान के फलस्वरूप रावण दुस्साहसी और अनाचारी हो गया था। ब्रह्मा ने इस दुर्घटना की नैतिक जिम्मेदारी लेते हुए निश्चय किया कि वह स्वयं लंका जाकर इंद्र को मुक्त करवाएंगे। ब्रह्मा, रावण के राजदरबार में पहुंचे, तो वह उनके सम्मान में उठ खड़ा हुआ। उसे ब्रह्मा के आगमन का कारण पता था, फिर भी उसने पूछा, 'परमपिता! आदेश कीजिए, मैं आपके लिए क्या कर सकता हूं?'

ब्रह्मा बोले, 'रावण! तुम्हारे पुत्र मेघनाद की विजय सराहनीय है। परंतु सृष्टि के क्रिया-कलाप को सुचारू ढंग से चलाने का दायित्व देवताओं पर है। इंद्र की अनुपस्थिति से देवलोक का कामकाज रुक गया है। मैं चाहता हूं कि तुम इंद्र को मुक्त कर दो।'

रावण को यह सुनकर बड़ा आनंद आया कि सृष्टि के रचयिता ब्रह्मा उसके सामने असहाय खड़े याचना कर रहे थे। रावण बोला, 'प्रभु, मैं अवश्य इंद्र को छोड़ देता, किंतु उसे युद्ध में मैंने नहीं, अपितु मेरे पुत्र मेघनाद ने परास्त किया है। इसलिए इस विषय में निर्णय लेने का अधिकार भी केवल मेघनाद को ही है। अतः आपको यह विनती मेघनाद से करनी पड़ेगी।'

● ब्रह्मा समझ गए कि रावण उन्हें लज्जित कर रहा है। परंतु देवलोक को बचाने के लिए उन्होंने अपमान का घूंट चुपचाप पी लिया।

फिर ब्रह्मा ने मेघनाद से कहा, 'पुत्र मेघनाद, देवताओं की पराजय हो चुकी है। परंतु सृष्टि की व्यवस्था को कायम रखने के लिए इंद्र का रहना आवश्यक है। कृपया उसे मुक्त कर दो।'

मेघनाद विजय के मद में चूर था। वह बोला, 'परमपिता, मैंने किसी सामान्य राजा को नहीं, अपितु देवलोक के शासक को परास्त किया है। यदि मैंने इंद्र को यूं ही छोड़ दिया, तो संपूर्ण उद्यम निष्फल हो जाएगा। आप ही कहिए कि मुझे इंद्र को मुक्त करने के बदले में क्या देंगे?'

ब्रह्मा बोले, 'मेघनाद, संसार की कोई भौतिक वस्तु तुम्हारे लिए अलभ्य नहीं है। और भौतिक वस्तुएं वैसे भी भंगुर होती हैं। परंतु ख्याति सनातन है; वह कभी नष्ट नहीं होती। अतः मैं तुम्हें एक नया नाम देता हूं, जो तुम्हारी मृत्यु के बाद भी शेष रहेगा और संसार को देवराज पर तुम्हारी विजय की याद दिलाएगा।'

मेघनाद की आंखों में चमक उभर आई। उसे ब्रह्मा का प्रस्ताव पसंद आ गया। वह बोला, 'मैं अपना नया नाम सुनने को व्याकुल हूं!'

'तुमने इंद्र को पराजित किया है,' ब्रह्मा ने कहा, 'इसलिए आज से तुम्हारा नाम 'इंद्रजीत' होगा! क्या तुम्हें यह नाम पसंद है?'

मेघनाद ने धीरे से अपना नाम दोहराया, 'इं-द्र-जी-त!' उसके मुख पर प्रसन्नता छा गई। 'वाह! कैसा विलक्षण नाम है! देवराज इंद्र को मुक्त कर दो!' इस तरह देवराज इंद्र की मुक्ति के बदले ब्रह्मा ने मेघनाद को 'इंद्रजीत' नाम दिया।

सर्वभूतस्थमात्मानं
सर्वभूतानि चात्मनि।
ईक्षते योगयुक्तात्मा
सर्वत्र समदर्शनः।।

वास्तविक योगी समस्त जीवों में मुझको और मुझमें समस्त जीवों को देखता है। निस्संदेह स्वरूपसिद्ध व्यक्ति मुझ परमेश्वर को सर्वत्र देखता है।
- भीष्म पर्व, गीता 6/29
(अर्जुन के प्रति साक्षात् भगवान श्रीकृष्ण का गीतोपदेश)

प्रस्तुति : विवेक चौरसिया

मलबे के तेरह करोड़ टुकड़े

सारा वेब
साथ में ब्रेट कार्टर व क्रिस्टोफर फ्लूक
द कन्वर्सेशन

जिस उपग्रह की मदद से गूगल आपको रास्ता बता रहा है, कभी सोचा है कि अंतरिक्ष में घूम रहे 13 करोड़ पिंडों के बीच वह खुद को कैसे बचाए है

हाल ही में खबर आई कि एक ऑस्ट्रेलियाई उपग्रह और संदिग्ध चीनी सैन्य उपग्रह के बीच टक्कर होने वाली है। इससे पहले अमेरिकी सरकार के संघीय संचार आयोग ने पहली बार सैटेलाइट टीवी सेवाएं प्रदान करने वाली कंपनी डिश नेटवर्क पर 1,50,000 डॉलर का जुर्माना लगाया। अंतरिक्ष उद्योग से जुड़े कई लोगों के लिए यह हैरानी की बात थी, क्योंकि जुर्माना किसी हालिया मलबे के लिए नहीं लगाया गया था, बल्कि 21 वर्षों से अंतरिक्ष में स्थित इकोस्टार-7 नामक एक संचार उपग्रह के लिए लगाया गया था। इकोस्टार-7 पर जुर्माना अमेरिका का पहला मामला हो सकता है, लेकिन संभवतः आखिरी नहीं होगा। हम अंतरिक्ष उपयोग के एक ऐसे अभूतपूर्व युग में प्रवेश कर रहे हैं, जिसमें संभावना है कि इस दशक के अंत तक अंतरिक्ष में सक्रिय उपग्रहों की संख्या 700 फीसदी तक बढ़ जाएगी। जैसे-जैसे अंतरिक्ष में भीड़ बढ़ती जाएगी, हजारों उपग्रहों एवं कबाड़ के टुकड़ों पर नजर रखना और भी महत्वपूर्ण हो जाएगा। मनुष्य 1957 से अंतरिक्ष में उपग्रह भेज रहा है और वर्तमान में पृथ्वी के चारों ओर विभिन्न कक्षाओं में 8,700 से अधिक उपग्रह सक्रिय हैं। उपग्रह अमूमन पृथ्वी की तीन प्रमुख कक्षाओं में होते हैं। सबसे आम पृथ्वी की निचली कक्षा है, जिसमें कम से कम 5,900 सक्रिय उपग्रह हैं। अंतरराष्ट्रीय अंतरिक्ष स्टेशन भी पृथ्वी की निचली कक्षा में है, जो हर दिन 16 बार पृथ्वी का चक्कर लगाता है। ऊपरी मध्यम पृथ्वी कक्षा उतनी व्यस्त तो नहीं है, लेकिन कुछ महत्वपूर्ण उपग्रहों का घर है-वह हमें ग्लोबल पोजिशनिंग सिस्टम या जीपीएस प्रदान करती है। जियो-सिंक्रोनस (भू-स्थैतिक) कक्षा में पृथ्वी से 35,000 किलोमीटर ऊपर उपग्रह होते हैं। अंतरिक्ष में मलबे के 13 करोड़ से अधिक टुकड़े हैं, जिनमें से केवल 35,000 टुकड़े (10 सेमी से अधिक) ऐसे हैं, जिन्हें नियमित रूप से जमीन से ट्रैक किया जा सकता है। यहीं पर अंतरिक्ष क्षेत्र संबंधी जागरूकता की आवश्यकता सामने आती है, जिसके तहत सक्रिय उपग्रहों और अंतरिक्ष के मलबे सहित पृथ्वी की कक्षा में मौजूद वस्तुओं का पता लगाने एवं उनकी निगरानी का काम किया जाता है। जमीन से पता लगाने के लिए हमें राडार या दूरबीन जैसे ऑप्टिकल सिस्टम की जरूरत होती है। राडार आसानी से पृथ्वी की निचली कक्षा में स्थित वस्तु का पता लगा सकते हैं, लेकिन ऊपरी कक्षा के लिए हमें ऑप्टिकल सेंसर की आवश्यकता होती है।

अध्ययन कक्ष

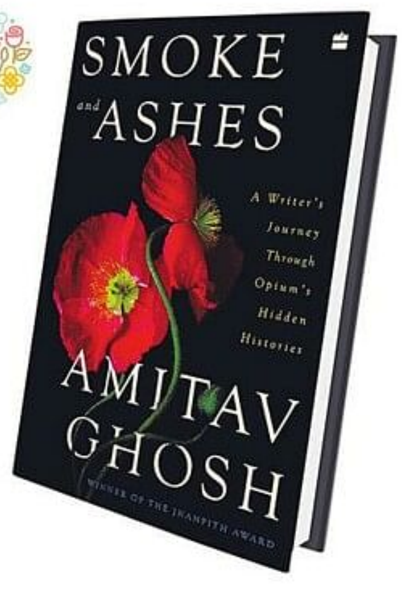

स्मोक ऐंड एशेज
लेखक- अमिताव घोष
प्रकाशक- हार्पर कॉलिन्स
मूल्य-699 रुपये।

अफीम के जरिये इतिहास की खोज

'स्मोक ऐंड एशेज' में अमिताव घोष ने भारत, चीन, ब्रिटेन और अमेरिका पर अफीम उद्योग के व्यापक असर के बारे में लिखा है। अफीम के जरिये इतिहास में झांकती यह पुस्तक मौजूदा चुनौतियों के बारे में भी आगाह करती है।

भारत के औपनिवेशिक अतीत को अफीम के उत्पादन और व्यापार के जरिये देखने वाले अमिताव घोष ने, जो ज्ञानपीठ पुरस्कार (2018) पाने वाले पहले अंग्रेजी लेखक हैं, अपनी नई किताब *'स्मोक ऐंड एशेज'* में अफीम उद्योग के भारत, चीन, ब्रिटेन और अमेरिका पर पड़े असर के बारे में लिखा है। वैसे तो अंग्रेजों के आने के पहले से ही अपने यहां बिहार और मध्य प्रदेश में अफीम उपजती थी, लेकिन ब्रिटिश सत्ता ने भारत में सुनियोजित तरीके से अफीम की खेती शुरू की, जिसे वह चीन में बेचता था। अफीम से मिलने वाला राजस्व ईस्ट इंडिया कंपनी के अस्तित्व के लिए जरूरी था, जो चीन से महंगी चाय मंगाती थी और बदले में उसे अफीम भेजती थी। अफीम के व्यापार से ईस्ट इंडिया कंपनी को, जिसे कुछ विशेषज्ञ दुनिया का पहला ड्रग कार्टेल भी कहते हैं, भारी मुनाफा हुआ। जबकि भारत के उत्पादक और चीन के उपभोक्ता इससे बुरी तरह तबाह हुए। अफीम के व्यापार के जरिये ही लेखक चीन के साथ भारत के रिश्ते के बारे में भी बताते हैं, जिसे जाहिर है, सिर्फ 1962 के युद्ध के आईने में नहीं देखा जा सकता।

दादाभाई नौरोजी की किताब *'पॉवर्टी ऐंड अनब्रिटिश रूल इन इंडिया'* का हवाला देते हुए लेखक कहते हैं कि अंग्रेजों ने अपने यहां तो अफीम की बिक्री पर सख्त प्रतिबंध लगा रखा था, पर चीन में आक्रामक तरीके से इसकी बिक्री करता था। भारत में भी अफीम उत्पादन शोषण का जरिया बना। बिहार में अफीम बोने वाले करीब दस लाख किसान धान या दूसरी फसल नहीं उपजा सकते थे। अफीम असंख्य भारतीयों के विस्थापन की भी वजह बनी। भारत में अफीम उत्पादन के दो मुख्य केंद्र थे-पटना और मालवा। इनमें से पटना और आसपास के इलाके के अफीम उत्पादकों की हालत दयनीय थी।

अमिताव घोष की यह किताब अफीम पर केंद्रित उनकी पुस्तक त्रयी- *'सी ऑफ पॉपीज'* (2009), *'रिवर ऑफ स्मोक'* (2011) और *'फ्लड ऑफ फायर'* (2015) से जुड़े अध्ययन और शोध पर आधारित हैं। अमिताव घोष ने पाया कि 19वीं सदी के भारतीय नाविकों और सैनिकों का जीवन हिंद महासागर और अफीम पर आधारित था। लेकिन उनकी पिछली तीन किताबें जहां इतिहास में लिपटे उपन्यास हैं, वहीं मौजूदा पुस्तक यात्रा वृत्तांत भी है, संस्मरण भी और इतिहास पर लेख भी।

लेखक बताते हैं कि अतीत की तुलना में आज अफीम का न सिर्फ उत्पादन कहीं अधिक है, बल्कि इसी कारण तबाही का आंकड़ा भी ज्यादा बड़ा है। उत्तरी मैक्सिको में अफीम का उत्पादन बढ़ने से वहां के कई इलाके नशे के सौदागरों के नियंत्रण में हैं। अफगानिस्तान में अफीम के उत्पादन का बढ़ते आतंकवाद और राजनीतिक अस्थिरता से सीधा रिश्ता है, तो म्यांमार में हाल के वर्षों में इसका बढ़ा उत्पादन भारत के लिए चिंताजनक है, क्योंकि इससे पूर्वोत्तर के प्रभावित होने की आशंका है। मणिपुर की हिंसा के पीछे नशे के व्यापार को एक कारण बताया ही जा रहा है। अफीम के जरिये इतिहास में झांकती यह पुस्तक नशे की दुनिया की मौजूदा चुनौतियों के बारे में भी आगाह करती है।

अभियान

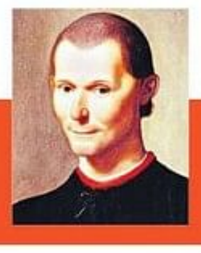

"जिनको अपने आप पर भरोसा नहीं है, वे लोग नई चीजों पर दिल से विश्वास नहीं करते हैं।
- निकोलो मैकियावेली, प्रसिद्ध दार्शनिक

amarujala.com
अमर उजाला

गोल चबूतरा

Hindi@mithelesh

■ मिथिलेश बारिया

चार पहियों वाले उन ठेलों ने,
जाने कितने त्योहार संभाल रखे हैं...

घड़ा सिर पर रखकर
पानी बड़ी दूर से लाती है,
मां की होली तो रोज होती है,
वो रोज भीग जाती है।

बच्चे नीचे रंग से खेल रहे हैं,
मैं इमारत की बालकनी से झांक रहा हूं,
होली से अब इतना फासला हो गया है...

व्यंग्य गजल

सजे हर घर रंगोली

■ योगेन्द्र वर्मा 'व्योम'

उमंगों, मस्तियों, उल्लास की सौगात होली में,
जिधर देखो उधर है रंग की बरसात होली में।

चिपटकर चूमते कुछ लोग उसको प्यार से बेहद,
गधों की बढ़ गई है आजकल औकात होली में।

उमर का ध्यान तक भी रख नहीं पाते नशे में वो,
भड़कते तितलियों को देख जब जज्बात होली में।

बहुत सौभाग्यशाली मानता है शख्स वो खुद को,
निकलती जब गधे पर बैठकर बरात होली में।

सजे हर घर रंगोली 'व्योम' खुशियों की हमेशा ही,
नहीं आए किसी घर में अंधेरी रात होली में।

कोई भी पर्व हो, वह हमसे एक अनुशासन की मांग तो करता ही है। तभी हम पर्व के माध्यम से खुशियां बटोर पाते हैं। होली में भी हम अगर इस बात का ख्याल रखें तो हमें अपार खुशियां मिलेंगी।

रंगो ! मगर प्यार से...

सद्भाव से मनाएं त्योहार

चिट्ठी 1

रंगों का त्योहार होली दहलीज पर खड़ा है। यह पर्व सिर्फ भारत में ही नहीं, बल्कि दूसरे देशों में भी अलग-अलग रूपों में मनाया जाता है। होली बसंत ऋतु के स्वागत के लिए मनाया जाने वाला त्योहार है। बसंत का आगमन नई शुरुआत और जीवन में हर उस चीज का प्रतीक है, जो आशावादी, धूपदार और भरपूर है। अन्य त्योहारों की तरह होली में भी पौराणिक कहानियां शमिल हैं।

होली प्यार और सद्भाव बांटने वाला त्योहार है, इसलिए जब भी हम होली खेलें, इस बात का ध्यान रखें कि अपनी हरकतों से होली जैसे अपनेपन के त्योहार को तनावपूर्ण न बनाएं। होली में हमें चाहिए कि रासायनिक रंगों और गुब्बारे का उपयोग न करें। कभी-कभी गुब्बारे के उपयोग से किसी व्यक्ति को गंभीर चोट लग सकती है। होली का त्योहार सद्भाव का त्योहार है, इसलिए हमें इसको रंगीन और आनंदपूर्ण माहौल में गाने और नृत्य के साथ मनाना चाहिए। होली अब ऐसा त्योहार साबित हो रहा है, जिसमें सबसे अधिक हुड़दंगबाजी और लड़ाइयां होती हैं। अधिक भांग और शराब का सेवन कर लोग हंगामा करते हैं। इसके चलते होली का शांतिपूर्ण वातावरण पूरी तरह से खत्म हो जाता है।

होली जैसे रंगीन त्योहार का महत्व इसलिए है, क्योंकि यह आम जनमानस में आपसी सद्भाव के साथ-साथ जीवन को रंगों से भरता है। जब होली में हरकतें और हुड़दंग अत्यधिक हो जाती हैं तो पवित्र और रंगों से भरे इस त्योहार का नजरिया और महत्व, दोनों ही खत्म हो जाता है इसलिए इस पर्व को हमें सद्भाव और पवित्रता से मनाना चाहिए।

■ विजय किशोर तिवारी, दिल्ली

होली हो, हुल्लड़ नहीं

चिट्ठी 2

अपनत्व और खुशी के रंगों से सराबोर करने की परंपरा का नाम है होली। अगर होली को सच में 'होली भाव', यानी पावनता से मनाने की मानसिकता हम विकसित कर लें तो बहुत-सी अनैतिकता की बीमारियां स्वयं ही जल जाएंगी। हमारी संस्कृति में पर्व हमें अपनों और प्रकृति के समीप आने का मौका देते हैं। एक समय था, जब होली के पर्व से करीब सवा महीने पहले वसंत पंचमी को होली का उपला रख दिया जाता था, यानी प्रतीक रूप में खुशी भी अनायास नहीं क्रमागत आनी चाहिए। फिर गांव-गलियों में मस्तों की टोलियां 'फगवा', 'कामण' या 'धमाल' गाते हुए घर-घर जातीं और होली का ईंधन इकट्ठा करती थीं। विभिन्न प्रदेशों में अलग-अलग ढंग से होली आधार की स्थापना की जाती है। पश्चिमी उत्तर प्रदेश में पांच उपले रखकर तो राजस्थान के जयपुर, सीकर, चुरु और झुंझुनूं सहित शेखावाटी में एक मोटा डंडा गाड़कर प्रहलाद के रूप में होलिका का आधार रखा जाता है और फिर प्रतिदिन सवा महीने तक लोकगीत और नृत्य आयोजित किए जाते हैं। अब समय के साथ बदलाव तो लाने ही होंगे। ऐसे बदलाव, जिससे होली की गरिमा और रंग की मस्ती दोनों बचे रहें। होली की मर्यादा और मस्ती के बीच एक संतुलन बनाना होगा। फूहड़ता, अश्लीलता एवं बदले की भावना को होली से हटाना होगा। मनोविकारों का दहन यदि हम कर पाएंगे तो फाग के रंग अपने आप ही निखर कर चारों ओर बिखर जाएंगे।

■ डॉ. घनश्याम बादल, रुड़की

रासायनिक रंगों से बचें

चिट्ठी 3

होली पर रासायनिक रंगों से परहेज करना जरूरी है। अगर सावधानी न बरती जाए तो त्वचा संबंधी रोग होने का खतरा बना रहता है। दरअसल, रासायनिक रंगों से त्वचा में जलन, लालिमा, खुजली और जलन हो सकती है। संवेदनशील त्वचा वाले लोगों को ये समस्याएं अधिक होती हैं। रासायनिक रंग आंखों में चले जाने पर जलन, लालिमा, पानी आना और यहां तक कि अस्थाई अंधापन भी पैदा कर सकते हैं।

होली के रंगों में इस्तेमाल होने वाले कुछ रसायन, जैसे सीसा और क्रोमियम, कैंसरकारी होते हैं और लंबे समय तक इनके संपर्क में रहने से कैंसर का खतरा बढ़ सकता है। होली समारोह के दौरान रासायनिक रंगों के बारीक कण हवा में फैल सकते हैं, जिससे खांसी, छींकने, सांस लेने में कठिनाई जैसी समस्याएं हो सकती हैं और अस्थमा जैसी स्थिति बढ़ सकती है। गर्भवती महिलाओं को इस दौरान श्वसन संबंधी संवेदनशीलता में वृद्धि का अनुभव हो सकता है। रासायनिक रंग न केवल मानव स्वास्थ्य को नुकसान पहुंचाते हैं, बल्कि पर्यावरण पर भी प्रतिकूल प्रभाव डालते हैं। वे जल निकायों, मिट्टी और वनस्पति को दूषित कर सकते हैं। इसलिए यह होली फूलों, पत्तियों और सब्जियों जैसे प्राकृतिक अवयवों से बने हर्बल रंगों के साथ खेलें।

होली खेलने के बाद बालों और शरीर को साफ पानी से अच्छी तरह धोएं। यदि त्वचा में जलन, लालिमा या सांस लेने में समस्या महसूस हो तो डॉक्टर से परामर्श लें।

■ अमर सिंह, मथुरा

इनकी चिट्ठियां भी सराहनीय रहीं

जालंधर से राजेश कुमार चौहान, नैनीताल से अमृता पांडे, रायबरेली से पवन कुमार मधुकर, मिर्जापुर से सलिल पांडेय, पटना से मुकेश कुमार मनन, लखनऊ से बालभास्कर मिश्र, दिल्ली से मनोज तिवारी, फिरोजाबाद से नितिन रावत, बरेली से दिलीप कुमार गुप्ता, सूरत से कांतिलाल मांडोत, वड़वानी से नरेंद्र तिवारी, मेरठ से सुशील कुमार बतरा, सोलन से मुकेश बिग।

हमें लिखें
abhiyan@amarujala.com

होली गीत

टेसू के रंग को लेकर

■ दिनेश वर्मा 'कनक'

रंग उड़े इस बार भी जम के,
बादल भी झुक आए रे,
चली गई फिर आकर होली,
मगर नहीं तुम आए रे।

कहने को घर के द्वारे पर,
बहुत शोर इस बार रहा,
मन-आंगन जो था आ बैठा,
काक मगर चुपचाप रहा।

हरियारे तो उछल-उछलकर,
छोड़ रहे थे फुहारें,
अंबर से भी बरस रही थीं,
रिमझिम मद्धम बौछारें,

मचल-मचल रुत बासंती ये,
यौवन को उकसाए रे,
चली गई फिर आकर होली,
मगर नहीं तुम आए रे।

स्मृति-पट जब खुलता तो फिर,
तुम्हीं दृष्टि में हो आते,
बेसुध हो जब गिरता यह तन,
तुम्हीं तो आके उठाते।

फिर टेसू के रंग को लेकर,
मलते तुम प्रिय अंग-अंग में,
सुध-बुध खोकर रंग जाते फिर,
प्राण-पिया के ही रंग में,

मनुहारों के मौसम में अब,
मनवा चैन न पाए रे,
चली गई फिर आकर होली,
मगर नहीं तुम आए रे।

अंतहीन अब हुई प्रतीक्षा,
जीवन में दुख-बीज बुए,
कानन, चंदन, पुष्पों के पट,
घट-पनघट सुख-हीन हुए।

घोर निशाओं में अब मुझको,
उजियारे की आस नहीं,
फागुन अगन बढ़ाता फिर भी,
शीतलता की चाह नहीं,

शांत भाव में स्वप्न पड़े पर,
फाग उन्हें भड़काए रे,
चली गई फिर आकर होली,
मगर नहीं तुम आए रे।

होली के रंग सिनेमा के संग

यह तस्वीर साल 1961 में आयोजित होली मिलन समारोह की है। इसमें अपने समय की मशहूर अभिनेत्रियां- साधना, नंदा और शशिकला हैं।

■ गुरुग्राम से शिखा राय

छायानट

दूसरी बार में आया 'रंग'

परदे पर पहली बार होली साल 1940 में आई फिल्म 'औरत' में देखने को मिली था। फिल्म के निर्माता-निर्देशक महबूब खान थे। उन्होंने ही फिल्मों में होली खेलने का जश्न शुरू किया था। उस वक्त तकनीक की कमी होने के कारण फिल्में ब्लैक एंड व्हाइट बनती थीं। फिल्म में होली तो जरूर खेली गई थी, लेकिन रंगों को दर्शक नहीं देख पाए थे। ऐसे में महबूब खान को यह बात खल गई और उन्होंने होली को रंगों के साथ परदे पर उतारने का फैसला किया। साल 1957 में उनकी फिल्म 'मदर इंडिया' रिलीज हुई थी। यह फिल्म 'औरत' की रीमेक थी। अब यह फिल्म कलर में थी, इसलिए इसमें एक बार फिर महबूब खान ने होली का सीन दिखाया और परदे पर दर्शकों को होली के रंग-बिरंगे रंग देखने को मिले।

■ कुरुक्षेत्र से राजेश रावत

एक धर्मनिरपेक्ष संत

चंडी प्रसाद भट्ट की आत्मकथा, उनके अपने अनुभवों का वर्णन, सामाजिक और पर्यावरणीय इतिहास के साथ-साथ गांधीवाद के इतिहास की समृद्ध अंतर्दृष्टि प्रदान करती है। मुझे विश्वास है कि इस आत्मकथा को व्यापक पाठक वर्ग प्राप्त होगा।

एक भारतीय, जिनकी मैं बेहद प्रशंसा करता हूं, वह हैं सामाजिक कार्यकर्ता और चिपको आंदोलन के प्रणेता चंडी प्रसाद भट्ट। जब मैं बीस साल का था, तब उनसे पहली मुलाकात ने मेरे जीवन पर काफी परिवर्तनकारी प्रभाव डाला। उसके बाद मैं उनसे कई बार मिला, हर मुलाकात में दुनिया और भारत के सामने मौजूद नैतिक, राजनीतिक एवं पर्यावरणीय चुनौतियों और उन्हें नियंत्रित करने के लिए क्या किया जा सकता है, इस बारे में नई अंतर्दृष्टियां मिलीं। कुछ वर्ष पहले चंडी प्रसाद भट्ट ने हिंदी में अपनी आत्मकथा प्रकाशित की थी। उसे अब अंग्रेजी में समीर बनर्जी ने जेंटल रेसिस्टेंस नाम से अनूदित किया है।

भट्ट का जन्म 1934 में हुआ, जब भारत अंग्रेजों का उपनिवेश ही था। शुरुआती अध्यायों में उनके बचपन की विविध यादें हैं, साथ ही उनकी बड़ी बहन (जिनसे उनका गहरा लगाव था), उनके शिक्षक, गांव के बुजुर्गों और मेहनतकश निचली जातियों के लोगों की मार्मिक छवियां हैं। एक बाह्मण होने के नाते युवा चंडी प्रसाद को उच्च सामाजिक प्रतिष्ठा प्राप्त थी। हालांकि वह समृद्ध नहीं थे। जब वह मात्र एक साल के थे, उनके पिता का देहांत हो गया। परिवार गरीब था, हालांकि बेसहारा नहीं था। जैसा कि वह लिखते हैं, 'बचपन में हम निरंतर अभाव में रहे, कुछ भी बहुत ज्यादा नहीं था, कभी भी पर्याप्त पैसा नहीं था, और हर वस्तु, जिसकी हमें जरूरत थी, अपर्याप्त लगती थी।' घर का चूल्हा जलाने के लिए उस किशोर लड़के को खेत जोतनी और गायें चरानी पड़ती थीं। चंडी प्रसाद आकर्षक स्पष्टता के साथ बताते हैं कि कैसे वह एक उदासीन छात्र थे, जो बमुश्किल ही परीक्षाएं उत्तीर्ण कर पाते थे। विश्वविद्यालय में पढ़ाई का तो खैर कोई सवाल ही नहीं था! सौभाग्य से एक स्थानीय बस कंपनी में बुकिंग क्लर्क की नौकरी मिल गई, जिसमें वेतन के नाम पर मामूली रकम मिलती थी। वे बसें तीर्थयात्रियों को हिमालय के पवित्र तीर्थस्थलों तक ले जाती थीं और अपने काम के दौरान देश के विभिन्न हिस्सों के लोगों से मिलने से उनके सांस्कृतिक एवं भौगोलिक ब्रह्मांड का विस्तार हुआ।

वर्ष 1956 में प्रतिष्ठित गांधीवादी सामाजिक कार्यकर्ता जयप्रकाश नारायण ने गढ़वाल के उस इलाके का दौरा किया, जहां भट्ट रहते थे। वह उनकी बातें सुनने गए थे; जैसा कि उन्होंने साठ साल बाद याद किया, जेपी के 'शब्दों ने मुझे अंतरात्मा की गहराई तक छू लिया।' भट्ट फिर एक स्थानीय सर्वोदय कार्यकर्ता मान सिंह रावत से मिले, जिन्होंने उनके साथ पहाड़ियों पर पदयात्रा की। जेपी के शब्दों और मान सिंह के उदाहरण ने भट्ट को गढ़वाल मोटर ओनर्स यूनियन की नौकरी छोड़कर पूरा समय सामाजिक कार्यों में समर्पित करने के लिए प्रेरित किया। 1960 के दशक में

रामचंद्र गुहा
जाने-माने इतिहासकार

भट्ट ने श्रम सहकारी समितियों और महिला मंगल दलों (महिला कल्याण संघ) के गठन में सहयोगियों के साथ काम किया। 1960 के दशक के अंत तक उन्होंने गढ़वाल में एक सामाजिक कार्यकर्ता के रूप में काफी प्रतिष्ठा हासिल कर ली थी।

इस बीच भट्ट ने पहाड़ियों में व्यावसायिक वानिकी की लूट का गहन अध्ययन करना शुरू कर दिया था। जंगलों की तबाही को देखकर भट्ट ने खुद से सवाल किया : 'क्या इस शोषणकारी उन्माद को रोका जा सकता है?' उन्होंने सोचा कि यह हो सकता है, लेकिन केवल तभी, जब पहाड़ के लोग एक बार फिर अपने जंगलों पर नियंत्रण हासिल कर सकें, जो उनके अपने जीवनयापन और अस्तित्व के लिए बहुत महत्वपूर्ण थे। 1973 में भट्ट ने व्यावसायिक वानिकी के खिलाफ ग्रामीणों द्वारा पहले विरोध प्रदर्शन के आयोजन और नेतृत्व करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी, जिसे सामूहिक रूप से 'चिपको आंदोलन' के रूप में जाना जाता है।

चिपको आंदोलन के दौरान भट्ट की मुलाकात लखनऊ में एक वरिष्ठ नौकरशाह से हुई थी, जिनसे वह जंगलों पर राज्य के बजाय समुदाय के नियंत्रण पर जोर देने के लिए मिलने गए थे। यहां दर्शाया गया है कि एक सामाजिक कार्यकर्ता नौकरशाह के दफ्तर में अपने प्रवेश का वर्णन कैसे करता है : 'मैंने उनका अभिवादन किया, लेकिन उन्होंने कोई जवाब नहीं दिया। बार-बार नमस्कार करने और कोई उत्तर न मिलने पर मैं झिझकते हुए उनके सामने कुर्सी पर बैठ गया।' कुछ देर बाद उन्होंने एक सिगरेट जलाई। धुआं छोड़ते हुए वह मेरी ओर मुड़े और पूछा, 'यह सब क्या कर रहे हो?' घूरते और कश लगाते हुए वह मुझ पर धुंआ फेंकते रहे। मैंने उन्हें अपनी बात बताने की कोशिश की, लेकिन उन्हें कोई दिलचस्पी नहीं थी। उनका दृष्टिकोण नौकरशाहों के अनुरूप ही प्रतीत होता था-यानी उनकी नजर में पहाड़ी किसान घृणित थे और उनकी छोटी इकाइयां राजनीति के शानदार शरीर पर फोड़े की तरह थीं, जिन्हें औकात में रखना उनका कर्तव्य था। इस चित्रण की तुलना भट्ट द्वारा प्रस्तुत दूसरे चित्रण से करें, जो समान रूप से ज्वलंत, लेकिन कहीं अधिक सशक्त है। यह चित्रण गौरा देवी के बारे में है, जो मार्च 1974 में रेनी गांव में हुए चिपको प्रदर्शन की नेता थीं, आज से ठीक पचास साल पहले। उन्होंने कभी स्कूल नहीं देखा था, और वह जल्दी ही विधवा हो गई थीं। वह अपनी जमीन के छोटे से टुकड़े पर जीवन यापन कर रही थीं।

फिर भी उन्हें 1965 में अपने गांव में महिला मंगल दल शुरू करने और नौ साल बाद उनका नेतृत्व करने के लिए समय और ऊर्जा मिली, जो शायद हिमालय के इतिहास में सभी चिपको विरोध-प्रदर्शनों में सबसे प्रतिष्ठित है। वर्ष 1991 में गौरा देवी की मृत्यु हो गई। भट्ट लिखते हैं, असमानता और उत्पीड़न के खिलाफ लड़ाई में हमारा मार्गदर्शन करने के लिए उनके सौम्य प्रतिरोध की केवल चमकदार और प्रेरणादायक शक्ति रह गई। उत्पीड़न से लड़ने की उनकी इच्छा उनके और उनकी साथी महिलाओं के जीवन की कठिनाइयों से उपजी थी, जो पीढ़ियों से गरीबी और व्यक्तिगत त्रासदी से निपटने की कोशिश कर रही थीं। भट्ट मुख्यतः एक जमीनी संगठनकर्ता हैं, फिर भी वह एक व्यावहारिक विचारक भी हैं, खासकर टिकाऊ आर्थिक प्रणाली के संबंध में।

1976 की शुरुआत में ही उन्होंने चेतावनी दी थी कि लापरवाह ढंग से किया गया सड़क निर्माण जोशीमठ शहर में घरों के ढहने में योगदान दे रहा था। चंडी प्रसाद भट्ट की आत्मकथा एक अत्यंत महत्वपूर्ण पुस्तक है। उनके अपने अनुभवों का वर्णन सामाजिक और पर्यावरणीय इतिहास के साथ-साथ गांधी के बाद गांधीवाद के इतिहास की समृद्ध अंतर्दृष्टि प्रदान करती है। यह पुस्तक कुछ हद तक साहित्यिक महत्व का दस्तावेज भी है। मुझे विश्वास है कि इसे व्यापक पाठक वर्ग प्राप्त होगा, जिसका यह हकदार है।

शिव शंकर खेलत हैं होली...

सुनीत द्विवेदी

खुला आकाश

पहाड़ी होली रंग और संगीत के जरिये जीवंत हो उठती है। यह होली हमारी संस्कृति और परंपराओं का एक जश्न है।

होली का पर्व जीवन में उमंग और उत्साह का संचार करता है। दिल की धड़कन में बसंत के रंग, जब पहाड़ी होली के सुरों में गूंजते हैं तो शहर की रौनक में एक अलग ही बहार आ जाती है। फाल्गुन की एकादशी से शुरू होकर पूर्णिमा की छलड़ी तक, यह उत्सव अपने चरम पर होता है। खड़ी होली, बैठकी होली, महिलाओं की होली और स्वांग वाली होली, इन सभी रूप में पहाड़ के कोने-कोने में जीवंत हो उठते हैं। पहाड़ी होली का जादू ऐसा है कि शहरी जीवन की आपाधापी में भी लोग अपनी जड़ों से जुड़े रहते हैं।

अल्मोड़ा के मोहल्लों में तो रातभर होली की महफिलें सजती हैं। 'तुम सिद्धि करो महाराज' और 'शिव शंकर खेलत हैं होली' जैसे गीतों से सांस्कृतिक नगरी रंगीन हो जाती है। बैठकी होली में शास्त्रीय रागों की बंदिशें गाई जाती हैं, जिसमें ईश्वर की आराधना से लेकर वसंत के शृंगार तक के गीत शामिल होते हैं। तमाम संस्थाओं ने नैनीताल में होली के पारंपरिक स्वरूप को पुनर्जीवित किया है। नयना देवी मंदिर से शुरू होकर पूरे नगर में होलियां गाई जाती हैं, जिससे उत्सव की भव्यता और बढ़ जाती है। अल्मोड़ा के हुक्का क्लब की होलियों की अपनी अलग पहचान है। बैठकी होली के रागों का आनंद लेने के लिए रंगकर्मी, कलाकार और स्थानीय लोग देर रात तक जुटे रहते हैं। इस होली का इतिहास 150 साल से भी अधिक पुराना है, जिसकी शुरुआत पौष महीने के प्रथम रविवार से होती है। शिवरात्रि के बाद होली का उत्सव अपने पूरे उफान पर होता है, जिसमें शास्त्रीय रागों पर आधारित गीतों के माध्यम से ईश्वर की आराधना की जाती है। बैठकी होली में मुख्य कलाकार गीतों का मुखड़ा गाते हैं और श्रोता भी बीच-बीच में सुर से सुर मिलाकर साथ देते हैं। जहां संगीत बनता है रंगों का साथी, वह है कुमाऊं की बैठकी होली। यह 1860 में अल्मोड़ा की सांस्कृतिक नगरी से शुरू हुई, आज भी पूरे नगर में अपनी अनूठी परंपरा के रूप में गाई जाती है। इस होली में गाए जाने वाले गीत विभिन्न रागों, जैसे काफी, जंगला काफी, खमाज, देश, विहाग, जैजैवंती और जोगिया आदि पर आधारित होते हैं। ये गीत समय के अनुसार और उत्सव की भावना के साथ गाए जाते हैं। आज यह होली समारोह नैनीताल की पर्यटन नगरी में एक आकर्षण का केंद्र बन चुका है।

https://t.me/AllNewsPaperPaid

कल्पमेधा

जो दूसरों पर उपकार जताने का इच्छुक है, वह द्वार खटखटाता है। जिसके हृदय में प्रेम है, उसके लिए द्वार खुले हैं।
– रवींद्रनाथ ठाकुर

संख्यात्मक झमेला

दूसरी नजर
पी चिदंबरम

> वर्णमाला, अंकगणित और 'अल्फा-न्यूमेरिक्स' की वजह से पैदा हुआ यह झमेला ऐसा रूप ले चुका है, जो राष्ट्रीय हित और यहां तक कि राष्ट्रीय सुरक्षा को भी खतरे में डाल सकता है। इसलिए विकसित भारत के लक्ष्यों को आगे बढ़ाने की सलाह देने के लिए 'चैट-जीपीटी' की मदद मांगी गई है।

हम सोचते थे कि आइटी, सीबीआइ, ईडी, एसएफआइओ, एनसीबी, एनआइए वगैरह जैसे वर्णों का शोरबा यानी सूप ही हमारे सामने है। जब भी दो लोग चाय या काफी पर साथ बैठते थे तो अक्सर ये सवाल पूछे जाते थे कि- बड़ा भाई कौन है? सबसे आगे कौन है? घुसपैठिया कौन है? कौन अधिक ताकतवर है? सत्ताओं का पसंदीदा कौन है? पर जैसे ही तीन या इससे अधिक लोग होते, तो सारे चुप्पी साध जाते थे। यह कुछ उसी तरह का होता था, मानो सामूहिक चुप्पी का संकेत (ओमेर्टा) जारी हो गया हो। इन सारे सवालों पर विराम लगाने के लिए, मेरा सुझाव था कि हर मतदान केंद्र में एक ईवीएम रखवा दी जाए, सभी उम्मीदवार-एजंसियों की सूची बनाई जाए और लोगों से कहा जाए कि वे अपनी पसंदीदा एजंसी को वोट दें। पचासी वर्ष से अधिक आयु के व्यक्ति अपने घर से मतदान कर सकते हैं... कोई 'नोटा' विकल्प नहीं होगा।

इस शोरबा संग्राम में एक नया व्यंजन शामिल हो गया- सीएए-एनआरसी। (एनआरसी का मकसद राष्ट्रीय रजिस्टर में सभी नागरिकों की गणना करना था। एक शैतानी प्रक्रिया अपनाई गई। जब देशभक्त लेखकों को लगा कि लाखों हिंदुओं को गणना से वंचित कर दिया गया है, तो उन्होंने सीएए का आविष्कार किया, जो अफगानिस्तान, बांग्लादेश और पाकिस्तान के मुसलमानों को छोड़कर सभी को नागरिकता प्रदान करने और परिणामस्वरूप, एनआरसी में शामिल होने की अनुमति देगा। इस प्रक्रिया में, श्रीलंका के सताए गए तमिलों और नेपाल तथा म्यांमा के भारतीय मूल के लोगों के हितों के साथ छल किया गया।) एनआरसी केवल असम में उपलब्ध है। सीएए को 11 मार्च, 2024 को 'मेनू' में शामिल किया गया। फिलहाल उच्च न्यायालय में एनआरसी-सीएए के नमूने का परीक्षण चल रहा है।

हाल ही में, हमें अहसास हुआ है कि हम एक संख्यात्मक झमेले में फंसे हुए हैं। एक समय था जब हर आदमी को बोर्ड परीक्षाओं में केवल रोल नंबर पता होता था। मगर जल्द ही, बहुत सारी संख्याएं हमारे जीवन में शामिल हो गईं। राशन कार्ड नंबर, वोटर आइडी नंबर, दुपहिया या कार पंजीकरण नंबर, लैंडलाइन टेलीफोन नंबर, पासपोर्ट नंबर, सर्वव्यापी मोबाइल नंबर और आधार नामक ईश्वरीय-नंबर, जो सर्वव्यापी और सर्वशक्तिमान है। अब, सारे नंबरों को मात देने वाला एक नंबर आ गया है- इलेक्टोरल बांड (ईबी) का वर्ण-मिश्रित संख्यात्मक नंबर यानी 'अल्फा-न्यूमेरिक' नंबर। यहां तक कि भारत का सर्वशक्तिमान सर्वोच्च न्यायालय भी भयग्रस्त भारतीय रिजर्व बैंक (एसबीआइ) की गिरफ्त वाले अल्फा-न्यूमेरिक नंबरों को नहीं खोल सका। कुछ दिनों तक तो ईबी-एसबीआइ, ईडी-सीबीआइ से भी ताकतवर लग रहा था।

इन दिनों शहर में एक नया 'गेम' आया है। गेम के पहले संस्करण को 'ज्वाइन-द-अल्फाबेट्स' कहा जाता है। इस खेल की प्रथम विजेता सीबीआइ-ईडी थी। ईडी नाराज था। उसका दावा था कि वही प्रमुख प्रतिभागी है और ईडी-सीबीआइ को विजेता घोषित किया जाना चाहिए। मगर निर्णायक मंडल अभी बाहर है। लोकसभा चुनाव की मतगणना के बाद ही इस पर फैसले की उम्मीद की जा सकती है। दिल्ली में अफवाह है कि अगर ईडी-सीबीआइ विजेता घोषित की गई तो यह लोकसभा का आखिरी चुनाव हो सकता है और अगर ऐसा हुआ तो चुनाव पर होने वाला सारा खर्च बच जाएगा। कोविंद समिति ने जब 'एक राष्ट्र, एक चुनाव' की सिफारिश की, तो इस भारी बचत को ध्यान में नहीं रखा गया। अगर समिति ने इस बचत को ध्यान में रखा होता, तो उसने 'एक राष्ट्र, कोई चुनाव नहीं' की सिफारिश की होती।

सीबीआइ-आइटी भी किसी रूप में सीबीआइ-ईडी या ईडी-सीबीआइ से पीछे नहीं है। अगर सीबीआइ नकदी जब्त करती है तो वह आयकर विभाग (आइटी) की हो जाती है। अगर आइटी ने नकदी जब्त कर ली तो क्या होगा? पारंपरिक ज्ञान तो यही कहता है कि अगर आइटी ने नकदी जब्त की तो वह आइटी की होगी। पर अब, अपरंपरागत ज्ञान ने पारंपरिक ज्ञान को पछाड़ दिया है। अगर आइटी नकदी जब्त करेगी, तो उसके दो दावेदार होंगेः सीबीआइ और ईडी। सीबीआइ का दावा होगा कि यह 'आय के ज्ञात स्रोतों से अधिक संपत्ति' है। ईडी का दावा होगा कि यह 'अपराध की कमाई' है। इस मुद्दे पर भी निर्णायक मंडल बाहर है।

'गेम' के दूसरे संस्करण को 'ज्वाइन-द-नंबर्स' कहा जाता है। 22,217 चुनावी बांडों की 'अल्फा-न्यूमेरिक' पहचान जारी करने के लिए एसबीआइ को चार घोड़ों के साथ बांध कर घसीटना पड़ा। जब मैं यह लिख रहा हूं, तो 'अल्फा-न्यूमेरिक सूप' परोसा जा चुका है। कई दानदाताओं को यह सूप कड़वा लग सकता है। कुछ दान लेने वाले दलील देंगे कि जब सूप बन रहा था तो वे रसोई में नहीं थे; कुछ अन्य लोग तर्क दे सकते हैं कि सूप उनके गले में जबरदस्ती डाला गया और उन्हें इसे निगलना पड़ा। नतीजतन, इस सूप को 'स्वास्थ्य के लिए खतरनाक' मानकर प्रतिबंधित किया जा सकता है।

वर्णमाला, अंकगणित और अल्फा-न्यूमेरिक्स की वजह से पैदा हुआ यह झमेला ऐसा रूप ले चुका है, जो राष्ट्रीय हित और यहां तक कि राष्ट्रीय सुरक्षा को भी खतरे में डाल सकता है। इसलिए विकसित भारत के लक्ष्यों को आगे बढ़ाने की सलाह देने के लिए 'चैट-जीपीटी' की मदद मांगी गई हैः नया लक्ष्य होगा- भारत की जीडीपी को दुनिया में (प्रथम) सबसे बड़ा बनाना; किसानों की आय तीन गुनी करना; प्रति वर्ष पांच करोड़ नौकरियां सृजित करना; और हर भारतीय के बैंक खाते में 150 लाख रुपए डालना।

परेशानी का सबब बनी वर्णमाला, संख्याओं और 'अल्फा-न्यूमेरिक्स' को समझने के लिए चैट-जीपीटी के अलावा, 'एआई' एक क्रांतिकारी पहचान उपकरण साबित हो सकता है, जो अदृश्य, अश्रव्य, श्वासरोधी और अखाद्य होगा। बहुत सारे सूपों ने देश के अंगों को नुकसान पहुंचाया है, इसलिए माना जा रहा है कि आंख, कान, नाक और जीभ को लंबे समय तक आराम देने की जरूरत है। नीति-आयोग, जो भारत में सारी खुफिया जानकारी का आधिकारिक भंडार है, उसे 'एआइ' के साथ सहयोग करने को कहा जा सकता है।

एक पुरानी कहावत है, 'अंत भला तो सब भला'। पर अब एक नई कहावत है- 'जैसा आगाज वैसा अंजाम'। सूप की अनेक किस्मों के लिए धन्यवाद। अब हम वापस वहां चलेंगे, जहां 2004 में इसकी शुरुआत हुई थी।

अच्छे दिन आने वाले हैं।

गरिमा की रेखा

वक्त की नब्ज
तवलीन सिंह

> वास्तव में गरीबी की रेखा हटा कर गरिमा की रेखा बनाने की आवश्यकता है, ताकि एक नए मापदंड के जरिए हम देख सकें भारतवासियों का हाल। जहां जाती हूं आजकल, दिखते हैं भगवा झंडे, जो राम मंदिर निर्माण के बाद लगाए गए हैं। गहरी श्रद्धा और उम्मीद से लगाए हैं लोगों ने ये ध्वज, लेकिन रामराज्य अभी बहुत दूर है।

चुनाव आते हैं, चुनाव जाते हैं, लेकिन कुछ चीजें हैं अपने भारत महान में जो कभी नहीं बदलती हैं। एक पत्रकार की हैसियत से मैंने पहला लोकसभा चुनाव देखा था 1977 में। उस चुनाव में मतदाताओं में आपातकाल की वजह से कांग्रेस के खिलाफ इतना गुस्सा था कि इंदिरा गांधी को रायबरेली से हरा दिया और संजय गांधी को अमेठी से। इंटरनेट और सेलफोन उस समय थे नहीं, तो जिस दिन परिणाम आने थे हम पत्रकार दिल्ली के बहादुरशाह जफर मार्ग पर देर रात तक खड़े रहे अखबार के दफ्तर के बाहर। वहां एक बड़ा-सा बोर्ड था, जिस पर नतीजे दिखाए जा रहे थे। हजारों लोग इकट्ठा हुए थे उस जगह और जब इंदिरा गांधी और उनके बेटे के हारने की खबर दिखाई गई उस बोर्ड पर तो ढोल बजने लगे और लोग नाचने लगे थे।

लोगों ने दिल लगा कर जिताया था जनता पार्टी को, सिर्फ इसलिए नहीं कि उनको नसबंदी और झुग्गी बस्तियों के उजाड़े जाने जैसी नीतियों से गुस्सा था। इतना गुस्सा था कि पुरानी दिल्ली में लोगों ने मतदान केंद्रों में 'जेल नसबंदी, जेल बुलडोजर' जैसे नारों की गूंज के बीच वोट किया था। मगर इस गुस्से में एक उम्मीद भी थी कि नई सरकार जब बनेगी तो आम लोग अपने जीवन में परिवर्तन देख सकेंगे। उम्मीद थी कि जिस गरीबी और गंदगी में वे जी रहे थे, उसे कम करने का काम करेगी नई सरकार। जब ऐसा नहीं हुआ और जनता पार्टी की सरकार मुश्किल से दो वर्ष चली तो मायूस होकर फिर से भारत के मतदाताओं ने इंदिरा गांधी को प्रधानमंत्री बनाया। जानते थे लोग कि इंदिराजी का 'गरीबी हटाओ' वाला नारा खोखला साबित हो चुका था, लेकिन जिताया उनको इसलिए कि कम से कम शासन चलाना जानती थीं। उसके बाद कांग्रेस का लंबा दौर चला और इस दौरान मैंने कई लोकसभा चुनाव होते देखे, जिनमें परिवर्तन की आशा कम नहीं हुई।

जबसे मोदी प्रधानमंत्री बने हैं, 'परिवर्तन' और 'विकास' की बातें ज्यादा हुई हैं। आज भी होती रहती हैं मोदी की 'गारंटियों' के बीच। लेकिन जब मैं निकलती हूं ग्रामीण भारत में परिवर्तन और विकास ढूंढ़ने, तो पाती हूं कि जमीन पर इतना कुछ हुआ नहीं है जितना मोदी की गारंटी वाले इश्तिहार बताते हैं। इस बात को मैंने जब 'इंडिया टुडे कान्क्लेव' में भारत सरकार के एक आला अधिकारी से कही, तो उसने कहा, 'पहले से तो बेहतर हाल है कि नहीं?' यथार्थ यह है कि पहले से बेहतर हाल कुछ क्षेत्रों में जरूर दिखता है। सड़कें बन गई हैं, इंटरनेट आ गया है, सबके पास मोबाइल फोन आ गए हैं, लेकिन सच यह भी है कि हमारी नदियां प्रदूषित अब भी हैं। हमारे शहरों की हवा इतनी प्रदूषित है कि दुनिया के पचास सबसे प्रदूषित शहरों में से बयालीस भारत में हैं।

उसी 'कान्क्लेव' में 'इंडिया टुडे' के संपादक अरुण पुरी ने अपने भाषण में स्वीकार किया कि गरीबी रेखा से ऊपर निकल कर आए हैं बीस करोड़ लोग पिछले दशक में, लेकिन मापदंड बदलने की जरूरत है अब। गरीबी रेखा के नीचे वे गिने जाते हैं, जो दिन में दो अमेरिकी डालर (160 रुपए) पर जीवन गुजारते हैं। इतना तो मुंबई में फुटपाथ पर रहनेवाले लोग भी कमा लेते हैं। इसलिए उनका सुझाव था कि अब गरिमा की रेखा होनी चाहिए, गरीबी की नहीं। उन्होंने साफ शब्दों में कहा कि जिनको अच्छी शिक्षा नहीं मिलती है, जिनके जीवन में आधुनिक स्वास्थ्य सेवाओं का अभाव है, जिनको रोजगार के लिए अपने घर छोड़ कर दूर शहरों में जाना पड़ता है, उनको अब भी गरीब माना जाना चाहिए।

उनके फौरन बाद बोलीं वित्तमंत्री निर्मला सीतारमण। उन्होंने अपने भाषण में स्पष्ट किया कि सरकार की पूरी कोशिश है लोगों को गरिमा के साथ जीने के लिए हर सुविधा दी जाए। इसी प्रयास में दी गई हैं ग्रामीण भारत में उज्ज्वला योजना और प्रधानमंत्री आवास योजना जैसी चीजें। आने वाले लोकसभा चुनाव में माना जाता है कि इन योजनाओं के लाभार्थियों की एक अलग श्रेणी होगी, जिनका वोट भाजपा को ही जाएगा इस उम्मीद से कि तीसरी बार जीतने के बाद मोदी की गारंटियां और भी मजबूत जो जाएंगी।

क्या ऐसा होगा? सच पूछिए तो मेरे शुरुआती दौरों ने मुझे काफी निराश कर दिया है। मैं जब नए, आधुनिक, आलीशान हाइवे से उतर कर गई गांवों में तो ज्यादातर मुझे लोग ऐसे मिले जो मानते हैं कि मोदी जीतेंगे जरूर, लेकिन उनके अपने जीवन में पिछले पांच सालों में इतना थोड़ा परिवर्तन आया है कि न होने के बराबर। मोदी को पसंद करते हैं फिर भी ग्रामीण भारत के लोग, इसलिए कि उनको पसंद है कि अयोध्या में राम मंदिर बन गया। उनको पसंद है कि अनुच्छेद 370 हटा दिया गया और पसंद है कि मोदी जब से प्रधानमंत्री बने हैं उनको लगता है कि कुछ तो परिवर्तन लाने के लिए प्रयास हुआ है। लेकिन आज भी स्वच्छ पानी जैसी बुनियादी जरूरतों का अभाव दिखता है।

निजी तौर पर मुझे बहुत तकलीफ होती है जब देखती हूं कि चमकती सड़कों के नीचे बस्तियां उतनी ही बेहाल हैं, जो दशकों पहले मैंने देखी थीं उस 1977 वाले चुनाव में, जब मुख्य मुद्दा था इंदिरा को हराना। वास्तव में गरीबी की रेखा हटा कर गरिमा की रेखा बनाने की आवश्यकता है, ताकि एक नए मापदंड के जरिए हम देख सकें भारतवासियों का हाल। जहां जाती हूं, आजकल दिखते हैं भगवा झंडे, जो राम मंदिर निर्माण के बाद लगाए गए हैं। गहरी श्रद्धा और उम्मीद से लगाए हैं लोगों ने ये ध्वज, लेकिन रामराज्य अभी बहुत दूर है।

धर्मनिरपेक्षता का भारतीय पक्ष

संदर्भ
राकेश सिन्हा

> धर्मनिरपेक्षता का भारतीय पक्ष समझने के लिए संस्कृति और पूजा पद्धति में अंतर रेखांकित करना आवश्यक है। हालांकि दोनों पर एक दूसरे का सीमित प्रभाव है, पर दोनों की स्वायत्तता भी बनी रहती है। जब एक दूसरे पर आरोपित करने का प्रयास होता है, तब विवाद गहराता है और यूरोप मार्गदर्शक बन जाता है।

चुनाव के समय जो शब्द सबसे अधिक विमर्श का हिस्सा बनता है वह है धर्मनिरपेक्षता। यह कुछ हद तक देश की राजनीति ही नहीं, बौद्धिक, अकादमिक जगत सहित अन्य क्षेत्रों में ध्रुवीकरण का कारण भी बनता है। राजनीति का अपना स्वभाव होता है। इसे जानते-समझते भी बौद्धिक अकादमिक जगत उसी बहस का सहचर बनता है। यही कारण है कि लंबी समयावधि में भी हम अपनी संस्कृति को परिभाषित नहीं कर पाए हैं। समाजशास्त्र की पुस्तकें यूरोपीय दृष्टिकोण से उधार लेकर परिभाषाएं एवं प्रकृति को गढ़ती रही हैं।

एक विडंबना और विरोधाभास रोचक है। भारतीय राजनेता जो यूरोप से शिक्षित हुए और वहां की वैश्विक दृष्टि से प्रभावित हुए, वे उसी में भारत के लोगों के धार्मिक व्यवहार और परंपरा को देखने की कोशिश करते रहे। इनमें स्वयं प्रथम प्रधानमंत्री पं जवाहर लाल नेहरू भी थे। उन्हें इस दृष्टिकोण को आधिपत्यवादी बनाने में मार्क्सवादी विद्वानों का साथ मिला। हमारी अपनी संस्कृति और पूर्वजों की धार्मिक प्रवृत्ति गोलमटोल प्रशंसनीय लेखों की सामग्री बनकर रह गई। एक दूसरा पक्ष भी है। यूरोप के जो अधिकारी और समाजशास्त्री भारत आए, उन्होंने भारत के अंतर्मन को समझने का प्रयास किया। इसका सबसे अच्छा उदाहरण औपनिवेशिक काल की आठ जनगणनाएं हैं। पहली जनगणना 1872 में शुरू हुई और अंतिम 1941 में। इसकी खास बात थी कि यह सिर्फ संख्या गिनने और सामाजिक-आर्थिक पक्ष जानने तक सीमित नहीं थी, बल्कि बहुत ही गहन तरीके से समुदायों, जातियों, वर्गों में विभाजित लोगों का स्वभाव, उनकी परंपराएं, इतिहास और आध्यात्मिक वृति समझने के अवसर के रूप में उपयोग किया गया। इसलिए उन रपटों में विस्तार से उसका उल्लेख भी किया गया है। उनमें अनेक इस सूक्ष्म संस्कृतियों, परंपराओं आध्यात्मिक चेतना से प्रभावित होने से नहीं बच पाए।

इन रपटों से समाजशास्त्रियों ने आंकड़े लिए, पर उनके पीछे जो वैचारिक समझ थी, उसे छोड़ दिया। औपनिवेशिक जनगणना पर बहुत ही अल्प अध्ययन भी इसका एक बड़ा कारण है। इन रपटों के अध्ययन से धर्मनिरपेक्षता के भारतीय पक्ष को समझना आसान होगा और उस अध्ययन शैली से समकालीन शोध को बड़ा फलक मिल सकता है। वास्तव में 1872 की जनगणना में यह प्रश्न उठाया गया था कि 'हिंदू कौन है!' उसके बाद की सभी जनगणनाओं में राष्ट्रीय और प्रदेश स्तर की रपटों में इसका उत्तर ढूंढ़ा जाता रहा। आखिर निष्कर्ष निकला कि विविधताओं से पूर्ण हिंदू शब्द को परिभाषित करना असंभव है।

धर्मनिरपेक्षता का भारतीय पक्ष समझने के लिए संस्कृति और पूजा पद्धति में अंतर रेखांकित करना आवश्यक है। हालांकि दोनों पर एक दूसरे का सीमित प्रभाव है, पर दोनों की स्वायत्तता भी बनी रहती है। जब एक दूसरे पर आरोपित करने का प्रयास होता है, तब विवाद गहराता है और यूरोप मार्गदर्शक बन जाता है।

धर्मनिरपेक्षता की बुनियाद संस्कृति होती है जो एक समाज के लंबे समय से उसके व्यवहार, उसकी आकांक्षा और परस्पर संबंधों के आधार पर निर्धारित होती है। भारत में मूल आस्था हिंदू चेतना से जुड़ी रही है। जब तक उस चेतना का आयाम हम नहीं समझ पाते, उसकी प्रवृत्ति को सही रूप स्वरूप में नहीं जान पाएंगे। व्यवहार की स्वतंत्रता ही इसके मूल में है। व्यक्ति और समुदाय व्यवहार में प्रयोगधर्मी है। इसी ने विविधता को भारतीय समाज का स्थायी भाव बना दिया। आध्यात्मिक साहित्य, वेद, उपनिषद, पुराणों मे यह दार्शनिक रूप में परिलक्षित है। इसी कारण से बहुमतवाद का साया भारतीय धर्म-संस्कृति के प्रवाह पर नहीं पड़ा, जिसे हम यूरोप और इस्लामी दुनिया में देखते है। जब पूरी दुनिया में पारसी समुदाय संकट में था, तब 1921 और 1931 के बीच इसकी जनसंख्या 7.8 फीसद की दर से भारत में बढ़ी। 31 करोड़ आबादी वाले देश में तब एक लाख नौ हजार सात सौ बावन पारसी और चौबीस हजार यहूदी आस्था और संस्कृति में पूर्ण स्वतंत्र थे। किसी ने उन पर चोट की कल्पना तक नहीं की। भारतीय धर्मनिरपेक्षता समन्वयात्मक रास्ते से चलती है। यह राह अपरिवर्तनीय है। इसकी संस्कृति का प्रभाव दूसरी पूजा पद्धतियों पर हुआ। कोलकाता में एक काली मंदिर का नाम फिरंगी काली मंदिर है। संस्कृति रचनात्मक संवाद और सामुदायिक सहयोग पर आधारित है। तभी तो 1921 की जनगणना रपट में बताया गया कि मदुरई के तंजौर मंदिर में मुसलिम ट्रस्टी थे, जो रक्षासूत्र और चंदन-टीका कर मंदिर की बैठकों में आते थे। मद्रास के जनगणना अधिकारी जे चार्ल्स मोलोनी ने 1921 में लिखा था कि नागोर में मुसलिम 'अल्ला-ईश्वर' की मूर्ति बनाकर तीर्थयात्रा पर जाते थे और साथ तीर्थयात्रा एक हज के समकक्ष माना जाता था।

संस्कृति विरोधाभासों को समाप्त करती है और सामुदायिकता बढ़ाती है। भारत की धर्मनिरपेक्षता का यह प्रवाह ही इसे जीवंत बनाता है। चुनावी शोरगुल से हटकर संस्कृति, अध्यात्म, दर्शन के भारतीय प्रकृति पर वैज्ञानिक और सर्वेक्षण आधारित अध्ययन हमें अपनी परिभाषा और प्रकृति गढ़ने और समझने का अवसर देता है। यह एक चुनौती भी है भारत के अकादमिक जगत के लिए।

कभी अर्श पर कभी फर्श पर

बाखबर
सुधीश पचौरी

> फिर एक दिन एक बड़ी विपक्षी पार्टी के नेताओं के संवाददाता सम्मेलन में 'शिकायत' कि ऐन चुनावों के बीच आयकर विभाग ने हमारी पार्टी के खाते 'फ्रीज' किए हैं। यह लोकतंत्र पर हमला है... ट्रेन तक के पैसे नहीं हैं..!

एक दिन चुनाव आयुक्त ने संवाददाता सम्मेलन के शुरू में ही 'ईवीएम' के निंदकों को एक शेर से नवाजा कि 'अधूरी हसरतों का इल्जाम हम पर लगाना ठीक नहीं...' और फिर कुल सात चरणों में लोकसभा चुनाव कराने की घोषणा करके बहुत से दलों के दिलों को तोड़ दिया... हाय, चुनाव बयालीस दिनों तक क्यों फैलाया? एक चर्चक बोले कि तीन दिन में कर सकते थे, दूसरे कहे कि हमारे प्यारे राज्य में तो एक दिन में ही हो जाता... और फिर वही आरोप कि ये चुनाव आयोग भी सरकार के इशारों पर काम कर रहा लगता है... कि लोकतंत्र खतरे में है! इस सप्ताह हर दिन लोकतंत्र खतरे में आता रहा!

एक चैनल के कार्यक्रम में प्रधानमंत्री का संबोधन और लगभग हर वाक्य पर ताली और कई बार नारे लगे! मैं आपके अगले कार्यक्रम में भी आऊंगा... और ताली पर ताली। फिर चैनल के एक शो को लेकर मोदी का अचानक कह उठना कि ये ही 'मूड आफ नेशन' है... और ताली... मैं 2024 के लिए लगा हुआ हूं... और ताली...!

इसी बीच विपक्ष के एक बड़े नेता ने अपने मौलिक अंदाज में कह डाला कि हिंदू धर्म में एक शब्द 'शक्ति' है... हम उस शक्ति से लड़ रहे हैं। उनके इस मौलिक विमर्श पर जब मार पड़ी तो पैरोकार कहने लगे कि उनका मतलब 'मोदी की शक्ति' से था। ऐसी ढीली गेंद को प्रधानमंत्री कहां छोड़ने वाले थे। इसलिए तुरंत दक्षिण की एक जनसभा में उन्होंने जवाब दिया, मैं भारतमाता का पुजारी हूं। जिन्होंने कल शक्ति को खत्म करने की बात की है, मैं चुनौती कबूल करता हूं। शक्ति की पूजा के लिए मैं जीवन खपा दूंगा। हिंदुस्तान शक्ति की आराधना करता है। फिर जनता से कहा कि क्या आप शक्ति के विनाश का मौका देंगे! एक ओर शक्ति के विनाश करने वाले लोग हैं, दूसरी ओर शक्ति के पुजारी हैं, इसका मुकाबला चार जून को हो जाएगा। यहां हर वाक्य पर ताली थी और नारे थे।

इसके आगे की चर्चा और भी मनोरंजक थी। कुछ प्रवक्ता 'कच्चे शक्ति विमर्श' को अर्थाए जाते थे कि उनका मतलब ये नहीं था, वो नहीं था। अरे भाई अगर किसी बात को बार-बार अर्थाना पड़े तो वैसा बोला क्यों? एक अन्य चर्चक ने कहा कि भाषा के मामले में उनका हाथ तंग लगता है। फिर एक हमदर्द पत्रकार ने कहा कि यह उनके 'आ बैल मुझे मार' वाला मामला है। भाजपा तो इसे लपकती ही। उनका भाषण लिखने वालों को पहले सोचना चाहिए कि उनको क्या बोलना है, क्या नहीं। एक चैनल ने तो यहां तक लिखा कि यह 'इंडी' का 'पैथोलाजिकल नजरिया' है। एक चर्चक बोला कि यह इनकी 'हताशा' है।

फिर एक शाम अन्य अंग्रेजी चैनल का कार्यक्रम और प्रधानमंत्री का फिर एक संबोधन कि पिछली बार आपके कार्यक्रम से निकला था तो बालाकोट में 'एअर स्ट्राइक' की थी। एक वह दिन था और एक आज का दिन है। सबने 'राइजिंग भारत' का अनुभव किया है। एक सुरक्षित राष्ट्र ही विकसित राष्ट्र का आधार होता है। यही 'राइजिंग भारत' है... चुनाव का मौसम है..। विरोधी नए कीर्तिमान बना रहे हैं। इसके बावजूद दुनिया का सबसे बड़ा चुनाव जारी है। आज भारत का आत्मविश्वास ऊंचा है, जिसे हर भारतीय महसूस करता है। हमने पच्चीस करोड़ लोग गरीबी से निकाले हैं। ये 'राष्ट्र प्रथम' की नीयत है। नीयत सही तो काम सही। जिसे किसी ने नहीं पूछा, उसे मोदी ने पूजा। जिसकी कोई गारंटी नहीं, उसकी गारंटी मोदी लेता है। अभी और आगे जाना है।... हर वाक्य पर ताली पर ताली।

फिर एक दिन एक बड़ी विपक्षी पार्टी के नेताओं के संवाददाता सम्मेलन में 'शिकायत' कि ऐन चुनावों के बीच आयकर विभाग ने हमारी पार्टी के खाते 'फ्रीज' किए हैं। यह लोकतंत्र पर हमला है... ट्रेन तक के पैसे नहीं हैं..!

ऐसी कुघड़ी में भी सत्ता प्रवक्ताओं को दया न आई। वे कोंचते रहे कि वक्त से आयकर नहीं दोगे तो यही होगा। जब भी ऐसा होता है, तभी ये कहते हैं कि लोकतंत्र खतरे में है।

गुरुवार की शाम केजरीवाल के लिए आफत आई। हाई कोर्ट ने राहत न दी। अवसर देख 'ईडी' ने पुलिस बल के साथ उनके आवास को घेरा। उनके कुछ दस्तावेज और कंप्यूटर जब्त कर रात के नौ बजे उनको गिरफ्तार करके दफ्तर ले गई। आप प्रवक्ता विरोध करते रहे कि यह लोकतंत्र का गला घोंटना है, कि मोदी को सबसे बड़ी चुनौती केजरीवाल से थी। केजरीवाल व्यक्ति नहीं एक विचार हैं। विचार को कभी गिरफ्तार नहीं किया जा सकता। करोगे तो सैकड़ों केजरीवाल पैदा होंगे। यह मन को समझाना था। एक भाजपा नेता ने सीधे चोट कीः जैसा करोगे वैसा भरोगे।

केजरीवाल के तेज 'उत्थान पतन' को देख ये पंक्तियां याद आती रहींः

कभी अर्श पर कभी फर्श...
गमे-आशिकी तेरा शुक्रिया मैं कहां-कहां से गुजर गया...!

नई दिल्ली

www.readwhere.com

दिल्ली शराब नीति घोटाले में ईडी की एक्शन और उस मामले में दिल्ली के मुख्यमंत्री व आम आदमी पार्टी के संयोजक अरविंद केजरीवाल की गिरफ्तारी के बाद जहां आप और भाजपा के बीच सियासी संग्राम छिड़ा हुआ है, वहीं दिल्ली सरकार पर भी संकट गहराने का खतरा बढ़ गया है। गिरफ्तारी के बाद अरविंद केजरीवाल ने पद से इस्तीफा नहीं दिया है, इसलिए कयास लगाए जा रहे हैं कि क्या वे जेल से सरकार चलाएंगे, यदि हां तो कैसे? यदि नहीं तो दिल्ली की कमान अब किसके हाथ में होगी? नए मुखिया या एलजी के हाथ में? अरविंद के जेल में रहने से क्या आम आदमी पार्टी एकजुट रह सकेगी? लोकसभा चुनाव में केजरीवाल के बिना आप चुनाव कैंपेन कैसे करेगी और नए नेता कितना प्रभाव डाल पाएंगे? जैसी की चर्चा है, अगर अरविंद केजरीवाल को अपना पद छोड़ना पड़ सकता है, तो उनकी पत्नी सीएम के रूप में दिल्ली की कमान संभाल सकती है, अगर ऐसा होता है तो पार्टी के समर्पित नेताओं को एकजुट रख पाना मुश्किल होगा। क्या विपक्षी गठबंधन इंडिया को कोई फायदा होगा? भ्रष्टाचार के विरोधी से भ्रष्टाचार के आरोप तक अरविंद की राजनीति का आंकलन करता आजकल का यह अंक...

सियासी चश्मे से न देखें गिरफ्तारी

विश्लेषण
प्रणय यादव
वरिष्ठ टीवी पत्रकार

अब लोकसभा चुनाव का वक्त है। बीजेपी करप्शन को विपक्ष के खिलाफ बड़ा मुद्दा बना रही है, इसलिए विरोधी दलों के नेता करप्शन के कैसेज में हो रहे एक्शन को एजेंसियों के दुरुपयोग, और लोकतन्त्र को खत्म करने जैसा बता कर भ्रष्टाचार के मुद्दे की धार को कम करने की कोशिश कर रहे हैं। हालांकि इससे ईडी के एक्शन में कमी आएगी, इसकी उम्मीद नहीं करनी चाहिए, क्योंकि मोदी दस साल से देश के प्रधानमंत्री है। दो बार लोकसभा के इलेक्शन हो चुके हैं। हर बार चुनाव से पहले इस तरह के मुद्दे उठे, लेकिन पीएम का करप्शन के खिलाफ कमिटमेंट कम नहीं हुआ। एक्शन में और तेजी आई। विरोधी नेता जितना ज्यादा इस मुद्दे पर बोलेंगे। मोदी उससे ज्यादा करप्शन के खिलाफ अभियान को आगे बढ़ाएंगे।

शराब घोटाले के केस में दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविन्द केजरीवाल की गिरफ्तारी बड़ा चुनावी मुद्दा बन गया है। हालांकि यह मामला करप्शन का है, एक्शन ईडी का है, लेकिन सवाल सरकार पर उठ रहे हैं। इल्जाम ये है कि सरकार ने ईडी को विरोध की आवाज को दबाने का हथियार बना लिया है। सरकार की तरफ से तमाम तरह के तर्क दिए जा रहे हैं। कोर्ट के फैसले का हवाला दिया जा रहा है, चूंकि ईडी की गिरफ्त में विरोधी दलों के अनेक नेता फंसे हैं, इसलिए ये दावा किया जा रहा है कि सब सरकार के इशारे पर हो रहे हैं।

सरकार पर सवाल

कुछ बातों पर ध्यान देना जरूरी है। ये सही है कि प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) पिछले छह सालों में कुछ ज्यादा सक्रिय हुआ है। उसके एक्शन में तेजी आई है, लेकिन गौर करने वाली बात ये है कि ईडी के मामलों में कन्विक्शन रेट बहुत कम या कहें कि न के बराबर है। करीब साढ़े पांच हजार केस दर्ज किए हैं, जिनमें से 24 मामलों में फैसला आया और 23 में सजा हुई है। चूंकि 24 कैसेज का फैसला आया और इनमें से 23 मामलों में सजा हुई है, इसलिए ईडी ये दावा कर सकता है कि कन्विक्शन रेट 98 परसेंट है। अगर कुल दर्ज मामलों के लिहाज से देखा जाए तो ये कन्विक्शन रेट शून्य ही कहा जाएगा। इसी आधार पर विरोधी दलों के नेता ये इल्जाम लगा रहे हैं कि ईडी विरोधियों को डराने का सरकार का हथियार बन गया है। सिर्फ केस दर्ज किए जाते हैं। विरोधियों को बदनाम किया जाता है, कुछ लोगों को जेल में डाला जाता है और उसके बाद मामला ठंडे बस्ते में चला जाता है। इस मामले में ईडी का ये तर्क हो सकता है कि जांच करके तथ्यों और सबूतों को अदालत के सामने रखना उसका काम है। फैसला अदालत करती है, इसलिए कन्विक्शन रेट के आधार पर उसकी जांच की विश्वसनीयता और निष्पक्षता पर सवाल उठाना ठीक नहीं है।

ईडी भी घेरे में

सवाल य़े भी है कि अगर ईडी का एक्शन निष्पक्ष है तो फिर विरोधी दलों के नेताओं पर ही ईडी की नजर क्यों पड़ती है। सरकार ने पार्लियामेंट में पिछले साल जो आंकड़े रखे थे। उसके मुताबिक पिछले तीन सालों में ईडी ने पीएमएलए के तहत कुल 3110 कैसेज दर्ज किए थे, जबकि उससे पहले सात सालों में पीएमएलए के तहत हर साल औसतन दो सौ केस दर्ज हुए। पिछले तीन वर्षों में ईडी ने जो कार्रवाई की, उसमें करीब 95 परसेंट विरोधी दलों के नेताओं के खिलाफ हुई। एक अंग्रेजी अखबार में एक रिपोर्ट छपी थी, जिसमें कहा गया था कि 2014 से लेकर 2022 के बीच ईडी ने कुल 121 नेताओं के खिलाफ एक्शन लिया, जिनमें से 115 नेता विपक्ष के थे।

अरविन्द केजरीवाल का मसला दूसरी तरह का है। कांग्रेस के नेताओं ने ही शराब नीति घोटाले की शिकायत दिल्ली पुलिस से की थी। अजय माकन व संदीप दीक्षित जैसे नेताओं ने केजरीवाल की गिरफ्तारी की मांग की थी, लेकिन अब चूंकि दिल्ली में कांग्रेस और आप का गठबंधन है, इसलिए वही अजय माकन व संदीप दीक्षित केजरीवाल की गिरफ्तारी को गलत बता रहे हैं।

मनमोहन सिंह की सरकार के वक्त ईडी ने कुल 26 नेताओं के खिलाफ केस दर्ज किए इनमें से करीब आधे 14 विरोधी दलों के थे। आंकड़ों का फर्क ये दिखाता है कि विरोधी दलों के खिलाफ एक्शन में तेजी तो आई है। नेता इसे सियासी चश्मे से देख सकते हैं, लेकिन एक हकीकत ये भी है कि नरेन्द्र मोदी की सरकार से पहले ईडी के पास वो ताकत ही नहीं थी, वो अधिकार ही नहीं थे, जिनके जरिये वो एक्शन ले सके। पहले ईडी को केस दर्ज करने, सर्च करने और गिरफ्तारी करने का हक नहीं था,लेकिन मोदी सरकार ने कानून में बदलाव करके ये तीन अधिकार इस एजेंसी को दे दिए। पीएमएलए में गिरफ्तारी के बाद जमानत के नियम भी बहुत सख्त हैं। आसानी से जमानत नहीं मिलती। कानून का यही बदलाव करप्शन में फंसे नेताओं के लिए मुसीबत बन गया है। चूंकि इस तरह के मामलों में जितने लोगों के खिलाफ कार्रवाई हुई है, उनमें से ज्यादातर नेता विरोधी दलों के हैं, इसलिए ये सियासी मुद्दा बन गया है। सियासी घमासान मचा हुआ है।

चुनाव के चलते बड़ा मुद्दा

चुनाव का वक्त है। कैंपेन शुरू हो गया है। पहले चरण के लिए नामांकन चल रहा है। इसी बीच केजरीवाल की गिरफ्तारी हुई है, इसलिए ये मुद्दा बड़ा बन गया है। अब आम आदमी पार्टी के सामने बड़ा संकट है। केजरीवाल पार्टी के संयोजक हैं। पार्टी के सबसे बड़े कैंपेनर हैं। उनकी गैरमौजूदगी में लोकसभा इलेक्शन के कैंपेन को कौन लीड करेगा? केजरीवाल दिल्ली के मुख्यमंत्री है। उनकी गिरफ्तारी के बाद अब क्या होगा? अगर वो इस्तीफा नहीं देंगे तो सरकार कैसे चलेगी और अगर इस्तीफा देते हैं तो उनकी जगह चीफ मिनिस्टर कौन होगा? आम आदमी पार्टी के नेताओं और कार्यकर्ताओं के सामने ये बड़े सवाल हैं। हालांकि केजरीवाल भी जानते थे और उनकी पार्टी के नेता भी कि गिरफ्तारी तय है, क्योंकि मनीष सिसोदिया और संजय सिंह पहले ही अरेस्ट हो चुके हैं और उनकी जमानत की अर्जियां भी खारिज हो चुकी हैं।

ईडी ने अब तक कोर्ट में जो खुलासे किए हैं। गवाहों और आरोपियों के जो बयान सामने आए हैं उसमें केजरीवाल का नाम है, इसलिए उनकी गिरफ्तारी तो तय थी। केजरीवाल राजनीति के चतुर खिलाड़ी हैं। वो दस कदम आगे की सोच कर चलते हैं, इसलिए ऐसा नहीं हो सकता कि केजरीवाल ने इस परिस्थिति के बारे में न सोचा हो, इसकी रणनीति न बनाई हो। चुनाव का वक्त है। विक्टिम कार्ड खेलने से सहानुभूति मिल सकती है, इसलिए आम आदमी पार्टी के नेता इसे बीजेपी की साजिश बता रहे हैं। इन इल्जामात से चुनावी फायदा हो सकता है। जनता को बात समझाई जा सकती है, लेकिन अदालत में ये सारे तर्क नहीं चलते। आप के वकील अभिषेक मनु सिंघवी ने गिरफ्तारी का विरोध करते हुए राउज एवेन्यू कोर्ट में इसी तरह के तर्क रखे, लेकिन बात नहीं बनी, क्योंकि ईडी ने कोर्ट में जो तथ्य और बयान पेश किए उससे जज संतुष्ट दिखे और केजरीवाल को रिमांड में भेजा।

सियासी असर

केजरीवाल तो ईडी की रिमांड पर हैं, लेकिन उनकी गिरफ्तारी का सियासी असर ये हुआ कि सीटों के बंटवारे को लेकर एंटी मोदी मोर्चे में शामिल जो पार्टियों एक दूसरे को कोस रही थी वो एकजुट हो गई। उनकी दूरियां केजरीवाल की गिरफ्तारी ने मिटा दीं। जैसे ही केजरीवाल की रिमांड का फैसला आया तो कांग्रेस, आरजेडी, समाजवादी पार्टी, शरद पवार की एनसीपी, जेएमएम, सीपीएम, सीपीआई, उद्धव ठाकरे की शिवसेना, डीएमके, नेशनल कॉन्फ्रेन्स, और पीडीपी समेत तमाम दलों के नेता चुनाव आयोग के दफ्तर पहुंच गए। सबकी एक ही मांग है कि विरोधी दलों के ईडी का एक्शन सरकार के इशारे पर चुनाव के दौरान लेवल प्लेइंग फील्ड खत्म करने की कोशिश है। विरोधियों को बदनाम करने और विरोध के स्वर को दबाने की कोशिश है, इसलिए चुनाव आयोग को इसमें दखल देना चाहिए। चुनाव आयोग के पास सीमित ऑप्शन हैं। वह किसी मामले की जांच में दखल नहीं दे सकता।

जनता के मन में ये सवाल तो बैठ गया है कि आखिर ईडी की नजर हर बार विपक्ष के नेताओं पर क्यों पड़ती है। राज्यों में चुनाव हुए तो ईडी वहां एक्टिव हो गई। वहां भी विरोधी दलों के नेता निशाने पर रहे। छत्तीसगढ़ में चुनाव के वक्त गेमिंग एप का मसला उठा। भूपेश बघेल तक आंच पहुंची, लेकिन अब वो मामला शान्त है। कर्नाटक के इलेक्शन से पहले डीके शिवकुमार के खिलाफ एक्शन हुआ, लेकिन बाद में सुप्रीम कोर्ट ने उनके खिलाफ केस को रद कर दिया। बंगाल में इलेक्शन से पहले तृणमूल कांग्रेस के नेताओं की ताबड़तोड़ गिरफ्तारियां हुईं। तमिलनाडु में डीएमके के मंत्री के खिलाफ केस बना। हाल ही में झारखंड में ईडी के केस के कारण बड़ा सियासी बदलाव हुआ। हेमंत सोरेन के इस्तीफा देना पड़ा। उनकी गिरफ्तारी हो गई। चंपई सोरेन मुख्यमंत्री बन गए। हेमंत सोरेन जेल में हैं। मामला शान्त दिख रहा था। लेकिन अब हेमंत सोरेन की भाभी सीता सोरेन ने बीजेपी ज्वाइन कर ली। झारखंड में एक बार फिर सियासी बदलाव की चर्चा शुरू हो गई। बिहार में तेजस्वी य़ादव समेत लालू के परिवार के पांच लोग ईडी के निशाने पर हैं। ईडी राहुल गांधी और सोनिया गांधी से भी पूछताछ कर चुकी है, इसीलिए बार-बार ये कहा जा रहा है कि ईडी विरोधियों को परेशान करने का सरकार का हथियार बन गई। जबकि यह सच नहीं है, ईडी अपना काम कर रही है। ईडी के पक्षपाती एक्शन को साबित करने के लिए शुभेन्दु अधिकारी, हेमंत विश्वसर्मा, अजीत पवार और छगन भुजबल जैसे नेताओं का उदाहरण दिया जाता है। चूंकि ये बात सही है कि इन सभी नेताओं के खिलाफ करप्शन के इल्जाम थे। ये भी सही है कि बीजेपी के बड़े बड़े नेताओं ने इन सबके खिलाफ कैंपेन चलाया। सार्वजनिक तौर पर बयान दिए, लेकिन जब ये सारे नेता बीजेपी में शामिल हो गए या फिर बीजेपी के सहयोगी बन गए तो न सिर्फ उन्हें बड़े बड़े पद मिल गए बल्कि उनके कैसेज की चर्चा दब गई। इसीलिए विपक्ष के आरोपों का असर दिख रहा है।

हालांकि अरविन्द केजरीवाल का मसला दूसरी तरह का है। कांग्रेस के नेताओं ने ही शराब नीति घोटाले की शिकायत दिल्ली पुलिस से की थी। अजय माकन व संदीप दीक्षित जैसे नेताओं ने केजरीवाल की गिरफ्तारी की मांग की थी, लेकिन अब चूंकि दिल्ली में कांग्रेस और आप का गठबंधन है, इसलिए वही अजय माकन व संदीप दीक्षित केजरीवाल की गिरफ्तारी को गलत बता रहे हैं। पंजाब में केजरीवाल की पार्टी और कांग्रेस आमने सामने हैं, इसलिए पंजाब कांग्रेस के नेता केजरीवाल की गिरफ्तारी को सही ठहरा रहे हैं। कुल मिलाकर मामला सियासी है। जिसको जैसा सूट करता है वैसा बयान देता है, स्टैंड लेता है।

अब लोकसभा चुनाव का वक्त है। बीजेपी करप्शन को विपक्ष के खिलाफ बड़ा मुद्दा बना रही है, इसलिए विरोधी दलों के नेता करप्शन के कैसेज में हो रहे एक्शन को एजेंसियों के दुरुपयोग, और लोकतन्त्र को खत्म करने जैसा बता कर भ्रष्टाचार के मुद्दे की धार को कम करने की कोशिश कर रहे हैं। हालांकि इससे ईडी के एक्शन में कमी आएगी, सीबीआई की सक्रियता कुछ कम होगी। इसकी उम्मीद नहीं करनी चाहिए, क्योंकि नरेन्द्र मोदी दस साल से देश के प्रधानमंत्री है। दस सालों में सभी राज्यों में दो-दो बार इलेक्शन हो चुके हैं। दो बार लोकसभा के इलेक्शन हो चुके हैं। हर बार चुनाव से पहले इस तरह के मुद्दे उठे, लेकिन पीएम मोदी का करप्शन के खिलाफ कमिटमेंट कम नहीं हुआ। एक्शन में और तेजी आई। विरोधी दलों के नेता जितना ज्यादा इस मुद्दे पर बोलेंगे। मोदी उससे ज्यादा जोर जोर करप्शन के खिलाफ अभियान को आगे बढ़ाने की बात कहेंगे और मोदी जितना बोलेंगे, विरोधियों को नुकसान उतना होगा। इसलिए ईडी एक्शन को सियासी चश्मे से न देखें।

दिल्ली सरकार पर संकट का साया

गिरफ्तारी
योगेश कुमार सोनी
वरिष्ठ पत्रकार

दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल की गिरफ्तारी के बाद देश में सियासी माहौल बहुत गर्म हो चुका है। जैसे ही लोकसभा चुनाव तारीख तय हुई वैसे ही पक्ष-विपक्ष सीटों की घोषणा में लगा हुआ था, लेकिन बीते गुरुवार को दिल्ली के मुख्यमंत्री की गिरफ्तारी से देश की राजनीति का माहौल बिल्कुल बदल गया। बीते शुक्रवार को आबकारी घोटाला मामले में राउज एवेन्यू कोर्ट ने केजरीवाल को 28 मार्च तक की रिमांड पर भेज दिया। उन्हें स्पेशल जज कावेरी बावेजा की अदालत में राउज एवेन्यू कोर्ट में पेश किया गया था, जहां प्रवर्तन निदेशालय ने उनकी दस दिन की हिरासत की मांग की थी। तीन घंटे चली सुनवाई के बाद अदालत ने अपना फैसला सुरक्षित रख लिया था, लेकिन बाद में अदालत ने अपने फैसले में केजरीवाल को 28 मार्च तक की रिमांड पर भेज दिया। ईडी का प्रतिनिधित्व कर रहे एएसजी एसवी राजू ने अदालत को बताया कि एजेंसी ने पीएमएलए की धारा 19 के तहत आवश्यकताओं का अनुपालन किया है। उन्होंने कहा कि उनके रिश्तेदारों को सूचित कर दिया गया है और रिमांड आवेदन की प्रति उन्हें दे दी गई है। ऐसा पहली बार हुआ है कि पद रहते कोई मुख्यमंत्री गिरफ्तार हुआ है। इससे पहले इसी वर्ष जनवरी में झारखंड के पूर्व मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन को भी गिरफ्तार किया गया था, लेकिन उन्होंने गिरफ्तारी से पद से इस्तीफा दे दिया था

सबसे बड़ा सवाल

अब सवाल यह है कि आखिर कैसी संचालित होगी दिल्ली सरकार? पार्टी के अन्य तमाम नेताओं ने स्पष्ट कह दिया कि मुख्यमंत्री, अरविंद केजरीवाल ही बने रहेंगे, लेकिन जेल में रहते सरकार चलाना संभव है या नहीं, यह भी समझना होगा। दरअसल 1951 के जनप्रतिनिधि कानून में कहीं इसका जिक्र नहीं है कि जेल जाने पर किसी मुख्यमंत्री, सांसद, मंत्री या विधायक को इस्तीफा देना होगा। कानून के मुताबिक किसी मुख्यमंत्री को तभी अयोग्य ठहराया जा सकता है, जब उन्हें किसी मामले में दोषी ठहराया गया हो। जैसा कि अभी केवल गिरफ्तारी हुई है अभी तक दोषी नहीं ठहराया गया है। यदि केजरीवाल दोषी करार नहीं भी पाए जाते तो भी वह लंबे समय तक जेल से सरकार नहीं चला सकते। चूंकि जेल में हर काम सिस्टम के साथ होता है। जेल कानून के अनुसार, जेल में बंद हर कैदी को हफ्ते में दो बार अपने रिश्तेदार या दोस्तों से मिलने की इजाजत होती है। हर मुलाकात का समय भी आधे घंटे का होता है और स्पेशल केस में या व्यक्ति विशेष को सरकारी शक्तियां प्रयोग करने के लिए कोई भी अतिरिक्त अधिकार नहीं हैं। यदि किसी भी दस्तावेज पर साइन भी करना हो तो कोर्ट से इजाजत लेनी पड़ती है और यहां समझ सकते हैं कि दिन में सरकार चलाने के लिए कितनी दस्तावेजों पर साइन करने पड़ते

हैं। तमाम दांव पेचों से घिरा यह मामला दिल्ली सरकार के लिए आसान नहीं होगा।

किसको फायदा किसे नुकसान

इसके अलावा अब यह समझना होगा कि केजरीवाल की गिरफ्तारी से बीजेपी तो फायदा होगा या नुकसान? पूरी दुनिया में भारत ही एकमात्र ऐसा देश है जिसने राजनीति के हर रंग को देखा है। कुछ राजनीतिक विशेषज्ञों का मानना है कि ऐसी स्थिति में इतिहास के आधार पर सत्ता पक्ष को ही नुकसान होता है। जिसका उदाहरण हम 1974 में हुए जेपी आंदोलन से समझ सकते हैं, जो भी नेता जुड़े और जेल से आने के बाद उन्हें सहानुभूति मिली और उन्होंने अपनी पार्टी बनाई। आज भी सभी पार्टियों की देश में बड़े स्तर पर भागीदारी निभा रही हैं। तो यह कहा जा सकता है कि यहां केजरीवाल को सहानुभूति मिली तो चुनाव के समीकरण और बदल जाएंगे और बीजेपी को नुकसान होगा।

एक वर्ग यह भी

वहीं दूसरी ओर एक अन्य वर्ग का मानना है कि हर एक घटनाक्रम की अपनी स्थिति होती है और यहां केजरीवाल के घोटाले को स्पष्ट देखा जा रहा है चूंकि ऐसा क्या हुआ कि जो पूरी दिल्ली में शराब के ठेकों की लाइन लगा दी और ऐसा क्या हुआ कि सारे ठेके एक साथ बंद हुए। केजरीवाल की इस नीति में पूर्ण रूप से घोटाला था, क्योंकि पहली बार किसी राज्य में बड़े स्तर पर शराब नीति का विरोध हुआ था। तो इस आधार पर यह माना जा सकता है इससे आम आदमी पार्टी को बड़ी क्षति होगी।

कांग्रेस खुश

कांग्रेस और आम आदमी पार्टी के संदर्भ में चर्चा करें तो निश्चित तौर पर कांग्रेस खुश है चूंकि स्पष्ट है कि केजरीवाल ने यदि किसी को सबसे ज्यादा क्षति पहुंचाई तो वह कांग्रेस है। दिल्ली के परिवेश में बात करें तो केजरीवाल को जितना वोटर्स है वह सारा कांग्रेस का है। लेकिन यहां भी सवाल यह ही है कि इससे कांग्रेस को फायदा होगा या नुकसान ? जैसा कि हाल ही में आम आदमी पार्टी के सभी चोटी के नेता जेल में हैं और प्रचार करने व अपनी बात रखने के लिए कोई बड़ा नेता जनता के बीच मौजूद नही हैं तो इससे कांग्रेस भरपूर फायदा उठा सकती है और दिल्ली के कुछ इलाकों में इसकी शुरुआत भी हो चुकी है। लेकिन वहीं दूसरी ओर कांग्रेस को साथ ही साथ नुकसान भी देखने को मिल रहा चूंकि इस बार दोनों गठबंधन में उतरी है। दिल्ली में आम आदमी पार्टी को 4 व कांग्रेस को 3 सीट के आधार पर बंटवारा हुआ है, तो फाइट में कांग्रेस के पास कुछ बडा करने के लिए नही हैं। हां,लेकिन आगामी चुनाव पर आंतरिक तौर पर कांग्रेस अपने पुराने वोटरों को जोड़ने में जुट जरूर गई है।

आरोप-प्रत्यारोप का खेल

बहरहाल, देश की राजधानी फिलहाल सियासी तौर पर एक बड़े संकट से गुजर रही है जिसके लिए एक कैसा नया प्रारूप तैयार होगा यह बताना मुश्किल है चूंकि स्थिति चारों कोण से उलझ सी गई है। जैसा कि हम आज की राजनीति में समझ सकते हैं कि खेल गुणवत्ताओं का कहीं नहीं दिखता, आरोप-प्रत्यारोप का खेल है और अब लोग किस पार्टी व किस नेता की किस चीज से प्रभावित या कू-प्रभावित हो सकते हैं, कहा नहीं जा सकता। जैसा कि दिल्ली की जनता आप व बीजेपी में बटी पड़ी है चूंकि अन्य राज्यों की अपेक्षा यहां फाइट वोट प्रतिशत लगभग बराबर होती है लेकिन बंटवारे में कांग्रेस कितना फायदा ले सकती है,देखना होगा। लेकिन फिलहाल दिल्ली में आम आदमी पार्टी के लिए चुनौतियां कम नही है। यदि केजरीवाल जल्दी जेल से बाहर आ गए तो भी बहुत कुछ बदलने की संभावना बन जाएगी।

अब क्या होगी 'आप' की रणनीति

दिल्ली
रवि शंकर
वरिष्ठ पत्रकार

लोकसभा चुनाव का बिगुल बजने के साथ ही देश की सियासत पूरी तरीके से गर्म होती दिखाई दे रही है। दिल्ली शराब घोटाला मामले में अरविंद केजरीवाल की गिरफ्तारी ने राजनीति को और भी गर्म कर दिया है। लोकसभा चुनाव से ठीक पहले आम आदमी पार्टी के संयोजक की गिरफ्तारी को लेकर कई लोग सवाल उठा रहे हैं। केजरीवाल की गिरफ्तारी ऐसे समय में हुई है जब उनकी आम आदमी पार्टी (आप) विपक्षी दलों के 'इंडियन नेशनल डेवलपमेंटल इन्क्लूसिव अलायंस' (इंडिया) के घटक के तौर पर दिल्ली, हरियाणा और गुजरात में लोकसभा चुनाव में जीत हासिल करने के प्रयास रही है। सत्ता पक्ष और विपक्ष पूरी तरीके से आमने-सामने है, लेकिन अरविंद केजरीवाल की गिरफ्तारी के बाद से सबसे बड़ा प्रश्न यही उठ रहा है कि आखिर आम आदमी पार्टी के लिए भविष्य की राजनीति क्या रहने वाली है? दिल्ली के सीएम पद को लेकर क्या फैसला होगा?

बढ़ गई मुश्किलें

'इंडिया अगेंस्ट करप्शन' से निकले अरविंद केजरीवाल खुद भ्रष्टाचार के मामले में अरेस्ट होंगे इसकी कल्पना उन्होंने आंदोलन के समय कभी नहीं की होगी, लेकिन बड़ा सवाल यही है कि अरविंद केजरीवाल की गिरफ्तारी के बाद आम आदमी पार्टी का क्या होगा? इसमें कोई दो राय नहीं है कि आम आदमी पार्टी में सर्वोच्च नेता अरविंद केजरीवाल ही है। पिछले 11 से 12 वर्षों में हमने लगातार देखा है कि आम आदमी पार्टी की राजनीति केजरीवाल के इर्द-गिर्द ही घूमती दिखाई दी है। केजरीवाल पार्टी के चाणक्य कहे जाते हैं और अब उनकी ही गिरफ्तारी से निश्चित ही पार्टी की मुश्किलें काफी बढ़ गई हैं। जिन नेताओं ने केजरीवाल से आगे बढ़ने की कोशिश की, उनकी पार्टी से छुट्टी भी हो गई। चाहे वे पार्टी के संस्थापक ही क्यों ना हो। इसमें हम योगेंद्र यादव, शाजिया इल्मी, कुमार विश्वास, प्रशांत भूषण, किरण बेदी जैसे लोगों का नाम ले सकते हैं। दिल्ली शराब घोटाला मामले में अरविंद केजरीवाल के बाद पार्टी में स्थान रखने वाले मनीष सिसोदिया और संजय सिंह पहले ही गिरफ्तार हो चुके हैं। ऐसे में माना जा सकता है कि पार्टी के प्रसार और विस्तार पर थोड़ा ब्रेक जरूर लग गया है, क्योंकि वे लोकसभा चुनाव के लिए पार्टी की योजनाओं और रणनीति के केंद्र में रहे हैं। उनकी अनुपस्थिति में पार्टी को अनिश्चितता का सामना करना पड़ सकता है क्योंकि इसके कई दूसरे सीनियर नेता या तो जेल में हैं या राजनीतिक अज्ञातवास में। भले ही अरविंद केजरीवाल के बाद पार्टी को विस्तार देने में पंजाब के मुख्यमंत्री भगवंत मान, राघव चढ़ा, आतिशी और सौरव भारद्वाज का रोल काफी अहम रह सकता है, लेकिन जनता इन्हें कितना स्वीकार कर पाएगी, ये आने वाला वक्त बताएगा।

केजरीवाल का असर

महज 12 साल की छोटी अवधि में केजरीवाल ने अकेले दम पर आम आदमी पार्टी को बीजेपी और कांग्रेस के बाद देश का सबसे तीसरा राष्ट्रीय दल बना दिया। आप का असर न केवल दिल्ली और पंजाब में है बल्कि सुदूर गुजरात और गोवा में भी देखने को मिला। अपनी एक दशक से अधिक लंबी राजनीतिक यात्रा में केजरीवाल ने कई तरह के कदम उठाए हैं। चाहे वे विपक्षी दलों के इंडिया गुट में शामिल होना हो, जिनके नेताओं की उन्होंने पहले भ्रष्टाचार के मुद्दों पर आलोचना की थी या 'नरम हिंदुत्व' दृष्टिकोण अपनाना, जिसका उदाहरण उनकी मुफ्त तीर्थयात्रा है। और हाल ही में दिल्ली विधानसभा में 'जय श्री राम' के नारे लगाए गए। एक बार उन्होंने देश की आर्थिक समृद्धि के लिए करेंसी नोटों पर गणेश और लक्ष्मी की फोटो लगाने की मांग की थी।

टूट का खतरा

बहरहाल, केजरीवाल की गिरफ्तारी के बाद आम आदमी पार्टी में टूट का भी बड़ा खतरा मंडरा रहा है। इसका बड़ा कारण है कि पार्टी वैचारिक रूप से बंधी नहीं है। जरूरत के हिसाब से पार्टी अपना स्टैंड लेती है। आप का लगातार दावा रहता है कि बीजेपी उनके विधायकों को तोड़ने की कोशिश करती है। ऐसे में जब केजरीवाल गिरफ्तार हो चुके हैं, उसके बाद पार्टी की स्थिति में थोड़ी कमजोरी जरूर देखी जा सकती है। ये सभी को पता है कि आम आदमी पार्टी को जो भी वोट मिलता है, वह केजरीवाल के नाम पर ही मिलता है। ऐसे में केजरीवाल की अनुपस्थिति में पार्टी को बड़ा नुकसान हो सकता है। पंजाब में भी पार्टी टूट की ओर बढ़ सकती है। हालांकि, अभी भी पार्टी अपने एजेंडे को आगे बढ़ाने की कोशिश करेगी। तभी तो कहा जा रहा है कि केजरीवाल को गिरफ्तार किया जा सकता है, उनकी सोच को नहीं।

पार्टी पर ही सवाल

खैर, ये पार्टी भ्रष्टाचार के ख़िलाफ हुए आंदोलन से निकली थी, इसलिए लगा था कि इस पार्टी का मूल या केंद्रीय विषय भ्रष्टाचार के ख़िलाफ लड़ाई होगा, लेकिन अब ये पार्टी भ्रष्टाचार के मुद्दे पर बात नहीं करती है। शुरूआती दौर में भ्रष्टाचार के मुद्दे को लेकर आम आदमी पार्टी आक्रामक थी। एक वक्त केजरीवाल लिस्ट जारी करते थे कि देश में कौन-कौन से भ्रष्ट नेता हैं, लेकिन बीते कुछ साल में उन्होंने भ्रष्टाचार पर कोई बात नहीं की। भ्रष्टाचार अब उनके लिए मुद्दा नहीं रह गया है। इतना ही नहीं ये पार्टी शुरू में ही कहती थी कि हम ना तो कभी कांग्रेस के साथ जाएंगे, ना बीजेपी के साथ जाएंगे। इसका मतलब था कि ये पार्टी जो परंपरागत राजनीति है उनके साथ जाने को तैयार नहीं है। इन्होंने कांग्रेस के नेताओं और बीजेपी के नेताओं पर कई तरह के आरोप भी लगाए थे। कई नेताओं की लिस्ट जारी कर उन्हें भ्रष्ट क़रार दिया गया। लेकिन कांग्रेस के साथ मिलकर दिल्ली में सरकार भी बनाई और अब लोकसभा में भी कांग्रेस के साथ मिलकर चुनाव लड़ने जा रही है।

चर्चा का विषय

दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल की गिरफ्तारी के बाद एक बात जिसकी चर्चा बीजेपी और आम आदमी पार्टी दोनों के ही समर्थक कर रहे हैं कि गिरफ्तारी का असर आगामी लोकसभा चुनावों के नतीजों पर कितना पड़ेगा? आम आदमी पार्टी और कांग्रेस के समर्थकों का मानना है कि केजरीवाल की गिरफ्तारी लोकसभा चुनावों में राजनीतिक संभावनाओं के लिए एक हथियार के रूप में काम करेगी, तो दूसरी तरफ बीजेपी का मानना है कि केजरीवाल के गिरफ्तारी से पार्टी कमजोरी होगी क्योंकि केजरीवाल आम आदमी पार्टी का मुख्य चेहरा हैं और केजरीवाल के बिना, आम आदमी पार्टी चुनाव प्रचार में कोई प्रभाव डालने की स्थिति में नहीं होगी। खैर, अरविंद केजरीवाल को जहां एक तरफ लोकसभा की तैयारी करनी थी तो दूसरी तरफ दिल्ली में कामकाज के लिए लिहाज से भी ये साल उनके लिए महत्वपूर्ण था, क्योंकि अगले साल की शुरूआत में ही विधानसभा चुनाव होगा। ऐसे में यदि केजरीवाल को कोर्ट से जल्द जमानत नहीं मिलती है तो पार्टी को मुश्किलों का सामना करते हुए दोहरे मोर्चे पर तैयारी करनी होगी। एक तो दिल्ली सरकार के कामकाज कैसे चलेंगे, इस बारे में रणनीति बनानी होगी, दूसरी, आप की लोकससभा चुनाव कैंपेन कैसे होगा?

https://t.me/AllNewsPaperPaid